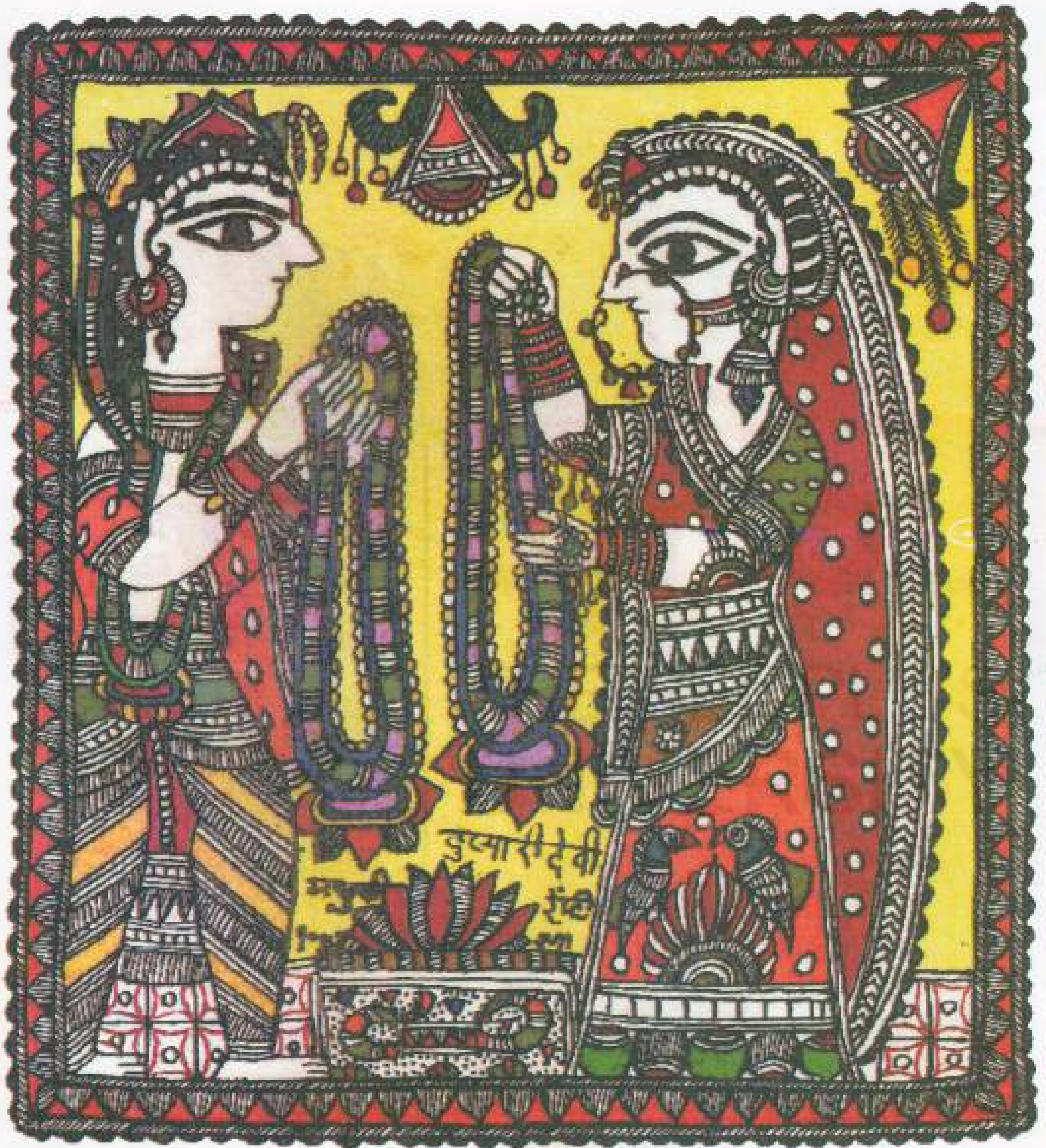
इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001

मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम



भाषा बोध

1

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

- इन्दिरा गाँधी



"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

खंड

1

भाषा बोध

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

डॉ. भीमनाथ झा
पूर्व प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. नीता झा
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, बी.आर.ए.बिहार वि.वि.
मुजफ्फरपुर

डॉ. नन्दनन्दन झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, जे.एन. कॉलेज, मधुबनी

प्रो. अजीत कुमार वर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा

संकाय सदस्य
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

डॉ. स्मिता चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाइ लेखक

डॉ. रमण झा (इकाइ 1)
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. नीता झा (इकाइ 2)
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा (इकाइ 3)
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
बी.आर.ए. बिहार वि.वि., मुजफ्फरपुर

डॉ. नन्दनन्दन झा (इकाइ 4)
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
जे.एन. कॉलेज, मधुबनी

पाठ्यक्रम संपादक
डॉ. भीमनाथ झा

पाठ्यक्रम संयोजन

एकेडमिक संयोजक
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

प्रबन्ध संयोजक
डॉ. ए. एन. त्रिपाठी
डॉ. एस. एस. सिंह
क्षेत्रीय निदेशक,
इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र,
दरभंगा

सामग्री निर्माण

श्री सी. एन. पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)

जनवरी, 2012

ISBN-978-81-266-5780-3

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए इसके मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068 स्थित कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. रीतारानी पालीवाल, निदेशक, मानविकी विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक : राज प्रिंटर्स, ए-9, सेक्टर बी-2, ट्रोनिका सिटी औद्योगिक क्षेत्र, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)–201102

पाठ्यक्रमक परिचय

ई मैथिलीक आधार पाठ्यक्रम थिक । ई पाठ्यक्रम चारि खण्डमे समायोजित अछि आ प्रत्येक खण्डमे चारि-चारि इकाइ (यूनिट) अछि । एहि प्रकारेँ कुल 16 इकाइमे अध्ययन सामग्री प्रस्तुत कयल गेल अछि । आशा करैत छी जे करीब 80 घंटामे अहाँ एकरा पढ़ि-बुझि जायब ।

ई पाठ्यक्रम भाषाक थिक– मैथिली भाषाक । मैथिलीक अध्येताक हेतु मिथिलाक्षर/तिरहुता लिपिक ज्ञानकेँ आवश्यक मानि पहिल इकाइ एहीसँ शुरू कयल गेल अछि । एकरा नीक जकाँ सीखि आ अभ्यास कऽ अहाँ तिरहुता लिखबा-पढ़बामे गति आनि सकैत छी । आधार पाठ्यक्रमक उद्देश्य थिकैक भाषाक आधारभूत कौशलसँ परिचय करायब । सुनिकऽ बुझब, पढ़ब, बाजब आ लिखब– यैह चारि गोट तत्त्व भाषाक आधारभूत कौशल थिक । एही चारू कौशलकेँ अहाँमे विकास करबाक प्रयास कयल जायत ।

पढ़ब आ लिखब तँ एहि पाठ्यसामग्रीक माध्यमसँ नीक जकाँ सीखल जा सकैत अछि, मुदा सुनब आ बाजब केर विकास करब कठिनाह भऽ सकैत अछि । दूरस्थ शिक्षा-माध्यमक कारणेँ लगमे शिक्षक रहताह नहि, तेँ मैथिलीक शुद्ध ध्वनि सुनब आ ओहि ध्वनिमे बाजब किनको-किनको लेल कठिनाह भऽ सकैत अछि । एकर समाधान लेल वीडीओ-पाठक व्यवस्थापर विचार कयल जा रहल अछि ।

भाषाक चारू कौशलमे दक्षता पयबाक हेतु शब्द-रचना, शब्द-भण्डार, वाक्य-रचना, उच्चारण आ सटीक अभिव्यक्तिक प्रकाशन प्रभृतिपर पकड़ चाही । एहि सोलहो इकाइमे एही तत्त्वक समुचित विवेचन कयल गेल अछि, जकरा अहाँ अभ्यास द्वारा अर्जित कऽ सकब ।

एहि पाठ्यक्रममे अहाँ संक्षेपमे मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिसँ अवगत भऽ सकब तथा व्यावहारिक मैथिली, जेना भाषण-कला, पत्र-लेखन, टिप्पण-प्रारूपण, अनुवाद तथा पत्रकारितासँ सम्बन्धित सम्पादकीय लेखन आ संवाद-प्रेषण आदिक सेहो सामान्य परिचय पाबि सकब एवं अभ्याससँ एहि सभक विकास कऽ सकब ।

पाठ्यक्रमक सकल सामग्रीकेँ निम्नांकित ढंगसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि–

साहित्यिक रचना	–	4 इकाइ
ज्ञान-विज्ञान विषयक रचना (मानविकी, समाजविज्ञान, विज्ञान)	–	4 इकाइ
भाषा विषयक पाठ	–	4 इकाइ
लेखन-दक्षता विषयक पाठ (पत्र-लेखन, अनुवाद, पत्रकारिता सम्बन्धी लेखन, कार्यालयीय लेखन)	–	4 इकाइ
	कुल	**16 इकाइ**

खण्ड 1 क परिचय : भाषा बोध

एहि खण्डक उद्देश्य मैथिली लिपि एवं भाषाक बोध करायब अछि । एहि हेतु चारि प्रकारक पाठ्यसामग्री देल गेल अछि । पहिल इकाइमे मिथिलाक्षर/तिरहुता लिखब सिखाओल गेल अछि। मैथिलीक छात्रकेँ तिरहुताक ज्ञान आवश्यक मानल गेल अछि । एकर सम्यक् अभ्याससँ अहाँ तिरहुतामे लिखल पाण्डुलिपिकेँ पढ़ि सकैत छी एवं अपनहुँ तिरहुता लिखि सकैत छी । मैथिलीमे वर्तनीक भिन्न-भिन्न रूप अछि । कोनो रूप अशुद्ध नहि थिक । अहाँ कोनो एक रूपकेँ मानि ओकरे अनुपालन करी । ई नहि जे अपन लेखनमे सभ रूपकेँ मिझरा दी । एहि पाठ्यसामग्रीमे बहुमान्य वर्तनीकेँ स्वीकार कयल गेल अछि।

मैथिली भाषापर अधिकार पयबाक हेतु शब्दावलीक परिचय, मुहाबिरा एवं कहबी (लोकोक्ति)क तात्पर्य एवं ओकर समुचित प्रयोग तथा शब्दकोशक उपयोगक जनतब रहब आवश्यक थिक, संगहि व्याकरणक जानकारी सेहो चाही । एहि सभ बिन्दुपर एहि खण्डमे प्रकाश देल गेल अछि ।

संस्कृति एवं समाजविज्ञानसँ सम्बन्धित विषयसँ अवगत करयबाक क्रममे मैथिली भाषाक विभिन्न तत्त्वकेँ स्पष्ट कयल गेल अछि ।

यथास्थान बोध प्रश्न आ अभ्यास देल गेल अछि, जकरा हल कऽकऽ अहाँ मैथिली लिपि एवं भाषापर नीक पकड़ आनि सकैत छी ।



इकाइ 1 तिरहुता आ देवनागरी : लिपि एवं वर्तनी परिचय

इकाइक रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

अहाँ मैथिलीक आधार पाठ्यक्रमक पहिल इकाइ पढ़ऽ जा रहल छी । एहि इकाइमे मैथिलीक हेतु प्रयुक्त लिपि देवनागरी एवं तिरहुता, जकरा मिथिलाक्षर सेहो कहल जाइत छैक, ताहिसँ अहाँकेँ परिचय कराओल जायत ।

एहि इकाइकेँ पढ़िकऽ अहाँ

- भाषाक प्रयोगमे लिपिक लाभकेँ बुझि सकब,
- भाषाक प्रयोगमे लिपिक लाभकेँ बुझा सकब,
- लिपिक स्वरूप स्पष्ट कऽ सकब,
- देवनागरी लिपिकेँ बुझिकऽ उपयुक्त वर्णक व्यवहार कऽ सकब,
- तिरहुता/मिथिलाक्षर लिपिकेँ सिखिकऽ उपयुक्त वर्णक व्यवहार कऽ सकब,
- देवनागरी एवं तिरहुता दुनू लिपिक संयुक्ताक्षरकेँ ठीक-ठीक लिखि सकब,
- मैथिलीक उपयुक्त वर्तनीक प्रयोग कऽ सकब आ वर्तनी संबंधी दोषकेँ दूर कऽ सकब,
- लेखन संबंधी कठिनताकेँ दूर कऽ सकब ।

1.1 प्रस्तावना

हमरालोकनि मैथिली भाषा बजितो छी आ लिखितो छी । एहि माध्यमे एक-दोसराक संग विचार-विमर्श करैत छी । जे गप हमरालोकनि बाजिकऽ करैत छी तकरा लिखिकऽ सेहो ओहिना प्रकट करैत छी । ई कोना संभव होइत अछि ? उच्चारण आ लेखनमे हमरालोकनि कोना तालमेल बैसबैत छी ? एकर कारण थिक– लिपि । लिपिएक माध्यमसँ हमसभ कोनो उच्चरित शब्दकेँ कागतपर यथावत अंकित करबामे समर्थ होइत छी । लिपि आ उच्चारण भाषाक आवश्यक उपादान थिक । भाषाक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण आ लेखनक हेतु एहि दुनू

उपादानक समुचित ज्ञान प्राप्त करब नितान्त आवश्यक अछि । पहिल इकाइमे हमसभ दुनूटा लिपि देवनागरी एवं तिरहुता/मिथिलाक्षरसँ परिचय-पात करब ।

अहाँ देखैत होयब जे लोक एकहिटा वर्णकेँ भिन्न-भिन्न प्रकारेँ लिखैत अछि । क्यो भ' लिखैत छथि तँ क्यो भऽ, क्यो भए तँ क्यो भय । हमरा कोना लिखबाक चाही ? एहिमे अशुद्ध कोनो नहि अछि । विभिन्न समयमे वा एकहु समयमे विभिन्न वर्तनीक प्रयोग भेटत । एकरूपताक हेतु, लेखन-सुलभताकेँ दृष्टिमे रखैत, सम्प्रति जकर व्यापक प्रयोग होइछ, एतऽ ताही वर्तनीकेँ अपनाओल गेल अछि । एकर समुचित ज्ञान भाषा-शिक्षणक हेतु आवश्यक अछि । मैथिलीमे लेखनक विविधता अछि । ई एकटा एहन भाषा अछि जे देवनागरीक संग-संग तिरहुतामे सेहो लिखल जाइत अछि । प्राचीन हस्तलिपि सभ प्रायः तिरहुतेमे लिखल भेटैत अछि । तिरहुतेक दोसर नाम थिक– मिथिलाक्षर । प्राचीन समयमे मिथिलामे रहनिहार संस्कृतोक पंडित एकमात्र लिपि जनैत छलाह– तिरहुता । ओलोकनि अपन संस्कृत रचनाकेँ तिरहुतेमे लिखैत छलाह । आइयो अहाँ पुस्तकालय जाकऽ पाण्डुलिपि सभकेँ देखब तँ मिथिलाक संस्कृतक पंडित द्वारा लिखल गेल अधिक रचना तिरहुतेमे भेटत ।

मिथिलाक विद्वान पछाति अपन लिपिक अभ्युन्नतिक हेतु सचेष्ट नहि रहलाह । जखन छापाखानाक आविष्कार भेलैक तखन ओलोकनि देवनागरियेसँ काज चलबऽ लगलाह । तिरहुताक फाउन्ट देरीसँ बनल । राज दरभंगा द्वारा दुर्गासप्तशती पोथी छपबो कयल, मुदा ताधरि देवनागरीमे प्रकाशन जोर पकड़ि लेने छल । आजुक समयमे कोनो प्रेसमे तिरहुताक फाउन्ट नहि भेटत । कतहु तिरहुतामे पोथी नहि छपैत अछि । परिणामतः दिनानुदिन तिरहुता पढ़निहार आ बुझनिहारक अभाव भेल जा रहल अछि, जे चिंताक विषय थिक । एहि अध्यायमे अहाँलोकनि तिरहुता सीखब, पढ़ब आ लिखब, जाहिसँ प्राचीन पाण्डुलिपि धरि सुगमतासँ पहुँचि सकब तथा अपन लिपिक प्रयोग कऽ एकरा लुप्त होयबासँ बचायब । आवश्यक तँ ई अछि जे एकरे फेरो व्यवहारमे आनल जाय ।

मैथिली देवनागरीमे लिखी वा तिरहुतामे– वर्तनीमे एकरूपता राखब आवश्यक अछि, जाहिसँ टंकण, मुद्रण आदिमे सुगमता होयबे करतैक, संगहि लेखन सीखब आ लिखब दुनू सुगम होयत । अहाँ सोचैत होयब जे वर्तनी की थिक ? तँ बुझि लियऽ– अहाँ शब्दकेँ जाहि रूपेँ कागतपर लिखैत छी, सैह थिक वर्तनी । मैथिलीमे वर्तनीक विविधता अछि । एखन धरि कोनो एकटा वर्तनीपर विद्वानमे सहमति नहि बनि सकल अछि । 'भऽ'क उदाहरण ऊपर देल गेल अछि । किछु आरो शब्द देखू–कयल, कएल, कैल; पयर, पाएर, पैर, इत्यादि । आब हमरालोकनि पाठारम्भ करी, जाहिसँ ऊपर वर्णित समस्याक संदर्भमे, देवनागरी आ तिरहुता लिपिक संदर्भमे, विशेष गप बुझि सकब ।

1.2 भाषा एवं लिपि

एखन जे पाठ अहाँ पढ़ब शुरू कयने छी से कोना ? हम कतहु छी आ अहाँ कतहु । मुदा एहन सन लगैए जेना हमरालोकनि सोझाँ-सोझी गप करैत होइ । अहाँकेँ हम जे किछु कहैत छी से अहाँ ओहिना बुझैत छी जेना सोझाँमे रहिकऽ सुनितहुँ, बुझितहुँ । कहू जे ई कोना संभव भऽ रहल अछि ? अहाँक समक्ष छपल अक्षर अछि आ एही छपल अक्षरसँ अहाँ हमर भाषाक उच्चरित रूपकेँ बुझि रहल छी, ओकर अर्थ बुझि रहल छी । एहिसँ स्पष्ट अछि जे हमसभ लिपिक माध्यमसँ सेहो ओहिना परस्पर गपसप कऽ सकैत छी, जेना बाजिकऽ अपन भावकेँ स्पष्ट करैत छी । तेँ, अहाँ कहि सकैत छी जे पढ़नाइ सुनबाक दोसर रूप थिक ।

लिपिक महत्त्वपर विचार करबासँ पूर्व हमरालोकनिकेँ भाषाक महत्त्वपर सेहो विचार कऽ लेबाक चाही । अहाँकेँ ई बुझल रहबाक चाही जे भाषाक विकासहिपर मानव समाजक

बहुमुखी विकास निर्भर करैत छैक । अहाँकेँ ई बुझिकऽ आश्चर्य होयत जे भाषाक बिना मनुष्य किछु सोचियो नहि सकैत अछि । लोक जे किछु करऽ चाहैत अछि, तकर चिंतन मातृभाषामे करैत अछि । ओकरा कागतपर लिपिबद्ध करैत अछि । लिपिबद्ध भाषाक जेना-जेना विकास होइत अछि, तेना-तेना ओहि भाषाक साहित्योक विकास संभव होइत अछि । दोसर शब्दमे अहाँ कहि सकैत छी जे भाषाक विकासहिपर ओहि क्षेत्रक सर्वांगीण विकास निर्भर करैत अछि ।

लिपिसँ लाभ

लिपिक विकाससँ पूर्व लोक बजैत टा छल । जेना-जेना सभ्यता आ संस्कृतिक विकास भेलैक, तेना-तेना मनुष्य लिखब प्रारंभ कयलक । पहिने कागत नहि छलैक, तेँ लोक ताड़क पात अथवा भोजपत्रपर लिखैत छल । आइयो भोजपत्र अथवा तालपत्रपर सुन्दर तिरहुता लिपिमे लिखल पाण्डुलिपि सभ भेटैत अछि । ओहि समयमे लोक पाथर आ धातुपर खोदिकऽ, गील माटिसँ देबाल आदिपर लिखैत छल, जकर प्रमाण आइयो भेटैत अछि । कल्पना करू जे ओहि समयमे लिखब कतेक कठिन छलैक ! संसारमे कतोक भाषाकेँ लिखबाक हेतु लिपिक व्यवस्था नहि छलैक । क्रमशः मनुष्य विकासक दिशामे अग्रसर भेल । कागतक आविष्कार भेलैक आ तखन लिखब सर्वसाधारण लेल सुलभ भऽ गेलैक । आइ जे व्यापक रूपसँ साक्षरता अभियान चलाओल जा रहल अछि, से बिनु कागतेँ सम्भव नहि होइत । आइ अशिक्षा दूर भागल जा रहल अछि आ लोक पठन-पाठन दिस झुकल अछि । जाहि क्षेत्रक लोक जतेक पढ़ल, से क्षेत्र ततेक विकसित मानल जाइत अछि । अहाँक मनमे अवश्य प्रश्न उठैत होयत जे लिपि आ क्षेत्रक विकासक बीच कोन संबंध छैक ? एहि प्रसंग अहाँकेँ निम्नलिखित बिन्दुपर ध्यान देबऽ पड़त–

- लिपि लोकक विचारकेँ सुरक्षित राखि ओकरा समयपर उपस्थापित करैत अछि ।
- हमरालोकनि जे किछु बजैत छी से तत्काले समाप्त भऽ जाइत अछि, मुदा लिखि देने ओ अमिट भऽ जाइत अछि ।
- हम अपन विचारकेँ स्वयं बादमे पढ़ि सकैत छी, ओकरा बुझि सकैत छी, ओहिमे संशोधन कऽ सकैत छी, ओहिमे परिवर्तन कऽ सकैत छी । आलोचक ओहिपर टिप्पणी कऽ सकैत छथि । तेँ लोक बजबासँ बेसी सतर्क लिखबामे रहैत अछि ।
- बजबा आ लिखबाक भाषामे सेहो अंतर छैक । एहि विषयपर हमसभ आगाँ विचार करब । एतऽ हम एतबे कहब जे भाषाक विकासहिसँ चिन्तनक विकास होइत अछि, समाजक विकास होइत अछि आ क्षेत्रक विकास होइत अछि ।
- लिपिबद्ध भाषाहिक कारणेँ हमसभ प्राचीन ऋषि-मुनिक विचारकेँ आइयो बुझि लैत छी । हुनकालोकनिक विचार समाजक धरोहरि थिक जे भूत, वर्तमान आ भविष्य- सभमे सहायक सिद्ध होयत ।
- लिपिक माध्यमे हमरालोकनि अपन अभिव्यक्तिकेँ दूर-दूर धरि पहुँचयबामे समर्थ होइत छी । यदि अहाँ बाजब, भाषण देब तँ कदाचित किछु हजार व्यक्तिकेँ सुना सकबनि, मुदा जँ समाचारपत्रमे अहाँक चिंतन छपत तँ दुनियाँ अहाँक विचारसँ अवगत होयत ।
- आइ जँ अहाँ कोनो पोथी लिखिकऽ राखि देबैक तँ भविष्यमे लोक ओहिसँ लाभान्वित होयत ।
- निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे मानव समाजक सभ्यता, संस्कृति आ ज्ञान-विज्ञानक विकासमे लिपिक भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण अछि ।

1.3 लेखन-कला

हमसभ जे किछु बजैत छी तकरा ओही रूपमे अंकित करबाक हेतु वर्णक व्यवस्था कयल गेल छैक । प्रत्येक ध्वनिक हेतु भिन्न-भिन्न वर्ण अछि । दू वा दूसँ अधिक वर्णक मेलसँ एकटा शब्द बनैत अछि आ दू वा अधिक शब्दसँ वाक्य । कोनो भाषाक सभ ध्वनिक हेतु निश्चित वर्ण अछि, जकर क्रमबद्ध रूपकेँ वर्णमाला कहल जाइत छैक । सामान्यत: वर्ण दू प्रकारक होइत अछि–स्वर आ व्यंजन । स्वर स्वत: बाजल जाइत अछि आ व्यंजनक उच्चारणमे स्वरक सहायता लेल जाइत छैक; यथा– अ, इ, उ, इत्यादि स्वतंत्र रूपसँ अपन ध्वनिक द्योतक थिक, 'क'मे क+अ; 'स'मे स+अ; तथा 'प'मे प+अ मिलल अछि । मैथिलीक अपन मूल लिपि थिक तिरहुता, जकरा मिथिलाक्षर सेहो कहल जाइत अछि, किन्तु आइ सुगमताक कारणेँ मैथिली देवनागरीएँ लिपिमे लिखल जा रहल अछि । एही लिपिमे पोथी छपैत अछि । जहिया छपाइक व्यवस्था नहि छलैक, मिथिलाक विद्वान द्वारा मैथिली आ संस्कृत तिरहुतेमे लिखल जाइत छल ।

बेसी भाषाक अपन लिपि छैक । ओकर लिखबाक अपन ढंग छैक । तिरहुता/मिथिलाक्षर आ देवनागरी बामसँ दहिन भागक दिशामे लिखल जाइत अछि । अरबी भाषा दहिनसँ बाम दिस लिखल जाइत अछि । जापानी भाषामे वर्ण ऊपरसँ नीचाँक क्रममे लिखल जाइत अछि । चीनी भाषामे ध्वनिक पृथक संकेत नहि होइत छैक, अपितु पूरा शब्द एकटा फोटो सन बुझाइत छैक, जकरा चित्रलिपि कहल जाइत छैक । एहिसँ एतबा तँ अवश्य कहल जा सकैत अछि जे लिपि कोनो भाषाक हो, ओ रेखा आ विभिन्न आकृतिक मेलसँ बनल रहैत अछि ।

देवनागरी आ तिरहुता लिपिक पूर्ण परिचय प्राप्त करबासँ पूर्व हम अहाँकेँ रोमन लिपिसँ ओकर मिलान कऽकऽ देखबऽ चाहैत छी, कारण जे अहाँ रोमन लिपि अवश्य बुझैत होयब । रोमनमे स्वर आ व्यंजन दुनूक हेतु अक्षरेक प्रयोग होइत छैक, मुदा देवनागरी आ तिरहुतामे अक्षरमे मात्रा लगाय स्वर जोड़ि देल जाइत छैक । उदाहरणार्थ– 'सीता'मे स आ त मात्र दूटा अक्षर अछि, जाहिमे **स** मे **ईकार** आ **त** मे **आकार** क मात्रा जोड़ि देल गेल अछि, मुदा रोमनमे ओतबा अक्षरे बढ़ैत छैक, यथा– Sita. देवनागरी तथा तिरहुतामे मात्रा लगौने संक्षिप्त भऽ जाइत छैक । अत: रोमन देवनागरी एवं तिरहुताक अपेक्षा स्थान बेसी घेरैत छैक । मैथिलीक हेतु तिरहुता एवं देवनागरी दुनू सुगम आ संक्षिप्त अछि । एतऽ अहाँ लिपिक उत्पत्ति आ महत्त्वक विषयमे ज्ञान प्राप्त कयलहुँ । एहिसँ संबंधित किछु अभ्यास एतऽ देल जा रहल अछि, जकर अहाँ उत्तर देबाक चेष्टा करू :

अभ्यास 1

क) एतऽ किछु वाक्य देल जा रहल अछि जे सत्य वा असत्य अछि । अहाँकेँ देखयबाक अछि जे कौन सत्य अछि आ कोन असत्य–

अ) मनुष्य बाजब पहिने सिखलक आ लिखब बादमे । (सत्य / असत्य)

आ) भोजपत्रक उपयोग छपाइक हेतु होइत छल । (सत्य / असत्य)

इ) लिपिसँ विचारकेँ स्थायित्व भेटैत छैक । (सत्य / असत्य)

ई) बजबाक भाषा आ लिखबाक भाषाक स्वरूपमे कोनो अंतर नहि होइत छैक । (सत्य / असत्य)

उ) चिंतनकेँ समयसँ आगाँ बढ़ायब लिपिक सभसँ पैघ गुण थिक । (सत्य / असत्य)

ऊ) मानव संस्कृतिक विकासमे लिपिक कोनो योगदान नहि छैक । (सत्य / असत्य)

ए) लिपिक माध्यमे संप्रेषणक विस्तार होइत अछि । (सत्य / असत्य)

ऐ) अरबी लिपि बामसँ दहिन दिस लिखल जाइत अछि । (सत्य / असत्य)

ओ) मनुष्यक सामाजिक सांस्कृतिक विकासमे लिपिक कोनो योगदान नहि छैक । (सत्य / असत्य)

औ) व्यक्तिक सम्पूर्ण चिंतन ओकर मातृभाषामे होइत छैक । (सत्य / असत्य)

ख) कोष्ठमे देल उत्तरमेसँ शुद्ध उत्तर ताकिकऽ खाली जगहकेँ भरू–

अ) भाषामे उच्चरित ध्वनिक हेतु जाहि चिह्नक प्रयोग कयल जाइत अछि से थिक..................। (शब्द/वर्ण/वर्तनी)

आ) मैथिलीक मूल लिपिकेँ कहल जाइत अछि .... ।
(तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर / मैथिली)

इ) मैथिली तिरहुता तथा .... दुनूमे लिखल जाइत अछि ।
(मिथिलाक्षर / देवनागरी)

ई) जापानी भाषामे वर्ण .... लिखल जाइत अछि ।
(ऊपरसँ नीचाँ दिस / दहिनसँ बाम दिस / बामसँ दहिन दिस)

उ) कोनो भाषाक वर्णमाला ओहि भाषाक .... प्रतीक होइत अछि ।
(शब्दक / ध्वनिक)

1.4 देवनागरी एवं तिरहुता/मिथिलाक्षर लिपि

मैथिली एहन भाषा अछि जकर प्रधान लिपि तिरहुता छैक, मुदा आइ सभटा छपल पोथी देवनागरी लिपिमे उपलब्ध अछि । उनैसम शताब्दीमे राज दरभंगाक प्रयाससँ किछु धार्मिक पुस्तक, यथा– दुर्गासप्तशती, सत्यनारायणपूजाक पोथी तिरहुतामे अवश्य छपल, प्रशंसितो भेल, मुदा ताहि दिन धरि लोक सुगमताक कारणेँ देवनागरीमे लिखऽ लागल, पढ़ऽ लागल आ देवनागरीएमे द्रुतगतिएँ पोथी सेहो छपऽ लगलैक ।

आजुक समयमे तिरहुता बिसरल सन भऽ गेल अछि । मैथिलीक अपन लिपि रहैत उपेक्षित अछि । एहिपर देवनागरी लिपिक एकाधिकार सन भऽ गेल छैक । आइ सभटा पोथी देवनागरीए लिपिमे छपैत अछि । कम्प्यूटर हो अथवा लेटर प्रिंटिंग, ओतऽ तिरहुताक फाउण्ट नहि भेटत । मैथिली माने देवनागरी लिपि– सैह सकलसाधारणक धारणा अछि । मुदा, जखन अहाँ एक सय वर्षसँ पूर्वक इतिहास देखब तँ मैथिलीए नहि, मिथिलाक विद्वान द्वारा लिखल गेल प्राय: सभटा संस्कृतोक रचना तिरहुतेमे लिखल भेटत । एखनहुँ मिथिलामे नोतक पाता तिरहुतेमे लिखिकऽ पठयबाक प्रथा अछि ।

एतऽ तिरहुता आ देवनागरीक किछु शब्दकेँ देखू :

तिरहुतामे

𑒁𑒣𑒢	𑒏𑒯𑒥	𑒏𑒱𑒞𑒰𑒥	𑒮𑒩𑒼𑒞𑒰	𑒔𑒻𑒪𑒔𑒲	𑒡𑒩𑒼𑒯𑒩
अपन	कहब	किताब	सरोता	चैलची	धरोहर

एतऽ मात्र 'ए'कार आ 'ऐ'कारक मात्रामे देवनागरीसँ भिन्नता अछि । मैथिलीमे देवनागरी जकाँ कोनो मानक वर्ण नहि अछि । मानक वर्णक व्यवस्था छपाइमे सुविधाक कारण कयल गेल अछि । तिरहुतामे छपाइ एखन धरि नहि शुरू भेल अछि, तेँ कोनो-कोनो वर्ण दू वा तीन प्रकारेँ लिखल जाइत अछि । एकरे प्रभावक कारण देवनागरीयो लिपिमे लिखल गेल मैथिलीक हेतु कोनो मानक वर्ण नहि अछि । दू वा तीन प्रकारक वर्तनीक प्रयोग होइत

अछि । सभटा शुद्ध रूप थिक । एहि प्रसंग विद्वानलोकनिमे मतैक्य नहि छनि । वर्तनीक भिन्नताक करणेँ लिखब आ पढ़ब दुनूमे किछु असुविधा तँ होइते छैक ।

वर्णमाला :

स्वर	तिरहुता	:	𑒁 𑒂 𑒃 𑒄 𑒅 𑒆 𑒇 𑒋 𑒌 𑒍 𑒎
	देवनागरी	:	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ मात्रा
	तिरहुता	:	𑒰 𑒱 𑒲 𑒳 𑒴 𑒹 𑒻 𑒼 𑒾
	देवनागरी	:	ा ि ी ु ू े ै ो ौ
अनुस्वार	तिरहुता	:	𑒁𑓀
	देवनागरी	:	अं
विसर्ग	तिरहुता	:	𑒁𑓁
	देवनागरी	:	अः
व्यंजन	तिरहुता	:	𑒏 𑒐 𑒑 𑒒 𑒓
	देवनागरी	:	क ख ग घ ङ
	तिरहुता	:	𑒔 𑒕 𑒖 𑒗 𑒘
	देवनागरी	:	च छ ज झ ञ
	तिरहुता	:	𑒙 𑒚 𑒛 𑒜 𑒝
	देवनागरी	:	ट ठ ड ढ ण
	तिरहुता	:	𑒞 𑒟 𑒠 𑒡 𑒢
	देवनागरी	:	त थ द ध न
	तिरहुता	:	𑒣 𑒤 𑒥 𑒦 𑒧
	देवनागरी	:	प फ ब भ म
	तिरहुता	:	𑒨 𑒩 𑒪 𑒫 𑒬 𑒭 𑒮 𑒯
	देवनागरी	:	य र ल व श ष स ह
संयुक्त वर्ण	तिरहुता	:	𑒏𑓂𑒭 𑒞𑓂𑒩 𑒖𑓂𑒘
	देवनागरी	:	क्ष त्र ज्ञ

1.5 लेखनमे कठिनता

आब हम लेखनमे किछु कठिनता दिस अहाँक ध्यान आकृष्ट करऽ चाहैत छी । अहाँ निम्नलिखित शब्दसभकेँ पढ़ू–

पद्य उद्धरण द्वेष भुक्त रत्न

एहि शब्दसभकेँ यदि अहाँ पढ़ि सकलहुँ तँ ठीक, आ जँ नहियोँ पढ़ि सकल होइ तँ कोनो चिंता नहि । एकर विकल्पसँ सेहो काज चलैत अछि– खासकऽ तिरहुतामे बेसी । 'द्य' दू वर्णक मेलसँ बनल अछि– द् य । अतः द्य केर स्थानमे द्‌य लिखने सेहो काज चलि सकैत अछि । एहि प्रकारेँ उपर्युक्त वर्णकेँ एहि तरहेँ लिखिकऽ देखू–

पद्‌य उद्‌धरण द्‌वेष भुक्‌त रत्‌न

तात्पर्य जे (्) हलन्त्य वर्णक प्रयोग कयने संयुक्ताक्षरसँ बाँचल जा सकैत अछि । तिरहुतामे विशेष आ देवनागरीमे अपेक्षाकृत कम स्थानमे हलन्त्य लगाय संयुक्ताक्षर बनाओल जा सकैत अछि ।

संयुक्ताक्षर : (देवनागरी)

एतऽ किछु वर्ण देल जा रहल अछि जकरा ध्यानसँ देखू आ बुझू–

ब व स श य ल क्ष त्र ज म ख न

एहि सभ वर्णमे अहाँकेँ एक प्रकारक समानता भेटत । सभक अंतमे एकटा डंटा लागल छैक । अहाँ ओहि डंटाकेँ हटाय कोनो दोसर वर्ण राखि दियौक, संयुक्ताक्षर बनि जायत; उदाहरणार्थ किछु शब्दकेँ देखल जा सकैत अछि –

व्याख्या स्मरण श्याम अल्हर ज्वाला
अभ्यास दुष्यन्त लक्ष्मण त्याज्य सुल्तान
विघ्नराज विन्ध्याचल

क, झ एवं फ सँ संयुक्त करबाक हेतु दुनूक झालड़िकेँ कने काटि दी । स्वतः संयुक्त भऽ जायत; उदाहरणार्थ- क्वचित, वाक्य, फ्यूज इत्यादि ।

र केँ संयुक्त करबा ले' तीनटा प्रक्रिया अछि– रेफ (र्), तिर्यक रेखा (्र) एवं ऋकार (ृ) । किछु उदाहरणकेँ देखू आ बुझू– कृपा, मर्यादा, क्रम, कर्म, कृमि, शृंगार, तर्क, कृषक, कौमार्य इत्यादि ।

किछु वर्णक संग हलन्त्य लगाइएकऽ संयुक्त भऽ सकैत अछि; यथा– ट ठ ड ढ छ इत्यादि । एहि वर्णसभसँ बनल शब्दकेँ देखू– वैशिष्ट्य, पाठ्य, उछ्वास, धनाढ्य इत्यादि ।

तिरहुता/मिथिलाक्षर

तिरहुतामे संयुक्ताक्षरक एक निश्चित्त विधान अछि, जकरा अहाँ सतर्कतापूर्वक देखू आ लिखू । कोनो वर्णसँ 'य' केँ संयुक्त करबाक विधान एहि प्रकारक अछि । जाहिमे झालड़ि छैक ताहिमे बुझि पड़त जे झालड़िकेँ झाड़िकऽ 'य' संयुक्त अछि । कतहु-कतहु 'य' देखाइ पड़त तँ कतहु आभासेटा होयत;

यथा– तिरहुता : [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
वाक्य अद्यावधि श्याम अभ्यास प्यास

कोनो वर्णसँ 'त' केँ संयुक्त करबाक विधान देखू–

तिरहुता : [illegible] [illegible]
आप्त पुस्तक

कोनो वर्णसँ 'न' केँ एहि तरहेँ संयुक्त करी–

तिरहुता : [illegible] [illegible]
अन्न प्रश्न

किछु संयुक्ताक्षरक रूपे बदलि जाइत छैक–

तिरहुता : [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
कृपा अत्याचार भक्त अर्गला

ह्रस्व 'इ' कार तथा दीर्घ 'ई' कारक मात्रा सामान्यतया (ि ी) कोष्ठमे देल गेल चिह्न सदृश होइत छैक, मुदा किछु स्थानमे वर्णक रूपे बदलि जाइत छैक, यथा–

तिरहुता : [illegible] [illegible] [illegible]
कुशल तुषार हुतासन

एतऽ किछु प्रमुख संयुक्ताक्षर देल जा रहल अछि, जकरा अहाँ बेरि-बेरि लिखिकऽ अभ्यास करू–

तिरहुता–

श्व ष्ण ष्व स्त द्व ज्ज क्त त्य श्न ग्य न्त ग्र द्य

न्न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] क्ष

तीन वा चारि वर्णसँ बनल संयुक्ताक्षर निम्नलिखित अछि–

मैथिलीमे तथा संस्कृतमे एखनहुँ तिरहुतामे लिखल अनेक पाण्डुलिपि सुरक्षित अछि, जे हस्तलिखित अछि । एतऽ हाथसँ लिखल संयुक्ताक्षर अभ्यासक हेतु देल जा रहल अछि–

एतऽ हाथसँ लिखल ह्रस्व एवं दीर्घ ई कारक मात्रा देखाओल जाइत अछि । अहाँ देखू आ अभ्यास करू–

उक्त संयुक्ताक्षरकेँ अहाँ बेरि-बेरि लिखिकऽ अभ्यास करू ।

आब अहाँ संख्यावाचक शब्दक अभ्यास करू–

तिरहुता–

𑓑	𑓒	𑓓	𑓔	𑓕	𑓖	𑓗	𑓘	𑓙	𑓑𑓐
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10

एहि आधारपर अहाँ 1 सँ 100 धरि तिरहुतामे लिखू ।

....

....

....

....

....

....

निम्नलिखित शब्दकेँ तिरहुतामे लिखू–

जनपद..........	खाजा..........	गाछ..........	सुपारी..........	कौन्तेय..........
पञ्चमी..........	आप्लावित..........	अप्सरा..........	बन्धन..........	कार्यान्वयन..........
आनन्द..........	सम्पन्न..........	छद्म..........	ब्रह्म..........	विद्या..........
प्रत्यक्ष..........	गुरुत्व..........	अनिरुद्ध..........	उद्भव..........	द्वार..........
अध्याय..........	उत्पन्न..........	उत्कंठा..........	परमात्मा..........	कुण्ठित..........
वरेण्य..........	कण्व..........	दुर्लंघ्य..........	ग्लानि..........	अग्रज..........
उद्विग्न..........	मुग्ध..........	वाग्दान..........	वाञ्छित..........	अञ्जन..........
मज्जन..........				

निम्नलिखित शब्दकेँ देवनागरीमे लिखू –

𑒣𑒪𑒰𑒬	𑒣𑒾𑒩𑒳𑒭	𑒁𑒣𑒩𑒱𑒯𑒰𑒩𑓂𑒨
𑒏𑒰𑒞𑓂𑒨𑒰𑒨𑒢	𑒍𑓀𑒏𑒰𑒩	𑒅𑒠𑓂𑒫𑒹𑒑
𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒢𑒰𑒟	𑒂𑒖𑓂𑒘𑒰	𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰𑒔𑒰𑒩
𑒫𑒻𑒬𑒱𑒭𑓂𑒙𑓂𑒨	𑒂𑒫𑒱𑒭𑓂𑒏𑒰𑒩	𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨
𑒔𑒧𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩	𑒣𑓂𑒩𑒰𑒠𑒳𑒩𑓂𑒦𑒰𑒫	𑒣𑓂𑒩𑒰𑒨𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞
𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨	𑒣𑒳𑒩𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩	𑒨𑒰𑒖𑓂𑒘𑒫𑒪𑓂𑒏𑓂𑒨

एतऽ तिरहुतामे लिखल किछु पंक्ति देल जा रहल अछि जकरा पढू आ ओहिना लिखबाक प्रयास करू–

𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮𑒬𑒲𑒪 𑒁𑒕𑒱,
𑒣𑒩𑓀𑒔 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪 𑒉𑒐𑒢𑒯𑒳𑒿 𑒁𑒫𑒱𑒏𑒮𑒱𑒞 𑒉𑒫𑓀
𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒉𑒏𑒩 𑒧𑒴𑒪𑒦𑒴𑒞 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒯𑒧𑒩𑒰
𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒧𑒹 𑒉𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒦𑒰𑒫, 𑒁𑒣𑒢 𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒋
𑒪𑒱𑒣𑒱𑒏 𑒅𑒣𑒹𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒂' 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰𑒏
𑒁𑒦𑒰𑒫 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒕। 𑒄 𑒥𑒛𑓃 𑒐𑒹𑒠𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨।
𑒮𑒧𑒨 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒂𑒥𑒯𑒳𑒿 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒖𑒰𑒑𑒲
𑒂' 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒏𑒱𑓀𑒞𑒳 𑒧𑒯𑒰𑒢𑓂 𑒣𑒩𑓀𑒣𑒩𑒰𑒏𑒹𑓀 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞
𑒞𑒟𑒰 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮-𑒬𑒲𑒪 𑒩𑒰𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒰𑒭𑒰
𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒞𑒟𑒰 𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰-
𑒪𑒱𑒣𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒔𑒰𑒩 𑒂' 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒩 𑒞𑒢 𑒧𑒢 𑒡𑒢𑒮𑒿
𑒏𑒩𑒲 𑒖𑒰𑒨।

अभ्यास 2

क) निम्नलिखित वर्णकेँ तिरहुतामे लिखू -

1. ओ 2. ण 3. पु 4. तु 5. ऋ
6. त 7. ते 8. खु 9. ए 10. अं
11. सो 12. हु 13. श 14. कु 15. कौ
16. तू 17. क्ष 18. कू 19. भू 20. कृ

ख) निम्नलिखित संयुक्त वर्णकेँ तिरहुतामे लिखू -

1. व्य 2. ष्ण 3. त्त 4. द्द 5. स्य
6. न्त 7. द्य 8. त्त 9. क्ष्म 10. प्त
11. र्ग 12. प्ल 13. न्न 14. न्ध 15. स्त
16. श्र 17. ब्द 18. त्य 19. प्र 20. म्म

ग) निम्नलिखित शब्दकेँ तिरहुतामे लिखू -

1. तिरहुताम 2. अभ्यास 3. मद्यश्री 4. अन्वय 5. पिच्कर
6. दुर्गादत्त 7. इत्यलम् 8. पुरस्कार 9. व्यक्ति 10. शुक्ल
11. सिद्धिरस्तु 12. उद्देश्य 13. कृष्ण 14. राष्ट्र 15. कण्टक
16. आश्चर्य 17. अभिव्यक्ति 18. पुष्प 19. आरम्भ 20. आह्लाद

घ) निम्नलिखित वाक्यकेँ तिरहुतामे लिखू -

''पुरुष आ नारीक कार्यक्षेत्र एक नहि भऽ सकैछ। दुहूमे प्रकृतिगत भिन्नता अछि। पुरुषक रचना कठोर तत्त्वसँ भेल छनि, नारीक रचना कोमल उपादानसँ। पुरुषमे बल आ साहसक अधिकता होइत छनि, तँ नारीमे प्रेम आ त्यागक अधिकता होइ छनि। पुरुषमे मस्तिष्क प्रधान होइ छनि, नारीमे हृदय। एक उद्यमक अवतार तँ दोसर सहनशीलताक

मूर्ति । एक जीवन-युद्धक सैनिक छथि, दोसर शान्तिक अधिष्ठात्री देवी ।'' – हरिमोहन झा (द्विरागमन)

ङ) निम्नलिखितकेँ देवनागरीमे लिखू–

1.6 वर्तनी

मैथिलीमे एकहिटा शब्द भिन्न-भिन्न ढंगेँ लिखल जाइत अछि । लिखनिहार स्वेच्छासँ अपना ढंगेँ लिखि लैत छथि आ ओकर अर्थो समाने होइत अछि । उदाहरणार्थ– क्यो 'कएल' लिखताह तँ क्यो 'कयल' आ क्यो 'कैल' । सर्वमान्य रूप नहि छैक । वस्तुतः उपर्युक्त तीनूटा रूप शुद्ध छैक । लिखबाक यैह रूपक विविधता वर्तनी कहबैत अछि । अंग्रेजीमे Spelling छैक, कोनो झंझट नहि । हिन्दीमे देवनागरी लिपि छैक, मुदा मैथिली देवनागरीमे लिखू वा तिरहुतामे, एखन धरि सर्वमान्य स्वरूप निर्धारित नहि भऽ सकलैक अछि ।

अहाँ निम्नलिखित शब्दकेँ ध्यानसँ देखू- संबंध, सम्बन्ध, सम्बंध, संबन्ध । ई चारूटा शुद्धे रूप थिक, मुदा मैथिलीमे बहुमान्य रूप अछि 'सम्बन्ध' । आब सुविधाक दृष्टिएँ संबंध धुरफार लिखल जाय लागल अछि ।

अनुस्वारक बदलामे संयुक्ताक्षर लिखबाक हेतु जे नियम लागू होइत अछि, से ई थिक जे जाहि वर्णपर अनुस्वार रहय, तकर बाद जे वर्ण आबय ताहि वर्गक (क च ट त प) अंतिम वर्णसँ ओहि वर्णकेँ संयुक्त करी । एतऽ किछु शब्द अवलोकनार्थ प्रस्तुत अछि–

गंगा	संगम	अंत	चंचल	अंब	चंद्र	पंकज	पंचमी
गङ्गा	सङ्गम	अन्त	चञ्चल	अम्ब	चन्द्र	पङ्कज	पञ्चमी

'क च ट त प' वर्गक अतिरिक्त स्थानमे अनुस्वारे देब उपयुक्त थिक । एहन स्थानमे अनुस्वारक प्रयोग नहि कयने हास्यास्पद भऽ जायत; यथा–

संयम संसार संत्रास संयोग संशय संरचना संदिग्ध

1.7 वर्तनीक नियम

आब अहाँकेँ ई बुझबामे भाङठ नहि होयत जे मैथिलीमे वर्तनीक मानक रूप स्थिर नहि भेलैक अछि । एहिसँ स्पष्ट अछि जे एकटा शब्द अनेक तरहेँ लिखल जाइत अछि । किछु एहन शब्द एतऽ देल जा रहल अछि जकरा अहाँ ध्यानसँ देखू जे कोना अनेक प्रकारेँ लिखल जाइत अछि–

कहलनि	कहलैन्हि	कहलन्हि		
अयलाह	अएलाह	ऐला		
पयर	पाएर	पैर		
खयर	खाएर	खैर		
जयताह	जएताह	जैताह		
कयलनि	कएलनि	कएलैन्हि	कएलन्हि	
भऽ	भए	भय	भ'	भै
कऽ	कए	कय	क'	कै
तऽ	त'	तँ	थिक	थीक

- मैथिलीमे 'म' अनुनासिक वर्ण थिक, तेँ एकर ऊपरमे बिन्दु अथवा चन्द्रबिन्दु नहि देल जाइत अछि; यथा–

  विद्यालयमे हाथमे घरमे मा

- नाकसँ उच्चरित ध्वनि अनुनासिक भेल, जकर माथपर (ँ) चन्द्रबिन्दु देल जाइत छैक, जखन कि कण्ठ्य ध्वनिमे अनुस्वार (ं) ऊपरमे देल जाइत छैक । एकर अन्तर एतऽ स्पष्ट कयल जाइत अछि जे अहाँकेँ भ्रम नहि होअय–

  कंठ तंत्र पंडा पंखा गंगा तरंग अपंग

  एहि शब्दसभमे पूर्व कथनानुसार अनुस्वार हटाय अगिला वर्गक वर्ण

  (क च ट त प)क अंतिम अक्षरसँ संयुक्त कयल जा सकैत अछि; यथा–

  कण्ठ तन्त्र पण्डा पङ्खा गङ्गा तरङ्ग अपङ्ग

- चन्द्रबिन्दु (ँ)युक्त वर्णकेँ बदलल नहि जा सकैत अछि–

  आँचर आँखि साँढ़ ऊँट

- 'ड़' एवं 'ढ़' केर प्रयोग सेहो ध्यान देबाक योग्य अछि । दुनूमे 'ड़' एवं 'ढ़' केर नीचाँ (.) बिन्दु देल गेल छैक । एकर प्रयोगकेँ देखू आ अनुमान करू जे वर्तनी कोन तरहेँ उच्चारणमे सहयोगी होइत अछि–

  साँढ़ लोढ़ी बड़द बड़की राबड़ी रबड़

  उपर्युक्त 'ड़' एवं 'ढ़' केर स्थानमे 'ड' एवं 'ढ' देलासँ अर्थक संगति नहि बैसत ।

- वर्तनीक संबंध पूर्णरूपेण उच्चारणपर निर्भर छैक । यदि अहाँ शुद्ध-शुद्ध उच्चारण करबैक तँ लिखबामे कतहु अशुद्धि नहि होयत । दू प्रकारक मात्रा– ह्रस्व एवं दीर्घ– भेटत; यथा– इ, ई, उ, ऊ । एहि स्वरकेँ ध्यानसँ पढ़ू आ देखू जे दीर्घ स्वरक उच्चारण जोरसँ होइत

छैक । यदि ह्रस्वक स्थानपर दीर्घ स्वर देबैक तँ अशुद्ध भऽ जायत । निम्नलिखित शब्दकेँ देखू–

कुशल पुरस्कार पितामह बिहार कुमार

कूशल पूरस्कार पीतामह बीहार कूमार

एतऽ ह्रस्वक स्थानमे दीर्घ कयने अशुद्ध भऽ गेल ।

- कतहु-कतहु ह्रस्वक दीर्घ आ दीर्घक ह्रस्व कयने अर्थ बदलि जाइत अछि; यथा–

सूचि (सुइया) सिता (चीनी) सुत (बेटा) दिन(दिवस) मति (बुद्धि)

सूची (सारणी) सीता (जानकी) सूत (डोरा) दीन (गरीब) मती (सौँफक बिच झाड़न्हिार)

- लेखनकलाक मुख्य बिन्दु थिक वर्तनी । भाषामे शब्द अनेक भाषासँ अबैत अछि आ ओ अपन ढंगेँ घुलिमिलि जाइत अछि । मैथिलीमे अंग्रेजीसँ आयल शब्दक बाहुल्य अछि । एतऽ देखू जे कोना एहि शब्दसभक प्रयोग सामान्य लोक (कम पढ़ल-लिखल) करैत अछि–

इन्सपेक्टर बसस्टैण्ड लैनटर्न लैम्प डॉक्टर ट्रेन टिकट मैजिस्ट्रेट

निसपिट्टर बस स्टाम लालटेम लम्फ डाकदर टेन टिकस मजिस्टर

- किछु शब्दक शुद्ध-अशुद्ध रूपकेँ ठेकानि लियऽ–

अशुद्ध– क्रिपा कृया श्रृंगार श्रीयुत् श्रीमान

शुद्ध– कृपा क्रिया शृंगार श्रीयुत श्रीमान्

- कतहु-कतहु दूटा शब्द एके शब्द बनि जाइत अछि–

सकैत अछि – सकैछ देखैत अछि – देखैछ

कहैत अछि – कहैछ अबैत अछि – अबैछ

सुनैत अछि – सुनैछ जाइत अछि – जाइछ

अभ्यास 3

अ) निम्नलिखित शब्दसँ अनुस्वार हटाय संयुक्ताक्षरक सहयोगसँ लिखू–

1. पंचदशी............ 2. तरंग............ 3. पंडित............

4. अंतिका............ 5. पंचवटी......... 6. अंडा............

7. कंटक............ 8. दंभ............ 9. लंफ............

10. चंपा............ 11. कंचन............ 12. मंथन............

13. मांडवी............ 14. जंतु............

आ) एतऽ शुद्ध एवं अशुद्ध दुनू प्रकारक शब्द देल जा रहल अछि । अहाँ शुद्ध शब्दमे सही (✓) चिह्न लगाउ–

1. साँढ़ ( ) / साँढ ( )
2. रबर ( ) / रबड़ ( )
3. रामायण ( ) / रामायन ( )
4. आशिर्वाद ( )/आशीर्वाद ( )
5. युत् ( ) / युत ( )
6. श्रींगार ( ) /शृंगार ( )
7. परिवर्तन ( ) / परिवरतन ( )
8. पसुपति ( ) / पशुपति ( )
9. पुस्प ( ) / पुष्प ( )
10. पूरान ( ) / पुराण ( )
11. पन्डा ( ) / पण्डा ( )
12. क्रिष्ण ( ) / कृष्ण ( )
13. क्रिया ( ) / कृया ( )
14. द्रोनाचार्य ( )/द्रोणाचार्य( )

1.8 सारांश

- मैथिलीक मूल लिपि तिरहुता थिक, मुदा आजुक समयमे लेखनसँ छपाइ धरि सभ कार्य देवनागरीए लिपिमे होइत अछि । अतः ई कहब सर्वथा उपयुक्त अछि जे मैथिलीकेँ दूटा लिपि छैक– तिरहुता आ देवनागरी ।
- लिपि कोनो भाषाक उच्चरित ध्वनिक प्रतिनिधित्व करैत अछि, जकरा पृथक-पृथक चिह्नक द्वारा दर्शाओल जाइत अछि, एकरे वर्ण कहल जाइत छैक ।
- एहि पाठमे हमसभ देवनागरी एवं तिरहुता दुनू वर्णमालाक परिचय प्राप्त कयलहुँ अछि ।
- मैथिलीमे कोनो-कोनो शब्द दू वा तीन प्रकारेँ लिखल जाइत अछि आ सभटा शुद्धे रूप थिक ।
- मैथिलीमे वर्तनीक विविधता अछि ।
- मैथिलीमे हमसभ जेना उच्चारण करैत छी लगभग तहिना लिखितो छी । तात्पर्य जे वर्णक व्यवस्था तेहन अछि जे उच्चरित शब्दकेँ प्रायः अविकल अंकित कयल जा सकैत अछि ।
- वर्तनीक दोषसँ बँचबाक हेतु उच्चारणपर ध्यान देब आवश्यक अछि ।

उपयोगी पुस्तक

1) मिथिलाक्षर अभ्यास पुस्तक - प्रो० विश्वनाथ झा
प्रकाशक - अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा

2) मैथिली वर्णमाला, भाग– 1-2 (तिरहुता)
छात्र सहयोगी प्रकाशन, दरभंगा, मुजफ्फरपुर

1.9 वर्तनीक संबंधमे किछु विशेष गप

1) जतऽ सामान्य ढंगेँ संयुक्त नहि भऽ सकय ओतऽ हलन्त्य (्) लगाय संयुक्त करी; यथा–
वैशिष्ट्य, नाट्य, साद्य, पाद्य, हड्डी

2) तिरहुतामे 'त' केँ कोनो वर्णसँ संयुक्त करबा ले' (्) हलन्त्य लगयबाक आवश्यकता होइत छैक, यथा–
𑒫𑒞𑓂𑒮, 𑒨𑒞𑓂𑒢, 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢, 𑒔𑒲𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩, 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒩𑓂𑒭

3) मैथिलीमे सामान्यतया विभक्ति चिह्न शब्दक संगहि लगाओल जाइत अछि, मुदा एकरहु कोनो कठोर बंधन नहि अछि–

विद्यालयसँ	कानमे	काकीकेँ	कोठीसँ	चोराकेँ
विद्यालय सँ	कान मे	काकी केँ	कोठी सँ	चोरा केँ

एहिमे निर्विवाद रूपेँ ऊपरबला बेसी विद्वान द्वारा प्रयोग कयल जाइत अछि ।

4) कतहु-कतहु विभक्ति चिह्न शब्दक संग नहि लगाओल जाइत अछि–

नेना केर   हुनका द्वारा   कहला उत्तर

5) देवनागरी लिपिमे प्राय: ट ठ ड ढ केर संग संयुक्त करबामे हलन्त्य लगाय संयुक्त करब सुगम होइत छैक; यथा - एतहि क्रम 1 मे देल उदाहरणकेँ देखू । तिरहुतामे उपर्युक्त वर्णसँ बिनु हलन्त्यहुकेँ संयुक्त कयल जा सकैत अछि ।

6) 'र' तीन प्रकारसँ संयुक्त कयल जाइत अछि; यथा–

कर्म   प्रकाश   राष्ट्र

7) हाइफनक प्रयोग निम्नलिखित स्थानमे कयल जाइत अछि–

शब्दयुग्मक बीचमे हाइफन (-)क प्रयोग कयल जाइत अछि; यथा–

शुद्ध-शुद्ध   दौड़ैत-दौड़ैत   पढ़ैत-पढ़ैत

द्वन्द्व समासक बीच हाइफनक प्रयोग होइत अछि–

चूड़ा-दही   डोल-डोरी   पूजा-पाठ

8) अव्यय शब्दक रूप कतहु नहि बदलैत छैक । मैथिलीमे नामक संग 'श्री' जोड़बाक परंपरा अछि । सामान्यतया लोक नामक आगाँ श्री लगबैत अछि, मुदा ओकरा नामक संग नहि जोड़ैत अछि । किछु विद्वान ओकरा जोड़ि दैत छथि, सेहो चलैत अछि, जेना –

श्रीरामदेवझा   श्री रामदेव झा

9) अनुस्वार आ चन्द्रबिन्दु - अनुस्वारक स्थानमे यथासंभव अगिला वर्णकेँ ओकरे पंचमाक्षरक संग जोड़ि देल जायब श्रेयस्कर थिक । किछु शब्द एहनो अछि जाहिमे ई नियम नहि लागू भऽ सकत; यथा– वांमय, अंय, अंन, संमेलन, संमति, चिन्मय, उंमुख इत्यादि । एकर शुद्ध रूप थिक–वाङ्मय, अन्य, अन्न, सम्मेलन, सम्मति, चिन्मय, उन्मुख ।

10) कतहु-कतहु बिन्दु नहि, मात्र चन्द्रहिक प्रयोग होइत अछि, यथा-डॉक्टर, कॉफी, कॉमर्स इत्यादि ।

11) कोनो-कोनो तत्सम शब्द दू तरहेँ लिखाइत अछि; यथा– राष्ट्रीय - राष्ट्रिय, मुदा स्मरण राखू जे 'युत' मे हलन्त्य नहि लागत आ 'इत्यलम्' मे लागत ।

12) 'त' केर द्वित्व दुनू प्रकारेँ लिखल जा रहल अछि; यथा– आर्यावर्त्त - आर्यावर्त, वर्त्तमान - वर्तमान, वर्त्तनी -वर्तनी इत्यादि , मुदा प्रयोगमे त सैह अछि ।

13) किछु शब्द सामान्यतया लोक अशुद्ध लिखैत अछि ; यथा– श्रृंगार, अनाधिकार, ग्रहीत, विद्वता, शिक्षकेत्तर इत्यादि । एकर शुद्ध रूप थिक– शृंगार, अनधिकार, गृहीत, विद्वत्ता, शिक्षकेतर ।

14) कतहु-कतहु विसर्गक प्रयोगकेँ तद्‌भव शब्द मानि हँटा देल जाइत अछि; यथा– छन्द:शास्त्र - छन्दशास्त्र, दु:ख - दुख इत्यादि । जतऽ तत्सम शब्द यथावत रहैत अछि ओतऽ विसर्ग हँटयबाक कोनो गुंजाइश नहि छैक; यथा– अन्त:करण, अन्त:पुर इत्यादि ।

15) देवनागरीमे शिरोरेखाक प्रयोग प्राय: लोक करैत छथि, मुदा हाथसँ लिखनिहार क्यो-क्यो एकर प्रयोग नहियोँ करैत छथि, किन्तु तिरहुतामे स्वेच्छाक गप्प नहि अछि । ओतऽ जाहि वर्णमे शिरोरेखा देल छैक ताहिमे देब अनिवार्य अछि आ जाहिमे नहि देल छैक ताहिमे नहि पड़तैक । एकर कारण स्पष्ट अछि जे मात्र शिरोरेखा पड़ने किछु वर्ण बदलि जाइत छैक, यथा– तिरहुतामे (**𑒍 𑒋**) ई दुनू अक्षर थिक **ओ** एवं **ए**, मुदा शिरोरेखा देने भऽ जायत– **तु** एवं **त्र** ।

16) जतेक प्रकारक विरामचिह्न अंग्रेजीमे प्रचलित अछि से ओही रूपेँ ग्रहण कऽ लेल गेल अछि ।

1.10 अभ्यासक उत्तर

अभ्यास 1

क) (अ) सत्य (आ) असत्य (इ) सत्य (ई) असत्य

(उ) सत्य (ऊ) असत्य (ए) सत्य (ऐ) असत्य

(ओ) असत्य (औ) सत्य

ख) (अ) वर्ण (आ) तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर (इ) देवनागरी

(ई) ऊपरसँ नीचाँ दिस (उ) ध्वनिक

अभ्यास 2

क) 𑓑. 𑒅 𑓒. 𑒝 𑓓. 𑒣𑒴 𑓔. 𑒆

𑓕. 𑒏 𑓖. 𑒛 𑓗. 𑒞𑒹 𑓘. 𑒬𑒴

𑓙. 𑒒 𑓑𑓐. 𑒌 𑓑𑓑. 𑒨𑒼 𑓑𑓒. 𑒏𑓂𑒭

𑓑𑓓. 𑒬𑒰 𑓑𑓔. 𑒩 𑓑𑓕. 𑒑𑒻 𑓑𑓖. 𑒃

𑓑𑓗. 𑒤 𑓑𑓘. 𑒒𑒳 𑓑𑓙. 𑒯𑒳 𑓒𑓐. 𑒜

ख) 𑓑. 𑒏𑓂𑒭 𑓒. 𑒖𑓂𑒘 𑓓. 𑒯𑓂𑒧 𑓔. 𑒢𑓂𑒠

𑓕. 𑒞𑓂𑒨 𑓖. 𑒏𑓂𑒞 𑓗. 𑒭𑓂𑒙 𑓘. 𑒓𑓂𑒑

𑓙. 𑒮𑓂𑒨 𑓑𑓐. 𑒓𑓂𑒏 𑓑𑓑. 𑒘𑓂𑒔 𑓑𑓒. 𑒪𑓂𑒣

𑓑𑓓. 𑒞𑓂𑒩 𑓑𑓔. 𑒘𑓂𑒕 𑓑𑓕. 𑒢𑓂𑒞 𑓑𑓖. 𑒬𑓂𑒩

𑓑𑓗. 𑒯𑓂𑒩 𑓑𑓘. 𑒥𑓂𑒩 𑓑𑓙. 𑒑𑓂𑒩 𑓒𑓐. 𑒧𑓂𑒧

घ) 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭 𑒂 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩 𑒋𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒕। 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒚𑒼𑒩 𑒞𑒞𑓂𑒞𑓂𑒫𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒻𑒏, 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒧𑒪 𑒅𑒣𑒰𑒠𑒰𑒢𑒮𑒿। 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒧𑒹 𑒥𑒪 𑒂 𑒮𑒰𑒯𑒮𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒞𑓄 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧 𑒂 𑒞𑓂𑒨𑒰𑒑𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻𑒏। 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒧𑒹 𑒧𑒮𑓂𑒞𑒱𑒭𑓂𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒢𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻𑒏, 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒧𑒹 𑒯𑒵𑒠𑒨। 𑒋𑒏 𑒅𑒑𑓂𑒩𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒫𑒞𑒰𑒩 𑒞𑓄 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒮𑒯𑒢𑒬𑒲𑒪𑒞𑒰𑒏 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱। 𑒋𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏 𑒮𑒻𑒢𑒱𑒏 𑒕𑒟𑒱, 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒲। **𑒯𑒩𑒱𑒧𑒼𑒯𑒢 𑒗𑒰, 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒩𑒰𑒑𑒧𑒢**

ङ) ''दही-चूड़ा-चीनी । एहिसँ उत्कृष्ट भोजन भइये की सकैत अछि ? पृथवी पर मधुर, अन्न ओ गोरस– इएह तीनटा भोज्य पदार्थ सर्वोपरि । गोरसक सार भाग दही । मधुरक मूल रूप चीनी । अन्नक चूड़ामणि चूड़ा । एहि तीनूक संयोग त्रिवेणी-संगम थिक । चूड़ा भूलोक, दही भुवर्लोक, चीनी स्वर्लोक । ई त्रिलोकक आनन्द दोसर कोन भोजनमे भेटत ?'' – हरिमोहन झा (खट्टरककाक तरंगसँ)

अभ्यास 3

अ) 1. पञ्चदशी 2. तरङ्ग 3. पण्डित 4. अन्तिका
5. पञ्चवटी 6. अण्डा 7. कण्टक 8. दम्भ
9. लम्फ 10. चम्पा 11. कञ्चन 12. मन्थन
13. माण्डवी 14. जन्तु

आ) 1. साँढ़ 2. रबड़ 3. रामायण 4. आशीर्वाद
5. युत 6. श्रृंगार 7. परिवर्त्तन 8. पशुपति
9. पुष्प 10. पुराण 11. पण्डा 12. कृष्ण
13. क्रिया 14. द्रोणाचार्य

1.11 अनुकार्य

तिरहुता लिखबाक लगातार अभ्यास करैत रहू । वर्तनीक एकरूपता बनल रहय, ताहि लेल मैथिलीक कोनो निबन्ध अथवा कथाकेँ एक वर्तनीमे आनि लिखू आ जाँचू ।

इकाइ 2 शब्द आ मुहाबिरा

इकाइक रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

एखन धरि अहाँ की सभ पढ़लहुँ, से अहाँकेँ मन होयत । पहिल इकाइमे तिरहुता एवं देवनागरी लिपि एवं वर्तनीक विषयमे जनतब प्राप्त कयलहुँ । तिरहुता सिखबामे मन लागल होयत । आशा अछि, अभ्यास कऽ आब अहाँ अपनहुँ किछु-किछु लिखऽ-पढ़ऽ लागल होयब । की आब एहिसँ आगाँ बढ़ल जाय ? बेस, तखन आब अहाँ मैथिली भाषाक व्यावहारिक पक्षक जानकारी प्राप्त करू ।

प्रस्तुत इकाइ मैथिली भाषाक शब्द ओ मुहाबिरासँ सम्बन्धित अछि । एहि इकाइकेँ ध्यानपूर्वक पढ़लाक पश्चात अहाँकेँ एतबा अवगति आ अनुभव भऽ जायत जे अहाँ :

- मैथिली भाषामे शब्दक प्रयोग आ महत्त्वकेँ बुझि सकब आ बुझा सकब,
- शब्दक विभिन्न अर्थकेँ जानिकऽ तकर सही प्रयोग करब सीखि लेब,
- शब्द-रचनाक ज्ञान प्राप्त करब,
- मुहाबिरा एवं कहबीक प्रयोग तथा महत्त्वकेँ बुझि तकरा भाषामे प्रयोग करब सीखब ।

2.1 प्रस्तावना

अहाँ बुझिते होयब जे भाषामे शब्दक की आ कतेक महत्त्व छैक । शब्दक माध्यमेसँ हमरालोकनि अपन विचार व्यक्त करैत छी । शब्दक इतिहास बड़ रोचक अछि । शब्दक अपन अर्थ होइत छैक । शब्दसँ बनाओल गेल वाक्यक सेहो अपन अर्थ होइत छैक । वाक्यक अर्थकेँ अहाँ नीक जकाँ तखनहि बुझि सकब जखन अहाँ वाक्यक संरचनामे शब्दक सही प्रयोग करब जानि लेब । एहि इकाइमे हम शब्द, तकर रचना आ अर्थक विषयमे चर्चा करब ।

शब्द ध्वनिसँ बनैत छैक । किन्तु, ध्वनिक अपन कोनो अर्थ नहि होइत छैक । कइएक बेर एकहि शब्दक भिन्न-भिन्न अर्थ होइत छैक । शब्दक लाक्षणिक प्रयोग द्वारा सेहो हमरालोकनि अपन बात-विचारकेँ व्यक्त करैत छी । समाजक विभिन्न वर्गक लोकक भाषाक शब्दावलीमे ओहि वर्गक परिस्थिति एवं वर्गीय हैसियतक अनुरूप भिन्नता होइत छैक । जेना डाक्टर आ जऽनक भाषामे जे अंतर होइत छैक, तकरा अहाँ सहजहिँ बुझि सकैत छी ।

अहाँ शब्दक स्रोतक विषयमे सेहो जनतब प्राप्त करब जे भाषामे शब्दक एतेक विशाल भंडार कोना बनैत छैक आ जमा होइत जाइत छैक । संस्कृत आ प्रान्तीय भाषाक शब्दावलीक अतिरिक्त मैथिली भाषामे अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी, जापानी, फ्रांसिसी, बंगला, असमिया, ओडिआ, गुजराती, मगही, भोजपुरी आदि भाषाक शब्द सेहो नीक जकाँ समाहित भऽ गेल अछि आ व्यवहारमे आबि गेल अछि । एकर अतिरिक्त नित्य नव-नव शब्द बनैत रहैत छैक । आवश्यकता पड़लापर हमरालोकनि नवो शब्द गढ़ैत छी– कखनहुँ संस्कृतसँ तँ कखनहुँ अन्य स्रोतक माध्यमे । आवश्यकताक अनुरूप जे शब्द गढ़ि लैत छी से कालान्तरमे अपन शब्द जकाँ व्यवहृत होबऽ लगैत अछि ।

शब्दक तँ सहजहिँ जे एहि इकाइमे अहाँकेँ मैथिली भाषाक मुहाबिरा आ लोकोक्तिक विषयमे सेहो जनतब देल जायत । अपनामे गप करबा काल हमरालोकनि प्रतिदिन अनायासे अनेक मुहाबिरा आ लोकोक्तिक प्रयोग करैत छी । एहिसँ अहाँक भाषाक व्यवहार-सौन्दर्य आ महत्वे टा नहि बढ़ैत अछि, भाषाक प्रभाव आ क्षमताक विस्तार सेहो होइत अछि । मुहाबिरा वस्तुतः की थिक ? ई कोना बनैत अछि ? भाषामे एकर महत्त्व की छैक एवं लोकोक्ति आ मुहाबिरामे की अन्तर छैक ? एहि सभ बिन्दुपर एहि इकाइमे विवेचन कयल जायत । एहि इकाइमे देल गेल अभ्यासकेँ हल करबा लेल अहाँ शब्दकोशक सहायता लऽ सकैत छी । हँ, तँ आब शब्दक विषयमे जनतब प्राप्त करी ।

2.2 शब्दक महत्त्व

भाषामे हमरासभक विचारक वाहक ध्वनि होइछ । किन्तु ध्वनिक तँ कोनो अर्थ होइछ नहि । ध्वनिसँ अर्थ प्रकट नहि कयल जा सकैछ । यथा– अ, क, त आदि ध्वनि सार्थक नहि थिक, अर्थात् एहि अक्षरकेँ बजलासँ जे ध्वनि उत्पन्न होइछ, ताहिसँ कोनो प्रकारक अर्थ-बोध नहि होइछ । भाषाक अर्थक वाहक थिक 'शब्द', जे ध्वनिसँ बनैत अछि, जेना– धान । धान शब्द कहलासँ हमरालोकनिक मनमे एकटा वस्तुक बोध होइत अछि । 'धान' शब्दमे 'धा' आ 'न' दू टा ध्वनि छैक । एहि तरहेँ किछु ध्वनिक योगसँ जे शब्द बनैत छैक, वैह शब्द भाषामे अर्थक वाहक होइत छैक । प्रत्येक भाषाक शब्द समाज-सापेक्ष होइत छैक, अर्थात् धान कहलासँ मैथिलीभाषी एक विशेष वस्तु– खास अन्नक अर्थ ग्रहण करैत छथि । किन्तु एही शब्द 'धान'क चीनीभाषी अथवा इतालवी भाषीक लेल वैह अर्थ हो जे मैथिली भाषीक लेल अछि, से आवश्यक नहि अछि । चीनी आ इतालवी लोकनिक शब्दकोशमे 'धान'क लेल अपन-अपन शब्द होयतनि, जे हुनक भाषाक ध्वनिसँ निर्मित होयतनि । एकर तात्पर्य ई भेल जे एक समाजक सभ गोटे, जे एक भाषा बजैत होथि, ओहि भाषाक शब्दक निश्चित अर्थसँ परिचित रहैत छथि । ओसभ एहि शब्दक अर्थकेँ उच्चारण द्वारा आन-आन व्यक्ति धरि सम्प्रेषित कऽ सकैत छथि आ तकर उच्चारणसँ एक निश्चित अर्थ ग्रहण कऽ सकैत छथि ।

अतः भाषाक शब्दक एक प्रमुख विशेषता थिकैक अर्थयुक्त होयब । कनियेँ काल पहिने हमरालोकनि चर्चा कयलहुँ अछि जे 'धान' शब्दक अपन एकटा निश्चित अर्थ छैक, जाहिसँ मैथिलीभाषी समाज परिचित अछि । किन्तु, ई अर्थ एहि शब्दमे कोना आयल, कतऽसँ हमरालोकनिकेँ अर्थक बोध होइत अछि ? जाहि अन्नकेँ हमसभ धान कहैत छिऐक, की

ओहि अन्नक कोनो गुणसँ एहि ध्वनिक सम्बन्ध छैक ? नहि । जाहि अन्नकेँ मैथिलीमे धान कहल जाइत छैक, तकरा संस्कृतमे शालि एवं अंग्रेजीमे पैडी कहल जाइत छैक । एहिसँ ई बात स्पष्ट होइत अछि जे कोनो शब्दक जे ध्वनि होइत छैक, शब्दक अर्थसँ ओहि ध्वनिक कोनो प्रकारक प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि छैक । ज्ञात अर्थक लेल समाज कोनो शब्द निर्धारित कऽ लैत अछि आ ओ शब्द ओहि अर्थसँ जुड़ि जाइत छैक– तकर अभिप्रेत भऽ जाइत छैक । शब्द आ अर्थक ई सम्बन्ध स्वाभाविक नहि होइत छैक, अपितु समाज द्वारा आरोपित होइत छैक । वस्तु आ शब्दक एहि सम्बन्धकेँ हमरालोकनि यादृच्छिकता कहैत छिऐक । यादृच्छिकताक अर्थ होइछ इच्छानुकूल आरोपित अर्थ । ईहो देखल गेल अछि जे शब्द आ अर्थक सम्बन्ध ऐतिहासिक विकासक संग बदलैत रहैत छैक । यथा, संस्कृतमे 'मृग' शब्द पशु अथवा जानवर लेल प्रयुक्त होइत छल, खाली हरिन लेल नहि । किन्तु सम्प्रति हमरालोकनि 'मृग'क अर्थ हरिन सैह बुझैत छी । एहि बातकेँ आर स्पष्ट करबा लेल 'मृगराज' शब्दक अर्थ देखल जाय, जकर अनुसार सिंहकेँ पशुक राजा अर्थात् वनराज कहल जाइत छैक । एही प्रकारेँ शिकार करबाक लेल 'मृगया' शब्दक व्यवहार करैत छी । मृगयाक तात्पर्य खाली हरिनेक शिकार नहि होइछ, अपितु प्रत्येक जंगली पशुक शिकार करब 'मृगया' थिक ।

प्रत्येक शब्दक अपन अर्थ होइत छैक, जेना 'आम' शब्द फलविशेषक बोध करबैत अछि, 'मेज' आ 'पीढ़ी' शब्द विशेष वस्तुक अर्थ सूचित करैत अछि । अर्थात्, वस्तुक लेल प्रयुक्त होबऽवला शब्दसँ ओहि वस्तुक अर्थ एकदम स्पष्ट भऽ जाइत छैक । किन्तु, भाषामे हमरालोकनि वस्तुए टाक लेल तँ शब्दक प्रयोग नहि करैत छी, गूढ़ विचारकेँ सेहो शब्दक माध्यमसँ अभिव्यक्त करैत छी, प्रकट करैत छी । जेना, 'स्वतंत्रता' नामक शब्द हमरासभ लेल अत्यन्त परिचित लगैत अछि, किन्तु एक छोट नेना एहि शब्दक अर्थकेँ सहजहिँ ग्रहण नहि कऽ सकत । नेना लेल राष्ट्रीयता, अभिव्यक्ति, स्वच्छन्दता, उद्दंडता आदि शब्दक अर्थकेँ ग्रहण करब कठिन होयत । जेना-जेना नेना पैघ होइत अछि, शिक्षा प्राप्त करैत अछि तँ ओ एहन-एहन वैचारिक शब्दकेँ बुझिकऽ तकर अर्थकेँ ग्रहण करैत अछि, आत्मसात कऽ लैत अछि । एकर अर्थ ई कदापि नहि जे केवल पढ़ले-लिखल व्यक्ति गूढ़ अथवा सूक्ष्म विचारकेँ अभिव्यक्त करैत अछि । अपढ़ व्यक्ति सेहो समाजक कइएक प्रकारक सूक्ष्म विचारकेँ ग्रहण करैत अछि आ अपन भाषामे एहि प्रकारक शब्दक प्रयोग करैत अछि । अतः शब्दक माध्यमसँ विचारकेँ व्यक्त करबा लेल पढ़ि-लिखिकऽ पण्डित होयब आवश्यक नहि अछि । साहेबरामदास आ हुनका जकाँ अनेक महापुरुष एहि बातक प्रत्यक्ष प्रमाण छथि । परम्परागत शिक्षासँ वंचित साहेबरामदास सामाजिक व्यवहार ओ अपन व्यक्तिगत अनुभव-ज्ञानक आधारपर दर्शन आ धर्मक गूढ़ रहस्यकेँ सहज ढंगसँ सफलतापूर्वक अभिव्यक्त कयने छथि ।

एकरा दोसर ढंगसँ सेहो बुझल जा सकैत छैक । से, एना जे भाषा केवल दृश्यमान जगतसँ सम्बद्ध वस्तुकेँ अभिव्यक्त करबाक साधने टा नहि थिक, अपितु वैचारिक अभिव्यक्तिक साधन सेहो थिक । वैचारिक अभिव्यक्तिक ज्ञान हमरालोकनिकेँ अपन समाजसँ प्राप्त होइत अछि । परम्परागत रूपसँ समाज अपन पूर्वक पीढ़ीसँ अभिव्यक्तिक पाठ सीखैत अछि । यैह थिक ओहि समाजक वैचारिकता, जाहिमे हमसभ रहैत छी । हमरालोकनि अपन समाजसँ जखन भाषा सीखैत छी तँ संगहि संग समाजक वैचारिकता सेहो ग्रहण करैत छी ।

अतः भाषा शब्दक माध्यमसँ केवल अर्थक अभिव्यक्ति नहि थिक, अपितु सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, दार्शनिक ज्ञान-विज्ञानक भिन्न-भिन्न उपलब्धिकेँ व्यक्त करबाक माध्यम सेहो थिक । तेँ अपन भाषा, मातृभाषा हमरासभ लेल एक अति महत्त्वपूर्ण सामाजिक धरोहरि थिक ।

2.3 भाषाक सामाजिक स्तर-भेद

एखन धरि हमरालोकनि शब्दक विषयमे जे चर्चा कयलहुँ, जनलहुँ–सिखलहुँ, ताहिमे सामाजिक स्तरपर विचार नहि कयलहुँ अछि आ ने भाषाक प्रायोगिक महत्त्वपर विचार कयलहुँ अछि। अहाँ सुनने होयब आ अनुभव कयने होयब जे बाल्यावस्थाक दू अभिन्न मित्र गप्प करबा काल 'अरौ बहि', 'सार नहितन', 'रौ सरवा' आदि शब्दक प्रयोग करैत अछि। एहि शब्दावलीक प्रयोग औपचारिक रूपसँ स्कूल, कार्यालय आदिमे नहि कयल जाइछ। अशिक्षित, अल्पशिक्षित अथवा क्रोध, आवेग, हर्षातिरेक आदिक अवस्थामे शिक्षितो लोक अपभाषाक प्रयोग करैत अछि। हमहूँ करैत छी, अहूँ करैत होयब, छै की नहि ? हँ, तँ किछु अपशब्दक उदाहरण देखू–

गदहा, गदहबा, कुतबा, चोट्टा/चोट्टी, बौका/बौकी, उल्लू, कोढ़िया, जनपिट्टा, डकिनियाँ, डनियाँ, अभगला/अभगली, नटबा/नटि्टन, दगधी, सरघुआ, मङजरौनी, छुतहरबा, नककटओना/नककटओनी आदि-आदि। ई अनौपचारिक भाषा कहबैत अछि। घरौआ गप-सप, मित्रक संग वार्तालाप आदिमे हमरालोकनि अनौपचारिक शब्द एवं भाषाक व्यवहार करैत छी। किन्तु, सभा-संगोष्ठी, कार्यालय, विशिष्ट विषयक परिचर्चा आदिक भाषा औपचारिक एवं परिनिष्ठित होइत छैक। एहि सभमे शब्दक चयन एवं प्रयोग अत्यन्त सावधानीपूर्वक कयल जाइत छैक।

एकर अतिरिक्त भिन्न-भिन्न पेशा आ व्यवसायसँ जुड़ल लोकक भाषा फराक होइत छैक, जकर शब्दावली व्यवसाय-विशेषसँ जुड़ल रहैत छैक। स्कूल एवं कालेजक अध्यापकक भाषा, व्यापारीक भाषा, मजदूरक भाषा आदिमे जे शब्दसभ प्रयुक्त होइत छैक, तकर अन्तरकेँ हमरालोकनि स्पष्ट रूपेँ फरिछा सकैत छी। पेशा आ व्यवसायविशेषक भाषामे सेहो भिन्नता होइत छैक। जेना डाक्टरक भाषा, इन्जीनियरक भाषा, वस्त्रव्यवसायीक भाषा, परचून दोकानदारक भाषा, औषधिव्यवसायीक भाषा आदि-आदि।

सामाजिक स्तरभेदक सन्दर्भमे, भाषा आ ओहि भाषामे प्रयुक्त शब्दविशेषक रूपकेँ हमरालोकनि सहज रूपेँ बेकछाकऽ चीन्हि सकैत छी। अपढ़ लोक द्वारा बोलीमिश्रित भाषाक प्रयोग हुनक शैक्षिक स्तरक परिचायक थिक। किछु लोक अपभाषाक प्रयोग करैत छथि, जे भाषाक विकृत रूप होइत अछि आ सैह मानल जाइत अछि। किछु पेशामे व्यवसायी तेहन भाषाक प्रयोग करैत छथि जे आन व्यवसायी हुनक वार्तालापक अर्थ नहि बुझय। दोसरसँ बात गुप्त रखबाक हेतु ओ 'कूट' भाषाक प्रयोग करैत छथि। एहि प्रकारक शब्दावली सामान्य बोलचालक भाषासँ भिन्न होइत छैक। जेना बरइक व्यावसायिक भाषामे शब्दावलीक प्रयोग देखू–

''बच्चा सभकेँ नीक जकाँ झाँपि दिहक... ।'' एतऽ 'बच्चा' थिक पानक छोटकिनमा पात, जकरा पैघ पातक बीचमे राखिकऽ बेचबाक गुप्त संदेश देल गेलैक अछि।

उदात्त कथन

की हमसभ अपन कोनो समाङ अथवा निकट सम्बन्धीक मृत्यु भेलापर एना बाजि सकैत छी जे हमर बाबूजी, ककाजी, मामाजी अथवा बहिनोय मरि गेलाह ? नहि ने ! कारण ? एकदम सही ! सहज आ सरल शब्द थिक मृत्यु, मरब, मरि जायब। किन्तु, मृतात्माक प्रति एहिसँ असम्मानक भाव प्रदर्शित होयत, तेँ एहन शब्दक व्यवहार नीक नहि होइछ। मृत व्यक्तिक प्रति आदर भाव व्यक्त करैत हमरालोकनि अधिक परिनिष्ठित शब्दमे कहैत छिऐक– फलाँ दिवंगत भऽ गेलाह। ओ स्वर्गवासी भऽ गेलाह/गेलीह। ओ मोक्ष प्राप्त कयलनि। ओ हमरासभकेँ छोड़िकऽ चल गेलाह/गेलीह। एहि प्रवृत्तिकेँ की कहल जायत ? भाषाविज्ञानमे एहि प्रकारक अभिव्यक्तिकेँ उदात्त कथन कहल जाइछ। एहिना, कोनो स्त्रीक विधवा भऽ

गेलापर– मुकुट उतरि गेलनि, सीथ उजड़ि गेलनि, सीथ धोआ गेलनि आदि शब्दक प्रयोग कयल जाइछ । अमंगलकारी घटनाकेँ अभिव्यक्त करबा लेल जे सहज शब्द, ताहिसँ फराक हँटिकऽ सुसंस्कृत शब्दक प्रयोग कयल जाइछ । एहिसँ मृत्यु, वैधव्य आदि अशुभ, अमंगल आ अप्रिय स्थितिकेँ शिष्ट एवं उदात्त रूपक अभिव्यक्ति देल जाइछ ।

अमंगलकारी घटना एवं तकर सूचक मूल शब्दसँ लोक ततेक भयभीत रहैत अछि जे ओकर उच्चारण करबासँ परहेज करैत अछि । मृत्यु, वैधव्य आदि सूचक शब्दकेँ वाणी देबाक कोन गप्प जे सोचबो नहि करैत अछि । एही कारणेँ कइएक सरल ओ सहज शब्दक स्थानपर उदात्त शब्दक प्रयोग कयल जाइछ, जाहिसँ अमंगलक भाव न्यून भऽ सकय । उदाहरणस्वरूप देखल जाय–

सामान्य शब्द	उदात्त शब्द
साप	हवा / बसात / जौड़
चेचक	मैया / माता / गोसाउनि
मृत्यु	देहान्त / निधन
सन्तानक मृत्यु	आँचर शून्य होयब / आँचर जरब
बाँझ	सुन्न कोखि / वसुधैव कुटुम्बकम्

एहन शब्दक सन्दर्भमे, विभिन्न भाषाक शब्दमे, अर्थ-परिवर्त्तन सेहो भऽ जाइत छैक, जकरा लक्ष्य कयल गेल अछि । स्त्रीक हाथक चूड़ी/लहठी फुटि गेनाइ सामान्य घटना थिक, किन्तु सधवा स्त्रीक लेल चूड़ी/लहठी फूटब शब्दक प्रयोग नहि कयल जाइछ । कारण, ई शब्द वैधव्य भावक अमंगल सूचक थिक । तेँ चूड़ी फुटनाइ नहि बाजल जाइछ । तहिना, दोकान बन्न करबाक स्थानपर दोकानक विस्तार, इजोत मिझौनाइ नहि बाजिकऽ इजोत तेज करब आदि उपयुक्त शब्द बुझल जाइछ । कतहु प्रस्थान करबा काल 'जाइत छी' नहि बाजल जाइछ, अपितु बाजल जाइछ– 'अबैत छी' ।

उदात्त कथन केवल अमंगले सूचक शब्दक प्रयोग करबासँ परहेज करबा लेल नहि कहल जाइछ, अपितु अभद्रता दूर करबा लेल सेहो कहल जाइछ । एहिसँ अभिव्यक्तिमे शिष्टता आबि जाइछ । सभ्य समाजमे, दस लोकक मध्यमे बैसल क्यो ई नहि बजैत अछि जे हम मूत्र त्याग करऽ जाइत छी । संकेतसूचक शब्दक प्रयोग कयल जाइत छैक, संकेतसँ निकासस्थलक विषयमे पुछल जाइत छैक । संकेतसूचक एक शब्द थिक लघुशंका । आ, लघुशंका निवृत्तिक प्रयोग करब शिष्टताक परिधिमे अबैत अछि । नेनाक सन्दर्भमे सेहो एहि स्थितिक विषयमे आने तरहेँ बाजल जाइछ । जेना– ओछाओन भिजा देलक... । एहि प्रसंग एकटा रोचक तथ्य ई अछि जे उदात्त कथन सेहो बहुप्रचलित भऽ गेलासँ अशोभनीय शब्द भऽ जाइछ । यथा 'पाखाना' शब्द सम्प्रति दीर्घशंका निवृत्तिक अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि। अर्थात् अभद्र शब्दक कोटिमे परिगणित होइत अछि । टट्टी शब्द मूलरूपसँ टाटसँ घेरल स्थलविशेषकेँ सूचित करैत छल । टट्टी गेनाइक अर्थ होइत छल टाटक अऽढ़मे दीर्घशंकाक निवृत्ति करब । सम्प्रति इहो शब्द अशोभन भऽ गेल अछि । मैथिलीमे बाड़ी गेनाइ, बाह्यभूमि, पोखरि दिस वा जलाशय दिस गेनाइ एवं 'डोलडाल' आदि शब्द नित्यक्रियासँ संबंधित अछि । बाड़ी ओ स्थान भेल जे टाटसँ घेरल रहैत अछि आ जतऽ महिलालोकनि नित्यक्रियासँ निवृत्ति हेतु जाइत छथि । तहिना, पुरुष पोखरि दिस, जलाशय दिस अथवा डोलडाल जाइत छथि । टाट शब्द संस्कृतक तट शब्दसँ निष्पन्न भेल अछि– तट > टट्टर > टट्टी > टाट । करची, बाँसक फट्ठी, खढ़ आदिसँ टाट बनाओल जाइछ, जे देबालक काज करैत अछि– खढ़क घरमे, फूसक घरमे । एवंप्रकारेँ शरीरक विभिन्न अंगकेँ इंगित करबा लेल हमरालोकनि उदात्त शब्द अथवा वैज्ञानिक शब्दावलीक प्रयोग करैत छी, जे बाजबा अथवा सुनबामे अशोभन नहि लगैत अछि ।

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर निर्दिष्ट खाली स्थानमे लिखू । किछु बोधप्रश्न, अभ्यासक उत्तर इकाइक अन्तमे देल गेल अछि । अपन उत्तरक मिलान कऽ लियऽ ।

1) शब्दक अर्थ कोना प्राप्त होइत अछि ?

....

....

....

....

....

2) भाषाक सामाजिक स्तरक भेदसँ अहाँ की बुझैत छी ?

....

....

....

....

....

अभ्यास 1

किछु शब्दावली निम्नलिखित अछि । एहि शब्दावलीक सोझाँमे देल गेल कोष्ठमे एहि शब्द लेल अपन क्षेत्रमे प्रयुक्त उदात्त कथन लिखू–

क) नदी फिरब ( )

ख) लगही करब ( )

ग) चूल्हि मिझायब ( )

घ) गोटी निकलब ( )

ङ) मरि जायब ( )

2.4 शब्दक विभिन्न स्रोत (शब्द-भंडार)

अपन भाषाक जे शब्दसभ अछि, से कोना बनल, कतऽसँ आयल, कोना आयल, एकर जिज्ञासा अहाँक मनमे होयब स्वाभाविक थिक । एहि सभ बातकेँ जानब आवश्यक अछि । देवभाषा संस्कृत मैथिली भाषाक मूल थिक । अतः संस्कृतक अनेक शब्द यथावत् व्यवहारमे अछि, जेना– बालक, जल, पर्वत, नदी, जलाशय आदि । किछु शब्द मैथिलीभाषी समाज द्वारा विकसित भेल अछि, जेना– कट, फरक, ओलती आदि । मैथिली भाषा उर्दूक माध्यमसँ अरबी-फारसीक शब्दसँ सेहो समृद्ध भेल अछि, यथा– मासुल, सलामी, साबिक, दसखत ।

ब्रिटिश शासनकालमे अनेकानेक अंग्रेजी शब्द मैथिली भाषामे समाहित ओ ग्राह्य भेल, जेना– लालटेन, पलाटफारम, कंटर, टेबुल, टाइ आदि-आदि । जेना एक नदीमे विभिन्न स्रोतसँ जल आबि एकाकार भऽ जाइत छैक आ नदीक विस्तार होइत छैक, तहिना विभिन्न स्रोतसँ,

आन-आन भाषाक शब्दसँ मैथिलीक भाषाभंडार समृद्ध भेल अछि । आगाँ हमसभ मैथिली भाषाक शब्दभंडारक स्रोतपर विचार-विमर्श करब ।

स्रोतक आधारपर मैथिली शब्दक चारि टा प्रमुख वर्ग अछि– तत्सम, तद्भव, देशज आ विदेशी ।

तत्सम

तत् माने भेल 'ओ' आ समक अर्थ भेल 'जकाँ' । तत्समक अर्थ भेल 'ओहने जकाँ', 'तेहने सन' । अर्थात् संस्कृतक मूल शब्दकेँ मैथिलीमे यथावत् ग्रहण कयल गेल, व्यवहारमे आनल गेल । अतः संस्कृतक ओ शब्द जे मूल रूपमे मैथिलीमे व्यवहृत होइत अछि, ओ थिक तत्सम शब्द; अर्थात् संस्कृतक समान शब्द । बालक, कन्या, पर्वत, जल, विद्यार्थी, मैत्री, व्यवस्था, प्रातः, सन्ध्या, क्षितिज, पावक, गगन, समीर आदि तत्सम शब्द थिक । एक बात आर एहि विषयमे ध्यान देबाक थिक जे संस्कृतक सभ शब्द यथावत् मैथिलीमे व्यवहृत नहि होइत अछि । बहुत शब्दमे परिवर्तन भेल अछि, जेना बालकः शब्दक विसर्ग मैथिलीमे प्रयुक्त नहि होइत अछि आ पुस्तकम् शब्दक 'म्' हटा देल गेल अछि । सभ तत्सम शब्द यथावत् प्रयुक्त नहि होइत अछि । उच्चारण सुविधा एवं मुख सौविध्यक अनुरूप शब्द व्यवहृत होइत अछि । इहो ध्यान देबाक थिक जे संस्कृतक तत्सम शब्दक जाहि चिह्नकेँ छोड़िकऽ मैथिलीमे व्यवहार कयल जाइछ, ओ वचन अथवा लिंगबोधक थिक । मैथिलीक व्याकरण संस्कृतसँ भिन्न अछि, तेँ मैथिलीमे संस्कृतक लिंग एवं वचनसूचक शब्दक प्रयोग गलत एवं अनुचित होयत । अतः लिंग ओ वचनसूचक चिह्नकेँ छोड़िकऽ तत्सम शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि । मैथिलीमे प्रयुक्त भेलापर तत्सम शब्दक अर्थमे परिवर्तन सेहो देखल जाइत अछि । यथा–

संस्कृत	मैथिली
आवेश	स्नेह
चेतन	वयस्क ।

तद्भव

तद् माने 'ओ' आ भव माने 'उत्पन्न होयब' । तदनुसार तद्भवक अर्थ भेल मूल संस्कृतसँ मैथिली भाषाक प्रकृतिमे परिवर्तित शब्द । अर्थात् शब्द तँ थिक मैथिलीक, मुदा ओकर मूल छैक संस्कृत ।

आधुनिक मैथिली प्राचीन शब्दक ऐतिहासिक क्रमसँ विकसित रूप थिक । यैह भेल तद्भव । तद्भव शब्द तँ थिक संस्कृत मूलक, किन्तु हू-ब-हू ताही रूपमे ग्राह्य आ प्रयुक्त नहि होइछ । ऐतिहासिक विकासक क्रममे प्रयुक्त शब्दक किछु उदाहरण देखू–

चक्र-चाक, भक्त-भात, सर्व-सभ, तैल-तेल, ज्येष्ठ-जेठ आदि ।

एही क्रममे संस्कृतसँ प्राकृत एवं पश्चात् मैथिली शब्द विकसित भेल अछि–

संस्कृत	प्राकृत	मैथिली
अस्ति	अत्थि	अछि, थिक
अपयश	अपयस	अपजस, अजस
आत्मनः	आप्पणो	अप्पन, अपन
कच्छपः	कच्छवः	कछुआ, काछु
अक्षि	अक्खि	आँखि
एकादश	एगारह	एगारह

अपूप	अपूअ	पूआ, पू
उद्घाटय	उग्घाड़	उघाड़
उपाध्याय	उब्बज्झाओ, ओज्झा	ओझा, झा
रश्मि	रस्सी	रस्सी, रासि
वर्तिका	बत्तिआ	बाती
पुष्करिणी	पोक्खरि	पोखरि
निष्ठुर	निट्ठुर	निठुर
लवणः	लवण	नोन
पुस्तक	पुत्थिआ, पुस्तिआ	पोथी
पत्र	पत्त	पात
प्रस्तर	पत्थर	पाथर
हस्त	हत्थ	हाथ
नृत्य	-	नाच
सत्य	-	साँच
सर्प	सप्प	साप

परिवर्त्तनक क्रममे मैथिलीक संग-संग अनेक आधुनिक भारतीय भाषाक शब्द बनल एवं ध्वनिसाम्यक अन्तर्गत एकसँ दोसर भाषामे ग्राह्य आ प्रयुक्त भेल । शब्दक परिवर्त्तित रूपे तद्भव थिक ।

देशज

देश + ज - देशज, अर्थात् देसी भाषाक शब्द । नितान्त अपन मैथिली भाषाक शब्द । देशज शब्दक स्रोत अज्ञात अछि । कोन मूलक थिक, कोना बनल, नहि कहल जा सकैत अछि । देशज शब्द ने तँ संस्कृत मूलक होइछ आ ने कोनो विदेशी शब्द अथवा अन्य भारतीय भाषापरिवारक । देशज शब्द मैथिली भाषाक अपन शब्द थिक, जकर प्रारम्भ आ प्रयोग मैथिलीये भाषाभाषी समाजमे भेल आ होइत अछि । उदाहरणस्वरूप किछु शब्द देखू– अलगी, अनढन, आहे-माहे, उङारब, उमकी, उनटन, उछन्नर, ओलती, औनापथारी, औनीपथारी, अङेजब, बकलेल, बङौर, कोठी, कठपिंगल, घुनेस, गोझनौट, छनाक, छजब, छछारब, बारिक, जलफाँफी, जथगर, झूस, झौहरि, टल्ली, टुनमुन, टनटनौआ, ठकमुरी, ठकुआयब, डिरिआयब, ढहलेल, तन्नुक, दकरब, धरखनाह, नट्टिन, पनिसोह, पचरी, पच्चर, पनपिआइ, परोपट्टा, फफरदलाल, फट्टक, बजन्ता, बंठा, बंठी, बहिङा, बरुका, बट्टा, भसम्मरि, भरदुलाहि, भङतराह, मसुआयल, मतरसुन्न, मधनोन, रकटल, लटारम्ह, लतखुरदनि, लठौअलि, लारूबातु, लोकनिआँ, सनसन, सहलोला, सतखेल, सनटिटही, सरदर, सघोरि, हबर-हबर, हड़ाशंख, हथोरिया प्रभृति ।

मैथिलीक देशज शब्दभंडार अत्यन्त समृद्ध अछि ।

विदेशी

विदेशी अथवा विदेशज शब्द, जेना नामेसँ स्पष्ट अछि, मैथिली भाषासँ भिन्न शब्द थिक जे बाह्य सम्पर्कक प्रभावमे ग्रहण कयल गेल अछि । अध्ययनमे सुविधाक दृष्टिकोणसँ अथवा नीक जेकाँ बुझबा लेल एकरा तीन भागमे विभक्त कयल जाइत अछि–

i) आर्यपरिवारक भाषाक शब्द–

मराठी– चालू, लागू

गुजराती– ढोकला

बांगला– गल्प

पंजाबी– मुंडा

ii) विदेशी भाषाक शब्द– एहि वर्गमे अनगिनत शब्द अछि । विदेशी भाषाक अधिकाधिक शब्दकेँ मैथिलीमे ग्रहण करबाक क्षमता छैक । ई क्षमता मैथिली भाषाक जीवंतताक लक्षण थिक । अरबी, फारसी, तुर्की, अंग्रेजी शब्द आदि। इस्लामी आ ब्रिटिश शासनकालमे एहि शब्दसभक आगम भेल । उदाहरणस्वरूप किछु शब्द प्रस्तुत अछि–

अरबी– गुनाह, तकदीर, तदबीर, फरिस्ता, ताबीज, गुलाम, कस्बा, किला, दफ्तर, अखबार, बगावत, हिरासत, मासुल, जंगला, लिआकत ।

फारसी– खुदा, खजांची, खोसामद, जमीन, सरकार, सिपारिस, अंगूर, आबाद, गुलाब, जिंजीर, जंगला, दरी, जाजिम, नमक, नाश्ता, परदा, प्याली, प्याला, मासुल ।

तुर्की– तोप, तमगा, बारुद, बंदूक, कुली, बेगम, बहादुर, लहास ।

अंग्रेजी– बस, बसइस्टाम, टेन, टिकस, टरक, लाटफारम, बोतल, टौर्च, किलास, इस्कूल, कओलेज, आपिस, टेबुल, आलमारी, कोरीडोर, कप-पलेट, पेन, बुसट, टीसट, बेल्ट, पर्स, डाकदर, कम्पोटर, नर्स, डरेवर, टोनी, (टॉनिक), प्रिंसपल, सिकरेट, पिलसिम (पेंशन), बिरिंच, सैड (साइड), बलोक ।

फ्रांसिसी एवं जापानी भाषाक शब्द सेहो मैथिलीमे प्रयुक्त होइत अछि । मैथिलीभाषी क्षेत्रकेँ एहि भाषाभाषीसँ प्रत्यक्ष सम्पर्क-सम्बन्ध नहि छलैक, तेँ एहि दुनू भाषाक शब्द अंग्रजीक माध्यमसँ आयल । ब्रिटिशसँ पहिने पुर्तगाली भारत आयल छल । अतः पुर्तगाली भाषाक कतिपय शब्द सेहो मैथिलीमे प्रयुक्त होइत अछि, जे अन्य भारतीय भाषाक माध्यमसे मैथिलीमे आयल अछि–

पुर्तगाली– गिरजा, पादरी, काजू, चाभी, बिस्कुट, कमीज, तौलिआ ।

फ्रांसिसी शब्द– रेस्टोरेंट, कूपन, कारतूल ।

जापानी– रक्सा (रिक्सा)।

विदेशी भाषासँ शब्द ग्रहण करबाक प्रक्रिया निरन्तर चालू रहैत छैक । सम्प्रति हमरालोकनि नव विज्ञान / शासन / तंत्रकेँ मूल शब्दक संग ग्रहण करैत छी आ तकर यथावत् प्रयोग करैत छी । एहिसँ भाषा समृद्ध होइछ, जीवन्त रहैछ, जे पूर्वहुँ हमसभ पढ़लहुँ अछि–

स्पुतनिक, सौफ्टवेयर, हार्डवेयर, प्रिंटर, प्रिंटआउट, नैनो टेक्नोलौजी ।

अभ्यास 2

किछु तद्भव शब्द निम्नलिखित अछि, तकर तत्सम रूप अहाँकेँ लिखबाक अछि । शब्दकोशक सहायतासँ अहाँ एहि अभ्यासकेँ पूरा कऽ सकैत छी–

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
पानि		खेत	
आठ		मनुक्ख	
गप्प		जीह	
सोन		बूढ़	
चानी		भात	
घैल		दालि	
चाक		दही	

अभ्यास 3

निम्नांकित शब्दक सोझाँमे कोष्ठक देल अछि । कोष्ठमे ओहि भाषाक नाम लिखू जाहि भाषासँ निम्नांकित शब्द मैथिलीमे आयल अछि–

संगीत	( )	हवालात	( )
दर्शन	( )	बिस्कुट	( )
तोप	( )	पादरी	( )
तगमा	( )	टिकस	( )
लहास	( )	मासुल	( )
नोन	( )	जाजिम	( )

2.5 शब्दक अर्थपक्ष

कोनो भाषाक शब्द अर्थक वाहक थिक । मैथिली शब्द सेहो अर्थकेँ अभिव्यक्त करैत अछि । शब्दक माध्यमसँ हम अपन मनमे निहित अर्थ-भावकेँ प्रकट करैत छी । शब्द आ अर्थक सम्बन्ध तरुआरि आ म्यान जकाँ नहि अछि। अर्थात् जेना तरुआरि म्यानमे राखल जाइत अछि अथवा म्यान तरुआरिये टा रखबाक जगह थिक, तेना एक शब्द एकेटा अर्थकेँ अभिव्यक्त नहि करैत अछि । एक शब्दक अनेक अर्थ होइत छैक तथा दू-तीन भिन्न-भिन्न शब्दक एके टा अर्थ सेहो होइत छैक । अर्थविज्ञानमे भाषाक अर्थपक्षक हमरालोकनि अध्ययन करैत छी । शब्द ओ अर्थक सम्बन्धपर विचार करबा लेल एकरा पाँच वर्गमे विभाजित कयल जा सकैत अछि; जे निम्नलिखित अछि–

i) समरूपी शब्द (Homonym)

पर- ऊपर, पाँखि

कल- पुर्जा, चैन

मगर- किन्तु, एक जलीय जानवर

तकर कारण छैक जे भिन्न-भिन्न स्रोतसँ आबऽवला शब्द अथवा बनऽवला शब्दक उच्चारणसाम्य, अर्थात् एके रंग उच्चारण । एकरा आर नीक जकाँ फरिछयबा लेल निम्नांकित किछु शब्द अछि–

मेल- मित्रता, मैत्री

मेल (Mail)- मेलगाड़ी, डाक

मेल (Male) -	पुरुष
पय-	पेय पदार्थ
पय-	दूध
आम-	फल
आम-	सार्वजनिक
आम-	जनसामान्य
वेद-	विद्या
वेद-	सभसँ प्राचीन ग्रन्थक नाम, चारू वेद
पानि-	जल
पानि-	चमक
पानि-	इज्जति
धान्य-	धान
धान्य-	अन्न

ii) पर्यायवाची शब्द (Synonym)

समान अर्थबोधक शब्दकेँ पर्यायवाची कहल जाइछ । व्याकरणक भाषामे पर्यायवाची शब्द अहाँसभकेँ बुझल होयत । पर्यायवाची शब्दक नमूना निम्नांकित अछि–

रानी	-	साम्राज्ञी, मलिका, बेगम
राजा	-	नरेश, नृपति, बादशाह
सूरज	-	सूर्य, भानु, दिवाकर, आदित्य, रवि, मित्र
चान	-	चन्द्र, चन्द्रमा, राकेश, रजनीकान्त
कमल	-	पंकज, नीरज, राजीव, पद्म, सरसिज
कुल	-	वंश, खानदान, जाति, कुटुम्ब, समस्त
जीव	-	जान, प्राण, आत्मा, मनुक्ख, देहधारी
झूठ	-	असत्य, मिथ्या, निस्सार, फूसि
फूल	-	पुष्प, कुसुम, प्रसून, सुमन

मनमे कहियो ई विचार आयल अछि जे एके वस्तुक लेल एतेक शब्द कोना बनल ? कतऽसँ आयल ? प्रत्येक शब्दक प्रयोग प्रत्येक अर्थमे समान रूपेँ कऽ सकैत छी ?... आदि-आदि ।

विद्वानक कथन छनि जे भाषामे वस्तुत: पर्याय नहि होइत अछि । प्रत्येक शब्दक अपन विशिष्ट अर्थ होइत छैक आ ओ ओही अर्थमे अभिव्यक्त होइत छैक । सूर्यास्त भऽ गेल अथवा सूर्योदय भऽ गेल, एना बाजल जाइत अछि। दिवाकर अस्त भऽ गेल अथवा रविक उदय भऽ गेल- एना नहि बाजल जाइछ । बोलचालक भाषामे हमसभ प्राय: एके शब्दक व्यवहार करैत छी, अन्य शब्द शैलीगत होइछ अथवा साहित्यिक । साहित्यकार अपन रचनाक सौन्दर्यक वृद्धि लेल आन पर्यायवाची शब्दसभक प्रयोग करैत छथि । एहि दृष्टिकोणसँ मैथिलीमे सूर्य, सूरुज दुनू सामान्य वार्तालापक शब्द थिक । वक्ता अपन सुविधानुसार शब्दक चयन करैत छथि ।

केओ सूरुज बजैत छथि तँ केओ सूर्य । एक व्यक्ति लेल दुनू पर्याय नहि होइछ । कतहु-कतहु दू-तीन टा शब्द एकहि अर्थक द्योतक देखल जाइत अछि । तथापि, प्रयोग करबा काल अन्तर रहैत छैक । एहि स्थितिमे दुनू शब्द एक दोसरक पूरक **(Complimentary)** होइछ। उदाहरणार्थ घर आ गृह दुनू एके अर्थक बोधक थिक, किन्तु दुनूक प्रयोगमे भिन्नता छैक । आगाँ घर आ गृह शब्दक प्रयोगमूलक अन्तर स्पष्ट कयल गेल अछि, तकरा ध्यानसँ देखू–

'घर जाइत छी'क स्थानपर 'गृह जाइत छी'क प्रयोग नहि कयल जाइछ ।

'गृह प्रवेश' होइछ, 'घर प्रवेश' नहि ।

'गृहस्थ' होइछ, 'घरस्थ' नहि ।

'गिरहतनी' होइछ, 'घरतनी' नहि ।

'घर बसायब' होइछ, 'गृह बसायब' नहि ।

'घर उजड़ब' होइछ, 'गृह उजड़ब' नहि ।

एकर आर प्रयोग देखू– घर छोड़ब, गृहकलह, गृहलाभ, गृहत्याग ।

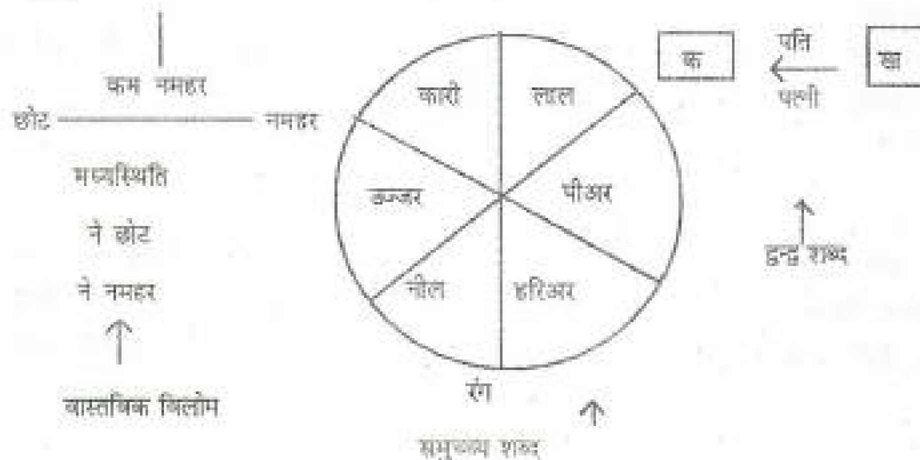
शैलीक दृष्टिसँ सेहो पर्यायविशेषक महत्त्व अछि । उर्दू शैलीमे 'सूरत'क तुलना मेहताबसँ कयल जयतैक एवं मैथिलीमे मुँहक तुलना चन्द्रमासँ कयल जयतैक । नूरजहाँ मलिका कहौतीह आ सीता महारानी । महारानी नूरजहाँ आ मलिका सीता शब्दक प्रयोग नहि होयत । शैलीगत एहि विशिष्टताक सन्दर्भमे आगाँ फैलसँ चर्चा होयत ।

iii) विलोम (Antonym)

जेना एक अर्थवला शब्दकेँ पर्याय कहल जाइछ, तहिना विपरीत वा विरोधी अर्थबोधक शब्दकेँ विलोमार्थी अथवा विपरीतार्थक शब्द कहल जाइछ । यथा– छोट-पैघ, सर्द-गर्म, नीक-अधलाह, धनिक-गरीब, झूठ-साँच, आगाँ-पाछाँ, ऊपर-नीचाँ, बाम-दहिन आदि ।

तँ की अम्मत-मीठ, लाल-हरियर, कारी-पीअर, सुरसुर-मुरमुर सेहो विलोमार्थी शब्दक कोटिमे परिगणित होयत ? नहि । वस्तुतः ई शब्दसभ फराक-फराक स्वाद आ रंगकेँ अभिप्रेत करैत अछि, जाहिमे एक शब्द दोसर शब्दक पूरक थिक, विरोधी नहि । रंगकेँ सूचित करैत अथवा अर्थबोध करबैत शब्दक अपन-अपन अर्थ-क्षेत्र छैक, जाहिमे लालक विलोम हरिअर नहि, कारीक विलोम पीअर नहि भऽ सकैछ । पति-पत्नी शब्द विपरीतार्थक अर्थबोध करबैत अछि, किन्तु ई दुनू शब्द पति-पत्नीक पारस्परिक सम्बन्धक बोध करबैत अछि । यदि 'क' 'ख'क पति अछि तऽ 'ख' 'क'क पत्नी । एकरा द्वन्द्ववाचक शब्द कहि सकैत छी ।

रेखांकन द्वारा तीन प्रकारक सम्बन्धकेँ फरिछाओल गेल अछि–



iv) अनेकार्थी शब्द (Polyremy)

किछु शब्द कैक अर्थमे प्रयुक्त होइत छैक, से तँ बुझिते होयब । अहाँ शब्दकोशमे देखने होयबैक जे एक शब्दक अनेक अर्थ देल गेल रहैत छैक । किछु शब्द उदाहरणस्वरूप देखू–

अवस्था–	वयस, हालति, स्थिति
मामिला–	बात, मोकदमा
ध्यान–	स्मरण, एकाग्र, मनोयोग, विचार, बुद्धि
बाट–	रास्ता, बटिखरा

अनेकार्थकेँ बुझबा लेल कनेक सचेष्ट होयबाक आवश्यकता छैक । तेँ समरूपक शब्द आ अनेकार्थी शब्दक अन्तरकेँ नीक जकाँ बूझऽ पड़त । सम्बद्ध अर्थकेँ उचित सन्दर्भमे अभिव्यक्त करऽ पड़त ।

हाथ, आँखि, दिमाग आदि मानवीय अंग थिक, जीवित प्राणीक अंग थिक, किन्तु कानूनक हाथ, दिमागी घोड़ा, आँखिसँ गप आदि प्रयोग ओहि शब्दक अनेकार्थी प्रकृतिकेँ स्पष्ट करैत अछि । विद्वान द्वारा एवं साहित्यमे एकरा मुहाबिरायुक्त प्रयोग कहल जाइछ । मुहाबिरा सेहो अनेकार्थक एक रूप थिक । मुहाबिराक प्रयोगक विषयमे अहाँ आगाँ पढ़ब । व्याकरणमे एकरा लक्ष्यार्थ कहल जाइत छैक । (द्रष्टव्य उपभाग 2.8) ।

अनेकार्थताक एकटा आर महत्त्वपूर्ण पक्ष होइत छैक– अर्थ-विस्तार । आधुनिक युगमे नव-नव विचारकेँ व्यक्त करबा लेल हम पुरान शब्दक व्यवहार करैत छी, एहि प्रकारेँ अर्थक विस्तार होइत छैक । उदाहरणस्वरूप एकटा शब्द लियऽ– पर्दा । पर्दाक पुरान अर्थ भेल झाँपन-ओहार, आ नव अर्थ भेल सिनेमाक पर्दा, टी.भी.क पर्दा । तहिना घड़ीक सूइ, संदेहक सूइ, शेयर बजार, सर्राफा बाजार, देहव्यापार, अंगव्यापार आदि ।

v) सहप्रयोग (Collocation)

हमरासभकेँ बुझल अछि जे एक शब्द दोसरसँ सम्बद्ध होइछ, एक दोसरपर आश्रित रहैत छैक । अर्थक दृष्टिसँ हत्या शब्द बाजलापर पुलिस, गिरफ्तार, अदालत, सजाय आदि शब्द एक संग ध्यानमे आबि जाइत अछि । रेगिस्तान बाजलासँ गर्म बालुक प्रदेश, ऊँट, नखलिस्तान (oasis) आदि शब्द दिमागमे अबैत अछि । अत: एक शब्दक अर्थकेँ स्पष्ट करबाक हेतु सहप्रयोगी अन्य शब्दक उपयोग कयल जाइत छैक । तेँ कोनो नव शब्दकेँ सिखबाक संगहि हमरालोकनि लेल अन्य समक्षेत्रीय-सहयोगी शब्दकेँ सिखब आवश्यक अछि ।

शैलीक दृष्टिकोणसँ सेहो सहप्रयोगक महत्त्व छैक । सामान्यतया शमा आ परवाना दुनू शब्द एकसंग प्रयुक्त होइत छैक । दीप-परवाना, शमा-कीट, एना शब्द प्रयोग नहि कयल जाइछ । सामान्य वार्तालापमे हमसभ 'हाथक काज' बजैत छी आ बाजब । 'हस्तक कला' नहि बाजल जाइछ । साहित्यिक आ पारिभाषिक शब्दावलीमे हस्तकला, हृदयगति, रक्तचाप, कुटीर उद्योग, विद्युत् ऊर्जा, पनिबिजली, पवनचक्की प्रयुक्त होइछ ने कि हाथक काज, छातीक गति, शोणित चाप, झोपड़ी उद्योग, बिजली ऊर्जा, जलबिजली, हवाचक्की प्रयुक्त होयत ।

भाषाक सही प्रयोगक लेल आवश्यक अछि जे हमसभ सहप्रयोगक दोषसँ बाँची । अपन शब्दावलीक विस्तारक हेतु हमरालोकनिकेँ शब्दक सहप्रयोगक अधिकसँ अधिक अभ्यास करबाक चाही । सम्बद्ध शब्दक व्यवहार अत्यन्त सावधानीपूर्वक करबाक चाही ।

अभ्यास 4

1) निम्नलिखित शब्दक दू-दू टा अर्थ छैक । दुनू अर्थक द्योतके चीन्हू आ दुनू अर्थ लिखू । द्योतक लेल शब्दकोशक मदति लऽ सकैत छी–

	आला	बिल	केस	ताल	पाक	मेल
क	–	–	–	–	–	–
ख	–	–	–	–	–	–

अभ्यास 5

निम्नांकित शब्दसभक तीन-तीन टा पर्याय लिखू–

कमल

पोखरि

राति

मेघ

समुद्र

खाट

प्रगति

ज्वर

खिस्सा

गढ़नि

2.6 शब्द-निर्माण

भाषाक शब्द कोना बनैत छैक ? अधिकाधिक शब्द कोना बनाओल जाइछ ? व्यवहारमे शब्दरचनामे काट-छाँट, जोड़-तोड़ चलैत रहैत छैक । शब्दक नव गढ़नि होइत जाइत छैक आ नव-नव अर्थ विकसित होइत रहैत छैक । किछु पुरान शब्द विलुप्त भऽ जाइत छैक तँ किछु नव शब्द व्यवहारमे आबि जाइत छैक । एहि दृष्टिकोणसँ विचार करब तँ बूझब जे भाषा सामाजिक सम्पत्ति थिक । शब्दक विकास समाजक विकाससँ जुड़ल छैक । भाषाके व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करबामे व्याकरणक भूमिका महत्वपूर्ण छैक । भाषामे प्रयुक्त शब्दक निर्माण व्याकरणक नियमक अनुसारे होइत छैक । अत: शब्द-निर्माणक प्रक्रियाके बुझबासँ पूर्व हमरालोकनिके शब्दरचनापर विचार करब अपेक्षित अछि ।

भाषाक बहुत थोड़ शब्द अपन मूल रूपमे व्यवहृत होइत अछि । भाषाक माध्यमे मूल शब्दसँ कइएक नव शब्द बनैत छैक । जेना– नेना मूल शब्द भेल । एहिसँ बनल नेनपन, नेनमति, जे अवस्थाविशेषके सूचित करैत अछि । नेनपन, नेनमति नेनासँ व्युत्पन्न **(derived)** शब्द थिक । नेना + पन = नेनपन, नेना + मति = नेनमति । 'पन' आ 'पनी' प्रत्यय भेल जे अवस्थासूचक अर्थबोध करबैत अछि । एहि दृष्टिसँ अन्य उदाहरण देखू–

चारिमपन

ढिठपनी

धरकटपनी

करब, करू, कयल, कयलनि, कयलहुँ आदि क्रियारूप व्युत्पन्न शब्द थिक। एक मूल धातुसँ अनेकशः शब्दक व्युत्पत्ति होइछ । मूल शब्दमे प्रत्यय (surfixes) जोड़लासँ शब्द बनैत छैक । सहायता पयबाक स्थितिकेँ सहायतापन कहल जा सकैछ अछि ? अथवा भूख लागलापर भूखपन कहि सकैत छी ? नहि ने । अहाँसभकेँ स्वतः बुझल अछि जे ई दुनू शब्द गलत अछि । अवस्था अथवा स्थिति सूचित करबा लेल प्रत्येक जगह 'पन' प्रत्यय लगायब उचित नहि थिक । 'पन'क अतिरिक्त मैथिलीमे अवस्था सूचित करबाक लेल री (बुढ़ारी), पा (बुढ़ापा), त्व (मनुष्यत्व, नारीत्व, निजत्व) आदि प्रत्यय सेहो अछि । प्रत्येक भाषाभाषी समुदाये ई तय करैत अछि जे कोन प्रत्यय कोन मूल शब्दक संग उपयुक्त होयत । एवंप्रकारेँ शब्द-निर्माणक ई प्रक्रिया समाज द्वारा नियंत्रित होइत अछि । प्रत्यय द्वारा अर्थविस्तारो कयल जाइत छैक । प्रत्यय संज्ञासँ संज्ञा, संज्ञासँ विशेषण, विशेषणसँ संज्ञा आदि शब्दक निर्माणमे काज करैत अछि । जखन प्रत्ययक प्रयोग कयल जाइछ तँ कौखन मूल शब्दमे परिवर्त्तन सेहो भऽ जाइत छैक । यथा– घोड़दौड़ । एहिठाम घोड़ा 'घोड़' भऽ गेलैक अछि ।

शब्दक अन्तमे प्रत्यय लगैत अछि । शब्दक आदिमे जे लगैत अछि तकरा उपसर्ग कहल जाइछ । उपसर्ग लगलासँ अर्थ-परिवर्तन भऽ जाइछ । उदाहरणार्थ शब्द अछि– हार । एकर अर्थ होइछ माला । एहिमे 'प्र' उपसर्ग लागि जायत तँ प्रहार भऽ जायत, जकर अर्थ आक्रमण होयत । 'वि' उपसर्ग लगलासँ विहार होयत, जकर अर्थ आनन्ददायक भ्रमण होयत । 'उप' उपसर्ग लगने उपहार भऽ जायत, जकर अर्थ भेंट अथवा सनेस होयत । 'आ' उपसर्ग लगलासँ आहार भऽ जायत, जकर अर्थ भोजन (खोराकी) होयत । तहिना, अ + कारण, बे + रहम, ना + पसिन । अ, बे, ना आदि विलोमार्थी सूचक शब्द थिक, जे शब्दसँ पूर्व प्रयुक्त होइछ । शब्द-रचनाक सन्दर्भमे हमसभ देखलहुँ जे मूल शब्दक संग उपसर्ग तथा प्रत्यय लगौलासँ नव शब्द बनाओल जा सकैत छैक । प्रत्येक भाषाभाषी समुदाय एहि प्रक्रियाक माध्यमसँ नव शब्द गढ़ैत अछि । मैथिलीमे सेहो एहि प्रक्रियासँ नव शब्द बनैत अछि, जकर दृष्टान्त अहाँ देखलहुँ । प्रत्येक युगमे नव-नव विचारकेँ प्रकट करबा लेल नव शब्दक निर्माण होइत रहल छैक । तहिना आधुनिक युगमे सेहो तकर प्रयोजन छैक आ आवश्यकताक अनुरूप नव शब्द बनि रहल छैक । राष्ट्र शब्दक प्रयोग भेल तँ ओहिसँ राष्ट्रीय, अराष्ट्रीय, राष्ट्रीयकृत, राष्ट्रीयकरण आदि शब्द बनल एवं तदनुरूप अर्थ-भावक अभिव्यक्ति कयल गेल । ई काज आब योजनाबद्ध ढंगसँ नवगठित संस्थासभ द्वारा सम्पन्न कराओल जा रहल अछि, जाहिसँ समन्वित रूपेँ सभ प्रयोजनीय शब्दक भाषाक प्रकृति, एकरूपता आदिकेँ ध्यानमे राखल जा सकय । नव-नव शब्दक निर्माण हेतु 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' छैक, जे केन्द्रीय मानव संसाधन विभागक एक संस्था थिक । ई संस्था विविध विषयक विद्वानक सहायतासँ नव-नव शब्दक निर्माण करैत अछि आ शब्दकोशक रूपमे एकरा प्रकाशित करैत अछि। शब्दनिर्माण लेल अधिकांशतः संस्कृतक आश्रय लेल जाइछ, किएक तँ संस्कृतमे शब्द गढ़बाक अपार क्षमता छैक। संस्कृत मूल भाषा थिक । उदाहरण लेल 'आयोग' शब्द लऽ सकैत छी । ई अंग्रेजीक 'कमीशन' शब्दक वाचक थिक, किन्तु एहि अर्थमे ई संस्कृतमे प्रचलित नहि अछि । संस्कृतमे योग, संयोग, नियोग आदि शब्द तँ छैक, आयोग नहि छैक । 'कमीशन' शब्दक लेल 'आयोग' शब्द गढ़ल गेल आ एही अर्थमे ई शब्द प्रचलनमे अछि । सर्वथा उपयुक्त ओ संगत थिक 'आयोग' शब्द 'कमीशन' लेल । कोनो शब्दक विभिन्न सम्बद्ध शब्द बनयबा लेल सेहो संस्कृते भाषाक आधार लेल जाइछ । उदाहरणार्थ निम्नांकित शब्दकेँ देखू–

कमिश्नर – आयुक्त

डिप्टी कमिश्नर – उपायुक्त

हाइ कमिश्नर – उच्चायुक्त

हाइ कमीशन – उच्चायोग

नौलेज कमीशन - ज्ञान आयोग

मार्केटिंग - विपणन

मार्केटिंग बोर्ड - विपणन परिषद्

शब्दावली निर्माणक हेतु आयोग द्वारा कतिपय मूलभूत सिद्धान्त निर्धारित कयल गेल अछि, जाहिसँ खाली संस्कृतेसँ नहि, अपितु अन्य भाषाक प्रचलित शब्दकेँ सेहो शब्दभंडारमे सम्मिलित कयल जाय एवं अधिकसँ अधिक व्यावहारिक एवं प्रामाणिक बनाओल जाय । एहि सन्दर्भमे आयोग द्वारा घोषणा कयल गेल अछि जे पहिने प्रचलित शब्दकेँ ग्रहण कयल जाय, चाहे ओ कोनो भाषाक हो । एहि दृष्टिसँ मिसील, मसौदा, वाइरस, प्रोटीन आदि शब्द शब्दावलीमे सम्मिलित छैक, जे मैथिलीमे सेहो प्रचलित अछि । तत्पश्चात् अन्य भारतीय भाषाक प्रचलित शब्दकेँ सम्मिलित करबाक प्रावधान छैक । प्रचलित शब्दक अभावमे संस्कृतक आधारपर नव शब्द निर्मित कयल जयतैक । इहो प्रावधान छैक जे अन्तरराष्ट्रीय शब्दकेँ यथावत् स्वीकार कयल जाय आ प्रत्येक नव शब्द लेल नवे शब्द गढ़बापर जोर नहि देल जाय। एहि दृष्टिसँ मैथिलीमे प्रचलित शब्द न्युट्रौन, कार्बन, टरबाइन, कैलसियम, बी-कम्प्लेक्स आदि मूलरूपमे ग्रहण कयल गेल अछि । एहि संदर्भमे एक रोचक उदाहरण अछि– ऑक्सीजन । यद्यपि एकर सर्वाधिक उपयुक्त एवं जीवन्त शब्द मैथिलीमे अछि– प्राणवायु, तथापि ऑक्सीजन शब्द सैह प्रचलित अछि । ऑक्सीजनसँ सम्बद्ध शब्द बनयबा लेल प्राणवायु उपयुक्त नहि मानल गेल, तेँ ऑक्सीजन सैह प्रचलित एवं स्वीकृत रहल ।

ऑक्सजीनसँ– ऑक्सीकृत, ऑक्सीकरण, ऑक्साइड आदि सम्बद्ध शब्द बनल अछि । एहि दृष्टिसँ शब्दावली निर्माणमे कोनो प्रकारक पूर्वाग्रह नहि राखल गेल अछि । प्रयोक्ता एवं साधारण जनक व्यावहारिक सुविधाकेँ विशेष रूपसँ ध्यानमे राखल गेल अछि ।

2.7 शब्द-रचना

एहि खण्डमे अहाँ शब्द-रचनाक विषयमे पढ़ब । शब्द दू प्रकारक होइछ–

1) **मूल शब्द :** ओ शब्द जकर खण्ड नहि कयल जा सकैछ– पानि, लोटा, बाटी, गाड़ी, घोड़ा, ढोल, डोरी, कबडी, गेन, बरफ, ढक्कन आदि ।

2) **व्युत्पन्न शब्द :** ओहन शब्द जे मूल शब्दमे प्रत्यय लगौलासँ अथवा अन्य शब्द लगौलासँ बनैत अछि आ मूल शब्दकेँ अर्थविस्तार दैछ–

उपसर्ग–	दिन	सुदिन	धिन	निर्धिन
	चैन	बेचैन	गर	कुगर
	कल	बेकल	दिन	कुदिन
	गंध	सुगंध	अन्न	सुअन्न
	मन	सुमन	मन	कुमन
प्रत्यय–	चल	चलता	एक	एकता
	नव	नवता	देव	देवता
	प्रभु	प्रभुता	सम	समता

एहि प्रसंग हम आगाँ आर अधिक उपसर्गक चर्चा करब ।

संस्कृतक उपसर्ग

अति (अधिक) अतिवृष्टि, अधि (ऊपर) अधिभार, अनु (पाछाँ) अनुगमन, अप (अधलाह) अपयश, अव (अधलाह) अवगुण, अभि (सुन्दर) अभिनव, अभिषेक, आ (अपन दिस) आगमन, दुः (अधलाह) दुर्दिन, निः (बिनु) निर्भय, परा (उनटा) पराजय, परि (चारू दिस) परिपूर्ण, प्र (बेसी आगाँ) प्रगति, प्रति (उनटा) प्रतिपक्ष, वि (विशिष्ट) विज्ञान, सं (नीक) संयोग, सु (नीक) सुपुत्र, कु (अधलाह) कुपुत्र आदि मैथिलीमे यथावत् प्रयुक्त होइछ । किछु शब्द सेहो उपसर्ग जेकाँ प्रयुक्त होइछ– अधः (अधोगति), चिर (चिरकाल), पुरा (पुरातत्त्व), पुनः (पुनर्जन्म), सह (सहगामी), स्व (स्वजन) आदि ।

अरबी-फारसीक उपसर्ग

ना (नहि) नापसिन, नचार, बे (नहि) बेचारा, ब (सहित) बखूबी, बे (बिना) बेमिसाल । किछु शब्द उपसर्ग जेकाँ व्यवहृत होइछ– कम, हर, हम, बद– कमसिन, हरदम, हमउम्र, बदनाम । फारसीक उपसर्गसँ युक्त शब्द– ताजिनगी, दरअसल, बाकायदा, बकलमखास ।

कर्त्तासूचक प्रत्यय : आर– सोनार, लोहार । हारा– लकड़िहारा, चुड़िहारा । बाज– धोखेबाज, दगाबाज, कलाबाज । गर– जादूगर, कारीगर । वला– माछवला, फलवला, दूधवला । अक– पाठक, गायक, मारक, तारक, धारक । इआ– भनसिआ ।

भाववाचक प्रत्यय : इ– लम्बाइ, चौड़ाइ, मिठाइ, ढिठाइ । आजी– कलाबाजी । अरी– जादूगरी ।

विशेषण सूचक : दार– मालदार, धारदार, असरिदार । कर– भयंकर, चाकर, जाकर । गर– मोटगर, पातरगर, नमगर, चौड़गर, अन्हरगर, दहिगर । कारी– आज्ञाकारी, परोपकारी, पैकारी । द– दुखद, सुखद, शुभद । दायी– दुखदायी, सुखदायी, शुभदायी ।

लघुतासूचक प्रत्यय : डिब्बा-डिबिया, छिट्टा-छिट्टी, बट्टा-बाटी, गिलास-गिलसी, लोटा-लोटकी, पहाड़-पहाड़ी, नद-नदी, रोट-रोटी ।

लिंगसूचक प्रत्यय : ई– माछवाली, फलवाली, दूधवाली । इन– मलाहिन, सोनारिन, पहाड़िन । इका– अध्यापिका, गायिका, बालिका, नायिका ।

सामासिक शब्द

व्युत्पन्न शब्दक दोसर प्रकार ओ थिक जाहिमे ई शब्द मिलल रहैत छैक । एहि ढंगसँ बनल शब्दकेँ समस्त पद अथवा सामासिक शब्द कहल जाइछ । शब्द-निर्माणमे प्रत्यये जेकाँ समास रचनाक सेहो विशेष महत्त्व छैक । एहिठाम हमरा समासक विस्तृत विश्लेषण नहि करबाक अछि । समास स्वतः बड़ पैघ आ विस्तृत विषय थिक । एहिठाम मात्र तीन गोट प्रमुख समासक चर्चा करब–

1) **तत्पुरुष समास**– तत्पुरुष समासमे समस्त पदमे उत्तर पद प्रधान रहैछ, अर्थात् दू शब्दक मध्य कारकक सम्बन्ध निहित रहैछ, यथा–

   पनिबट, पनिघट, पाठशाला, राजपुत्र, गृहप्रवेश, देशभक्त, तपोवन, विद्यार्थी, कष्टसाध्य, दानवीर, धर्मवीर ।

2. **द्वन्द्व समास**– जाहि समस्त पदमे दुनू पद प्रधान रहय से भेल द्वन्द्व समास, अर्थात् दुनू शब्द एक भऽकऽ अर्थ प्रकट करैत अछि । एकर दू भेद अछि–

   इतरेतर द्वन्द्व एवं समाहार द्वन्द्व

i) इतरेतर द्वन्द्व– हाथी-घोड़ा, दालि-भात, गाय-बड़द, पाप-पुण्य, हारि-जीत, माय-बाप, लोटा-डोरी, साग-पात ।

ii) समाहार द्वन्द्व– पाणिपाद, पोथीपतरा ।

3) **बहुव्रीहि समास**– बहुव्रीहि समासक समस्त पदमे कोनो एक पद प्रधान नहि होइत छैक । अर्थात् समस्त पदसँ एक विशेष ओ विस्तृत अर्थ प्रकट होइत छैक । उदाहरणस्वरूप देखू–

पीताम्बर– पीत + अम्बर = ओ जनिक बस्त्र पीयर छनि, अर्थात् विष्णु ।

वीणापाणि– वीणा + पाणि = जनिक हाथमे वीणा छनि, अर्थात् सरस्वती ।

तहिना चतुर्भुज, षडानन, जितेन्द्रिय, चंद्रवदन, चन्द्रानन, त्रिनयन ।

प्रतिबिम्बित शब्द (Echo words)

कल्पना करू जे अहाँ बस अथवा ट्रेनसँ यात्रा कऽ रहल छी । अहाँक सहयात्री हड़बड़ायल-घबड़ायल सन मुद्रामे अपन जेबी टोबि रहल छथि– ऊपर-नीचाँ हँसोथि रहल छथि । अहाँ अवश्य हुनका पुछबनि– टका-तका हेरा गेल की ? एतऽ 'तका' शब्दक अर्थ किछु नहि छैक । अहाँक पुछबाक भाव अछि टाकाक संग किछु आर तँ ने हेरा गेल ? घरमे दरमाहा लऽकऽ अयलापर 'टाका'क संग 'ताका'क पुछारि नहि कयल जायत, आ ने तँ 'दरमाहाक संग 'तरमाहा'क गप्प होयत । एहन शब्दकेँ प्रतिबिम्बित शब्द कहल जाइछ । उदाहरणस्वरूप किछु शब्द देखू– कोनो काज-ताज करैत छी की नहि ? कोनो जोगाड़-तोगाड़ धराउ ।

चाह-ताह, पानि-तानि, पान-तान, भूजा-भरी, मोल-जोल, तरुआ-फरुआ, दिन-तिन, बखरा-तखरा ।

पुनरुक्त शब्दक रचना सोझ छैक । एकर पहिल शब्द मात्र सार्थक होइत छैक, दोसर ध्वनि-प्रतिबिम्ब मूल शब्दक पहिल व्यंजनक स्थानपर 'त', एवं अन्यो शब्द लगाकऽ बना लियऽ ध्वनि प्रतिबिम्बात्मक शब्द । दोसर कोटिक पुनरुक्त शब्दक उदाहरण सेहो देखू–

देखि-दाखिकऽ

मोड़ि-माड़िकऽ

काटि-कूटिकऽ

बान्हि-बुन्हिकऽ

क्रियाक एहि शब्दसमक ध्वनि प्रतिबिम्बात्मक कोना सहजतासँ बनि जाइत छैक, से देखलहुँ । एहन-एहन आर रोचक उदाहरण अहाँ ताकू आ स्वयं बनाउ । छैक की नहि ?

आब शब्द-रचनाक सन्दर्भमे किछु अन्य प्रमुख प्रकारक चर्चा कयल जायत–

पुनरुक्त शब्द– एहि कोटिक शब्द द्वन्द्व समास सदृश दू शब्दक योगसँ बनैत छैक आ दुनू शब्द समान होइत छैक । वाक्यमे एहि शब्दक विशिष्ट अर्थ प्रकट होइत छैक । उदाहरणस्वरूप किछु शब्द देखू–

गाम-गाममे, अर्थात् प्रत्येक गाममे ।

तिल-तिल, अर्थात् हरदम, क्षण-क्षण ।

कानि-कानिकऽ, अर्थात् बहुत कानिकऽ ।

नीक-नीक गप, अर्थात् बहुत रास नीक गप ।

उपर्युक्त शब्दावलीमे एके शब्दकेँ दू बेर बाजल गेल अछि, तेँ एकरा द्विरुक्त शब्द सेहो कहल जाइछ ।

ध्वन्यार्थ व्यंजक शब्द

मैथिलीमे कतिपय ध्वन्यार्थ व्यंजक शब्द अछि, जकर प्रयोग सेहो होइत छैक । एहि प्रकारक शब्दक विशेष अर्थ नहि होइत छैक । शब्दमे जे निहित ध्वनि रहैत अछि ताहीसँ अर्थ अभिव्यक्त होइत छैक । यथा– गड़गड़, खनखन, खड़खड़, खटपट, धड़धड़, टनटन, टिपटिप, हरहर । अथवा– गड़गड़ायब, खनखनायब, खड़खड़ायब, खटपटायब, धड़धड़ायब, टनटनायब, टिपटिपायब, चिटचिटायब, हरहरायब प्रभृति शब्दकेँ देखल जा सकैत अछि । उपर्युक्त शब्द सभक उच्चारण-ध्वनिये अर्थ थिक । एहि प्रकारक शब्दक प्रयोगसँ भाषामे बिम्बात्मकता ओ जीवंतताक संचार होइत छैक, जे ओहि भाषाक खास विशिष्टता थिकैक । एकरा बुझबा लेल कविवर यात्रीक एक कविताक किछु पाँतीक अवलोकन करू–

आन्हर जिनगी

सेहन्ताक ठेकासँ थाहए

बाट-घाट

आँतर-पाँतरकेँ

खुट-खुट

खुट-खुट ।

अनुकरणात्मक शब्द

एहि कोटिक शब्द अनुकरणक आधारपर निर्मित होइत अछि । यथा चमसँ चमचमायब, चिपसँ चिपचिप, झमसँ झमझमायब, सरसरायब, चमकौआ, चिपचिपौआ, छहलौआ, झमझमौआ, टनटनौआ, खनखनौआ आदि । एहि प्रकारक शब्दक सम्बन्ध ध्वन्यात्मक नहि, अपितु प्रकाश आ स्पर्शसँ सम्बद्ध छैक । अनुकरणात्मक शब्दक एकटा आर वैशिष्ट्य छैक, जाहिमे दुनू शब्द निरर्थक रहितो एकटा निश्चित अर्थकेँ प्रकट करैत छैक । उदाहरण लेल देखू–

झिलमिल, खदबद, खलबली, टभकब, सुगबुगी, तामझाम, टरटर ।

अभ्यास 6

निम्नलिखित शब्द उपसर्गसँ निर्मित अछि । किछु शब्द उपसर्गसँ निर्मित नहि अछि । उपसर्गसँ निर्मित सही शब्दपर (√) चिह्न लगाउ ।

1) अ– अधिक, अहंकार, अनाथ, अकारण

2) वि– विकार, विपरीत, विश्व, विद्या

3) सु– सुखद, सुगम, सुरुचि, सुर

4) अनु– अनुदार, अनुष्ठान, अनुशासन, अनुकरण

5) ना– नासिर, नादक, नायक, नापसिन

6) बे– बेखबर, बेचैन, बेदर्द, बेलना ।

बोधप्रश्न 2

निम्नलिखित शब्दमे प्रयुक्त समासक नाम आगाँ देल गेल कोष्ठकमे लिखू–

1. अन्नदान ( )	2. वनवास ( )
3. धर्माधर्म ( )	4. विद्यासागर ( )
5. कर्मयोगी ( )	6. शक्तिहीन ( )

7. समाभवन ( ) 8. नीलकंठ ( )

9. शांतिप्रिय ( ) 10. धनुर्बाण ( )

2.8 मुहाबिरा एवं लोकोक्ति

एही इकाइमे अनेकार्थी शब्दक प्रसंगमे हम मुहाबिरायुक्त वाक्यक प्रयोगक चर्चा कऽ चुकल छी। 'कानूनक हाथ' ई एक मोहाबिरा थिक, जाहिमे हाथ शरीरक एक अंगकेँ कानूनक सन्दर्भमे प्रयोग कयल गेल अछि। कानून एक निर्जीव व्यवस्था अछि, ओकरा हाथ नहि छैक। अतः 'कानूनक हाथ' भेल मुहाबिरायुक्त शब्द। हाथ उठायब, हाथ काटब, हाथ छोड़ब आदि सामान्य शारीरिक क्रिया थिक। एहि शब्दावलीक अर्थकेँ अभिधात्मक अर्थ, अर्थात् सामान्य अर्थ कहि सकैत छी, यद्यपि एहि तीनूक प्रयोग मुहाबिराक रूपमे कयल जाइछ, जतऽ एकर अर्थ भिन्ने होइत छैक–

हाथ पकड़ब - संग देबाक प्रतिज्ञा करब।

हाथ फूजब - अधिक खर्च करब।

हाथ मलब - पछतायब।

हाथ लगायब - कार्य प्रारम्भ करब, बिनु पुछने कोनो वस्तु उठा लेब।

हाथ लागब - अनायास किछु परि लागब।

एहि अर्थकेँ लक्षणाक अर्थ, अर्थात् लक्ष्यार्थ कहल जाइछ। अतः अभिधेयार्थक अपेक्षा लक्ष्यार्थकेँ संकेतित कयनिहार भाषाक प्रयोग भेल मुहाबिरा। अनेक मुहाबिरामे अभिधेयार्थ अस्पष्ट रहैछ अथवा असंगत प्रतीत होइछ। उदाहरण देखू–

माथ फोड़ब, आँखि देखायब, माथ झुकायब, मूड़ी डोलायब, माथ उठायब, मूड़ी उठायब आदि-आदि।

मुहाबिरा खास व्यक्ति द्वारा नहि गढ़ल जाइछ। भाषाक भिन्न-भिन्न शब्दे जकाँ मुहाबिरा सेहो समाजसँ अर्जित कयल जाइछ। व्यक्तिक समूहसँ समाजक संरचना होइछ। मुहाबिराक अर्थक सूक्ष्मताकेँ बूझब, तकरा सीखब आ ग्रहण करब व्यक्तिक निजी वैशिष्ट्य होइत छैक। लाल-पीअर होयब क्रोधक आधिक्यक सूचक थिक तँ भौंह तनब क्रोध-भावक सूचक थिक। मुहाबिराक सूक्ष्म संकेतार्थकेँ नीक जकाँ बुझिकऽ तखन एकर प्रयोग करब उपयुक्त होयत।

विशेषणयुक्त संज्ञा अथवा क्रियाक वाक्यांश थिक मुहाबिरा, लोकोक्ति अथवा कहबी थिक पूर्ण कथनक रूपमे एक वाक्य। कहबीक अर्थ भेल कहल गेल प्रसिद्ध एवं प्रचलित वाक्य।

मुहाबिरा– मुहाबिरा आकर्षक आ रोचक शब्द थिक, जे विशेष अर्थकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। मुहाबिरा थिक उपलक्षण, तेँ एकर अंगविशेषमे भिन्न-भिन्न क्रिया लगाओल जा सकैछ आ विभिन्न उपलक्षणकेँ अभिव्यक्त कयल जा सकैछ। उदाहरण लेल देखू– आँखि लागब एवं आँखि मारब। परिस्थितिवश एक मुहाबिरा एकाधिक अर्थकेँ व्यक्त करैछ। आँखि लागब– निन्न पड़ब एक अर्थ भेल, दोसर अर्थ आनक वस्तु देखि आँखि लागब। आँखि चढ़ब-निसाँमे होयब, क्रोध करब। मुहाबिरा अनायासे कोनो भाषामे आबिकऽ समाहित भऽ जाइछ एवं सहज भावसँ तकर प्रयोग होबऽ लगैछ।

लोकोक्ति/कहबी– लोक, अर्थात् सामान्य जनक उक्ति भेल 'लोकोक्ति'। लोकोक्तिक क्षेत्र पैघ एवं विस्तृत होइत छैक। कहबी एकर अन्तर्गत अबैत अछि। कहबी लोकोक्तिक अंग थिक। भाषाक विकासक संगहि लोकोक्तिक विकास होइत छैक। समाजक कोनो विज्ञ व्यक्ति

प्रसंगवश एहन वाक्यक प्रयोग कऽ दैत छथि जे जनसामान्यकेँ ओ स्पर्श करैत छैक एवं कालान्तरमे ओ सर्वमान्य आ सर्वग्राह्य लोकोक्ति रूपमे प्रसिद्ध भऽ जाइत छैक । सिद्ध साहित्यसँ अद्यपर्यन्त मुहाबिरा आ लोकोक्ति/कहबीक वाग्धारा प्रवाहित अछि ।

लोकोक्तिमे कोनो भाषा समुदायक निरीक्षणक सूक्ष्मता ओ गहन अनुभव पाओल जाइछ । सूप महक भाँटा– दिशाहीन/आधारहीन; दीपक नीचाँ अन्हार– ज्ञानक संग अज्ञानता आदि भाषा समुदायक अनुभवक सार तत्त्व थिक ।

मुहाबिरा आ लोकोक्ति/कहबीक भाषामे प्रयोग सम्बन्धी अन्तरकेँ नीक जकाँ बूझब अहाँ लेल आवश्यक अछि । नीक जकाँ बुझने रहब तखन ने सहज रूपेँ, सटीक ढंगसँ प्रयोग करब । छैक की नहि ! मुहाबिरा साहित्यकारक वाक्यक अंगरूपमे प्रयुक्त रहैत छैक । अतः वाक्यरचनाक अनुकूल एकर स्वरूपमे किञ्चित मात्र मात्रागत परिवर्तनक गुंजाइश रहैत छैक । आ, लोकोक्ति जेँ कि पूर्ण कथन रहैत छैक तेँ प्रयोगकर्त्ता द्वारा ओकर मूलरूपमे परिवर्त्तन नहि कयल जा सकैछ । साहित्यकार अथवा प्रयोगकर्त्ता अपन कथनक पुष्टि हेतु अथवा उदाहरणस्वरूप लोकोक्तिक प्रयोग करैत छथि । चन्दाझाक रामायण लोकोक्ति–प्रयोगक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण अछि । रामायणसँ किछु उदाहरण, यथा– अन्धकार घर सापहि साप, ऐंठन जरल न जरि गेल जौड़, करड़िक तरुपर सितुआ चोख, घर उपवास द्वारपर नाच, थैल काँचकेँ मुङरक आश, चोर सहथि की कतहु इजोत, झिटुकीसँ फुटि जाइछ थैल, टिटही टेकल पर्वत, धर्मक सोर पताले, ना बड़ ऊच कान दुहु मूच, हित करइत हो हानि, मरय बेर चिउटिहुकाँ पाँखि आदि-आदि ।

एतऽ लोकोक्ति एवं सूक्ति, अर्थात् नीक उक्तिमे अन्तर स्पष्ट करब सेहो आवश्यक अछि । लेखक एवं कुशल वक्ता उचित सन्दर्भ देखिकऽ नीक-नीक व्यंजनार्थक अभिव्यक्ति करैत छथि । व्यक्ति अपन यश-कीर्तिसँ जिबैत अछि आ अपन किरदानीसँ मरैत अछि, पौरुष सतत जीवित रहैत छैक आ कायर जीवितो मुइल सदृश अछि, आदि उक्ति विरोधाभास, महानता एवं तुच्छताक भावकेँ प्रकट करैत छैक, अर्थकेँ अभिव्यंजित करैत छैक । कुशल वक्ता एहन-एहन उक्तिक प्रयोग द्वारा अपन भाषणकेँ नीक, रोचक एवं प्रभावोत्पादक बनबैत छथि । 'किताबक फूजल पन्ना'मे अभिव्यंजना छैक जे व्यक्तिक निष्कपट स्वभाव-चरित्रकेँ द्योतित करैत छैक । वाक्यमे एकर प्रयोग निम्नांकित ढंगसँ कऽ सकैत छी–

1) हमर जीवन किताबक फूजल पन्ना सदृश अछि ।

2) महात्मा गाँधीक जीवन किताबक फूजल पन्ना छलनि ।

एहन उक्तिक प्रयोग हम दैनंदिन जीवनमे करितहि रहैत छी–

मौलायल बिनु सूंघल फूल जकाँ

चैतक पछबामे कुसिआरक पोर जकाँ

बिनु तेलक गाड़ी

पहिली तारीखक बाट देखब

हवाइ घोड़ा, सय सोनारक एक लोहारक आदि उक्तिमे अनुभवजन्य अभिव्यंजनाक अभिव्यक्ति अछि । एहन-एहन उक्ति जखन रूढ़ भऽ जाइत छैक तँ लोकोक्तिक रूप धारण कऽ लैछ । एहन-एहन उक्तिक प्रयोग हमरालोकनि विभिन्न साहित्यिक रचनामे एवं कुशल वक्ताक भाषणमे देखैत एवं सुनैत छी । अहूँ सभ प्रयास कऽ नीक-नीक सूक्तिक प्रयोग कऽ सकैत छी एवं अपन उत्तरकेँ, वक्तव्यकेँ रोचक एवं प्रभावी बना सकैत छी ।

निम्नांकित मुहाबिराक संकेतमे अर्थ देल गेल अछि, उचित ढंगसँ वाक्यमे एकर प्रयोग करू–

रंगमे भंग	–	बाधा उपस्थित होयब ।
हँमे हँ मिलायब	–	जी हजूरी करब ।
शेखी झाड़ब	–	आत्मप्रशंसा करब ।
अपन पयपर ठाढ़ होयब	–	आत्मनिर्भर होयब ।
भण्डा फूटब	–	भेद खूजब ।
हँसी होयब	–	अप्रतिष्ठा होयब ।
चालि चलब	–	षडयंत्र करब ।
टेढ़ी देखायब	–	घमण्डी आचरण ।

अभ्यास 8

नीचाँ पाँचटा कहबीक अर्थ देल गेल अछि, पश्चात् पाँच टा प्रसंग देल गेल अछि जतऽ एहि कहबीक प्रयोग कयल जा सकैछ । उपयुक्त कहबीक प्रयोग द्वारा प्रसंगकेँ पूर्ण करू–

क) आमक आम आँठीक दाम	–	एक काजसँ दोहरी लाभ ।
ख) जकर लाठी तकर महींस	–	अन्याय-बलसँ जीत ।
ग) दूरक ढोल सोहाओन	–	दूरसँ अधलाहो वस्तु नीक लगैछ ।
घ) डुमरिक फूल होयब	–	भेट भेनाइ असम्भव ।
ङ) टेक राखब	–	मर्यादाक रक्षा करब ।

1) हुनक नाम छल जे बड़ सुखी सम्पन्न छथि । हम गेल रही तखन बुझलहुँ जे.........

2) मालिक, कीनि लियऽ । बेसी विचारू नहि, बड़ सस्तमे टी.भी. भेटि रहल अछि । आ गारंटिओ दऽ रहल अछि– ....

3) प्रदेशमे बड़ अराजक स्थिति छै । केओ गरीबक हेरिआ-गोहारिआ नहि चला परि छैक । ......

4) दिवाकर बाबूक कोनो खोज-खबरि नहि । ओ तँ .... छी माससँ देखनहुँ नहि छियनि ।

5) भारी विपत्तिमे पड़ि गेल रही........ प्रमोद बाबू जे रक्षा भेल ।

मुहाबिरा आ कहबी : अर्थ-रचना

अहाँक मनमे ई बात उठल होयत जे एहि इकाइमे पढ़बाक अछि शब्दावली, तखन मुहाबिरा आ कहबीपर चर्चा किएक कऽ रहल छथि ? एकदम स्वाभाविक जिज्ञासा अहाँकेँ भेल अछि । एहिपर चर्चा करबाक कारण अछि । आ, ओ कारण ई थिक जे जेना शब्दक प्रसंग पढ़लहुँ जे विभिन्न भाषाभाषी समुदाय द्वारा शब्दक निर्माण होइछ, कोनो एक व्यक्ति नव शब्द नहि गढ़ि सकैत अछि, सैह बात मुहाबिरा आ कहबीपर सेहो लागू होइत छैक । शब्दक विषयमे हमरालोकनि चर्चा कऽ चुकल छी जे एकर अर्थ यादृच्छिक होइत छैक । तहिना मुहाबिराक अर्थ पूर्वनिर्धारित होइत छैक । जेना लाल-पीयर होयबाक अर्थ भेल क्रोध करब । एकरा चाहियोकऽ हम-अहाँ ईर्ष्या करब, शंका करब अथवा आने कोनो अर्थमे परिवर्त्तन कऽकऽ प्रयोग नहि कऽ सकैत छी । 'एक अनार सय रोगाह'क अर्थ भेल एके वस्तु लेल कइएक

व्यक्तिक आकांक्षी होयब । हम-अहाँ एकर प्रयोग 'इलाज लेल उपयुक्त वस्तुक अर्थ'मे नहि कऽ सकैत छी ।

शब्दक रचना सुनिश्चित होइत छैक । जेना हम-अहाँ शब्द-रचनामे परिवर्त्तन नहि कऽ सकैत छी, तहिना मुहाबिरोमे नहि । कहबीमे सेहो अपन मनोनुकूल परिवर्त्तन-संशोधन नहि कऽ सकैत छी । छौ-पाँच करब (असमंजस) केँ 'पाँच-छौ करब' नहि कऽ सकैत छी । वक्ता अथवा लेखक द्वारा निर्मित वाक्यमे प्रयुक्त रहबाक कारणेँ मुहाबिरा लेल प्रयुक्त क्रियामे किञ्चित परिवर्त्तन संभव छैक । 'गृहप्रवेश'मे गृहक पर्याय घरक व्यवहार कऽ 'घर प्रवेश' ने लिखि सकैत छी ने बाजि सकैत छी । कहबीमे शब्दक क्रमकेँ बदलल नहि जा सकैछ, विस्तार अथवा संक्षेपण नहि कयल जा सकैछ । 'लूटिमे लटबा नफा'क स्थानपर 'लूटिमे नफा लटबा' अथवा 'लूटिमे नफा लटबा होइते छैक' कऽ प्रयोग नहि कयल जा सकैत छैक ।

अभ्यास 9

क) निम्नलिखित मुहाबिराक सही रूप लिखू एवं वाक्यमे प्रयोग करू । आवश्यकता पड़लापर शब्दकोशक सहायता लियऽ ।

ताल ठोकब,

तिलक ताड़ बनायब,

झख मारब,

झूरझमान होयब,

कंठ फूटब,

टिटिआइत रहब,

छातीपर दालि दड़रब,

कपार फूटब,

कान ठाढ़ होयब,

औंठाछाप होयब,

अपटी खेतमे प्राण जायब ।

ख) निम्नलिखित कहबीकेँ सही शब्दावली अथवा क्रममे लिखू । शब्दकोशक सहायता लऽ सकैत छी–

ने नगद नौ ने उधार तेरह,

शंख कोन पूजापर बाजत,

कोढ़िआ हऽ चाहय,

श्री जगरनाथ कयल-धयल पर,

हीरा कयलनि धयलनि जीरा माँड़ पसओलनि,

भाय बाँटल पड़ोसिआ दाखिल,

चाउर पुराने पथ्य पड़ैत छैक,

तेरहमे ने तीन मे,

लोकक मुइने डेराइ नहि यमक परिकने डेराइ ।

2.9 सारांश

एहि इकाइमे अहाँ भाषाक शब्दावली, रचना आ तकर अर्थपक्षक विषयमे अध्ययन कयलहुँ । भाषाक शब्दावली कोना बनैत छैक ? किछु शब्द भाषाक अपन होइत छैक तँ किछु आन स्रोतसँ अबैत छैक, आ किछु आवश्यकतानुसार गढ़ल जाइत छैक । एहि इकाइमे हमरालोकनि मैथिलीक शब्दावलीक प्रसंग उपर्युक्त तीनू पक्षपर विचार कयलहुँ । स्रोतगत विश्लेषणमे मैथिलीक शब्दावलीक स्रोतपर विचार कयलहुँ । तखन मैथिलीमे शब्द-रचनापर विचार-विमर्श कयलहुँ । तकर बाद अहाँ धातु ओ उपसर्ग-प्रत्ययक संक्षिप्त परिचय प्राप्त कयलहुँ । एही प्रसंग ईहो देखलहुँ जे शब्दक रचना कोना होइत छैक ? शब्द-रचनाक सन्दर्भमे तीन प्रमुख समासक विश्लेषण कयल गेल । ई तीनू समास थिक– तत्पुरुष, बहुव्रीहि ओ द्वन्द्व । प्रत्यय आ समासक संगहि पुनरुक्ति, ध्वन्यार्थ व्यंजक एवं अनुकरणात्मक शब्दक स्थितिपर सेहो विचार कयलहुँ । उपर्युक्त जानतबक आधारपर आब अहाँ अपन वार्तालापक भाषा ओ लेखन-शैलीकेँ प्रभावशाली बनयबाक प्रयास करू ।

शब्दक अर्थपक्षक सन्दर्भमे अहाँ शब्दक सामाजिक स्तर-अन्तरकेँ बुझलहुँ आ चिन्हलहुँ । शब्द ओ तकर अर्थक सम्बन्धमे पर्याय, विलोम आदि भिन्न-भिन्न संकल्पनाक अध्ययन कयलहुँ । अंतमे भाषाक अभिधा, लक्षणा ओ व्यंजना अर्थक विश्लेषणक संगहि मुहाबिरा ओ फकरौक प्रयोग करब सिखलहुँ ।

2.10 किछु उपयोगी पुस्तक

1) मैथिली परिचायिका – गोविन्द झा

2) मैथिली लोकोक्तिक उद्‌भव ओ विकास – कमलकान्त झा

2.11 बोधप्रश्न / अभ्यासक उत्तर

बोधप्रश्न 1

1) ज्ञात अर्थक लेल समाज द्वारा कोनो एकटा शब्द निर्धारित कऽ देल जाइछ, तखन ओहि शब्द ओ अर्थक सम्बन्ध स्थापित भऽ जाइत छैक ।

2) समाजक विभिन्न वर्ग, पेशा, व्यवसायक लोकक भाषा फराक-फराक होइत छैक । जेना व्यापारीक भाषा, शेयर बजारक भाषा, कक्षाक अध्यापकक भाषा आदि । एहि प्रकारसँ औपचारिक भाषा, अनौपचारिक भाषा, अशिक्षितक भाषा ओ शिक्षितक भाषामे अन्तर होइत छैक । एवंप्रकारेँ सामाजिक स्तरक भेदसँ भाषाक रूप बहुमुखी भऽ जाइत छैक ।

बोधप्रश्न 2

1. तत्पुरुष 2. द्वन्द्व

3. तत्पुरुष 4. तत्पुरुष

5. तत्पुरुष 6. तत्पुरुष

7. तत्पुरुष 8. तत्पुरुष

9. बहुव्रीहि 10. द्वन्द्व

अभ्यास 2

जल, अष्ट, गल्प, स्वर्ण, रजत, घट, चक्र, क्षेत्र, मनुष्य, एला / क्षुद्रेला, जिह्वा, वृद्ध, भक्त, द्विदल ।

अभ्यास 6

अनाथ, अकारण, विकार, सुखद, सुगम, सुरुचि, नापसिन, बेखबर, बेचैन ।

अभ्यास 8

1. ग, 2. क, 3. ख, 4. घ, 5. ङ

2.12 अनुकार्य

शुद्ध-शुद्ध मैथिली लिखबाक अभ्यास करू । मैथिली मुहबिरा आ लोकोक्तिक संग्रह करू ।



इकाइ 3 संस्कृति विषयक बोध एवं शब्दकोशक उपयोग

इकाइक प्रारूप

3.0 उद्देश्य

एहि इकाइक अध्ययन कयलाक बाद अहाँ :

- मैथिलीमे संस्कृतिसँ सम्बन्ध रखनिहार विषयवस्तुकेँ बुझि ओकरा अपना शब्दमे अभिव्यक्त कऽ सकब,
- संस्कृति सम्बन्धी विषयकेँ पढ़िकऽ ओकर शब्दावलीक उचित प्रयोग करबाक अनुभव भऽ जायत, ई सिखि सकब जे शब्दसभक उचित प्रयोग कोना होइत छैक,
- शब्दकोशक ठीक-ठीक प्रयोग कऽ सकब ।

3.1 प्रस्तावना

पछिला इकाइमे अहाँ मैथिली भाषाक प्रकृतिसँ अवगत भेलहुँ । मैथिली भाषामे प्रयुक्त शब्दसभ कतऽ-कतऽसँ आयल अछि, वाक्य कोना बनैत अछि, लोकोक्ति आ मुहाबिरा की थिक, एकर प्रयोग वाक्यमे कोना कयल जाइत अछि, एहि सभ विषयक ज्ञान अहाँकेँ भऽ गेल होयत । आब जखन अहाँ शुद्ध-शुद्ध मैथिली बाजि आ लिखि सकैत छी तँ अपन संस्कृति आ साहित्यक विषयमे किएक ने गप करी ?

अहाँ जनैत छी जे लोकक ई स्वाभाविक इच्छा रहैत छैक जे ओ सदा आनन्दित रहय, प्रसन्न रहय । सभदिना काज-धन्धासँ थाकल-ठेहिआयल लोकमे उल्लास पाबनि-तिहारक आयोजनसँ अबैत छैक । तेँ लोक आनन्दमे मग्न रहबाक हेतु, कार्यक भारसँ थकनीकेँ दूर करबाक हेतु, कोनो प्रकारक कष्टसँ उदासीनताकेँ प्रसन्नतामे परिणत करबाक हेतु वर्षमे कतेको पर्वक आयोजन करऽ लागल । फलतः पाबनि-तिहार ओकर जीवनक अभिन्न अंग भऽ गेलैक ।

मिथिलाक तँ अपन विलक्षण संस्कृति छैके । मिथिलाक भाषा-साहित्य, संगीत-कला, पहिरब-ओढ़ब, खान-पान, अतिथि-सत्कार, माँटि-पानि, हास-परिहास सभ तेहने अनुपम छैक । मिथिलाक संस्कृतिक विशेषता देखबामे अबैत अछि एकर साल भरिक पाबनि-तिहारमे, ओकर ओरियाओनमे । तेँ एहि इकाइमे मिथिलाक प्रमुख पाबनि-तिहारक परिचय देल गेल अछि ।

एहि इकाइमे शब्दकोशक प्रयोग कोना करी, सेहो अहाँकेँ सिखाओल जायत । शब्दकोशसँ केवल हम शब्दक अर्थ सैह नहि जनैत छी, अपितु शब्दक विषयमे अन्य ज्ञान सेहो प्राप्त होइत अछि, जेना शब्द कोन भाषाक अछि, ओकर लिंग की छैक, ओकर उद्गम आ विकास कोना भेल छैक अर्थात् व्युत्पत्ति की होइछ, शब्दक मानक रूप की थिक आदि-आदि विषयक ज्ञान शब्दकोशसँ अहाँकेँ भेटैत अछि । शब्दकोशमे सभसँ महत्त्वपूर्ण होइत छैक शब्दावलीक क्रम आ एहि लेल कोन नियमक पालन कयल जाइत छैक, एकरो जनतब अहाँकेँ एहि पाठमे देल जायत ।

शब्दकोशक प्रयोग करब जखन अहाँ नीक जेकाँ सिखि लेब तँ तकर बाद कोनो कठिन शब्दक अर्थ तकबामे असुविधा नहि होयत । अहाँ स्वयं शब्दक अर्थ लगले ताकि लेब ।

3.2 पाबनि-तिहार

सम्पूर्ण मानव जातिक सामूहिक प्रयासेसँ संस्कृति-सभ्यताक विकास भेल छैक आ ओही क्रममे पाबनि-तिहारक उत्पत्ति भेल छैक । पाबनि-तिहारक माध्यमसँ मानव द्वारा विकसित रीति-रेवाज, परम्परा, आचार-विचार, धर्म-कला सभक दिग्दर्शन भऽ जाइत छैक, उत्पत्ति आ विकासक इतिहास बुझबामे आबि जाइत छैक, गौरवक बोध करबैत पूर्वजक परम्परा-प्रचलनक स्मरण करा दैत छैक, भविष्यक मार्ग प्रशस्त करैत छैक । पाबनि-तिहार, जेना अहाँ जनैत छी, संस्कृतिक महत्त्वपूर्ण अंग होइछ । पाबनि-तिहारक सम्बन्ध मानवजीवनक संग अत्यन्त प्रगाढ़ छैक । पाबनि-तिहार उत्साह-उल्लास-उमंगक सूचक होइछ, तेँ मनुष्य एकर प्रतीक्षा सतत करैत रहैत अछि जे फेर ई पाबनि कहिया आओत । यदि समाजसँ पाबनि-तिहारकेँ हटा देल जाय तँ लोकक जीवन अगबे नरक भऽ जयतैक । कार्यक व्यस्ततासँ थाकल, चिन्तासँ ग्रस्त, अभावसँ त्रस्त, शोकसँ व्याकुल, रोगसँ दुखी, बेकारीसँ मन्हुआयल सभ प्रकारक लोकक हेतु पाबनि-तिहार संजीवनीक कार्य करैत छैक, नव स्फूर्ति-उमंग-उल्लास-हर्ष-आनन्दसँ जीवन पुलकित भऽ जाइत छैक । तेँ प्रत्येक वर्गक लोक पर्व मनबैत अछि । हँ, इहो बात सत्य छैक जे समयमे परिवर्तन भेलासँ सभ्यता-संस्कृतिमे सेहो परिवर्तन भऽ जाइत छैक आ तदनुसार पाबनि-तिहारक रूप सेहो बदलि जाइत छैक ।

एहि पाठमे हम पाबनि-तिहारक चर्चा करब आ देखब जे कोना पाबनि-तिहार सांस्कृतिक एकताक भावनाकेँ सुदृढ़ करैत अछि । हमर मिथिला उत्तरमे हिमालयसँ दक्षिणमे गंगा धरि, पूबमे महानन्दासँ पश्चिममे गण्डक धरि पसरल अछि । एहि भूक्षेत्रमे नाना प्रकारक जाति-धर्म-सम्प्रदायक लोक रहैत अछि । ई भूखंड अपन क्षेत्रीय विशेषताक हेतु प्रसिद्ध अछि । यैह कारण थिकैक जे एहि ठाम रंग-विरंगक पाबनि-तिहार वर्ष भरि होइतहि रहैत अछि । कोनो पाबनि धर्मसँ जोड़ल अछि तँ कोनो राष्ट्रसँ । एक-दोसराक भावनाकेँ आदर करैत पारस्परिक प्रेमकेँ बढ़बैत ई पर्व सद्भावनाक सद्गुणसँ लोककेँ आनन्द दैत अछि ।

आउ, आब अहाँ देखू जे मिथिलामे ई पाबनिसभ कोन रूपमे मनाओल जाइत अछि, कोना ई एक दोसराकेँ प्रेमक बन्धनमे जोड़िकऽ आनन्द प्रदान करैत अछि ।

मिथिलाक संस्कृतिक ई प्रमुख विशेषता थिक जे एहि ठाम धर्मक क्षेत्रमे उदार दृष्टिकोण देखल जाइत अछि, सभ धर्मक प्रति लोक अपन आस्था रखैत अछि, सभ देवी-देवताक प्रति समान श्रद्धाक भाव रहैत छैक । जहिना सूर्यक आराधना छठिमे तहिना चन्द्रक पूजा चौरचनमे, जहिना एकादशी तहिना चतुर्दशी, जहिना राम तहिना कृष्ण, जहिना गणेश तहिना हनुमान, जहिना लक्ष्मी तहिना सरस्वती, जहिना दुर्गा तहिना महादेव, जहिना रामायण तहिना गीता, सभ एक रंग लोकक हृदयमे स्थान बनौने अछि । हिन्दूक छठिमे मुसलमानक आस्था, मुसलमानक दाहामे

हिन्दूक श्रद्धा, सर्वत्र प्रेम-आस्था आ श्रद्धा-भक्तिक गंगा प्रवाहित होइत अछि । यैह कारण थिक जे सालोभरि मिथिलामे पाबनि-तिहार, देवी-देवताक पूजा होइतहिँ रहैत अछि । तेँ आब एतऽ किछु प्रमुख पर्वक उल्लेख आवश्यक प्रतीत होइत अछि । अहाँ जनैत छी जे अपना ओहि ठाम पतरामे वर्षक आरंभ आषाढ़सँ होइत छैक, तेँ ओही क्रमसँ कोन मासमे कोन प्रमुख पाबनि होइत अछि, तकर चर्चा एतऽ करैत छी :

1) **मधुश्रावणी**

ई पाबनि साओन मासक इजोरियामे तृतीया दिन होइत छैक । नवविवाहिता कनियाँ तेरह दिन अन्हरियाक पंचमीसँ इजोरियाक तृतीया धरि वेश श्रद्धाक संग प्रतिदिन पूजा करैत छथि । तेरहो दिन साँझू पहर फूलपात लोढ़ि अनैत छथि, नागक पूजा करैत छथि, गीतनाद होइत छैक, मधुश्रावणी दिन सासुरसँ भार अबैत छनि, रंग-बिरंगक गहना-गुड़िया आ नव साड़ी पहिरि गीतनादक संग पूजा करैत छथि, टेमी दागल जाइत छनि, सभ मिलि एक संगे भोजन करैत अचल अहिवातक कामना करैत छथि । मिथिलांचलक ई बड़ मनोरम पर्व होइत अछि ।

2) **चौरचन**

'उगह चान की लपकह पूआ' चौरचन मिथिलाक प्रसिद्ध पाबनि थिक । भरि दिन रंग-बिरंगक पिडुकिया गुहल जाइत अछि, पहिनेसँ नवका मटकूड़ीमे दही पौड़ल जाइत अछि, केरा धूकल जाइत अछि, पकमान बनैत अछि । हाथमे फलक संग मंत्रक उच्चारण करैत संध्याकाल चन्द्रमाक दर्शन कयल जाइत अछि । चन्द्रमाक अरिपन बनाय रोहिणीक संग हुनक पूजा कयल जाइत अछि आ तकरा बाद सभ प्रसन्नचित्तसँ भोजन करैत अछि । नवविवाहित वरक ओहि ठाम सासुरसँ भार अबैत छैक । चौरचन मिथिलाक खास पाबनि थिक ।

3) **दशमी**

एकरा दशहरा, विजयादशमी तथा नवरात्र सेहो कहल जाइत अछि । ई पर्व उत्साह, उल्लास एवं श्रद्धाक प्रतीक थिक । एहि पाबनिक संग धार्मिक मान्यता अछि । शक्तिक प्रतीक दुर्गा असुरक संहार करैत छथि । रावण मेघनाद कुंभकर्णक पुतड़ा सेहो कतहु-कतहु जराओल जाइत अछि, दशमी दिन मूर्तिक विसर्जन कऽ नदी वा पोखरिमे भसा देल जाइत अछि । लोक टीकमे जयन्ती बन्हैत अछि । भरि दशमी घर-घर दुर्गापाठ होइत अछि । गामघरमे नाटक, रामलीला आदिक आयोजन होइत अछि, मेला लगैत अछि । दुर्गासप्तशतीमे लक्ष्मी, सरस्वती आ दुर्गाक आराधना कयल गेल अछि । सभ संप्रदायक लोक एकत्र होइत अछि, पारस्परिक प्रेमक वातावरणमे आनन्दक धार प्रवाहित होइत अछि ।

4) **कोजगरा**

आसिनक पूर्णिमाकेँ शरद पूर्णिमा कहल जाइत छैक । ओकर राति बड़ मनोहारी होइत अछि । नवका वरक चुमाओन होइत छैक, सासुरसँ भार अबैत छैक, मखान मधुर पानक वितरण कयल जाइत अछि, गामक लोक एक ठाम बैसिकऽ भोज खाइत छथि ।

5) **सुकराती**

ई बड़ महत्त्वपूर्ण पाबनि थिक । कातिक मासक अमावास्या दिन ई मनाओल जाइत अछि । पन्द्रह दिन पहिनेसँ घरक सफाइ कयल जाइत अछि । धीयापूता सभ हुक्कालोली बाँसक बीटमे जाकऽ कोपड़सँ बनबैत अछि । सर्वत्र प्रकाशक हेतु दीप जराओल जाइत

अछि । कहल जाइत अछि जे एही दिन भगवान राम लंकामे रावणकेँ मारि अयोध्या आयल छलाह । तहिएसँ ई विजयोत्सव मनाओल जाइत अछि । रंग-विरंगक भोजन बनैत अछि । सभ आनन्दसँ सम्पूर्ण वातावरणकेँ भरि दैत अछि । घर-आङन, दोकान-दौड़ी, बही-खाता सभकेँ सजाओल जाइत अछि । अन्धकारपर प्रकाशक विजय देखाओल जाइत अछि ।

6) **भरदुतिया**

भाइ-बहिनक ई पाबनि बड़ प्रसिद्ध अछि । ओहि दिन प्रत्येक भाइ बहिनसँ नोत लैत अछि, बहिनक ओहि ठाम भोजन करैत अछि । भोरेसँ बहिन आङन नीपि अपन भाइक आगमनक प्रतीक्षा करैत अछि । भाइ बहिनकेँ उपहार दैत अछि, अवस्थानुक्रम आशीर्वादक आदान-प्रदान होइत अछि । भाइ-बहिनक प्रेमक प्रतीक थिक ई पाबनि ।

7) **छठि**

कातिक मासक शुक्लपक्षमे छठि बड़ निष्ठाक संग मनाओल जाइत अछि । चारि दिन धरि घरमे धूम मचल रहैत अछि । पहिल दिन नहाय-खाय रहैत छैक, जाहि दिन पबनैतिन अरबा-अरबाइन खाइत छथि, दोसर दिन खरनाक प्रसाद लोक प्रेमसँ ग्रहण करैत अछि, तेसर दिन सँझुका अर्घ्य आ चारिम दिन भोरुक अर्घ्य भगवान सूर्यकेँ देल जाइत छनि । यैह थिकैक मिथिलाक संस्कृतिक विशेषता, जतऽ पहिल पूजा डुबैत सूर्यक होइत छनि आ दोसर पूजा उगैत सूर्यक । आइ-काल्हि की भऽ रहल अछि ? डुबैत लोककेँ के पुछैत छैक ? सभ उगैत लोकक पछोड़ धयने रहैत अछि । समस्त समाजक आबालवृद्धवनिता सजि-धजिकऽ छठिक घाटपर जाइत अछि, नेना-भुटकासभ फटक्का छोड़ैत अछि । ठकुआ, भुसबा, केरा, कुरथार, हाथी, कुसियार, सरबा, ढाकन, सूप, छिट्टा, कोनियाँ सभक तैयारी पहिनेसँ कयल जाइत अछि, सभमे पिठार-सिन्दूर लगाओल जाइत छैक । मिथिलाक शिल्प-कलाक प्रदर्शन एहि पाबनिमे होइत अछि ।

8) **तिलासंक्रान्ति**

माघ मासमे तिलासंक्रान्तिक पर्व बड़ आकर्षक होइत अछि । जाड़क कनकनीमे गरम-गरम घी-खिच्चड़ि, तिलबा-चुल्लड्डु स्वादिष्ट लगैत छैक । एहि पाबनिसँ माघक स्नान प्रारम्भ भऽ जाइत अछि, संक्रान्ति दिन पवित्र नदी आ कुंडमे लोक प्रातःस्नान करैत अछि । तिल, वस्त्र आदिक दान कऽ पुण्यक भागी बनैत अछि ।

9) **सरस्वती पूजा**

विद्याक अधिष्ठात्रीदेवी सरस्वतीक आराधना बड़ श्रद्धा आ भक्तिसँ लोक माघ शुक्ल पंचमी दिन करैत अछि । एकरा श्रीपंचमी सेहो कहल जाइत अछि । अगहनी फसिल तैयार भेलाक बाद मिथिलाक बहुत लोक कामरु लऽकऽ ओहि दिन महादेवकेँ जल चढ़बैत अछि, गृहस्थलोकनि हर ठाढ़ करैत छथि, फगुआक गीत प्रारम्भ भऽ जाइत अछि, जे होलिका-दहन धरि चलैत रहैत अछि । वसन्तक आगमनक सूचना कोइली अपन कूजनसँ आमक डारिपर बैसि देबऽ लगैत अछि । विशेष रूपसँ अध्ययन करऽवला लोकक हेतु ई पर्व बड़ महत्त्वक होइत अछि । विद्यालय-महाविद्यालय-छात्रावासमे सर्वत्र उल्लासक वातावरण व्याप्त भऽ जाइत अछि ।

10) **फगुआ**

फागुन मासक पूर्णिमाक रातिमे सम्मत जराकऽ प्रात भेने लोक रंग-अबीर खेलाइत अछि । फगुआ सर्वत्र बड़ उल्लासक संग मनाओल जाइत अछि । सभ क्यो भेदभावकेँ बिसरि

एक-दोसरकेँ रंग-अबीरसँ बोरि दैत छैक । फगुआक मालपूआ मिथिलामे घर-घर बनैत अछि । आब दहीबड़ा सेहो बनऽ लागल अछि । किछु गोटे भाङ पीबि बुत्त भऽ जाइत छथि, से उचित नहि, कारण जोशमे होश राखब बड़ आवश्यक होइछ । नोकरिहारासभ गाम अयबाक हेतु पहिनेसँ दिन गनैत रहैत अछि, घरबैया सेहो अपन प्रवासी लोकक प्रतीक्षा आतुरतासँ करैत अछि । नवविवाहिता फगुआमे सासुर जाइत छथि आ हँसी-ठट्ठामे आनन्द लैत छथि । डम्फा-मजीराक संग जोगीड़ा, फागु गबैत लोकसभ चिन्ता-फिकिरकेँ बिसरि जाइत अछि । ई पारस्परिक प्रेम-सद्भावक पर्व थिक ।

11) **जूड़शीतल**

मिथिलामे गामक लोक जूड़शीतल दिन पुरैनिक पातपर बसिया बड़ी-भात प्रसादक रूपमे ग्रहण करैत अछि, थाल-कादोसँ खेलाय नदी-पोखरिमे चुभकि-चुभकि गामपर अबैत अछि । कतहु-कतहु दुपहरियामे लोक शिकार सेहो खेलाइत अछि । घरक श्रेष्ठ महिलालोकनि माथपर पानि राखि सभकेँ जुड़बैत छथि ।

12) **बरिसाति**

मिथिलाक नवविवाहिता कन्या जेठक अमावास्याकेँ बरक गाछ तर पूजा करैत छथि आ ओहि दिनसँ तेरह दिन धरि अगिला मधुश्रावणी तक प्रतिदिन नागक पूजा करैत छथि, साँझकेँ अपन सखी-बहिनपाक संग बाड़ी-झाड़ीसँ फूलपात लोढ़िकऽ अनैत छथि । एतबा दिन ई सासुरेक पठाओल वस्तु भोजन करैत छथि । पूजाक बाद खीर-मधुरक संग अइहब लोकनिक संग भोजन करैत छथि ।

13) **ईद**

ईद मुसलिम बन्धुक महत्त्वपूर्ण पाबनि थिक । ओना ई वर्षमे दू बेर मनाओल जाइत अछि - ईद्-उल-फितर आ ईद्-उल-जुहा । ईद्-उल-फितर रमजान समाप्त भेलापर अबैत अछि । रमजानक भरि मास मुसलिम भाइ रोजा रखैत छथि आ तकरे सफलतापूर्वक समापनपर ईद मनाओल जाइत अछि । ई पर्व समस्त राष्ट्रमे बड़ उत्साह-उमंगक संग मनाओल जाइत अछि । ओहि दिन नव-नव वस्त्र पहिरि लोक ईदगाहमे एकत्र होइत अछि, नमाज पढ़ैत अछि, एक-दोसरकेँ प्रेमपूर्वक गराँ लगबैत अछि, बच्चासभ मेलाक आनन्द उठबैत अछि, सेबइ-मधुर बाँटल जाइत अछि । अन्य सम्प्रदायक लोक सेहो मुसलमान भाइकेँ ईदक बधाइ दैत अछि ।

ईद्-उल-जुहा त्याग आ बलिदानक उपलक्ष्यमे मनाओल जाइत अछि । पैगम्बर इब्राहिम साहेब ईश्वरक आदेशपर अपन प्रिय पुत्रक बलि देबाक हेतु प्रस्तुत भऽ गेल छलाह । ओही स्मृतिमे ई पर्व मनाओल जाइत अछि ।

14) **मोहर्रम**

मोहर्रम सेहो सम्पूर्ण देशमे मनाओल जाइत अछि । ई पर्व हजरत मोहम्मद साहेबक नवासा आ हजरत अली साहेबक पुत्र हजरत इमाम हुसैनक बलिदानक स्मृतिमे मनाओल जाइत अछि । एहि अवसरपर दाहा सेहो निकालल जाइत अछि । झरनीपर मर्सिया गाओल जाइत अछि । मैथिली लोकगीतमे ई बड़ मार्मिक रूपेँ प्रस्तुत भेल अछि ।

एकर अतिरिक्त देशभक्ति एवं महापुरुषक जीवनपर आधारित सेहो अनेक पर्व अपना ओहि ठाम मनाओल जाइत अछि, जाहिमे 26 जनवरीकेँ गणतंत्र दिवस, 15 अगस्तकेँ स्वतंत्रता दिवस, 5 सितम्बरकेँ शिक्षक दिवस, 2 अक्टूबरकेँ गाँधी जयन्ती, 14 नवम्बरकेँ बाल दिवस आदि-आदि कतेको पर्वक आयोजन समय-समयपर होइत रहैत अछि, जे मिथिलाक संस्कृतिक अनुरूप थिक ।

बोध प्रश्न

1) निम्नलिखित किछु कथन ठीक अछि, किछु कथन ठीक नहि अछि । ठीकपर अहाँ ई चेन्ह (✓) लगाउ :

क) मानव जातिक सामूहिक प्रयाससँ संस्कृति-सभ्यताक विकास भेल छैक ।
() सही () गलत

ख) मधुश्रावणी राष्ट्रीय पर्व थिक । () सही () गलत

ग) बरिसाति लोकपर्व थिक । () सही () गलत

घ) मर्सिया लोकगीत थिक । () सही () गलत

2) निम्नलिखित पर्वकेँ सही प्रतीकात्मक अर्थसँ जोड़ू

1)	स्वतंत्रता दिवस	क)	आसुरी शक्तिपर विजय
2)	दशमी	ख)	विद्याक आकांक्षा
3)	सरस्वती पूजा	ग)	त्याग-बलिदानक स्मृतिमे
4)	ईदलजुहा	घ)	राष्ट्रीय भावना

3) निम्नलिखित वाक्यसभक तात्पर्यक रूपमे तीनटा कथन देल गेल अछि, ताहिमे जे कथन उपयुक्त तात्पर्यक बोध करबैत हो, तकरा चिह्नित करू :

i) पाबनि-तिहार संस्कृतिक महत्त्वपूर्ण अंग होइछ ।

क) पाबनि-तिहार पूर्वजक परम्पराक स्मरण करबैत अछि । [ ]

ख) पाबनि-तिहार आ संस्कृतिक अन्योन्याश्रय सम्बन्ध अछि । [ ]

ग) पाबनि-तिहार सभ्यताक इतिहास थिक । [ ]

ii) यदि जीवनसँ पाबनि-तिहारकेँ हटा देल जाय तँ लोकक जीवन अगबे नरक भऽ जयतैक ।

क) जीवनमे आनन्द-प्राप्तिक हेतु पाबनि-तिहार अनिवार्य छैक ।[ ]

ख) जीवनक उद्देश्य होइछ स्वर्ग प्राप्त करब । [ ]

ग) नरक प्राप्त नहि हो से प्रयास करबाक चाही । [ ]

iii) समयमे परिवर्त्तन भेलासँ सभ्यता-संस्कृतिमे सेहो परिवर्तन भऽ जाइत छैक ।

क) सभ्यता-संस्कृति स्थायी नहि होइछ । [ ]

ख) समयक परिवर्तन निश्चित छैक । [ ]

ग) संस्कृतिकेँ समयसँ कोनो सम्बन्ध नहि होइछ । [ ]

4) एतऽ हम प्रधान पाबनि-तिहारक चर्चा कयलहुँ अछि । अहाँ जनैत छी जे मिथिलामे कतिपय धर्म-सम्प्रदाय अछि, अपन-अपन रीति-रेवाज अछि । एकेटा तिलासंक्रान्ति दू ठाम दू रंगसँ मनाओल जाइत अछि--कतहु दिनमे चूड़ा-दही आ रातिमे खिच्चड़ि खायल जाइत अछि तँ कतहु दिनेमे खिच्चड़ि खयबाक रेवाज अछि, कतहु पूर्णिमाकेँ दिनेमे सत्यनारायण भगवानक पूजा होइत अछि तँ कतहु संक्रान्ति दिन संध्याकाल सत्यनारायण पूजा करबाक विधान अछि ।तँ एतऽ पाबनि-तिहारे टाक वर्णन करबाक उद्देश्य नहि अछि । हमर कहब अछि जे पाबनि-तिहार सांस्कृतिक पर्व थिक, जे हमरालोकनिक

जीवनक क्रिया-कलापसँ सम्बन्ध रखैत अछि । पारस्परिक प्रेम आ सद्‌भावना-सहिष्णुताक वातावरणक सृष्टि करब, कटुता-वैमनस्यकेँ दूर भगायब, अपन परम्पराक रक्षा करब, लोककला आ लोकगीतक प्रचार-प्रसार करब, जीवनक हेतु एकर उपयोगिताकेँ देखायब एहि पाठक मूल बिन्दु थिक । तेँ एहि ठाम किछु वाक्य देल जा रहल अछि । ओहि वाक्यक कोष्ठकमे देल गेल दू शब्दमेसँ सही शब्दकेँ राखू आ अनुपयुक्त शब्दकेँ काटि दियौक, जाहिसँ वाक्य सार्थक भऽ जाइक ।

1) पर्व मनुष्यक (संस्कृति / सभ्यता)क महत्त्वपूर्ण अंग थिक ।

2) पाबनि समय एवं (क्षेत्र / प्रकृति)क अनुसार बदलैत अछि ।

3) (जूड़शीतल / दशमी)क अवसरपर कादो-माटिसँ लोककेँ तोपल जाइछ ।

4) लक्ष्मी (विद्या / धन)क अधिष्ठात्री मानल जाइत छथि ।

5) छठि (शक्ति / भक्ति)क पर्व अछि ।

6) चौरचनमे (ठकुआ / पिडुकिया) बनैत अछि ।

7) तिलासंक्रान्तिमे लोक (बड़ी भात / खिच्चड़ि) खाइत अछि ।

8) मधुश्रावणी साओन मासक (तृतीया / पंचमी) दिन होइत अछि ।

9) दशमीमे लोक (जयन्ती / अनन्त) धारण करैत अछि ।

10) कोजगरा (अमावास्या / पूर्णिमा) दिन होइत अछि ।

11) हुक्कालोली (सुकराती / भरदुतिया)मे भाँजल जाइत अछि ।

12) दाहा (ईद / मोहर्रम)मे बनाओल जाइत अछि ।

13) महापुरुषक जन्मदिवसकेँ (सांस्कृतिक / राष्ट्रीय) पर्व कहल जाइत अछि ।

14) 15 अगस्तकेँ (गणतंत्र दिवस / स्वतंत्रता दिवस) मनाओल जाइत अछि ।

15) (मोहर्रम / ईद)क अवसरपर सेवइ बाँटल जाइत अछि ।

5) क) पारा 1 मे प्रयुक्त 'उमंग' शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू एवं पारा 2 मे 'भूक्षेत्र' शब्दक हेतु प्रयुक्त दोसर शब्दक उल्लेख करू ।

1) उमंग ....

2) भूक्षेत्र ....

ख) पारा 3 मे 'आराधना' शब्दक प्रयोग भेल अछि । एहि भावकेँ स्पष्ट करऽवला अन्य शब्दक उल्लेख करू ।

....

....

....

....

....

....

....

6) i) पारा 3 मे जाहि देवी-देवताक उल्लेख कयल गेल अछि, तनिक उल्लेख करू ।

....

....

....

....

....

ii) पाबनि मनयबाक प्रसंग हम 'आस्था' शब्दक प्रयोग कयने छी । अहाँ सम्पूर्ण पाठमे एहि शब्दक तात्पर्यसँ मिलैत अन्य शब्दकेँ ताकिकऽ लिखू ।

....

....

....

....

....

7) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दू-तीन पाँतीमे दियऽ ।

i) पाबनि-तिहारक महत्त्वकेँ स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

ii) लोकआस्थासँ सम्बन्धित कोनो चारि पर्वक उल्लेख करू ।

....

....

....

....

....

iii) राष्ट्रीय पर्वकेँ किएक मनाओल जाइछ ?

....

....

....

....

iv) ईद किएक मनाओल जाइत अछि ?

....

....

....

....

....

3.3 शब्दकोशक उपयोग

एखन अहाँ प्रमुख पावनि-तिहारक विषयमे जानतब प्राप्त कयलहुँ अछि । अहाँ एहिमे कतिपय नव शब्द देखने होयब । अन्तमे कोनो शब्दावली नहि देल गेल अछि, जाहिसँ शब्दकेँ एकठाम देखितहुँ । इहो अहाँ जनैत छी जे कोनो पोथी आ कि अखबार आदि पढ़बाक समय अन्तमे शब्दावली तँ नहि देल गेल रहैत छैक । एहना स्थितिमे शब्दक अर्थ जनबाक कोन विधि छैक ? कोना नव शब्दक अर्थ जानि सकैत छी ? एहि लेल शब्दकोश देखबाक आवश्यकता पड़त ।

तखन, आब प्रश्न ई उठैत अछि जे शब्दकोशमे तँ असंख्य शब्द रहैत छैक । ओहि समुद्रमे कोनो खास शब्दक अर्थ कोना पता लागत ? ओकरा कोना ताकब ? शब्दकोशसँ शब्दक अर्थेटा नहि भेटैत छैक, अपितु ओहि संगे आनो कतोक जनतब भेटैत छैक । आगाँ एकरे चर्चा करबाक अछि ।

3.3.1 शब्द ताकब

अहाँ प्रथमे इकाइमे देवानागरीक परिचय प्राप्त कयलहुँ । तँ ओहि ज्ञानकेँ दोहरयबाक हेतु आगाँ देल गेल रिक्त स्थानमे वर्णमालाकेँ लिखि लियऽ आ ओकर क्रमकेँ ठीकसँ देखू ।

अ

क

च

ट

त

प

य

श

क्ष

1) वर्णमालामे वर्णक एहि क्रमकेँ अकारादि (अकार + आदि) कहल जाइत अछि । 'अकार'क अर्थ भेल वर्ण (अ) । अन्य वर्णकेँ सेहो हम 'चकार' 'टकार' 'तकार' 'पकार' आदि शब्दसँ जानि सकैत छी, बुझि सकैत छी, कहि सकैत छी, बुझा सकैत छी । शब्दकोशमे सभ शब्द वैह अकारादि क्रमसँ देल गेल रहैत अछि, अर्थात् पहिने 'अकार'क शब्द, फेर 'आकार'क शब्द । पुनः 'इकार'क शब्द । जँ अहाँकेँ 'गगन' शब्द तकबाक होअय तँ (ग) सँ प्रारम्भ होबऽवला शब्दकेँ देखू । शब्द देबाक एहि क्रमकेँ शब्दकोशीय क्रम **(alphabetical order)** सेहो कहल जाइत अछि ।

2) मैथिलीमे अकारक अन्तर्गत कतेक शब्द अबैत छैक, आब वैह प्रश्न फेर अछि जे ओहि अनेक शब्दक बीच कोनो एक शब्दकेँ कोना ताकल जाय ? अकारक भीतर शब्दकेँ तकबाक हेतु तँ शब्दक दोसर वर्णमे अकारादि क्रमकेँ देखबाक होयत । यदि दोसर वर्ण समाने होइक तँ तेसर वर्ण देखबाक होयत, जँ तेसरो वर्ण मानि लियऽ समाने होइक तँ चारिम वर्णकेँ देखबाक होयत । एहि प्रकारेँ प्रत्येक वर्णकेँ देखैत चलू तँ अहाँ सही शब्द धरि पहुँचि जायब । उदाहरण लेल शब्दकोशक क्रम कोना रहैत छैक, से आगाँमे किछु शब्दकेँ देखा रहल छी । ध्यान दियौक ।

दू वर्ण	तीन वर्ण	चारि वर्ण	पाँच वर्ण
चप	चंपड़	चपचप	महिसवार
चर	चपल	भड़कछ	घोड़सवार
घर	चरण	भड़कब	फटकाओन
वर	चरक	भटकब	फटकफंद
नर	अमल	टमटम	महतमानि

शब्दकोशमे छोट-पैघ सभ प्रकारक शब्द एक संग रहैत छैक । एहन परिस्थितिमे प्रत्येक वर्णक क्रमानुसार शब्दकोशक क्रम अहाँ देखि सकैत छी । ऊपर देल गेल शब्दक अतिरिक्तो किछु अन्य शब्दकेँ सेहो शब्दकोशक क्रममे राखल जाइत छैक, अहाँ एकर क्रमकेँ आगाँक शब्दावलीमे देखि सकैत छी । देखू, एहि ठाम किछु उदाहरण देल जा रहल अछि :

कंक, कखन, कखौर, ककबा, कक्ष,
कङनी कचकच, कचर-कचर, कचिया,
कजरौटी, कठकोंकाड़ि, कड़कड़ायब, गनगनायब
दरारि, प्रकोप, प्रदर्शन, राजनीतिज्ञ, सखा ।

3) अहाँ इहो देखने होयबैक जे किछु वर्ण वर्णमालामे नहि छैक, जेना

अनुस्वार ं
चन्द्रबिन्दु ँ
विसर्ग :
ड़ ढ़ .
हलन्त ्

आब ई प्रश्न अहाँ कऽ सकैत छी जे एहिसँ बनल शब्दकेँ शब्दकोशमे कोना ताकब ? शब्दकोशमे अनुस्वार (ं) एवं चन्द्रबिन्दु (ँ) केँ यद्यपि एके मानल जाइत अछि, किन्तु मैथिलीमे दुनूक प्रयोग दू अर्थमे होइत अछि, जेना - हंस-हँस । मैथिली शब्दकोशमे ई अन्तर भेटत, मुदा हिन्दी आ संस्कृत शब्दकोशमे नहि । ओहिमे ई भेद नहि अछि, यथा–

कँपकपी कंपन

काँच कंचन

हँसब   हंस

काँस   कंस

आँगन   अंग

पाँक   पंक

जतऽ व्यंजन छैक मुदा स्वर लुप्त छैक तँ ओकरा आगाँ मे हलन्त (्) लगतैक । ओना, शेष वर्ण केर क्रममे अन्तर नहि होइछ ।

4) प्रश्न ई उठैत अछि जे स्वरक मात्रासभ एवं व्यंजनसभक (संयुक्त वर्णक पहिल वर्ण)कें कोना ताकल जा सकैत अछि ? क्रम तँ यैह छैक–

कं क का कि की कु कू कृ के कै को कौ क्

एहि लेल शब्दकोशक क्रम देखू :

कंक, कंकड़, कँकुड़ी, कखौर
कंगन, कंगनी, कंगाल, कंघी, कँचका,
कंचन, कंज, कंटर, कंठ, कओर,
कचकूह, कठखोधी, कतिकी, कदीमा,
कनगुरिया, कनसार,
काका, कुच्चा, खद्द,

5) तीन आर अक्षर अछि : क्ष, त्र, ज्ञ । ई तीनू व्यंजन अछि,

क + ष = क्ष

त + र = त्र

ज + ञ = ज्ञ

जेना संयुक्त वर्णकें ताकल जाइछ तहिना एकरो ताकि सकैत छी ।

अभ्यास

1) निम्नलिखित शब्दकें शब्दकोशक क्रममे राखू । उत्तर इकाइकेर अन्तमे देखि सकैत छी ।

कत्थइ	परसू	घताह	कुरकुट	कारीगर
बान्ह	कतिपय	गुच्छ	ओगरवाह	उपराग
प्रचंड	ठाठव	कंठ	किराया	उपनयन
नोनियाह	चुगिला	कंचन	कार्य	उनासी
अङना	कठघारा	खजाना	ओकर	अस्सी

....

....

....

....

....

3.3.2 शब्दार्थ ताकब

शब्दकेँ तकलाक बाद अहाँ शब्दक अर्थ ताकब । कतिपय शब्द एहन होइछ जकर अर्थ तँ अनेक होइछ, मुदा प्रसंगक अनुकूल उपयुक्त अर्थ बुझलासँ वाक्यक अर्थ स्पष्ट होइत छैक, जेना–

पक्ष = शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष, पाँखि, गुट, विचार ।

पक्षधर = कोनो एक पक्षक समर्थक ।

पक्षपात = एक दिस झुकब ।

पक्षपाती = पक्षपात कयनिहार ।

कर = हाथ, किरण, टैक्स, = करकमल, दिनकर, आयकर ।

उपर्युक्त अर्थ तकबाक हेतु प्रसंगपर ध्यान देबऽ पड़त । **के ककरा कखन की** कहैत छैक ? शब्दकोशसँ पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द केर विवरण प्राप्त कऽ सकैत छी । संज्ञा, विशेषण, क्रियाक परिचय भेटि सकैत अछि । लोकोक्तिक अर्थ सेहो एहिमे ठाम-ठाम देल गेल रहैत छैक ।

अभ्यास

2) निम्नलिखित तीन शब्दक अर्थ शब्दकोशसँ देखिकऽ लिखू । शब्द वाक्यमे चिह्नित अछि :

क/ ओ **एकटक** ओकरा देखैत रहल ।

ख/ ओ **गोधूलि** बेलामे अयलाह ।

ग/ ई **निरैँठ** अछि ।

3.3.3 शब्दकोशसँ अन्य जानकारी प्राप्त करब

1) किछु एहन शब्द जे मैथिलीक नहि अछि– अरबी, फारसी, अंग्रेजी अथवा संस्कृतक शब्द थिक, जे विदेशी वा तत्सम कहल जाइत अछि, एहन अपरिचित शब्दावलीक ज्ञान सेहो शब्दकोशसँ भऽ जाइत छैक । जेना अहाँ जनैत छी जे उद्‌गमक दृष्टिसँ शब्दक चारि भेद होइत छैक – तत्सम, तद्‌भव, देशज, विदेशी ।

तत्सम – संस्कृतक अविकल रूप, जेना– पुत्र ।

तद्‌भव – संस्कृत शब्दक विकृत रूप, जेना– पूत ।

देशज – क्षेत्रविशेषक प्रचलित शब्द, जेना– कुसियार ।

विदेशी – विदेशी भाषा अंग्रेजीक बटन, लालटेन, टीसन इत्यादि ।

2) शब्दकोशसँ एकटा तँ शब्दक उद्‌गम कोन भाषासँ भेल अछि, तकर जानकारी प्राप्त होइत अछि, दोसर शब्दक लिंगक जानकारी सेहो प्राप्त होइत अछि ।

3) एतबे नहि, शब्द कोन व्याकरणिक वर्गक अछि – विशेषण, क्रिया, अव्यय आदिक परिचय सेहो एहिसँ भेटैत अछि । उदाहरणक लेल देखू :

आँखि [संज्ञा-स्त्रीलिंग] संस्कृत अक्षि, नेत्र ।

आँखि आयब, उठब, उनटब, खूजब, मूनब, खोलब, ताकब, गड़ब, गड़ायब, गुड़रब, लाल करब, देखायब, कड़ा करब, पथरायब, फोड़ब । (ईसब मोहाबिरा थिक ।)

4) उच्चारण अंग्रेजी शब्दकोशमे फरिछाओल जाइत छैक, मैथिलीक शब्दकोशमे नहि ।

5) वर्तनीमे मैथिलीक किछु शब्द भिन्नता रखैत अछि । जेना बरतन, बर्त्तन । बरखा, वर्षा । वर्ष, बरिस । सप्ताह-हप्ता इत्यादि । शब्दकोश एक प्रकारक शब्दक अर्थ देखाय दोसर प्रकारक शब्दक लेल 'देखू फल्लाँ ठाम' कहि संकेत कऽ दैत अछि ।

शब्दकोशक बहुत उपयोगिता छैक, पहिनहुँ कहने छी जे एकर उपयोग शब्द तकबे टामे नहि, अपितु ओकर विविध रूपक परिचय प्राप्त करबामे सेहो होइत छैक ।

अभ्यास 3) एहि ठाम किछु शब्द देल जा रहल अछि, शब्दकोशक सहायतासँ एहि शब्दक स्रोत, व्युत्पत्ति, लिंगपर प्रकाश दियऽ :

शब्द	शब्दक स्रोत अथवा मूल शब्द	लिंग अथवा व्याकरणिक वर्ग	व्युत्पत्ति
आगमन			
आसुरी			
स्थायित्व			
गाभिन			
जाठि			
कान			
हाथ			
हाट			
हेमान			
हरमजदगी			

3.4 सारांश

एहि इकाइकेँ अहाँ आदिसँ अन्त धरि पढ़ि लेने होयब । आब अहाँ नीक जकाँ जानि गेल होयब जे पावनि-तिहारक हमरालोकनिक जीवनमे कतेक महत्त्व अछि । पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक क्षेत्रमे पावनि-तिहारक जे योगदान छैक, ओकरा के अस्वीकार कऽ सकैत अछि ? एतबा आवश्य जे एहि इकाइ केर पढ़लाक बाद अहाँ :

- संस्कृति संबंधी विषयमे प्रयोग कयल गेल भाषाक विशेषताकेँ जानि सकैत छी ।
- संस्कृति संबधी विषयमे प्रयुक्त शब्दसभक ठीकसँ प्रयोग कऽ सकैत छी ।
- शब्दकोशक सही उपयोग कऽ सकैत छी ।

3.5 उपयोगी पुस्तक

मैथिली शब्दकोश : मैथिली अकादमी, पटना ।

3.6 बोध प्रश्नावली / अभ्यासक उत्तर/ सबक अनुकार्य

1) क) सही ख) गलत ग) सही घ) सही

2) 1/घ 2/क 3/ख 4/ग

3) i/ख ii/क iii/क

4) 1/संस्कृति 2/क्षेत्र 3/जूड़शीतल 4/घन
5/भक्ति 6/पिड़ुकिया 7/खिच्चड़ि 8/तृतीया
9/जयन्ती 10/पूर्णिमा 11/सुकराती 12/मोहरम
13/राष्ट्रीय 14/स्वतंत्रता दिवस 15/ईद ।

5) क) (i) उमंग-उत्साह-उल्लास
(ii) भूखंड
ख) अराधना-पूजा-आस्था-श्रद्धा-प्रेम-भक्ति

6) i) सूर्य, चन्द्र, राम, कृष्ण, गणेश, हनुमान, लक्ष्मी, दुर्गा, महादेव
ii) श्रद्धा / भक्ति / पूजा / आराधना / आस्था ।

7) i) जीवनक एकरसताकेँ पाबनि-तिहार दूर कऽ आनन्द-उमंग-उल्लासक वातावरण समस्त परिवार ओ समाजमे आनिकऽ सर्वत्र प्रेम ओ सद्भावनाक सन्देश दैत अछि ।

ii) मधुश्रावणी, भरदुतिया, जूड़शीतल, बरसाति ।

iii) राष्ट्रक समस्त भागमे प्रत्येक नागरिककेँ एकताक सूत्रमे राष्ट्रीय पर्व बान्हि दैत अछि । राष्ट्रीय पर्वमे प्रत्येक जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषाभाषी एक भारतीय बनि अपन पारस्परिक प्रेमक प्रदर्शन करैत अछि । भावात्मक एकता स्थापित करब राष्ट्रीय पर्वक मुख्य उद्देश्य होइत छैक ।

iv) रमजान समाप्त भेलापर आनन्द ओ उल्लासक वातावरणमे मुसलिम भाइ ईद मनबैत छथि । भरि मास रोजाक सफलतापर आनन्दक प्रदर्शन करैत छथि । बूढ़-बच्चा, स्त्री-पुरुष सभ नव वस्त्र पहिरि ईदगाहपर उपस्थित भऽ गराँ मिलाय प्रेमक भाव प्रकट करैत छथि, बधाइ दैत छथि, मधुर बँटैत छथि । ई आनन्दक उत्सव थिक ।

अभ्यास

1) अङना, अस्सी, उनासी, उपनयन, उपराग, ओकर, ओगरवाह, कंचन, कंठ, कठघारा, कतिपय, कत्थइ, कारीगर, कार्य, किराया, कुरकुट, खजाना, गुच्छ, घताह, चुगिला, ठाठब, नोनियाह, परसू, प्रचंड, बान्ह ।

2) क) एकटक - अपलक दृष्टिएँ, बड़ीकाल धरि आँखिक तल्लीनता ।

ख) गोधूलि - दिनान्त काल (जखन साँझु पहर गायसभ बाधसँ अपन थरि पर गरदा उड़बैत अबैत अछि, ओही बेलाकेँ गोधूलि वेला कहल जाइछ ।

ग) निरैँठ - जे ऐँठ नहि कयल गेल हो ।

3)

शब्द	शब्दक स्रोत अथवा मूल शब्द	लिंग अथवा व्याकरणिक वर्ग	व्युत्पत्ति
आगमन	आ (उपसर्ग)	संज्ञा, पुलिंग	गम् संस्कृत
आसुरी	असुर (संस्कृत)	विशेषण	असुर + ई
स्थायित्व	स्थायी - संस्कृत	संज्ञा, पुलिंग	स्थायी - त्व
गाभिन	संस्कृत	स्त्रीलिंग	गर्भवती
जाठि	संस्कृत	संज्ञा	यष्टि
कान	संस्कृत	संज्ञा	कर्ण
हाथ	संस्कृत	संज्ञा	हस्त
हाट	संस्कृत	संज्ञा	हट्ट
हेमान	अरबी	संज्ञा	हेबान
हरमजदगी	फारसी	संज्ञा	हराम+जादा +गी

अनुकार्य

शब्दकोशक सही ढंगसँ प्रयोग सिखबाक हेतु एहि इकाइमे प्रयुक्त कठिन शब्दावलीक अर्थ मैथिली शब्दकोशमे देखू ।

इकाइ 4 समाजविज्ञान विषयक बोध एवं निबन्ध-रचनाक परिचय

इकाइक रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

एहि इकाइकेँ पढ़लाक बाद अहाँ

- मैथिलीमे समाज विज्ञान आ सामाजिक विषयकेँ बुझि अपन शब्दमे प्रकट कऽ सकैत छी,
- समाज विज्ञान संबंधी विषयकेँ पढ़ि ओकर शब्दावलीक ठीक-ठीक प्रयोग कऽ सकैत छी,
- निबन्ध-रचना काल अपन कथनकेँ विस्तार एवं क्रमबद्धता दऽ सकैत छी,
- व्याकरण संबंधी ज्ञान तथा ओकर उचित प्रयोग कऽ सकैत छी ।

4.1 प्रस्तावना

इकाइ तीनमे अहाँ संस्कृति विषयक ज्ञान प्राप्त कयलहुँ । अहाँकेँ बुझल भेल जे संस्कृति की थिक, समाजकेँ ई कोना प्रभावित करैत छैक तथा व्यक्तित्वक विकासमे एकर की योगदान छैक ? कोनो राष्ट्र अथवा समाजक विशिष्ट परिचिति ओहि देश वा समाजक संस्कृतिए होइत छैक । भारतीय संस्कृतिक संगहि अहाँ मिथिलाक संस्कृतिक मुख्य-मुख्य विशेषतासँ परिचित भेलहुँ । एहि इकाइमे अहाँ समाज विज्ञान विषयक अध्ययन करब ।

कोनो व्यक्तिक संबंध अपन समाजसँ कोन प्रकारक छैक अथवा कोनो व्यक्ति सामाजिक क्रिया-कलापमे कोन रूपेँ भाग लैत अछि ? किछु व्यक्तिक समूह परिवार थिक तथा अनेको परिवारक समूह समाज थिक । समाजक गठनमे अनेको परिवार, अनेको जाति आ धर्म महत्त्व रखैत अछि । अपनहिँ परिवारसँ व्यक्ति संस्कृतिक प्रथम पाठ प्राप्त करैत अछि । परिवार व्यक्तिकेँ सामाजिक आचरण सिखबैत छैक । व्यक्ति ओ समाजमे अन्योन्याश्रय संबंध अछि ।

एहि इकाइमे हम निबन्ध-रचनापर सेहो विचार करब । संगहि, अपन विचारकेँ कोना प्रस्तुत करबाक चाही, ताहूपर विचार करब, जाहिसँ अहाँ स्वयं विभिन्न विषयपर निबन्ध-रचनाक क्षमता प्राप्त कऽ सकब । एहि हेतु सम्पूर्ण इकाइकेँ विभिन्न खंडमे बाँटल गेल अछि, जाहिसँ अहाँकेँ ओहि खंडमे वर्णित विषय-वस्तुकेँ बुझबामे कोनो कठिनता नहि हो ।

4.2 परिवार

प्रत्येक व्यक्ति चाहे ओ पुरुष हो वा स्त्री, कोनो-ने-कोनो परिवारक सदस्य रहैत अछि--पिता आ कि मायक रूपमे, बेटा वा बेटीक रूपमे, भाइ कि बहिनक रूपमे, स्त्री अथवा स्वामीक रूपमे । पिता प्रतिदिन नियत समयपर अपन कार्यपर जाइत छथि । हुनक कमाइसँ घरक खर्च चलैत अछि । माय आङनक काज करैत छथि । ओ भानस-भात करैत छथि, बच्चासभकेँ तैयार कऽ स्कूल पठबैत छथि । अनेक परिवारमे बाबा-दादी सेहो रहैत छथि । हुनक आदर परिवारक सभ सदस्य करैत छथि । धीया-पूताकेँ तँ सभसँ बेसी प्रेम हुनकहिसँ रहैत छैक । की कहियो अहाँ ई सोचलहुँ अछि जे बाप-माय अपन सन्तानक हेतु एतेक कष्ट किएक उठबैत छथि ? किएक बच्चा मायक बिगड़लहुपर, ओकरासँ मारि खयलहुपर, सभसँ बेसी प्रेम अपन मायहिसँ करैत अछि ? ई परिवारे थिक जे अपन सभ सदस्यकेँ प्रेम-सूत्रमे बन्हने रहैत अछि । जाहि समाजमे परिवार नहि हो, एहन समाजक कल्पना की हम कऽ सकैत छी ?

नहि, एहि संसारमे एहन कोनो समाज नहि अछि जाहिमे परिवार नहि हो । परिवार समाजक आधारभूत इकाइ थिक । परिवार समाजक रीढ़क हड्डी थिक । ई एहन सामाजिक संस्था थिक, जकर बलपर मानव प्रगति कऽ सकल अछि ।

खंड- अ

आब ई प्रश्न उठैत अछि जे परिवारक एतेक महत्त्व किएक अछि ? हम बेसी परिवारमे देखैत छी जे माय-बाप स्वयं कष्ट उठाय अपन धीया-पूताकेँ अधिकसँ अधिक सुख-सुविधा दैत छथि । हुनक सन्तान जखन पैघ भऽ जाइत छनि तँ ओहो अपन बाप-मायक संग एहने व्यवहार करैत अछि । वस्तुतः परिवार एक एहन पाठशाला अछि जतऽ व्यक्ति त्याग आ अनका हेतु जीवाक प्रेरणा ग्रहण करैत अछि । एहि रूपेँ ओ समाजक नीक आ प्रतिष्ठित नागरिक बनबाक हेतु अपनाकेँ तैयार करैत अछि ।

हम देखैत छी जे कोना परिवारक सभ सदस्य संकीर्ण स्वार्थकेँ त्यागि सम्पूर्ण परिवारक हित लेल कार्य करैत अछि । ओ एक भावात्मक सूत्रमे बान्हल रहैत अछि । ओलोकनि अपनेटा हेतु नहि, अपितु सम्पूर्ण परिवारक हेतु जीबैत अछि, सभक सुखकेँ अपन सुख ओ सभक दुःखकेँ अपन दुःख बुझैत अछि । एही भावात्मक सूत्रक कारणेँ व्यक्ति अपन व्यक्तित्वक विकास आ विस्तार करैत अछि । परिवार अपन प्रत्येक सदस्यकेँ परस्पर स्नेह, प्रेम आ त्याग-भावनाक शिक्षा दैत अछि आ अपेक्षा करैत अछि जे ओहोलोकनि समाजक प्रत्येक सदस्यक प्रति एहने भाव राखय ।

परिवारक कमसँ कम एको सदस्य कोनो-ने-कोनो व्यवसाय अथवा नोकरी करैत अछि । क्यो लोहारक कार्य करैत अछि तँ क्यो खेती-बाड़ी, क्यो अध्यापक अछि तँ क्यो व्यापारी, क्यो पुलिसमे अछि तँ क्यो सेनामे, क्यो कर्मचारी अछि तँ क्यो अफसर । कहबाक अभिप्राय ई जे कोनो-ने-कोनो काज करैत ओ प्रतिमास किछु कमाइत अछि, जाहिसँ घरक खर्चा चलैत छैक- भोजन, वस्त्र ओ आवासक प्रबन्ध होइत छैक । एहि तरहेँ हम देखलहुँ जे जीवनयापनक हेतु अति आवश्यक अछि जे परिवारक कमसँ कम एको सदस्य अवश्य धनोपार्जन करय ।

एहि ठाम ईहो बुझि लेबाक थिक जे परिवारक कोनो व्यक्ति कोनो व्यवसाय वा नोकरी कऽकऽ अपन अथवा अपन परिवारेटाक जीवन-निर्वाहक प्रबन्ध नहि करैत अछि, अपितु ई कार्य ओ सम्पूर्ण समाजक हेतु करैत अछि । एक दृष्टान्तसँ एकरा नीक जकाँ बुझू । लोहार लोहाक अन्य वस्तुक संगहि हर-फार बनबैत अछि । एहि कमाइसँ ओ घरक खर्चा चलबैत अछि । ओहि हरसँ कृषक खेत जोति अन्न उपजबैत अछि । अपन घरक खर्च जोग अन्न राखि ओ कृषक ओहि अन्नकेँ बाजारमे बेचि टाका घर अनैत अछि, जाहिसँ अपन परिवारक आन-आन वस्तुक

प्रबन्ध करैत अछि । कृषक द्वारा बेचल अन्न ओहन लोक जे कृषक नहि अछि, बजारसँ कीनिकऽ घर अनैत अछि । एहिसँ ओ अपन परिवारक भोजनक व्यवस्था करैत अछि । एहि प्रकारेँ हम देखैत छी जे प्रत्येक परिवारक एक सदस्य कोनो-ने-कोनो एहन कार्यसँ जुड़ल रहैत अछि जाहिसँ ओहि परिवारकेँ आय होइत छैक आ ओहिसँ परिवारक आवश्यकताक पूर्ति होइत छैक । कृषक अन्न उपजबैत अछि, मजदूर कल-कारखानामे अनेको प्रकारक वस्तु बनबैत अछि, शिक्षक पढ़बैत अछि, डॉक्टर रोगक निदान करैत अछि । एहि तरहेँ समाजक प्रगतिमे सभक हिस्सा निश्चित होइत अछि ।

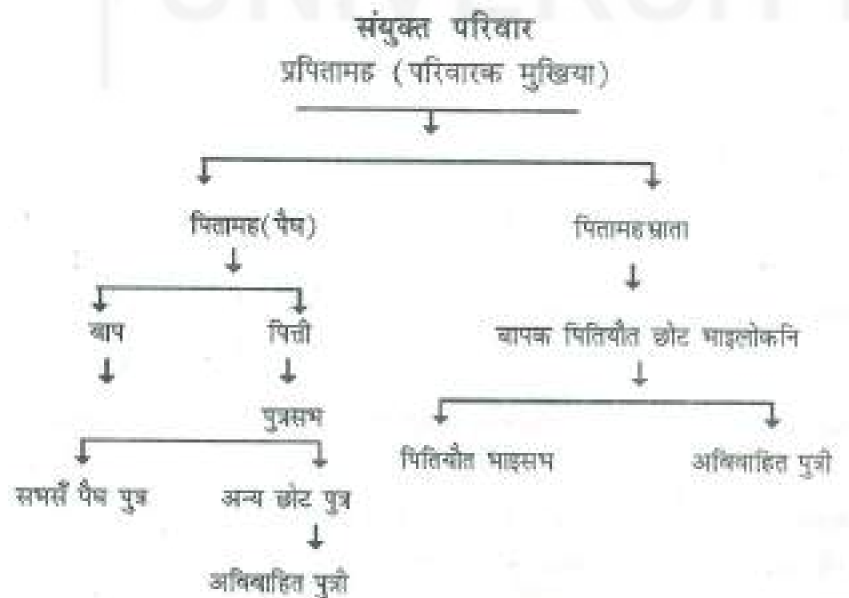
हम देखलहुँ जे हमर परिवारक हेतु समाजक अन्य व्यक्ति द्वारा कयल गेल कार्यक कतेक महत्त्व छैक । एकर अनुभव भेलासँ समाजक प्रति व्यक्तिक मनमे कृतज्ञताक भाव उत्पन्न होइत छैक, जाहिसँ हम समाजक उन्नतिक हेतु अधिक सक्रिय होइत छी । हमर एहि भावनाक प्रभाव हमर धीया-पूतापर सेहो पड़ैत छैक । ओहो समाजक उन्नति तथा सामाजिक क्रिया-कलापमे अपन योगदान देबऽ चाहैत अछि । व्यक्ति एहि रूपेँ समाज आ राष्ट्रक एक नीक नागरिक बनबाक शिक्षा ग्रहण करैत अछि ।

खंड- आ

हम परिवारक महत्वक चर्चा कयलहुँ तथा परिवार आ समाजक संबंधक विषयमे सेहो गप कयलहुँ । आब हम ई बुझऽ चाहब जे परिवारक रचना किंवा गठन कोना होइत अछि ? कोन-कोन व्यक्ति परिवारक सदस्य होइत छथि ? परिवारक भार उठयबाक आ परिवार चलयबाक भार किनकापर रहैत छनि ?

आइ-कालिह परिवारक अर्थ होइत अछि माय, बाप तथा हुनक अविवाहित बेटा-बेटी । बेटी विवाहोपरान्त अपन सासुर चल जाइत अछि आ बेटा सेहो विवाहक पश्चात् बाप-मायसँ भिन्न रहऽ लगैत अछि । किन्तु, पूर्वमे परिवारक ई अर्थ नहि छल । आइसँ किछु दशक पूर्व धरि समाजमे संयुक्त परिवारक प्रचलन छलैक, जाहिमे बाबा-बाबी, बाबाक माय, हुनकालोकनिक विवाहित बेटा ओ हुनक सन्तान । बेटी विवाहोपरान्त सासुर चल जाइत छलि । सम्पूर्ण परिवारक भानस एकै ठाम होइत छलैक । परिवारक सम्पत्ति सभक सम्पत्ति मानल जाइत छल । सभसँ पैघ वयसक पुरुष ओहि परिवारक मुखिया होइत छल, जकर नियंत्रण सम्पूर्ण परिवारपर रहैत छलैक ।

संयुक्त परिवार तथा आधुनिक परिवारक अन्तर निम्न रूपसँ बुझि सकैत छी :



संयुक्त परिवारमे प्रपितामहक सम्पूर्ण परिवार सम्मिलित रहैत छल । परिवारक मुखिया घरक सभसँ पैघ पुरुष होइत छलाह । प्रपितामहक बाद पितामह मुखिया बनैत छलाह ।



एहि तरहेँ हम देखैत छी जे संयुक्त परिवार आजुक एकल परिवारक संयुक्त रूप छल । आजुक एकल परिवार दोसर पीढ़ीमे प्रवेश करितहिँ नव परिवारक जन्म दैत अछि । आब प्रश्न उठैत अछि जे संयुक्त परिवारक अस्तित्व किएक समाप्त भऽ गेल ?

खंड- इ

मानव सभ्यताक अध्ययनसँ ज्ञात होइत अछि जे सभ दिन परिवार एक रंग नहि रहल अछि । ई बात सत्य अछि जे मानव समाज ओ सामाजिक विकासमे परिवारक स्थान सर्वोपरि रहल अछि । वस्तुतः परिवारक विकास समाजक विकासहिपर आश्रित अछि । पूर्वमे जाहि सामाजिक ओ आर्थिक व्यवस्थाक देन संयुक्त परिवार छल, से आइ दृष्टिगोचर नहि होइत अछि । आइ जाहि रूपक सामाजिक आ आर्थिक व्यवस्था अछि, वैह एकल परिवारक जन्म देलक अछि ।

पूर्वमे समाजक बेसी व्यक्ति खेती करैत छल । सामाजिक विकास मुख्यतः खेतीपर आधारित छलैक । संयुक्त परिवार सेहो कृषि-आधारित छल । कृषि-उत्पादनक संरचना (ढाँचा) सामन्ती छल । ओहि समय ट्रैक्टर वा पम्पिंग सेट नहि छल । बरही लकड़ीक हर बनबैत छल तथा लोहार ओहिमे लोहाक फार बनाकऽ लगबैत छल । ओहीसँ कृषक खेतमे हर जोतैत छल । कृषक-परिवारक सभ सदस्य खेतिएमे लागल रहैत छल । ओहिसँ जे आय होइत छलैक ताहीपर परिवारक भरण-पोषण होइत छलैक । सम्पत्तिपर परिवारक सभ सदस्यक सम्मिलित अधिकार रहैत छलैक । ओहि समयमे कम लोक नोकरी करैत छल । ओहि समय लोक पुस्तैनी कार्य करैत छल । जे पंडित छलाह जो पूजा-पाठ ओ पुरोहितक कार्य करैत छलाह । ओ अपन सन्तानकेँ सेहो पंडिते बनबैत छलाह । तहिना, जे व्यापारी छलाह वा जे जमीन्दार छलाह, ओहोलोकनि अपन-अपन सन्तानकेँ ओही कार्यमे लगबैत छलाह । ओहि समयमे एक परिवारक अनेक कमौआ सदस्यक आय फूट-फूट नहि रहैत छल, अपितु सामूहिक श्रमसँ उपार्जित सामूहिक सम्पत्ति मानल जाइत छल, जाहिपर सभक समान अधिकार रहैत छल ।

संयुक्त परिवार पितृसत्तात्मक छल । परिवारक सामूहिक सम्पत्तिपर बेटेलोकनिक अधिकार छल, बेटीक नहि । बेटीक अधिकार ओकर सासुरमे मानल जाइत छल । उच्चवर्ग वा धनिक वर्गक संयुक्त परिवारक स्त्रीलोकनिक भागीदारी आङनक कार्यमे रहैत छलनि, बाहरक कार्यमे नहि । ओलोकनि पुरुषवर्गपर निर्भर रहैत छलीह । एकर विपरीत, गरीब एवं पिछड़ल वर्गक स्त्री अपन घरक अतिरिक्त बहरिओ कार्य करैत छलीह ।

संयुक्त परिवारमे किछु गुण छल तँ किछु अवगुणो छल । संयुक्त परिवारक सभसँ पैघ गुण ई छल जे परिवारक सभ सदस्यकेँ सामाजिक सुरक्षा प्राप्त छल । परिवारक कोनो सदस्यक मृत्यु भऽ गेलापर ओकर स्त्री आ धीया-पूताकेँ सुरक्षा भेटैत छलैक । संयुक्त परिवारक अवगुण ई छल जे वैयक्तिक गुणक विकासक अवसर सीमित भऽ जाइत छलैक । व्यक्तिकेँ अपन ओहन इच्छा छोड़ऽ पड़ैत छलैक जे परिवारक परम्पराक विरुद्ध हो । संयुक्त परिवार

स्त्रीलोकनिक हेतु न्यायशील कथमपि नहि छल । संयुक्त परिवारमे व्यक्तिक स्थान गौण छल, परिवारक परम्परा सर्वोपरि ।

समय बदलल । समाजमे नव-नव व्यवस्था प्रारंभ होबऽ लागल । ताहिसँ संयुक्त परिवार समाप्त होबऽ लागल । कल-कारखाना खुजऽ लागल, मशीनसभक आविष्कार होबऽ लागल, जाहिसँ प्राचीन उत्पादन-पद्धति समाप्त होबऽ लागल । जखन आधुनिक संयंत्रपर थोड़ समयमे आ थोड़ खर्चमे कपड़ा बनऽ लागल तँ हस्तकरघा-उद्योग क्षीण होबऽ लागल । कृषक ट्रैक्टरसँ खेत जोतबऽ लागल, जाहिसँ हरसँ खेत जोतब कम भऽ गेल । नव-नव मशीन पुंजोत्पादन **(Mass Production)** केँ जन्म देलक । पैघ-पैघ कारखाना स्थापित कयल गेल । औद्योगीकरण प्रारंभ भेल । एक-एक कारखानामे हजारो श्रमिक कार्य करऽ लागल । एहि रूपेँ शहरीकरण शुरू भेल । एकर परिणाम ई भेल जे लोक अपन व्यवसायकेँ छोड़ि नोकरीपर जाय लागल । अपन कमाइकेँ ओ खास आय बुझऽ लागल । एक परिवारमे जँ चारि गोटे कमौआ भेल तँ ओहि चारूक आय सम्मिलित आय नहि भऽकऽ चारूक खास आय भऽ गेल । एहि प्रकारेँ अपन खास आयक जन्म भेल ।

मानि लियऽ एक बापक चारि बेटा अछि । ओ चारू भाइ नोकरी करबाक हेतु भिन्न-भिन्न शहर वा एके शहर जाइत अछि । चारू एके शहरमे विभिन्न ठाम विभिन्न नोकरी करऽ लगैत अछि । एक शहरमे रहियोकऽ चारू एक ठाम नहि सकैत अछि । एकर कारण अछि जे चारू भाइक आय भिन्न-भिन्न छैक । एक भाइ तीस हजार, दोसर दस हजार, तेसर पचास हजार तँ चारिम बीस हजार कमाइत अछि । ओसभ अपन आयक अनुरूप अपन-अपन स्त्री ओ धीया-पूताक पालन-पोषण करैत अछि । ई एक महत्त्वपूर्ण कारण भेल, जाहिसँ संयुक्त परिवार टूटल आ एकल परिवारक विस्तार भेल । ई सामाजिक विकासक स्वाभाविक प्रक्रिया थिक जकरा रोकल नहि जा सकैत अछि ।

औद्योगीकरणक संगहि शहरीकरणक प्रक्रिया प्रारंभ भेल । जेना-जेना तकनीकी विकास बढ़ैत गेल, ओकरा घर-घर धरि पहुँचयबाक तथा ओहिमे व्यक्तिकेँ प्रशिक्षित करबाक हेतु आधुनिक शिक्षा-पद्धति अपनाओल गेल । फलतः स्कूल, कॉलेज आ विश्वविद्यालयसभक स्थापना होइत गेल । ई नव शिक्षा लोकक चेतनामे परिवर्तन अनबामे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक ।

खंड- ई

नव सामाजिक व्यवस्थामे ई मानल जाय लागल जे प्रत्येक व्यक्ति समान अछि, चाहे ओ स्त्री हो वा पुरुष । कोनो जाति वा धर्म वा भाषा वा लिंगक आधारपर भेद नहि कयल जा सकैत अछि । धर्म, जाति, भाषा ओ लिंगक आधारपर भेद करब अनुचित तँ अछिए जे अन्यायपूर्ण सेहो अछि । लोकतंत्रक आधार समतामूलक समाज थिक । प्रति व्यक्तिकेँ अपन व्यक्तित्वक विकास करबाक पूर्ण अवसर भेटबाक चाही । ओकरा ओतेक दूर धरि स्वतंत्रता भेटबाक चाही, जतेक दूर धरि सामाजिक प्रगतिमे ओ बाधक नहि होइक । पढ़बाक स्वतंत्रता आ जीविकाक स्वतंत्रता सभकेँ भेटबाक चाही, किएक तँ एहिसँ सामाजिक प्रगति होयत । प्रत्येक व्यक्तिकेँ दोसराक प्रति बन्धुत्व वा मैत्रीक भाव रखबाक चाही । ककरो छोट वा हीन भावनासँ नहि देखबाक चाही । एहि तरहेँ स्वतंत्रता, समानता तथा बन्धुत्वक आदर्श नव व्यवस्थाकेँ जन्म देलक, जकरा लोकतंत्र कहैत छी । आब हमरालोकनि पढ़ब जे लोकतंत्रक अवधारणासँ परिवारपर कोन प्रकारक प्रभाव पड़ल ।

परिवारपर लोकतंत्रक पहिल प्रभाव ई पड़ल जे प्रत्येक व्यक्तिक बीच स्वतंत्रता ओ समानताक संबंध बनल । दोसर प्रभाव ई भेल जे नारीलोकनि सेहो परिवारक जीवन-यापनमे अपन योगदान देबऽ लगलीह । स्त्री आ स्वामी घर तथा बाहरक कार्यमे समान रूपेँ भाग लेब प्रारंभ

कयलनि । फलतः स्त्री-स्वामीक संबंधमे मूलभूत परिवर्तन भेल । आब ई रहरहाँ देखबामे अबैत अछि जे अनेको परिवारमे स्त्री स्वामी दुनू नोकरी करैत अछि । वस्तुतः आबे स्त्री पतिक अर्द्धांगिनी, सहचरी एवं मित्र बनलीह अछि । समाजक नव व्यवस्था एक पैघ सामाजिक आन्दोलनकेँ जन्म देलक । पूर्वमे विवाह एक एहन बन्धन छल जाहिमे स्त्रीकेँ आजीवन एके पुरुषक संग रहऽ पड़ैत छलैक, चाहे ओकर स्वामी निर्दयी, रोगी, बेकार, आलसी, पियक्कड़ किएक ने होइक ! नव व्यवस्थामे स्त्री अनेको कुप्रथा जेना– बालविवाह, सतीप्रथा, वैधव्य जीवन आदिसँ मुक्त भऽ गेलीह अछि । आब स्त्रियो अपन स्वामीसँ संबंध विच्छेद कऽ सकैत अछि । एहि रूपेँ समाजक नव व्यवस्थामे स्त्रीलोकनि पराधीनतासँ मुक्त भऽ गेलीह अछि ।

नव व्यवस्थाक कारणेँ कोनो व्यक्तिक मनमे अनेको शंका अथवा समस्या उठब स्वाभाविक थिकैक । पति वा पत्नीकेँ तलाकक अधिकार भेटलासँ परिवारक अस्तित्वपर संकट आबि सकैत छैक । दोसर बात ई जे एकल परिवारमे कोनो व्यक्ति अपन स्त्री ओ अविवाहित बेटे-बेटी टाक लालन-पालन करब अपन दायित्व मानैत छथि । फलतः हुनक बूढ़ बाप ओ बूढ़ि माय एकसरे कष्टपूर्ण जीवन बितयबा लेल बाध्य होइत छथि । समस्या एकर अतिरिक्तो भऽ सकैत अछि । इहो बात सत्य थिक जे जखन-जखन कोनो परिवर्तन होइत छैक तँ समाजमे समस्या अबितहिँ छैक । कोनो नव मान्यता नव समस्याकेँ जन्म दैत छैक । यदि हमसभ स्वतंत्रता, समानता ओ बन्धुत्वकेँ पैघ गुण मानैत छी तँ परिवारक एहि परिवर्तनकेँ स्वीकार करहि पड़त एवं एहिसँ उत्पन्न समस्याक समाधान ताकहि पड़त ।

बोध प्रश्न

1) नीचाँ देल गेल वाक्यमे किछु सही अछि आ किछु गलत । अहाँकेँ सही अथवा गलत चिह्नित करबाक अछि-

क)	परिवार समाजक एक आधारभूत इकाइ अछि ।	( )सही	( )गलत
ख)	परिवार ओ विद्यालय थिक जतऽ व्यक्ति त्याग ओ अनका हेतु जीवाक प्रेरणा ग्रहण नहि करैत अछि ।	( )सही	( )गलत
ग)	सामन्ती समाजमे पैघ-पैघ कारखाना छल ।	( )सही	( )गलत
घ)	संयुक्त परिवारमे सभ सदस्यकेँ सामाजिक सुरक्षा प्राप्त छल ।	( )सही	( )गलत
ङ)	संयुक्त परिवार लोकतंत्रकेँ जन्म देलक ।	( )सही	( )गलत
च)	औद्योगीकरण शहरीकरणकेँ प्रारंभ कयलक ।	( )सही	( )गलत

2) सही शब्दकेँ रिक्त स्थानमे लिखू–

सम्पत्ति, पितृसत्तात्मक, व्यक्ति, श्रम, शिक्षा, स्वतंत्रता ।

क) परिवारमे .... विकास होइत अछि ।

ख) सामूहिक .... सँ सामूहिक .... अर्जन करैत छल ।

ग) समाजमे पुरुषकेँ .... पर अधिकार छल ।

घ) .... ओ समानताक विचार परिवारपर सेहो अपन प्रभाव देखौलक ।

ङ) .... कारण नवीन विचार समाजमे पसरल ।

3) रिक्त स्थानक पूर्ति कोष्ठमे देल शब्दसँ करू–

क) संयुक्त परिवारमे घरक मुखिया .... होइत छल ।

(बाप, बाबा, सभसँ पैघ वयसक पुरुष)

ख) .... परिवारक सम्बन्ध सामन्ती व्यवस्थासँ छल । (एकल, संयुक्त)

ग) पुंजोत्पादनक संबंध .... सँ अछि ।
(एकल परिवार, औद्योगीकरण, शहरीकरण)

घ) संयुक्त परिवारमे परिवारक सभ सदस्यकेँ .... सुरक्षा प्राप्त छल ।
(सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक)

ङ) एकल परिवारमे व्यक्तिक .... गुणक विकासक नीक अवसर अछि ।
(वैयक्तिक, भौतिक)

4) मोहनक परिवारमे स्त्री ओ बच्चाक संगहि हुनक बाप-माय सेहो रहैत छथिन । सोहनक संग हुनक स्त्रीक संगहि धीया-पूता रहैत छनि । ई दुनू परिवार कोन श्रेणीमे अबैत अछि ?

क) पहिल एकल, दोसर संयुक्त परिवार ।

ख) दुनू संयुक्त परिवार ।

ग) दुनू एकल परिवार ।

घ) पहिल संयुक्त ओ दोसर एकल परिवार ।

5) संयुक्त परिवारकेँ टुटबाक कारण छल–

क) सामाजिक व्यवस्थामे भूलभूत परिवर्तन आयब ।

ख) व्यक्तिकेँ स्वार्थी भऽ जायब ।

ग) व्यक्तिकेँ नास्तिक भऽ जायब ।

6) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर तीन-चारि पंक्तिमे दियऽ–

क) परिवारमे व्यक्तित्वक विकास कोना होइत अछि ?

ख) सामाजिक प्रगतिमे परिवारक भूमिकाक स्थान निरूपित करू ।

ग) एकल परिवारक अर्थ स्पष्ट करू ।

घ) एकल परिवारसँ उत्पन्न दुइ समस्याक उल्लेख करू ।

ङ) संयुक्त परिवारमे स्त्रीक स्थान की छल ?

एखन अहाँ जे बोधप्रश्न हल कयलहुँ अछि, ताहिसँ ई बूझऽ जोग भऽ गेल जे अहाँ पाठकेँ कतेक गम्भीरतासँ पढ़लहुँ अछि । आब जे अभ्यास देल जा रहल अछि, ताहिसँ ई पता चलत जे अहाँ पाठकेँ विषय ओ भाषाक दृष्टिसँ कतेक बुझलहुँ अछि ?

अभ्यास

1) पाठक किछु वाक्य नीचाँ देल गेल अछि । एहि वाक्यसभक अभिप्राय निम्नलिखित तीन कथनमेसँ एक कथन सही रूपमे व्यक्त करैत अछि । तकरा देखाउ ।

i) वस्तुतः परिवार एक एहन पाठशाला अछि, जतऽ व्यक्ति त्याग ओ अनका हेतु जीवाक प्रेरणा ग्रहण करैत अछि । एहि रूपेँ ओ समाजक एक नीक ओ प्रतिष्ठित नागरिक बनबाक हेतु अपनाकेँ तैयार करैत अछि ।

क) नीक नागरिककेँ त्याग ओ अनका हेतु जीवाक प्रेरणा परिवारमे भेटैत छैक ।

ख) नीक नागरिक बनबाक शिक्षा वस्तुतः परिवारेमे भेटैत छैक ।

ग) जतऽ लोक त्याग ओ अनका हेतु जीवाक प्रेरणा ग्रहण करैत अछि तथा समाजक नीक नागरिक बनैत अछि, वैह ओकर परिवार थिकैक ।

ii) संयुक्त परिवारक सभसँ पैघ गुण ई छल जे परिवारक सभ सदस्यकेँ सामाजिक सुरक्षा प्राप्त छल ।

क) समाज संयुक्त परिवारकेँ पूर्ण सुरक्षा प्रदान करैत छल ।

ख) संयुक्त परिवारक सदस्य प्राकृतिक आपदा, चोरी, डकैती आदिसँ सुरक्षित रहैत छल ।

ग) जाहि व्यक्तिक कमाइपर एकल परिवार आधारित रहैत अछि, ओकर मृत्युसँ सम्पूर्ण परिवार असुरक्षित भऽ जाइत अछि ।

iii) परिवारहुपर लोकतन्त्रक अवधारणा अपन प्रभाव देखौलक ।

क) लोकसभमे स्वतंत्रता ओ समानताक भावना उदित भेल ।

ख) लोकतन्त्रक प्रभावसँ परिवारक व्रयस्कलोकनिकेँ मताधिकार भेटल ।

ग) लोकतंत्रहिक कारणेँ संयुक्त परिवार विखण्डित भेल ।

iv) जखन-जखन कोनो परिवर्तन होइत छैक तँ समाजमे समस्या अबितहिँ छैक ।

क) बाधारहित ओ शन्तिपूर्ण समाजक हेतु सामाजिक परिवर्तन अनावश्यक अछि ।

ख) प्रत्येक सामाजिक परिवर्तनक संग किछु नव समस्या उत्पन्न भऽ जाइत छैक ।

ग) हमरालोकनिकेँ बिना कोनो बाधा कयने समाजमे परिवर्तन अनबाक चाही ।

2) कोष्ठकमे देल गेल दू शब्दमेसँ शुद्ध शब्दकेँ राखि अशुद्ध शब्दकेँ काटू, जाहिसँ सार्थक वाक्य बनय ।

क) परिवार (आर्थिक/सामाजिक) संस्था थिक ।

ख) परिवारक सदस्यलोकनि (भावात्मक/विचारात्मक) सूत्रमे आबद्ध रहैत छथि ।

ग) कृषक (जीवन/सामाजिक दायित्व)क हेतु कार्य करैत अछि, मुदा संगहि ओ समाजकेँ (धन/योगदान) सेहो दैत अछि ।

घ) संयुक्त परिवारमे समस्त संपत्ति (मुखिया/समस्त परिवार)क बुझल जाइत छल ।

ङ) (कृषि/उद्योग) प्रधान अर्थव्यवस्था संयुक्त परिवारक आधार होइत अछि ।

च) सामंती व्यवस्थामे सामान्यतः लोक (स्वेच्छासँ/पुश्तैनी) धंधा करैत अछि ।

छ) संयुक्त परिवारमे परिवारक (ढाँचा/ सदस्य)क महत्त्व बेसी छल ।

ज) औद्योगीकरणक प्रारंभ एकल परिवारकेँ (जन्म देलक/ तोड़लक) ।

झ) (समता/ प्रगति)क भावना लोकतंत्रक आधार थिक ।

ञ) एकल परिवारक सुपरिणाम छल(नारीस्वातंत्र्य/नव सामाजिक व्यवस्था)।

4.3 निबंध-रचना

आशा अछि जे अहाँ उक्त पाठकेँ गम्भीरतासँ पढ़ने होयब । अहाँ इहो बुझि गेल होयब जे एहि पाठक संरचना निबंधक रूपमे भेल छैक । प्रत्येक निबंधक कोनो मूल कथ्य होइत अछि,

जकरा सम्पूर्ण निबंधमे लेखक विस्तार दैत अछि । की अहाँ कहि सकैत छी जे एहि पाठक मूल कथ्य की थिक ? मूल कथ्यकेँ चिन्हबामे अहाँकेँ सुगमता प्रदान करबाक हेतु हम एतऽ किछु आधार-बिन्दु प्रस्तुत करैत छी :

क) परिवार : एकटा सामाजिक इकाइ,

ख) सामाजिक उन्नतिमे परिवारक भूमिका,

ग) भारतीय परिवारक स्वरूपमे आयल विभिन्न परिवर्तन,

घ) संयुक्त परिवारसँ एकल परिवार बनबाक कारण,

ङ) एकल परिवारसँ उत्पन्न समस्या ।

एहि पाठमे उपर्युक्त आधार-बिन्दुसभक विकास कोन प्रकारेँ भेल अछि, तकरा अहाँ स्वयं जाँचि सकैत छी ।

कोनो निबंध (वा पाठ)क मूल कथ्यहिक आधारपर निबंधक शीर्षक देल जाइत छैक । जेना एहि पाठक शीर्षक **'परिवार'** देल गेल अछि । एकर अतिरिक्तो यदि अहाँ कोनो शीर्षक कहि सकैत छी तँ विचार करू आ कहू ।

निबंधमे व्यक्त विचारसभमे तार्किक क्रमबद्धता होयबाक चाही । ई एहू लेल आवश्यक अछि जे पाठक निबंध पढ़बाकाल लेखकक कथ्यकेँ नीक जकाँ बुझि , संगहि लेखकक विचार-प्रणालीकेँ सेहो जानि सकथि । दृष्टान्तस्वरूप अहाँ एहि पाठक पहिल आ दोसर पैराकेँ पढ़ू । एकरा पढ़लासँ अहाँ सहजेँ बुझि जयबैक जे प्रस्तुत निबन्धक विषय की थिक ? कोनो निबंध क आरंभ विषयक परिचयसँ होइत अछि, जकरा प्रस्तावना अथवा विषयप्रवेश कहल जाइत अछि ।

एकर पश्चात् तेसर, चारिम पैराकेँ पढ़ू । तेसर पैराक मूल कथ्य की अछि ? एतऽ ओहि पैराक दू पंक्ति उद्धृत करैत छी ।

''वस्तुतः परिवार एक एहन पाठशाला अछि जतऽ व्यक्ति त्याग ओ अनका हेतु जीवाक प्रेरणा ग्रहण करैत अछि । एहि रूपेँ ओ समाजक नीक आ प्रतिष्ठित नागरिक बनबाक हेतु अपनाकेँ तैयार करैत अछि ।'' एही प्रकारेँ चारिम पैराक पाँती देखू । परिवार अपन प्रत्येक सदस्यकेँ परस्पर स्नेह, प्रेम ओ त्याग-भावनासँ ई शिक्षा दैत अछि जे ओ समाजक प्रत्येक सदस्यक प्रति एहने भावना राखथि ।

'परिवार'क दुनू पैराक पाँतीसभकेँ ध्यानपूर्वक देखलाक पश्चात् अहाँ सहजतासँ कहि सकैत छी जे लेखक की कहऽ चाहैत छथि ? हुनक कहब छनि जे 'परिवारहिमे व्यक्तिकेँ समाजक प्रति अपन दायित्वक बोध होइत छैक ।'

की अहाँ एहि कथ्यपर एहि दुनू पैराक हेतु एक उपयुक्त शीर्षक फुरा सकैत छी ?

हम अहाँकेँ एकटा उपयुक्त शीर्षक फुरबैत छी– परिवारमे सामाजिकताक शिक्षा ।

एहि प्रकारेँ सभ निबन्धमे लेखक अपन विचारकेँ क्रमबद्ध रूपमे विकसित करैत अछि तथा ओकर विभिन्न पक्षकेँ बुझबैत अछि । ओहिमे अन्तःसंबंध स्पष्ट करैत अन्तमे अपन कथ्यकेँ सार रूपमे सूत्रबद्ध करैत अछि ।

अहाँ एहि पाठकेँ उपर्युक्त विश्लेषणक सन्दर्भमे ध्यानसँ पढ़ि खण्ड-अ, आ, इ, ईक हेतु उचित शीर्षक दियऽ ।

निबंधक मूल कथ्यक विस्तृत विवेचनक पश्चात् निबंधकार अपन पाठकें समटैत अछि । एहि लेल ओ सम्पूर्ण निबंधक सार प्रस्तुत करैत अछि अथवा कोनो एहन विचार-बिन्दुपर निबंधक अन्त करैत अछि जाहिसँ विषयकें पूर्णता प्राप्त होइत हो अथवा मूल कथ्यसँ उत्पन्न कोनो नव विचार-बिन्दुक संकेत करैत अछि, जाहि आधारपर ओहि निबंधक खास पक्षक संकेत भेटैत हो ।

अहाँ प्रस्तुत निबंधक खंड-ई क अन्तिम पैराकें पढ़ू आ बुझाउ जे एहिमे निबंधक सार कोन रूपमे देल गेल अछि ?

विचार विस्तार

हमरालोकनि एकटा नव बिन्दुपर विचार करैत छी । खंड- 'इ'क पाँचम पैराकें ध्यानसँ पढ़ू । एहि पैरामे संयुक्त परिवारकें विखण्डित होयबाक कारण दर्शाओल गेल अछि । द्रष्टव्य जे लेखक कोन प्रकारें अपन विचारकें विस्तार देने छथि ।

खंड-'इ'क चारिम पैरामे संयुक्त परिवारक गुण-अवगुणक उल्लेख कयल गेल अछि ।

खंड-'इ' क पाँचम पैरा–

- समस्याक उल्लेख (संयुक्त परिवारक विखण्डन) ।
- समस्याक कारण (नव सामाजिक व्यवस्थाक दबाव) ।
- नवीन सामाजिक व्यवस्थाक प्रमुख विशेषताक उल्लेख (पुरान उत्पादन पद्धतिक स्थानपर नव उत्पादन पद्धतिक आगमन) ।
- नव उत्पादन पद्धतिक प्रमुख विशेषता (कम काल ओ कम लागतमे उत्पादन) ।
- नव उत्पादन पद्धतिक संयुक्त परिवारपर प्रभाव (पुरान उत्पादन पद्धतिपर आश्रित संयुक्त परिवारक विखण्डन) ।
- नव उत्पादन पद्धतिसँ सामाजिक व्यवस्थामे भेनिहार परिवर्तन (औद्योगीकरण) ।
- औद्योगीकरणक प्रमुख प्रभाव (शहरीकरण ओ नव-नव काजक तलाश) ।
- सामाजिक जीवनमे आयल नव विशिष्टता (निजी आयक जन्म)।

एहि प्रकारें हम खंड-'इ'क चारिम पैरामे देखैत छी जे–

- ई पैरा पछिला पैरामे व्यक्त विचारकें नवीन मोड़ दैत अछि ।
- एहि पैरामे जे विचार व्यक्त कयल गेल अछि से एक दोसरसँ सम्बद्ध अछि ।
- प्रत्येक पंक्तिमे व्यक्त विचार पूर्वक पंक्तिमे व्यक्त विचारमे किछु नव जोड़ैत अछि ।
- प्रत्येक पंक्तिमे व्यक्त विचार तार्किक क्रमबद्धतासँ आगाँ बढ़ैत अछि ।
- सम्पूर्ण पैरामे एकटा पूर्ण विचार श्रृंखला दृष्टिगोचर होइत अछि, जकर अन्तमे एक नव वैचारिक बिन्दु संकेतित अछि ।
- एहि नव विचार-बिन्दुक विस्तार अगिला पैरामे अछि ।

अहाँ खंड-'इ' क पाँचम पैराक उपर्युक्त विवेचनसँ बुझि गेल होयब जे कोनहुँ निबंधमे कोन प्रकारें विचारकें विस्तृत कयल जा सकैत अछि । अहाँ दोसर पैराक उक्त बिन्दुक आधारपर विवेचन करू आ स्पष्ट करू जे ओहि पैरामे उपर्युक्त नियमसभक पालन कयल गेल अछि की नहि ।

4.4 व्याकरणिक विवेचन

अहाँ पाठकेँ पढ़ैत काल देखने होयब जे एहिमे सामाजिक, आर्थिक, नागरिक, बन्धुत्व, मानवता आदि शब्द प्रयुक्त भेल अछि । ई शब्दसभ किछु प्रत्यय लगाकऽ बनल अछि । एकर ज्ञान हम एहि ठाम प्राप्त करब ।

बन्धु + त्व - बन्धुत्व

मानव + ता - मानवता

कवि + त्व - कवित्व

एहिना समाजसँ सामाजिक, अर्थसँ आर्थिक, नगरसँ नागरिक शब्द बनल अछि । एतऽ ई ध्यानमे रखबाक थिक जे भाववाचक संज्ञामे प्रत्यय नहि लगैत छैक ।

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दमे त्व अथवा ता लगाकऽ नव शब्द बनाउ–

गुरु ...., सम ...., मनुष्य ...., शिव ....

मैथिलीमे ते, जे, ए, ओ, की, एहि पाँचटा सर्वनामसँ भिन्न-भिन्न अर्थमे भिन्न-भिन्न प्रत्यय लगलासँ अनेक प्रकारक शब्द बनैत अछि, जाहिमे कतोक अव्यय थिक ।

ना- तेना, जेना, एना ।

हन- तेहन, जेहन ।

हिआ- कहिआ, जहिआ ।

तने- एतने, जतने, ओतने ।

म- छठम, चारिम ।

पन, पना, पनी- भाभट-भभटपन, भभटपना, भभटपनी

आह - अमताह, मधुराह

अकी - लोटकी

उक - भोरुक, आजुक

अभ्यास

क) निम्नलिखित शब्दमे हुक, ही, ऐआ, इआ, आहा प्रत्यय क्रमशः लगाय शब्द बनाउ–

कालि्ह ...., दछिन ...., गाम ...., पड़ोसी ...., पछिम ....

ख) निम्नलिखित शब्द मे 'ता' अथवा 'य' क उचित प्रयोग कऽ शब्द लिखू–

करुण ....

महान ....

सामाजिक ....

साहित ....

ग) निम्नलिखित शब्दमे 'इक' प्रत्यय लगाय जे शब्द बनत ओ लिखू -

विज्ञान ...., दिन ...., समूह ...., मुख ....,

भूगोल ...., व्यक्ति ...., जीव .... ।

कतोक प्रत्यय भाव ओ कर्म दुनूमे अबैत अछि । नेनपन बितलापर समर्थाइ अबैत छैक । एतऽ नेनपन ओ समर्थाइ भाववाचक अछि । एहिमे पन, पना, पनी, इ, आइ, आरय आदि प्रत्यय लगैत अछि । यथा–

पन - नेनपन

आइ - चतुराइ

आरय - पण्डितारय

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दमे उचित प्रत्यय लगाय शब्द बनाउ–

चुगिला ...., पण्डित ...., वैद .... ।

4.5 सारांश

एहि इकाइमे अहाँ **परिवार** नामक सामाजिक विज्ञान विषयक अध्ययन कयलहुँ अछि । एहिसँ–

क) परिवारक सामाजिक इकाइकेँ परिभाषित कऽ सकैत छी ।

ख) संयुक्त तथा एकल परिवारक विषयमे जानि सकैत छी ।

ग) परिवारक महत्त्व तथा ओकर स्वरूपमे आयल परिवर्त्तनक व्याख्या कऽ सकैत छी ।

घ) निबन्ध-रचनामे सही क्रम दऽ सकैत छी ।

4.6 शब्दावली

आधारभूत : मूलभूत, बुनियादी ।

इकाइ : यौगिक पदार्थ अथवा ढाँचाक मूल अवयव । यथा - परिवार समाजक इकाइ अछि ।

मंडी : कोनो खास वस्तुक थोक बिक्रीक बाजार ।

सामन्ती : राज्यक ओहन शासन-व्यवस्था जाहिमे राज्यक जमीन पैघ-पैघ जमीन्दारक हाथमे रहैत छल आ ओलोकनि ओकरा बदलामे राजाकेँ धन ओ सेना दैत छलथिन ।

पितृसात्तात्मक : जाहिमे गृहस्वामी (पुरुष)क सत्ता सर्वोपरि छल ।

4.7 बोधप्रश्न / अभ्यासक उत्तर

1) क) सही

   ख) गलत

   ग) गलत

   घ) सही

   ङ.) सही ।

2) क) व्यक्तित्व

   ख) श्रम, संपत्ति

   ग) पितृसत्तात्मक

   घ) स्वतंत्रता

   ङ.) शिक्षा ।

3) क) सभसँ पैघ वयसक पुरुष

   ख) संयुक्त

   ग) औद्योगीकरण

   घ) सामाजिक

   ङ) वैयक्तिक

4) ग.

5) क.

अभ्यास

6.1 i) ख

   ii) ग

   iii) क

   iv) ख

6.2 i) सामाजिक

   ii) भावात्मक

   iii) जीवनयापन, योगदान

   iv) समस्त परिवार

   v) कृषि

   vi) पुस्तैनी

   vii) ढाँचा

   viii) जन्म देलक

   ix) समता

   x) नारीस्वातंत्र्य ।

गुरुत्व, गुरुता, समता, मनुष्यत्व-मनुष्यता, शिवत्व ।

क) काल्हुक, दछिनाही, गमैआ, पड़ोसिआ, पछिमाहा ।

ख) कारुण्य, महानता, सामाजिकता, साहित्य ।

ग) वैज्ञानिक, दैनिक, सामूहिक, मौखिक, भौगोलिक, वैयक्तिक, जैविक ।

अभ्यास- चुगिलपन, पँडिताइ, बैदाइ ।

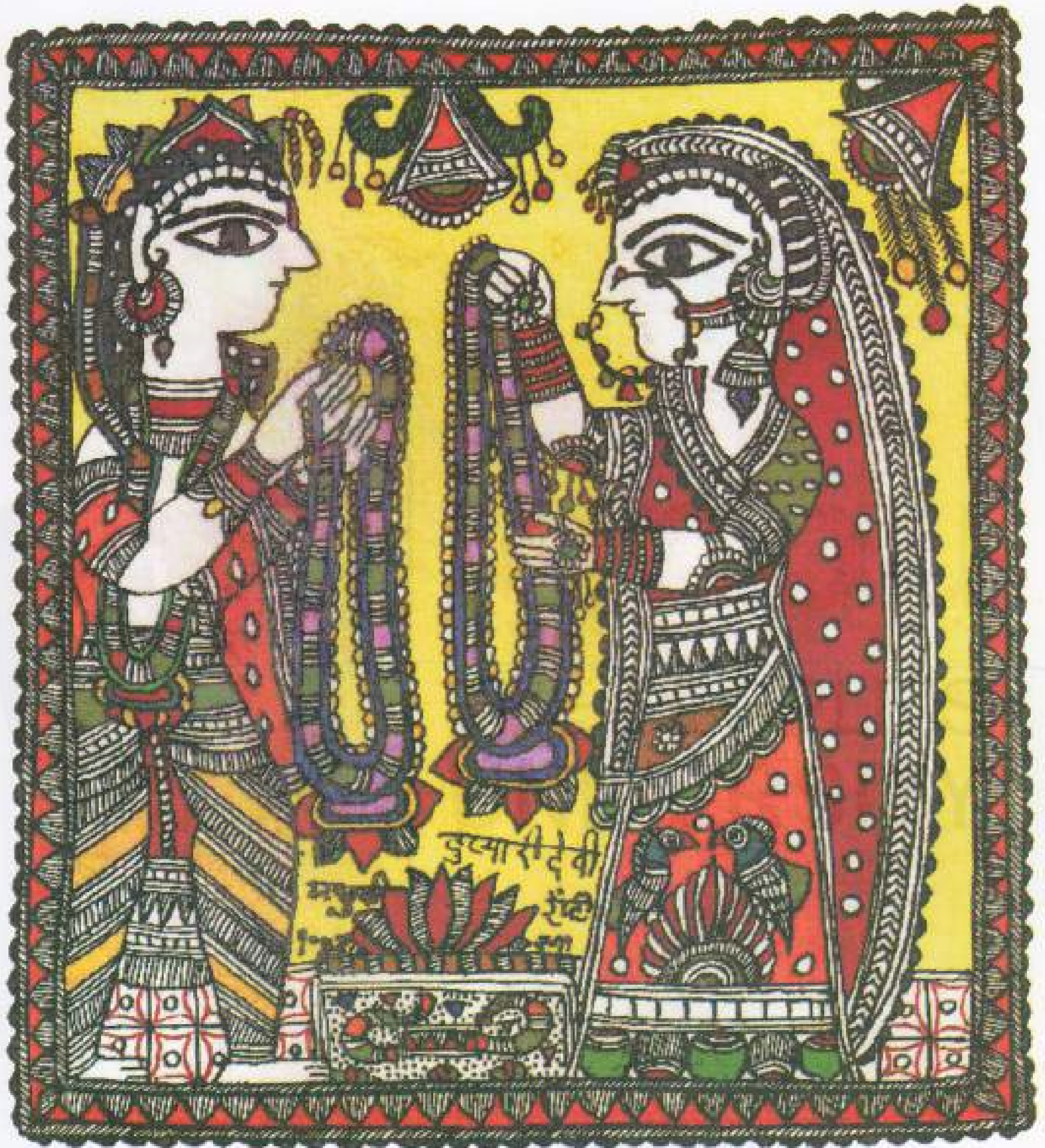
4.8 अनुकार्य

अपन परिवारक प्रसंग एक छोटछीन निबन्ध लिखू तथा ओहिमे प्रयोग कायल गेल प्रत्यय चिह्नित करू।

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम



साहित्यक आस्वाद

2

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्तमान विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

— इन्दिरा गांधी



"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

– Indira Gandhi

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001
मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

खंड

2

साहित्यक आस्वाद

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

डॉ. भीमनाथ झा
पूर्व प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा
डॉ. नीता झा
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा
डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, बी.आर.ए.बिहार वि.वि.
मुजफ्फरपुर
डॉ. नन्दनन्दन झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, जे.एन. कॉलेज, मधुबनी
प्रो. अजीत कुमार वर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा

संकाय सदस्य
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068
डॉ. स्मिता चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाइ लेखक
डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' (इकाइ 5)
उपाचार्य एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
हर्षपतिसिंह महाविद्यालय, मधेपुर, मधुबनी
डॉ. विभूति आनन्द (इकाइ 6)
वरीय व्याख्याता, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा
डॉ. कमला चौधरी (इकाइ 7)
प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
बी.आर.ए. बिहार वि.वि., मुजफ्फरपुर
डॉ. प्रमोद कुमार पाण्डेय (इकाइ 8)
मैथिली विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर

पाठ्यक्रम संपादक
डॉ. भीमनाथ झा

पाठ्यक्रम संयोजन

एकेडमिक संयोजक
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

प्रबन्ध संयोजक
डॉ. ए. एन. त्रिपाठी
डॉ. एस. एस. सिंह
क्षेत्रीय निदेशक,
इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र,
दरभंगा

सामग्री निर्माण

श्री सी. एन. पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)

जनवरी, 2012

ISBN-978-81-266-5781-0

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए इसके मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068 स्थित कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. रीतारानी पालीवाल, निदेशक, मानविकी विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक : राज प्रिंटर्स, ए-9, सैक्टर बी-2, ट्रोनिका सिटी औद्योगिक क्षेत्र, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)-201102

खण्ड 2 क परिचय : साहित्यिक आस्वाद

एहि खण्डक लक्ष्य मैथिली साहित्यक प्रमुख चारि विधासँ अहाँकेँ अवगत करायब थिक, जाहिसँ अहाँ मैथिली साहित्यक आस्वादन कऽ सकी । साहित्यमे भाषाक सर्जनात्मक रूप व्यक्त होइत अछि । साहित्यक भिन्न-भिन्न विधामे भाषाक फराक-फराक रूप दृष्टिगोचर होइछ । एकर अध्ययनसँ अहाँकेँ मैथिली भाषाक विभिन्न रूपक दर्शन होयत, जाहिसँ एहि भाषाक प्रकृति बुझबामे सहायता भेटत ।

एहि खण्डमे चारि इकाइ अछि । इकाइ 5 मे मैथिलीक सात विशिष्ट कविक एक-एक कविता वाचनक हेतु देल गेल अछि । ओ सातो कवि थिकाह--विद्यापति, चन्दा झा, लालदास, मधुप, सुमन, यात्री एवं किसुन । हिनकालोकनिक कविताक वाचनक अतिरिक्त संक्षिप्त कवि-परिचय, कविताक सामान्य अर्थ, विशिष्टार्थ, व्याख्या एवं कठिन शब्दक माने देल गेल अछि ।

इकाइ 6 मे हरिमोहन झाक कथा 'ग्रामसेविका' वाचन लेल देल गेल अछि । इकाइ 7 मे व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क निबन्ध 'पीयर आँकुर' शामिल कयल गेल अछि । इकाइ 8 मे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक एकांकी 'हथटुट्टा कुरसी' राखल गेल अछि ।

एहि प्रकारेँ कविता, कथा, निबन्ध एवं एकांकी एहि चारि विधाक अहाँ अध्ययन करब । चारू विधाक किछु प्रमुख कृतिक वाचनक संगहि ओहि विधासभक विशिष्टताकेँ रेखांकित कयल गेल अछि, ओकर साहित्यिक विश्लेषण कयल गेल अछि, प्रमुख अंशक व्याख्या देल गेल अछि तथा कठिन शब्दक अर्थ बुझाओल गेल अछि । एकर अध्ययन कयलाक पश्चात् बोध प्रश्न आ अभ्यासक उत्तर अहाँ तैयार करब । अहाँक उत्तर अन्तमे देल गेल उत्तरसँ हूबहू मिलय, से आवश्यक नहि । ओ दिशा-निर्देश थिक, जाहि आधारपर अहाँ स्वयं सटीक उत्तर तैयार कऽ सकी ।

अन्तमे देल गेल उत्तरक आधारपर जँ अहाँ अपन उत्तरसँ सन्तुष्ट छी तँ ठीक, अन्यथा ओहि इकाइकेँ फेरसँ पढ़ू आ ठीकसँ बुझू । पारिभाषिक आ कठिन शब्दक अर्थकेँ हृदयंगम कऽ अहाँ भाषाज्ञानकेँ बढ़ा सकैत छी ।

इकाइ 5 कविता

इकाइक रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

आधार पाठ्यक्रमक दोसर खण्डक ई पहिल इकाइ थिक । एहिमे अहाँ काव्यक अध्ययन करब । एहि इकाइकेँ पढ़िकऽ अहाँ :

- मैथिली काव्य-परंपराक मुख्य प्रवृत्तिसभ कहि सकब,
- विद्यापतिक काव्यक आधारपर शृंगार आ भक्तिभाव संबंधी गीतकाव्यक परिचय आ हुनक काव्यगत विशेषता कहि सकब,
- चन्दा झाक काव्यगत विशेषताक संग आधुनिक युगक आरंभक संबंधमे कहि सकब,
- लालदासक काव्यक विशेषता कहि सकब,
- मधुप आ सुमनक काव्यक विशेषता कहि सकब,
- यात्री आ किसुनक काव्यक विशेषता कहि सकब,
- आधुनिक काव्यक प्रमुख विशेषता कहि सकब ।

5.1 प्रस्तावना

एहि इकाइमे हम किछु कविता दऽ रहल छी जकर अहाँ वाचन करब । विद्यापति, चन्दा झा, लालदास, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', सुरेन्द्र झा 'सुमन', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' आ रामकृष्ण झा 'किसुन'क काव्यक माध्यमसँ मैथिलीक गीतिपरक आ आधुनिक काव्यक सामान्य परिचय पाबि लेब ।

साहित्यक महत्त्वपूर्ण विधा थिक— काव्य । काव्य थिक कविक कर्म, अर्थात् कवि अपन भाव आ विचार काव्यक माध्यमसँ व्यक्त करैत अछि । काव्य(कविता) पद्यबद्ध होइत अछि आ पद्यक मूलतत्त्व थिक 'लय' । भावावेग, कल्पना आ लालित्य (सौन्दर्य)क समन्वयसँ लययुक्त रचना काव्य कहबैत अछि ।

काव्य छन्दबद्धो होइत अछि आ छन्दमुक्तो । ओकर भाषा बोलचालक लगपासोक होइत अछि आ आलंकारिक सेहो । वास्तवमे काव्यक विषय-वस्तु आ रचना-विधान अपन युगक प्रयोजनक अनुकूल निर्धारित होइत अछि । दुइ गोट भिन्न-भिन्न युगक काव्यक अध्ययनसँ अहाँ स्पष्ट बुझि जायब जे काव्यक विषय-वस्तुक संग-संग ओकर शिल्प आ भाषामे सेहो अंतर भऽ जाइत छैक । आगाँ अहाँ मैथिली काव्यधाराक किछु प्रमुख कविक काव्यक अध्ययन करब । ओहिसँ मैथिली काव्य-धाराक विशिष्टता आ अधीत कविक महत्त्वकेँ बुझि सकब ।

5.2 विद्यापति

मैथिली काव्यक इतिहास एगारह-बारहं सय वर्ष पुरान अछि । आठमसँ एगारहम शताब्दीक मध्य सिद्ध-सम्प्रदायक किछु मैथिल सिद्धकवि दोहा आ गीत लिखलनि जे 'चर्यापद' आ 'डाकार्णव' नामसँ प्रसिद्ध अछि । ई मैथिलीक आदिकालीन काव्य थिक । एहि आदिकाल (सिद्धकाव्य-कालसँ-1300 ई.)मे दर्शन आ संस्कृति संबंधी तथा गृहस्थ आ गृहस्थी योग्य पद्य रचल गेल । एही कालक थिक डाकवचन आ लोकगाथा ।

ओकर बाद अनेक समयमे काव्यक मुख्य प्रवृत्तिमे परिवर्तन भेल अछि । काव्यक चेतना आ काव्यक रूपमे सामंजस्य स्थापित करैत गीत-काव्यक युग (1300-1860 ई.) आयल । एहि कालक 'देसिल बयना' मैथिलीमे शृंगार आ भक्ति-भावपरक गीतिकाव्य तथा व्यवहारगीत आ लोकगीतक अजस्र रचना भेल ।

बादमे (1860 ई.सँ) आधुनिक बोध, जनजीवनसँ जुड़ल आ जीवन-मूल्यक संग आधुनिक काव्य रचब शुरू भेल । आधुनिक काव्यक दिशा आ दृष्टिमे उत्तरोत्तर वृद्धि आ विस्तार भेल अछि ।

गीतकाव्य

अहाँकेँ बूझल होयत जे विद्यापतिक नाम-यश (प्रसिद्धि) गीतकाव्यसँ छनि । राग-रागिनी आ लय-धासक संग गाओल जायवला पदकेँ गीत कहल जाइत अछि । गीत सुनिकऽ मन प्रसन्न होइत अछि तँ गीतक भाव आ अर्थ बुझिकऽ रोमांचित सेहो होइत छी । तखनहि गीतक माध्यमसँ जीवनक रस (आनंद), अनुराग (प्रेम) आ स्थिति (जीवन-यापन)क पता लगैत अछि । गीतकाव्यकेँ भावपक्षक आधारपर तीन भागमे बाँटि सकैत छी– (i)शृंगारगीत (ii) भक्तिगीत आ (iii)लोकगीत । ऋतु-मास-पर्व-व्यवहार आ संस्कार विषयक गीत 'लोकगीत' कहबैत अछि । ओना तँ आनहु गीत, मुदा व्यवहार-संस्कार विषयक गीत स्त्रीगणे गबैत अछि । किशोर-युवावय राधा-कृष्ण आ सामान्य नायक-नायिकाक प्रेम (संयोग आ वियोग)क वर्णन शृंगारगीत तथा शिव-परिवार आ अन्य देवी-देवताक ईश्वरीय भक्तिसँ कयल गेल वर्णन भक्तिगीत कहबैत अछि । मैथिल सन्तकविक सगुण-निर्गुण भक्तिगीत मिथिलामे पूर्ण प्रचलित रहल अछि । एहि धाराक कविमे मुख्य भेलाह विष्णुपुरी, साहेबरामदास तथा लक्ष्मीनाथ गोसाईं । गीतितत्त्वक संगहि विषयक विविधता आ व्यापकता, सौन्दर्य आ संवेदना तथा लोकरंजनक दृष्टिसँ गीतकाव्य-धाराक प्रमुख कवि विद्यापति छथि ।

जीवन-परिचय

महाकवि विद्यापति बिसपी गामक छलाह । वर्तमान मधुबनी जिलाक बिस्फी प्रखण्ड एही गाममे अछि । विद्यापतिक जन्म-मृत्युक समय निश्चित नहि छनि । विभिन्न प्रमाणक आधारपर अनुमानसँ हुनक जीवनकाल 1350 सँ 1450 ई.क बीच मानल गेल अछि । एक गीतमे कहल गेल अछि जे कातिक सुदि (शुक्लपक्ष) त्रयोदशीकेँ विद्यापतिक देहावसान भेलनि– 'विद्यापतिक आयु अवसान, कातिक धवल त्रयोदशि जान ।' तेँ एही तिथिसँ विद्यापति-स्मृतिपर्व मनाओल जाइत अछि । हिनक वंशमे पण्डित आ ग्रन्थकारक परंपरा छल । अपन पूर्वज जकाँ इहो ओइनवार राजाक आश्रयमे रहथि आ राजा शिवसिंहक परम मित्र छलाह ।

रचना

संस्कृत, अवहट्ठ आ मैथिली– एहि तीनू भाषामे विद्यापतिक कृति उपलब्ध अछि । संस्कृतमे बारहटा ग्रंथ छनि आ अवहट्ठमे दूटा– कीर्त्तिलता आ कीर्त्तिपताका । 'गोरक्ष विजय' नामक

एकटा नाटक छनि जाहिमे कथोपकथन संस्कृत-प्राकृतमे आ गीत मैथिलीमे छैक । मैथिलीमे भनिता (भनइ विद्यापति) युक्त अजस्र पद वा गीत छनि । प्राचीन पाण्डुलिपि आ लोककंठमे सुरक्षित हुनक गीतसभक संकलन-संपादन कऽ विद्यापति पदावली, विद्यापति गीतावली आदि नामसँ विभिन्न संस्था द्वारा छपाओल गेल अछि ।

पृष्ठभूमि

मिथिलामे ओइनवार वंशक राजसत्ता छलैक । विद्यापति ओतहि शिवसिंहक राजपण्डित रहथि । संस्कृत आ अवहट्ठमे ग्रन्थ लिखल करथि । मुदा राजासँ रंक धरि बोलचालक भाषा देसिल बयना भऽ गेल छल । देशीभाषाक प्रति विद्यापतिक अनुराग आ दूरदृष्टि प्रकट भेलनि । 'देसिल बयना सबजन मिट्ठा'क उद्‌गार व्यक्त करैत अपन कवित्वक सर्वस्व मैथिलीकेँ अर्पित कऽ देलनि । विद्यापतिक गीत-काव्यक मुख्य विषय रहल अछि–(i) किशोर आ युवावस्थाक गोपी सहित राधा-कृष्ण तथा सामान्य नायक-नायिका आधारित संयोग-वियोगक प्रेमपूर्ण शृंगारिक वर्णन तथा (ii) शिव-गौरी आ आन देव-देवीक भक्तिभावपरक प्रीतिपूर्ण वर्णन ।

5.2.1 काव्य-वाचन

एतऽ हम विद्यापतिक एक 'महेशवाणी' दऽ रहल छी, जकर अहाँ आगाँ वाचन करब । अहाँक सुविधा लेल किछु शब्दक अर्थ पदक नीचाँ देलहुँ अछि ।

महेशवाणी : शिवसँ संबंधित ई पद थिक । विद्यापति अपन भक्तिगीतमे सभसँ बेशी शिव-लीलाक वर्णन कयलनि अछि । महेशवाणीमे शिवक वृद्ध आ बौराह, दीन आ दानी, योगी आ ईश्वर, विचित्र बगयबानि आ स्वभावसँ नचार (लाचार) रूपक वर्णन रहैत अछि । सामान्य गृहिणी (घरनी) जकाँ पार्वतीक हर्ष-विषादक हाव-भाव देखाओल जाइत अछि । एहि चित्रणमे लौकिक रीति आ प्रवृत्तिक संकेत सेहो रहैत अछि । एहू पदमे प्रथमहि सासुर आयल शंकरक अद्‌भुत रूप, रूपक कारण उपहास, गौरीक विकलता आ सामाजिक प्रवृत्तिक चित्रण भेल अछि –

प्रथमहि सङ्कर सासुर गेला । बिनु परिचय उपहास[1] पड़ला ॥
पुछिओ[2] न पुछलक बैसलाह जहाँ । निरधन[3] आदर के[4] कर[5] कहाँ[6] ॥
हिमगिरि-मण्डप[7] कौतुक-रसी[8] । हेरि[9] हसल सबे बुढ़ तपसी[10] ॥
से सुनि गौरि रहलि सिर नाए[11] । के कहत मा के तोहर जमाए ॥
साप सरीर ओ काँख बोकाने[12] । प्रकृति[13] औखध जग केदहु[14] जाने ॥
भनइ विद्यापति सहज कहू । आडम्बरे[15] आदर हो सबतहू ॥

5.2.2 भाव पक्ष

विद्यापतिक महेशवाणी, नचारी आ अन्य गीतकाव्यमे भावक प्रधानता अछि। शिवक पौराणिक कथाकेँ लोकमे प्रचलित शिवक विनोदपूर्ण कथामे मिश्रित कऽ ओ शिवगीत लिखलनि । श्रद्धा आ भक्ति सँ रचल गेल काव्यमे भावक अधिकता रहब स्वाभाविक थिक ।

महेशवाणीमे विद्यापति शिव-गौरीक विस्मयकारी (चकित करऽवला) लीलाक चित्रण कयने छथि । राजा हिमालयक बेटी गौरीक संग योगी शिवक विवाह आ गृहस्थ आश्रमसँ निफिक्र

---

[1] निन्दायुक्त हँसी । [2] पुछनिहारो, पुछारि कयनिहार । [3] धनहीन,गरीब । [4] केओ । [5] करैत अछि । [6] नहि, कतऽ [7] हिमवंतक भवन । [8] हँसी-ठट्ठाक प्रेमी । [9] देखि । [10] तपस्वी, योगी । [11] झुकाय । [12] झोरा, थोकड़ा । [13] स्वभाव । [14] केदन (अर्थात् केओ नहि) । [15] बाहरी ठाठ-बाटसँ, सजल-धजल रूपेसँ ।

शिवक व्यवहारसँ तथाह गौरीक मनोदशाक अनेको प्रकारक वर्णन भेल अछि । ओहि वर्णनमे मिथिलाक सामाजिक जीवनक कतिपय चित्र समायल अछि, जे महेशवाणीकेँ भावपूर्ण आ लोकप्रिय बनयबामे सहायक भेल अछि ।

5.2.3 संरचना शिल्प

आब अहाँ विद्यापतिक संरचना-शिल्पक विशेषताक अध्ययन करब । अहाँकेँ बुझल अछि जे देसिल बयनाकेँ साहित्यिक गौरव प्रदान कयनिहार विद्यापति छथि । साढ़े पाँच-छौ सय वर्ष पूर्व रचल हुनक काव्यमे मिथिलाभाषाक अभिव्यक्ति सामर्थ्य आ शैलीक विलक्षणता देखल जाइत अछि । एहि तथ्यकेँ नीक जकाँ बुझबा लेल अहाँकेँ हुनक भाषा आ शैलीक विशेषताकेँ फरिछाकऽ देखऽ पड़त ।

भाषा : विद्यापतिक समस्त गीतकाव्यक रचना मैथिलीमे भेल अछि । मैथिली भाषाक स्वभाव कोमल आ मधुर अछि । तत्सम शब्दकेँ तद्भव शब्दक संग मिलाकऽ विद्यापति मैथिलीक स्वाभाविक कोमलता आ मधुरताकेँ आरो अधिक बढ़ौलनि । गामक संस्कृतिमे प्रचलित शब्द, लोकोक्ति आदिक प्रयोग कऽ मिथिलाक सामाजिक जीवनक लोकोन्मुख संस्कृतिकेँ आवेशपूर्वक चित्रित कयलनि । अभिधाक संग लक्षणा-व्यंजनाक प्रयोग कऽ मैथिलीकेँ काव्य-भाषाक प्रतिष्ठा देलनि । मिथिला सहित बंगाल, उड़ीसा, असम आ नेपालमे लगभग साढ़े चारि सय वर्ष विद्यापतिक कोमल-कान्त-पदावलीक प्रभाव रहल ।

शैली : सम्पूर्ण विद्यापति-काव्य गीति-शैलीमे रचल अछि । हुनक गीतावली वा पदावली मिथिलामे प्रचलित शास्त्रीय संगीत आ देशी राग-भासपर आधारित अछि । कोमल-कान्त पदावलीमे ललितगर पद आ गेयता भरल अछि । सहज उक्ति हुनक शैलीक विशेषता थिक । सौन्दर्यक चित्रणमे अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति आदि अलंकारक प्रयोग भेल अछि ।

5.2.4 प्रतिपाद्य

विद्यापति अपन काव्यक मुख्य प्रतिपाद्य सखा (मित्र)भावसँ राधा-कृष्णक प्रेम-वर्णन, सामान्य नायक-नायिकाक मिलन-विरहक श्रृंगारिक वर्णन तथा शिव-लीलाक भक्ति-गायनकेँ बनौने छलाह ।

5.2.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

विद्यापतिक गीतकाव्यक की सभ विशेषता अछि, ताहिसँ अहाँ परिचित भऽ गेल होयब । विद्यापति-साहित्यकेँ कोना पढ़ल जाय आ ओकर व्याख्या कोना कयल जाय, एहि लेल एतऽ हम वाचनक हेतु देल गेल पदक व्याख्या दऽ रहल छी ।

पदः प्रथमहि सङ्कर सासुर गेला ।

संदर्भ : महाकवि विद्यापतिक ई पद थिक । 'विद्यापति-गीतावली' (मैथिली अकादमी, पटना संस्करण)सँ ई पद लेल गेल अछि । पर्वतराज हिमालयक जमाय शंकर वृद्ध योगीक रूपमे सासुर जाइत छथि । जमायवला भेष-भूषा नहि रहने पर्वतराजक परिजन (परिवारक लोक आ नोकर-चाकर) चीन्हि नहि सकलनि । तेँ उपहास (हँसी)मे पड़ि जाइत छथि ।

व्याख्या : विवाहक बहुत दिनक बाद पहिले-पहिल शंकर सासुर गेलाह । बगयबानिसँ केओ चिन्हलकनि नहि, तेँ चिन्हारय (परिचय) नहि रहने उपहासमे पड़ि गेलाह अर्थात् हँसीक पात्र भऽ गेलाह । जतऽ ओ बैसलाह ततऽ पुछारि कयनिहारो परिचय आ कि कुशलक्षेमो नहि

पुछलकनि । वस्तुतः निर्धनक सत्कार (आदर) केओ नहि करैत अछि । हिमालयक महलमे हँसी-ठट्ठा (आनन्द-विनोद)क प्रेमी शिव बैसल रहथि । ओहि बूढ़ योगीकेँ देखिकऽ दरबारीसभ हँसी उड़ा रहल छलनि । से हँसी सुनिकऽ उपहासमे पड़ल पतिकेँ देखि, लाजसँ गौरीक माथ झुकि गेलनि । फेर लगले मनमे भेलनि जे मायकेँ के जाकऽ कहतैक जे तोहर जमाय आयल छथुन । शिवक स्वभावे किदन भऽ गेल छनि, तेँ ने देहपर साप आ काँख तर झोरा (धोकड़ा) लेने सासुर आयल छथि ! वास्तवमे, स्वभावक औखध अर्थात् जकर जे स्वभाव बनि जाइत छैक तकर प्रतिकार (कुप्रभाव दूर करबाक उपाय) एहि संसारमे केओ नहि जनैत अछि -- विद्यापति कहैत छथि असल बात ई कह् जे (आन्तरिक गुणसँ नहि) बाहरी प्रदर्शनहिसँ सभ ठाम आदर होइत अछि ।

विशेष

i) विद्यापतिक एहि पदसँ इहो पता लगैत अछि जे ओहू कालमे धनहीनक अभेला (अवहेलना)आ बाहरसँ फिटफाट रहऽबलाक आदर होइत छलैक ।

ii) एहि पदक भाषा सरल आ परिमार्जित अछि । 'निरधन आदर के कर कहाँ', 'प्रकृति औखध जग केदहु जाने' तथा 'आडम्बरे आदर हो सबतहू'– लोकोक्ति थिक । तत्सम-तद्भव शब्दक संग 'बोकाने' आ 'केदहु' देशी शब्दक प्रयोग भेल अछि ।

बोध-प्रश्न

1) नीचाँमे लिखल वाक्यक पूरक शब्द देखाउ–

अ) विद्यापतिक नाम-यश छनि ....(महाकाव्यसँ/गीतकाव्यसँ)

आ) महेशवाणीमे वर्णन अछि ....(शिव-लीलाक/कृष्ण-लीलाक)

2) रिक्त स्थानकेँ भरू–

अ) .... सभजन मिट्ठा । (देसिल बयना/संस्कृत रचना)

आ) विद्यापतिक आयु अवसान । .... ॥ (चैत अन्हरिया षष्ठी जान/कातिक धवल त्रयोदशि जान)

3) विद्यापतिक मुख्य प्रतिपाद्य लिखू

....

....

....

....

....

अभ्यास

1) एतऽ पदक अंश देल अछि । रिक्त स्थानमे एकर व्याख्या लिखू–

अ) निरधन आदर के कर कहाँ ।

....

....

....

....

आ) आडम्बरे आदर हो सबतह् ।

....

....

....

....

....

....

....

....

5.3 चन्दा झा

आधुनिक मैथिली काव्य

आधुनिक मैथिली काव्यक आरंभ उनैसम शतीक छठम दशकक अन्तमे भेल । आधुनिक कालसँ पहिने मैथिलीमे गीतकाव्यक परंपरा छल । अठारहम शतकमे कवि मनबोध 'कृष्णजन्म' नामक कथाकाव्यक रचना कऽ गीत परंपराकेँ रोकि देबाक प्रयास कयलनि । आधुनिक मैथिलीपर हुनक प्रभावो पड़ल । परंच 1860 ई. क धतपतमे मैथिली काव्यक जाहि प्रवृत्तिक उदय भेल ओ मध्यकालीन काव्यसँ भाषा आ शिल्प तथा भाव आ विचारक दृष्टिसँ भिन्न छल । एहि कालक काव्यमे देश आ जनसामान्यक स्थिति, समाज-सुधार आ राष्ट्रीय भावनाक स्वर आबि गेल छल । एहि प्रवृत्तिक प्रवर्तन (आरंभ) कयनिहार चन्दा झा छलाह । एही लेल चन्दा झा आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत छथि ।

जीवन-परिचय

चन्दा झाक मूलनाम चन्द्रनाथ झा छलनि । हिनक जन्म जनवरी 1832 ई. (शाके 1753, माघ सुदि सप्तमी बृहस्पति)केँ भेलनि । जन्मस्थान पिण्डारुच (दरभंगा) छलनि । बादमे ठाढ़ी (अन्धरा) आबि बसलाह । संस्कृत व्याकरण आ साहित्यक अध्ययन कयने रहथि । दरभंगा महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह तथा रमेश्वर सिंहक राजकवि छलाह । हुनक व्यक्तित्व बहुआयामी छलनि, कवीश्वर नामे विख्यात भेलाह । विशिष्ट कविक संगहि ओ संगीतशास्त्रक ज्ञाता, अनुसंधानकर्ता, अनुवादक, साधक तथा निर्भीक आ विनोदी स्वभावक छलाह । हुनक निधन 14 दिसम्बर 1907 केँ काशीमे भेलनि ।

हुनक मौलिक रचना अछि– वाताह्वान (1883), लक्ष्मीश्वर विलास (1888), मिथिलाभाषा रामायण (1892), गीत सप्तशती(1902), गीतसुधा(दू भागमे), महेशवाणी संग्रह(1920), चन्द्रपद्यावली (1931), चन्द्ररचनावली(1981) । अनूदित– विद्यापतिकृत 'पुरुषपरीक्षा'(1888)। सम्पादित– साहेबरामदास गीतावली(1901) । किछु मुक्तक संस्कृतमे तथा मैथिलीमिश्रित हिन्दीमे सेहो छनि ।

5.3.1 काव्य-वाचन

कवीश्वर चन्दाझाक प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ थिक 'मिथिलाभाषा रामायण' । एहिमे रामकेँ ईश्वर मानिकऽ हुनक चरित-लीलाक वर्णन कयल गेल अछि । मिथिलाभाषा रामायणक उत्तरकाण्डक

चारिम अध्यायमे राम द्वारा परित्याग कयल गेलि गर्भिणी सीताक मानसिक पीड़ाकेँ कवीश्वर गीतात्मक अभिव्यक्ति देलनि अछि । अहाँक वाचन लेल ओ अंश एतउ हम दउ रहल छी ।

करुणागार[1] उदार प्राणपति, वन देल दोष लगाय रे ।
देवर-दोष विधिक[2] हम की कहु, जनि घर धर्म्म न न्याय रे ॥
हमरहि हेतु दशानन[3] मारल, कपिगण[4] सङ्ग लगाय रे ।
तखन पतिव्रत[5] हमर देखल सभ, अनल[6] मे गेलहुँ समाय[7] रे ॥
नैहर जौँ मिथिला चलि जायब, कहत बाप की माय रे ।
पुरुष-परशमणि-कर[8] हम सोपल, अयली कि नाम हँसाय रे ॥
सिरिस सुमन[9] बरु होय अशनि सन[10], अशनि तेहन भय जाय रे ।
से बरु होय, होथि नहि अकरुण[11], अहँकाँ बड़का भाय रे ॥
की कहब कहय योगि[12] नहि रहलहुँ, भेलहुँ सबहिकाँ भार रे ।
कतहु रहब जानकि[13] जन कहते, श्रीरघुनन्दन - दार[14] रे॥

5.3.2 भाव पक्ष

चन्दा झा जखन काव्य रचब शुरू कयने रहथि तखन भारत पराधीन छल । 1857 मे सिपाही विद्रोहसँ स्वतंत्रता आन्दोलनक सूत्रपात भेल । भारत लेल ओ जागरण-कालक आरंभ छल । चन्दा झापर ओहि जागरणक प्रभूत (पर्याप्त) प्रभाव पड़ल । यद्यपि कतोक शताब्दीसँ अविराम चल आबि रहल साहित्यिक विचारधाराक प्रति हुनका आकर्षण भउ गेल छलनि, मुदा अपन रचनामे अपना युगक विचारधाराकेँ प्रश्रय देबामे नहि हिचकलाह । राष्ट्रीय भावनाक उद्‌बोधन हुनक रचनामे भेल अछि । मिथिला-समाजमे अपन संस्कृति, अपन परंपरा आ देशक प्रति गौरवक भावना जगयबाक प्रयास कयलनिं । स्वभावसँ चन्दा झा धर्मपरायण व्यक्ति छलाह । हुनक दृष्टिकोण समाजोन्मुखी छल । प्रबन्ध-काव्यक रचना लेल ओ भारतीय पुराण आ काव्यसभसँ भगवान रामक कथा लेलनि आ मैथिलीक चमत्कारपूर्ण उक्ति-सामर्थ्यक संग प्रस्तुत कयलनि । वाचनक हेतु देल गेल काव्यमे जानकीक आन्तरिक वेदना जाहि शब्दमे व्यक्त भेल अछि, ओ नारीक सांस्कृतिक बोध आ सहनशीलताक परिचायक थिक ।

5.3.3 संरचना शिल्प

चन्दा झा बोलचालक भाषाकेँ काव्य-भाषा बनौने छलाह, यद्यपि ओहिमे तत्सम आ अर्धतत्सम शब्दक प्रचुर प्रयोग कयलनि । वस्तुक चित्रणमे लोकोक्ति आ फकड़ाकेँ स्थान देलनि । अलंकारक अतिरिक्त छन्द आ रागक जतेक ई प्रयोग कयने छथि, ओतेक आन कोनो आधुनिक भाषा-साहित्यमे प्राय: नहि भेल अछि । हिनक गीतात्मक प्रवृत्ति ततेक सहजोर छल जे प्रबन्धकाव्यहुमे भाव-प्रवण प्रसंगक अभिव्यक्ति गीतेक माध्यमसँ भेल अछि ।

5.3.4 प्रतिपाद्य

कवीश्वर चन्दा झा राष्ट्रीय कवि छलाह । हुनका मनमे राष्ट्रीय अभ्युदय (उन्नति)क भावना छलनि जे हुनक रचनाक क्षेत्र-विस्तारमे सहायक भेल अछि । चन्दा झाक काव्य-केन्द्रमे 'मैथिल संस्कृति'अछि । मिथिला अथवा मैथिल संस्कृतिक पर्याय थिक– मानव-धर्म । कवीश्वर अपन साहित्यमे एही मानव-धर्मक निरूपण करबामे सयत्न (प्रयासरत) रहलाह । मिथिलाभाषा रामायणमे अवतारी रामक आदर्श चरितक प्रतिपादन भेल अछि । मुदा, ओहि प्रतिपादनमे हुनक लोककल्याणक कामना निहित अछि ।

---

[1] करुणाक भंडार, दयालु । [2] भाग्य लिखनिहार विधाताक । [3] रावण । [4] वानरक झुण्ड, वानरी सेना । [5] पतिक प्रति निष्ठा, सतीत्व । [6] आगि । [7] मिलि (जायब), प्रवेश । [8] स्पर्शमणि सन पुरुष (राम)क हाथ । [9] सिरीस– कोमलताक लेल प्रसिद्ध फूल । [10] वज्रसन कठोर । [11] निर्दय । [12] योग्य, जोगर । [13] जनकक बेटी । [14] रामक पत्नी ।

5.3.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

सन्दर्भ : चन्दाफा रचित 'मिथिलाभाषा रामायण'क उत्तरकाण्डक चारिम अध्यायसँ प्रस्तुत पद लेल गेल अछि । लोकापवाद (सार्वजनिक निन्दा, बदनामी)सँ बँचबा लेल श्रीराम निर्दोष सीताकेँ लक्ष्मण द्वारा जंगल पठबाय दैत छथि । वाल्मीकि आश्रमक समीप वनमे गर्भिणी सीताकेँ छोड़िकऽ विदा होइकाल लक्ष्मण भाव-विह्वल भेल क्षमा मङैत छथि । ओकर उत्तरमे सीता अपन वेदना प्रकट करैत छथि । सीताक ई वेदना सामान्य नारीक वेदना बनिकऽ व्यक्त भेल अछि ।

पद: **करुणागार उदार प्राणपति ।**

व्याख्या : व्यथित भेलि सीता बजलीह– परम दयालु आ उदार प्राणनाथ बिनु दोषक दोष लगाकऽ दण्डस्वरूप हमरा वनवास देलनि अछि । हे लक्ष्मण ! भाग्य लिखनिहार विधाताक दोष हम की कहू, हुनका अपनहि घरमे निष्पक्षता (धर्म) आ निसाफ (न्याय) नहि छनि । (किएक तँ सृष्टि रचना हेतु विधाता स्वयं अपन पुत्री सरस्वतीकेँ पत्नी बनौनिहार आ फेर सरस्वतीकेँ नदी बनि जयबाक शाप दऽ घरसँ निकालि देनिहार छथि ।) हमरहि दुआरे बानरी सेनाकेँ संग लऽ ओ (राम) दसमुँहवला रावणकेँ मारलनि । जखन हम आगिमे समाय गेलहुँ अर्थात् अग्निपरीक्षामे सफल भेलहुँ, तखन हमर पतिव्रत (सतीत्व) संसार देखलक । आब जँ हम एतऽसँ अपन नैहर मिथिला चल जायब तँ माय-बाप तँ वैह कहताह जे स्पर्शमणि (पारसमणि) सन पुरुष (राम) क हाथमे सौँपि देलियनि जे स्त्रीरत्न बनि जयतीह से अपन नाम हँसाकऽ (कुलकलंकिनी बनिकऽ) चल अयलीह अछि । कोमलता लेल प्रसिद्ध सिरीसक फूल बरु बज्जर सन (कठोर) भऽ जाय, आ की वज्रे सिरीस सन सुकोमल भऽ जाय । एहन कोनो उनटन होइ जे एहन असंभव संभवमे परिणत भऽ जाइक– से भऽ सकैत अछि । मुदा हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे अहाँक बड़का भाइ करुणाहीन अर्थात् निर्दय नहि भऽ सकैत छथि । की कहब देअर बाबू ! किछु कहबाक योग्य हम रहलहुँ कहाँ ? अहाँसभ लेल हम भार भऽ गेलहुँ, तेँ अयोध्यासँ बहुत दूर एहि वनमे छोड़ल गेलहुँ अछि । मुदा एकटा बात बुझि लियऽ– हम कतहु रहब, लोकसभ एहि जनकक बेटी जानकीकेँ श्री रघुनंदनेक पत्नी कहत अर्थात् श्रीरामेक एहिसँ हँसी होयतनि ।

विशेष

i) चन्दा झाक ई पद भावसँ भरल आ मर्मस्पर्शी अछि । सीताक माध्यमसँ कवि भारतीय नारीक मानसिक पीड़ाक यथार्थ चित्रण कयलनि अछि ।

ii) एहि गीतकाव्यमे मैथिल परंपराक उलहन शैली अछि । अयली कि नाम हँसाय रे, भेलहुँ सबहिंकाँ भार रे तथा कतहु रहब जानकि ....., ई वाक्यखण्ड कहबी थिक, सिरिस सुमन .... मे निदर्शना अलंकार अछि तथा सर्वत्र लाक्षणिक प्रयोग अछि, जाहिसँ पदक सौन्दर्य बढ़ि गेल अछि ।

iii) एतऽ सीताक वेदना, लक्ष्मणक माध्यमसँ, रामक प्रति व्यक्त भेल अछि ।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ ।

4) मैथिली साहित्यमे आधुनिक युगक प्रवर्तक मानल जाइत छथि ......
(मनबोध/चन्दाफा) ।

5) कवीश्वर चन्दा झाक प्रबन्धकाव्य थिक ....(गीतसुधा/मिथिलाभाषा रामायण)।

6) वनसँ नैहर चल जयबामे जानकीकेँ कथिक डर होइत छनि ? स्पष्ट करू।

अभ्यास

2) वाचन पदक ओ दुनू पाँती लिखू जे निदर्शना अलंकारक उदाहरणयोग्य अछि।

3) कि कहब कहय योगि नहि रहलहुँ, भेलहुँ सबहिकाँ भार रे ।

कतहु रहब जानकि जन कहते, श्रीरघुनन्दन-दार रे ।।

–एहि पाँतीक अर्थ स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

5.4 लालदास

बृहत् प्रबन्धकाव्यक रूपमे रामायणक रचना सर्वप्रथम चन्दा झा कयने छलाह । ओही भक्तिकाव्यक सगुण काव्यधाराक दोसर प्रतिष्ठित कवि लालदास छथि । रामचरितक माध्यमसँ शक्तिरूपा जानकीक विशिष्ट चरित्रकेँ ओ अपन काव्यक मुख्य विषय बनौलनि, तेँ हुनका शक्ति-उपासक (शाक्ति) कवि मानल जाइत अछि ।

जीवन-परिचय

लालदासक जन्म 1856 ई. मे मधुबनी जिलाक खड़ौआ गाममे भेलनि । संस्कृत शास्त्रक अध्ययन कयलनि । हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी आ उर्दूक सेहो जानकार छलाह, अपन योग्यता तथा धर्माचरणसँ 'पण्डित'क सम्मान पौने रहथि । दरभंगा महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारक रत्न बुझल जाथि । 1920 मे हुनक देहान्त भेलनि ।

रचना : लालदासक प्रसिद्ध कृति 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण' थिक । एकर रचना 1910 सँ 1914 ई. क बीचमे भेल छल, मुदा मुद्रित भेल 1954 ई.मे । हुनक बेशी रचना पौराणिक कथापर आधारित आ अनूदित अछि, जाहिमे मुख्य अछि– महेश्वर विनोद, चण्डीचरित, गणेशखण्ड, गणेशजन्म आदि ।

5.4.1 काव्य-वाचन

लालदासक सीता आ राम लक्ष्मी-विष्णु (रमेश्वर– रमा=लक्ष्मी, ईश्वर-विष्णु) क अवतार छथि । 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण'मे शक्ति (सीता)क योगेसँ शक्तिमान (राम)क सत्ता देखाओल गेल अछि । पुष्करकाण्डमे रामसँ बढ़िकऽ सीताक शक्ति-सामर्थ्यक चित्रण भेल अछि । एहि रामायणक चौपाइक एक अंश एतऽ वाचन लेल देल जा रहल अछि ।

लक्ष्मीसौँ हरि[1] कहल बुझाय । बड़ दुख सहलनि सुर-समुदाय[2] ।।
हम तनिकाँ देलहुँ वरदान । अचिरहि[3] हरब रिपुक[4] हम प्रान ।।
अवधपुरी जयबाक विचार । लेब ततहि हम न अवतार ।।
होयत प्रिये हमरहि की जाय । अहँ बिनु नहि कय सकब उपाय ।।
चलु चलु भूतल[5] प्राणपियारि । दुहु मिलि लेब असुर - संहारि[6] ।।
सुनि लक्ष्मी कहलनि बड़ वेश । उचित विचार कयल प्राणेश ।।
लेल अयोध्या हरि अवतार । चारि अंशयुत[7] राम उदार ।।
लक्ष्मी अयलिह मिथिला भूमि । ऋद्धि[8]-सिद्धि[9] संग लयिलिह जूमि[10] ।।

---

[1] विष्णु । [2] देवतागण । [3] शीघ्रे । [4] शत्रुक । [5] धरातल, पृथ्वी । [6] राक्षसक संहरण, विनाश । [7] विष्णुक चारि अंशसँ राम आदि चारि भाइ । [8] संपन्नता, धन-संपत्ति । [9] सफलता, अलौकिक शक्ति । [10] उपस्थित भऽ, अवतरित भऽ ।

5.4.2 भाव पक्ष

कविवर लालदास मिथिला, मैथिली तथा मैथिलक उत्थान आ सेवा-भावनासँ काव्यक रचना कयलनि । सांस्कृतिक चेतनाक ओ कवि छलाह । भारतीय रामकाव्यमे रामक प्रति पक्षपात आ सीताक उज्ज्वल चरितकेँ मद्धिम प्रकाशमे झिलमिलाइत देखि लालदासक मानस आन्दोलित भेलनि । मिथिलाक बेटी-जगत्जननी सीताक चारित्रिक विशेषताकेँ उजागर करबाक भावनासँ 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण'क रचना कयलनि । एहि रामायणमे सीता-रामक कथा प्रमुख अछि, रामक कथा नहि । कविक दृष्टिमे रामक समस्त ऐश्वर्य (प्रभुत्व) सीताक शक्तिपर आधारित छनि । दुनू ब्रह्मक अंश छथि । मर्त्यलोकमे (पृथ्वीपर) लीला करबा लेल दुनू दू देह (स्त्री-पुरुषक) धारण कयलनि । धर्मक रक्षा तथा राक्षससभक नाश करबाक उद्देश्यसँ दुनू नर-नारीरूपमे अवतार लेलनि । रमेश्वरचरित मिथिला रामायण प्रबन्धकाव्य थिक । एहिमे कविक लोक-मंगलक भावना सेहो व्यक्त भेल अछि । सीताक सासुर विदाकाल, रामक वन-यात्राक समय, चित्रकूटमे राम-भरत मिलन, शबरीक आतिथ्य, लक्ष्मणकेँ शक्तिवाण लगलापर रामक विलाप आदि प्रसंगक भावपूर्ण चित्रण भेल अछि । लालदास धर्मपरायण व्यक्ति छलाह । यथार्थसँ अधिक आदर्श (शास्त्र-पुराणक अनुकरण करब) प्रिय छलनि । मुदा आदर्शवादी भइयो कऽ अपन समाजक प्रति आस्थावान रहलाह ।

5.4.3 संरचना शिल्प

'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण'क रचना दोहा-चौपाइ छन्दमे भेल अछि । सोरठा, रूपमाला, गीतिका आदि किछु छंदक प्रयोग सेहो भेल अछि । लालदास एहि रामायणमे पात्रोचित संवाद, मिथिलाक भौगोलिक परिवेश, संस्कृति, ऋतु, नदी आदिक रोचक शैलीमे वर्णन कयलनि अछि । कथावस्तुक संरचनामे हुनक दृष्टिकोण एतेक साफ छलनि जे अनेक अभिनव तत्वसभक समावेश करबामे सफल भेलाह । हिनक रचना-शैलीमे नवीनता अछि ।

काव्य-भाषा

लोकमे बाजल जायवला भाषाकेँ लालदास अपन काव्यक भाषा बनौने छथि । तत्सम शब्दक संग अर्धतत्सम (स्पष्टकेँ पष्ट, संतानकेँ सनतान, क्रमशःकेँ क्रमसह आदि)प्रयोग सेहो कयलनि अछि ।

5.4.4 प्रतिपाद्य

लालदास शक्ति (भगवती)क उपासक रहथि । शाक्त मतकेँ माननिहार छलाह । तेँ वैष्णवी रामकाव्यक परंपरासँ हँटिकऽ शाक्तधर्मी रामायणक रचना करबा लेल ओ प्रेरित भेलाह । हुनक उद्देश्य छलनि– रामकथाक माध्यमसँ रामकेँ सगुण ब्रह्म आ सीताकेँ आदिशक्तिक प्रधान रूपमे प्रतिपादन करब । 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण'मे कविवर लालदास अपन उद्देश्यकेँ निपुणतापूर्वक संपादित करबामे सफल रहलाह अछि । एहि प्रतिपाद्यक पाछाँ हुनक मिथिलाक गौरव-गान, जानकीक चारित्रिक उत्कर्ष आ मैथिली भाषाक प्रति प्रेम प्रदर्शित करबाक भावना निहित छल ।

5.4.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

लालदासक प्रबन्धकाव्य 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण'क बालकाण्डसँ प्रस्तुत अंश लेल गेल अछि । ब्रह्मा एकान्तमे नारदकेँ सीता-रामक अवतारक कथा कहैत छथि । ओहीमे लक्ष्मीक संग विष्णुक वैकुण्ठमे भेल संवादक ई अंश थिक ।

पद : **लक्ष्मीसौँ हरि कहल बुझाय** ।

व्याख्या : भगवान विष्णु लक्ष्मीकेँ बुझाकऽ कहलनि जे देवतासभ बड़ दुःख सहलनि अछि । हम हुनका सभकेँ वरदान देलियनि अछि जे बिना विलम्ब कयने शीघ्रे शत्रुक प्राण हरण करब (अर्थात् राक्षससभक विनाश करब ।) अयोध्या जयबाक हमर विचार अछि । ओतहि हम मनुष्यक रूपमे अवतार लेब । प्रिये, हमरहिटा गेने ओतऽ की होयत, अहाँक बिना हम कोनो समाधान नहि कऽ सकब। प्राणप्रिया, अहूँ भूतल (पृथ्वी)पर चलू । दुहू गोटे मिलिकऽ राक्षस सभक संहार कऽ देब । ई वचन सुनि लक्ष्मी बजलीह– बड़ बेश प्राणेश, ई उचित विचार कयलहुँ अछि । तखन विष्णु (हरि) अयोध्यामे अवतार लेलनि । हुनकहि चारि (1. विष्णु स्वयं 2. शेषनागक 3-4. नारायणास्त्रक) अंशसँ राम (क्रमशः राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न) चारू भाइ भेलाह । मिथिलाक भूमिमे लक्ष्मी अयलीह आ ऋद्धि (संपन्नता)-सिद्धि (सफलता)क संग सीताक रूपमे अवतरित भेलीह ।

बोध प्रश्न

अधोलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ ।

7) रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक रचना मुख्य रूपसँ कोन छन्दमे भेल अछि ?

अ) वार्णिक छंद   आ) कवित्त-सोरठा

इ) दोहा-चौपाइ   ई) गीतिका-रूपमाला

8) लालदासक रामायणमे कोन कथा प्रमुख अछि ?

अ) रामक कथा   आ) सीताक कथा

इ) लक्ष्मी-विष्णुक कथा   ई) सीता-रामक कथा

9) राम आ सीताक अवतार कतऽ भेल ?

....

....

....

....

....

अभ्यास

4) लालदासकेँ रामायण रचबाक उद्देश्य की छलनि ? आठ पाँतीमे उत्तर लिखू ।

....

....

....

....

....

....

....

....

5) 'लक्ष्मी अयलिह मिथिला भूमि । ऋद्धि-सिद्धि संग लयिलिह जूमि ।।'

एहि पद्यांशक अर्थ स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

5.5 काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

आधुनिक मैथिली काव्यमे बीसम शतीक दोसर दशकसँ राष्ट्रीय स्वर मुखर होबऽ लागल । राष्ट्रीय स्वरक मूल भाव छल– स्वतंत्रता आन्दोलन आ समाज-सुधार । राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलनसँ प्रेरित यदुनाथ झा 'यदुवर' आ छेदी झा 'द्विजवर'क स्वाधीनतामूलक रचनामे राष्ट्रीय स्वर प्रमुख रहल तथा आस्थावादी रहितो सीताराम झाक जागरणमूलक रचनामे धर्मांधता आ अव्यावहारिक मान्यतासँ पराधीन मनुक्खक मुक्तिक मुख्य स्वर रहल । सीताराम झाक काव्यक प्रभाव आ भाषागत लोकप्रियतासँ तेसर दशकक बाद मैथिलीमे पुनर्जागरण आयल । पुनर्जागरण कालक कविक काव्यमे गरीब, शोषित आ सामान्य जनक हालचाल तथा ओकर स्थितिक उल्लेख होबऽ लागल । वस्तुक वर्णनमे कल्पनाक उड़ान आ वर्णनक भाषामे संस्कृत शब्दक अधिकाधिक प्रयोग होबऽ लागल । सामासिक पद आ अलंकारक प्रयोगक संग भाषाकेँ काव्यक अनुकूल बनयबाक प्रयास भेल । काशीकान्त मिश्र 'मधुप' एहि कालक प्रमुख कवि छथि ।

जीवन-परिचय : काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जन्म कोजागरा (आश्विन पूर्णिमा) दिन 2 अक्टूबर, 1906ई.कें भेल छलनि । हिनक पैतृक मधुबनी जिलाक कोइलख गाम छलनि । मुदा वसि गेलाह अपन मातृक दरभंगा जिलाक कोर्थु गाममे । संस्कृत शिक्षा ग्रहण कऽ व्याकरण आ साहित्यमे आचार्य उपाधि प्राप्त कयलनि । 1940 सँ 77 धरि जयानन्द उच्च विद्यालय, बहेड़ामे प्रधान पण्डितक पदपर कार्यरत रहलाह । मधुप आजीवन कवि बनल रहलाह । पद्यकेँ छोड़ि गद्य दिस कलम नहि चलौलनि । पद्यहिमे पत्रो लिखथि । आत्मकथा पर्यन्त पद्यहिमे लिखलनि । मैथिलीमे करुणरसक एकाधिकारी कवि मानल जाइत छथि । 'कविचूड़ामणि'क उपाधिसँ सम्मानित कयल गेल छलाह । 20 दिसम्बर 1987कँ हुनक निधन भेलनि ।

रचना : हुनक पहिल गीतकाव्य 'अपूर्व रसगुल्ला' 1941मे तथा मुक्तककाव्य 'झांकार' 1942 ई. मे छपल । ओकर बाद काव्यक सभ विधामे रचना कयलनि, जाहिमे प्रमुख अछि झांकार, शतदल, ताण्डव (मुक्तककाव्य); द्वादशी (कथाकाव्य), राधा-विरह (प्रबन्धकाव्य) मुक्त मधुप (आत्मकथात्मक), प्रेरणापुंज (संस्मरणात्मक) आदि । एतऽ हम मधुपक एकटा मुक्तककाव्य दऽ रहल छी, जकर अहाँ आगाँ वाचन करब ।

5.5.1 काव्य-वाचन

मधुपक काव्य-जीवन बहुआयामी (बहुत विस्तृत) छल । हुनक गीतकाव्य, मुक्तक तथा कथाकाव्यमे लोकजीवनक महत्त्वपूर्ण पक्ष व्यक्त भेल अछि । मुक्तककाव्यक विषय-वस्तु व्यापक (बहुत दूर धरि पसरल) अछि । हुनक दृष्टि एतेक सूक्ष्म छल जे समाजक दृष्टिमे

हेय (अधम) बुझल जायबला वस्तुओ सभकेँ काव्यक मर्यादा देलनि आ/ओहि माध्यमसँ दीन-दलित आ उपेक्षित वर्गक प्रति संवेदना प्रकट कयलनि । मधुपक 'चुट्टीसँ' कविता एही भावभूमिपर रचल गेल अछि । काव्यसंग्रह 'शतदल'मे, जकर प्रथम प्रकाशन 1944 ई.मे भेल छल, ई पद्य संकलित अछि ।

चुट्टीसँ

उपदेशक[1] तोँ सबसँ महान ।
चिन्ता नहि , कतबो उन्नत[2] थल[3], खसि कते बेरि चढ़ि बनह सफल ।
सबतरि[4] हम देखलहुँ तोहर सन उद्देश्यक[5] पक्का[6] क्यो न आन[7] ॥
सङ्गरमे[8] हारि एकैस बेर, तैमूरलङ्ग[9] बुझि कर्मफेर[10] ।
मरबाक हेतु उद्यत[11] तोरे शिक्षासँ विजयी छथि प्रमाण ॥
क्यो करथि जाहि दिशिसँ फराक, तेम्हरहि चलबा केर करह ताक[12] ।
सिखबह जनु केहनो विघ्न-जलधि[13] साहस-जहाजसँ[14] करु प्रयाण[15] ॥
अवसान[16] समय बुझि बना पाँखि, उड़ि चलह, न ककरउ लगा आँखि[17] ।
सिखलहुँ हम तोहर रीति-नीति[18], शक्तिक ह्रासेँ[19] नहि बनु मलान[20] ॥
कनिको दबितहिँ तोँ काटि-काटि, शिक्षा दै छह जनु डाँटि-डाँटि ।
केहनो पहाड़ यदि देथि दुःख, नहि सही, रही वा जाय प्राण ॥
अनुपल[21] तोँ चंचल करह भ्रमण, संग्रह करैत किछु अपन अशन[22] ।
दीक्षा[23] जनु दै छह बनि निरलस[24], उद्योग[25] करह बनि सावधान[26] ॥

5.5.2 भाव पक्ष

कविचूड़ामणि 'मधुप'क काव्यमे विविध भावक प्रतिपादन भेल अछि । स्वाधीनताक भावनासँ रचल गेल हुनक काव्यमे राष्ट्रीय स्वर व्यक्त भेल अछि । स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद 'ताण्डव'क माध्यमसँ युवावर्गमे अपन देशक प्रति प्रेम आ समर्पणक भावना जगयबाक ओजपूर्ण प्रयास कयलनि । मधुप अपन संस्कृतिक गौरवशाली परंपराक प्रशंसक छलाह तँ जाति-भेद, दीन-दलितक शोषण आ मिथ्या-अभिमानमे अन्हरमारि करैत समाजक प्रखर आलोचको छलाह ।

मधुप आस्तिक विचारक रहथि । संसारक प्रत्येक जीव-जन्तु आ प्राकृतिक वस्तुकेँ उपादेय मानथि । ओकर स्वाभाविक गुणसँ शिक्षा लेब आवश्यक बुझथि । एहन अनेक वस्तु अछि, जाहि दिस लोकक नजरि जाइतो नहि छैक, तकरहु विचारणीय विषय बनौलनि । ओहीमेसँ एक काव्य चुट्टीसँ एतऽ वाचन हेतु देल गेल अछि ।

चुट्टी छोटछिन कीड़ा थिक । पाँच-छौ प्रकारक ई होइत अछि । लोकक नजरिमे ई निरर्थक जीव थिक, मुदा मधुप ओकरामे अनेक गुण देखलनि । तेँ ओकरा सभसँ पैघ उपदेशक

---

[1] उपदेश देनिहार शिक्षक । [2] ऊँचगर । [3] जगह । [4] सभठाम । [5] लक्ष्यक । [6] पकिया । [7] दोसर । [8] युद्धमे । [9] तैमूरलंग विदेशी आक्रमणकारी छल । एकर नाम मध्य एशियाक महान साम्राज्य निर्माता तथा विजेतामे प्रसिद्ध छैक । 1398-99 ई.क बीचमे दिल्ली सल्तनत केर तुगलक वंशक शासक महमूद शाहकेँ पराजित कऽ तैमूर शासक बनि गेल । शाहसँ तैमूर एकैस बेर धरि हारैत रहल आ बाइसम बेरमे विजयी भेल । ई प्रेरणा ओकरा भेटल रहैक चुट्टीसँ । ऊँचगर जगहपर राखल मधुर दिस एकैस बेर चढ़ैत-खसैत बाइसम बेरमे चुट्टीकेँ चढ़ल देखिकऽ तैमूर शिक्षा ग्रहण कयलक आ अपन अभियानमे सफल भेल । ई दन्तकथा (प्रचलित मौखिक कथा) बनि गेल अछि । [10] भाग्यक चक्कर, कपारक दोष । [11] तैयार । [12] ताक-हेर । [13] बाधारूपी समुद्र । [14] साहस रूपी जहाजसँ । [15] प्रस्थान, विदा होयब । [16] अन्त, मरण । [17] आँखि नहि लगायब -(लाक्षणिक/मोहावरा) मोजर नहि देब, चितायब नहि । [18] स्वभाव आ सफल होयबाक युक्ति । [19] बल घटलासँ । [20] उदास । [21] सदरिखन । [22] भोजनी । [23] मूलमंत्र, असली विचार । [24] आलस्य रहित, फुर्तिगर । [25] काज-धन्धा, उद्यम । [26] सतर्क, चौकस ।

कहलनि अछि । बिना कोनो चिन्ता-फिकिर कयने, केहनो उँचगर जगह रहओ, कतबो नीचाँ खसओ, चढ़ि जयबामे ओ सफल होइते अछि । कवि सभ ठाम देखलनि, मुदा चुट्टी सन पकिया उद्देश्यवला, अर्थात् कोनो स्थितिमे लक्ष्य धरि पहुँचनिहार दोसर क्यो नहि भेटलनि । इतिहास साक्षी अछि जे चुट्टियेसँ प्रेरणा पाबिकऽ तैमूरलंग युद्धमे एकैस बेर धरि हारैत रहलाक बाद अपन भाग्यक फेर (चक्कर) बुझि बाइसम बेरमे जीवनक जय कि क्षय केर संकल्पसँ युद्ध कयलक आ विजयी भेल । चुट्टी धारी (पाँती)मे आ कि एकसरे जेमहर विदा होइत अछि ताहिमे क्यो बाधा दैत छैक तँ तैयो मुड़िकऽ आगाँ बढ़िए जाइत अछि । एहिसँ जेना ओ सिखा रहल होअय जे केहनो विघ्न-बाधा उपस्थित भऽ जाय, तैयो साहस-उत्साह कऽ अपन लक्ष्य धरि पहुँचिए जाइ । मरबाक समयमे ओकरा पाँखि भऽ जाइत छैक, उड़ऽ लगैत अछि आ ककरो आँखि नहि लगबैत अछि, अर्थात् ककरो कोनो मोजर नहि दैत अछि । कवि ओकर एहि रीति-नीतिसँ अर्थात् ओकर स्वभाव आ सफल होयबाक युक्तिसँ सिखलनि जे सामर्थ्य घटलोपर उदास नहि होइ- स्वाभिमान बनौनहि रही । मनुक्खक अंगसँ जहाँ कनियाँ चुट्टी पिचाइत अछि की चुट दऽ काटि लैत अछि, एहिसँ कविकेँ भान होइत छनि जेना ओ डाँट-फटकारिकऽ शिक्षा दऽ रहल हो जे केहनो पहाड़ सन शक्तिशाली (शोषक, धनवान आदि) दुःख देथि तँ प्राण जाय कि रहय, सहन नहि करी, अर्थात् ओकर बदला तुरंत लऽ ली । कवि ओकरासँ कहि रहलाह अछि जे सदिकाल तोँ चंचल भेल घुमिते रहैत छह आ अपन खयबाक वस्तुक ओरियान करैत रहैत छह, से बुझाइत अछि जेना तोँ हमरा आलस्य त्यागि सतर्क-सावधान भेल कोनो-ने-कोनो काज-धन्धामे लागल रहबाक मूलमंत्र (दीक्षा) दऽ रहल छह ।

प्रस्तुत काव्यमे उत्प्रेक्षालंकार (उत्प्रेक्षा अलंकार)क प्रयोग भेल अछि । उद्देश्यक पक्का, अवसान समय ...पाँखि, न ककरउ लगा आँखि, मोहाबरा(लाक्षणिक) थिक । चुट्टीक माध्यमसँ कवि लोककेँ निर्भीक, स्वाभिमानी, उत्साही आ उद्योगी बनबाक प्रेरणा देलनि अछि तथा अपनामे (मनुष्य-मनुष्यमे) ऊँच-नीचक भेद-भाव नहि रखबाक संदेश सेहो देलनि अछि ।

5.5.3 संरचना शिल्प

मधुप छन्दबद्ध आ छन्दमुक्त दुनू प्रकारक काव्य रचने छथि । कथाकाव्य मुक्तछन्दमे छनि । सभ प्रकारक काव्यमे 'लय' आ 'संगीत' अछि । गीतकाव्यक भाषामे तद्भव आ तत्सम शब्द मिज्झर अछि । झांकार, ताण्डव, गंगातरंगावली, द्वादशी तथा राधा-विरहमे संस्कृतनिष्ठ शब्दक अधिक प्रयोग कयने छथि । शतदलक सभ मुक्तक एक शिल्प, एक शैलीमे रचल गेल अछि । मधुप भावक अनुकूल भाषा आ छन्दक प्रयोग करबामे पारंगत छलाह । विचारक अनुकूल अलंकृत भाषाक निर्माण आ लाक्षणिक प्रयोग करबामे दक्ष छलाह । रस, अलंकार आ प्रेमक आवेश हिनक काव्यमे सर्वत्र भेटत ।

5.5.4 प्रतिपाद्य

मधुपक काव्यमे यथार्थ आ प्रगतिशील विचारक समन्वय अछि । सामाजिक विषमता आ शोषणक विरुद्ध हुनक स्वर सुनब तँ सौन्दर्य आ प्रेमक आलाप (मधुर ध्वनि)मे हुनक अनुराग सेहो छिलकैत देखब । अपन समय (वातावरण)क संवादकेँ अकानब आ ओकरा झट सन काव्यरूप देब मधुपक प्रमुख विशेषता रहल अछि ।

5.5.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

वाचन लेल देल गेल 'चुट्टीसँ' काव्यपर उपर्युक्त विवेचनमे हम विस्तारसँ विचार कऽ चुकल छी । आब अहाँ ध्यानसँ एहि काव्यक वाचन कऽ अपन भाषामे व्याख्या कऽ सकैत छी ।

बोधप्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ–

10) मधुपक मानद उपाधि की अछि ?

अ) कवीश्वर　　　　ख) कविकोकिल

ग) कविचूड़ामणि　　　　घ) कविशेखर

11) मधुपक काव्यमे कोन विचारक समन्वय अछि ?

अ) यथार्थ आ प्रगतिशील　　　　ख) आस्तिक आ नास्तिक

ग) शैव आ शाक्त　　　　घ) रूढ़ि आ परंपरागत

अभ्यास

6) 'चुट्टीसँ' काव्यक द्वारा कवि की संदेश देबऽ चाहलनि अछि ? चारि-पाँच पँतीमे उत्तर दियऽ ।

....

....

....

....

....

7) मधुप कहकर प्रशंसक आ आलोचक छलाह ? -भावपक्षक आधारपर स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

5.6 सुरेन्द्र झा 'सुमन'

बीसम शतीक चारिम-पाँचम दशक मैथिली काव्य-साहित्यक लेल स्मरणयोग्य अछि । ओहि दशकमे एकपर एक कवि सृजनशील भेलाह– भुवन, मधुप, किरण, सुमन, यात्री, तंत्रनाथ झा प्रभृति । ओ कविलोकनि अपन वर्तमानकेँ प्रश्रय दैत नव-नव भाव आ विचारसँ मैथिली काव्यकेँ गतिशील बनौलनि । काव्य-साहित्यकेँ समृद्ध करबामे महाकवि सुरेन्द्र झा 'सुमन'क नाम आदरक संग लेल जाइत अछि । सुमनकेँ 'कविक कवि' कहल गेल अछि । एहूसँ अनुमान कयल जा सकैत अछि जे मैथिली काव्यमे हुनक स्थान कतेक उच्च छनि ।

जीवन परिचय

सुरेन्द्र झा 'सुमन'क जन्म बल्लीपुर (समस्तीपुर) नामक गाममे आश्विन शुक्ल पंचमी तदनुसार 9 अक्टूबर 1910 ई.कँ भेलनि । 1929 ई.मे बंगालसँ काव्यतीर्थ आ 1932 ई.मे बिहारसँ साहित्य विषयमे आचार्यक उपाधि प्राप्त कयलनि । राज दरभंगासँ संरक्षित साप्ताहिक पत्र 'मिथिला मिहिर'क 1935सँ 1954 धरि सम्पादक रहलाह । 1953 सँ सी.एम. कालेज

(दरभंगा) मे प्राध्यापक तथा 1969सँ बिहार विश्वविद्यालय ओ मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागक अध्यक्ष पदपर काज करैत 1975 मे सेवानिवृत्त भेलाह । दरभंगा क्षेत्रसँ विधायक आ सांसद सेहो रहल छथि । प्रथम मैथिली दैनिक पत्र 'स्वदेश'क दू-दू बेर प्रकाशन-सम्पादन सेहो ई कयने छलाह ।

रचना

मैथिलीमे सुमनक मूलकृति– 28, अनूदित– 24 तथा सम्पादित– 10, कुल 62 गोट ग्रंथ अछि । मौलिक प्रमुख काव्यपुस्तक अछि– प्रतिपदा, अर्चना, साओन-भादव, अंकावली, अन्तर्नाद, भारत-वन्दना, पयस्विनी, उत्तरा (खंडकाव्य) तथा दत्त-वती (प्रबन्धकाव्य) । काव्यक अतिरिक्त कथा, उपन्यास, समीक्षा आ संस्मरण सेहो छनि । संस्कृतमे दुइ गोट पुस्तक छनि । डेढ़ सयसँ अधिक मैथिली पोथीपर हुनक भूमिका लिखल छल– ताहिमेसँ 108 भूमिकाक संकलन 'बिन्दु-विसर्ग' अछि । 5 मार्च 2002 कँ हुनक देहावसान भऽ गेलनि ।

5.6.1 काव्य-वाचन

सुमनक काव्यमे आधुनिक चेतनाक प्रायः सभ विशेषता समुचित रूपमे व्यक्त भेल अछि । शुरुहेसँ हुनकामे भारतीय राष्ट्रीय भावनाक काव्य-तत्त्व विद्यमान रहल अछि । समाजमे व्याप्त विषमता, भौतिक संताप आ किसान-मजूरक दुखद स्थितिपर हुनक प्रगतिवादी स्वर प्रकट भेल अछि । ओ अपन वर्तमान युगक प्रगतिवादिताकेँ सनातन प्रक्रियाक रूपमे स्वीकार करैत छथि । तेँ अपन सांस्कृतिक परंपरासँ भिन्न आयातित (पाश्चात्य देशक) नवीनता (विचार आ दृष्टि)पर सुमन विश्वास नहि कयलनि । सुमनक 'जन्म-दिवस' काव्यसँ एहि मान्यताक समर्थन भऽ रहल अछि । 1949 मे प्रकाशित हुनक प्रसिद्ध काव्य-संग्रह 'प्रतिपदा'मे ई संकलित अछि । अहाँक वाचन लेल ई काव्य दऽ रहल छी ।

जन्म-दिवस

जन्म-दिवस[1] थिक, माय गोसाउनि[2] मनबथि लय फल-फूल
क्यौ सुरभित तन[3] सिङरहार सन झहरि चढ़य पद-धूल[4]
पिता आइ पूजा आसनपर मंगल चण्डी[5]-पाठ
जुटल[6] बधाबा[7] देबय आगत[8] मित्र-मण्डलिक ठाठ[9]
रंग-विरंगक पत्र डाकसँ अभिनन्दन केर छन्द[10]
जन्म-दिवस थिक हमर आइ घरभरि उमड़ल आनन्द
गणक[11] गुनथि ग्रह वर्ष-प्रवेशक[12] शुभसूचक अवदात[13]
किन्तु गनी हम पलक[14] जीवनक[15] बीतल अछि कत तात[16]
सञ्चित आयु कोषसँ होइछ श्वास-श्वास व्यय हन्त[17]
वर्ष-प्रवेशक[18] हर्ष-अमृतमे घोरल विषमय[19] अन्त[20]

---

[1] जन्मदिन, जयंती । [2] सुमनक मायक नाम गोसाउनि देवी छलनि तेँ माय गोसाउनि तथा कुलदेवता (गोसाउनि) । [3] क्यो युवावस्था प्राप्त देहवाली अर्थात् पत्नी । [4] चरण-रज । [5] दुर्गासप्तशती । [6] एक ठाम जमा भेल अर्थात् जन्म-दिवस समारोहमे । [7] बधाइ, शुभकामना । [8] आयल, उपस्थित । [9] ठट्ठ, भीड़ । [10] पद्य । [11] ज्योतिषी । [12] एक वर्षक लेल बनाओल जायवला कुण्डली । [13] उच्च । [14-15] जीवनक एक-एक पल (क्षण, सेकेण्ड)क । [16] तात शब्दक प्रयोग वयसँ छोटक प्रति स्नेहक तथा श्रेष्ठक प्रति सम्मानक अर्थमे होइत अछि । [17] आकस्मिक हलचलकेँ प्रकट करयवला ई अव्यय थिक, हर्ष-शोक दुनूमे प्रयोग होइत अछि, हाय । [18] नव (अगिला) वर्षक प्रवेश दिनक । [19-20] विषाक्त मृत, जहर मिलल मरण ।

5.6.2 भाव पक्ष

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' क आदर्श भारतीय जीवन-दर्शन अछि । अपन आदर्शक प्रति गौरवक भावना जगायब हुनक लक्ष्य छलनि । नवयुगक विचार आ प्रवृत्तिक जड़ि (प्रस्थान बिन्दु) ओ प्राचीन भारतीय साहित्यकेँ मानैत छलाह । भारतीय संस्कृतिक प्रति आस्थावान रहितो वैचारिक स्तरपर समन्वयवादी रहथि । अपन वर्तमानक युगचेतना आ प्रगतिशील विचारधाराक प्रतिपादनमे सुमन पूर्णतः आधुनिक बनल रहलाह । 'हलधर'क प्रति भाव-निवेदनमे वर्तमान युगक हरवाहकेँ त्रेताक हलधर राजा जनक आ द्वापरक हलधर बलरामसँ श्रेष्ठ प्रमाणित कऽ कवि अपन आधुनिक चेतनाकेँ उजागर कयलनि अछि । कल्पना आ भावक स्तरपर सुमनक काव्य-संग्रह 'साओन-भादव' मैथिलीक अमूल्य निधि मानल जाइत अछि । हिनक विषय-क्षेत्र व्यापक अछि । एहन कोनो वैचारिक मत-वाद प्रायः नहि अछि जाहि आधारपर महाकवि सुमन रचना नहि कयने होथि । आधुनिक मैथिली काव्यक ओ प्रतिनिधि कवि मानल गेल छथि ।

राम, कृष्ण आदि महामानवक जयंती एतऽ बहुत पहिनेसँ भक्तिपूर्वक मनाओल जाइत रहल अछि । बीसम शतीक तेसर दशकसँ गोष्ठीक आयोजन कऽ विशिष्ट व्यक्तिक जन्मदिन ससम्मान मनायब सेहो शुरू भेल । आब तँ अधिक लोक अपन सन्तान आ पिताक आवेशसँ 'केक कटा कऽ बर्थ डे' मनबैत अछि । सुमनक जन्मदिन कोना मनाओल जाइत छल आ ओहि दिन ओ मनेमन की सोचैत छलाह, तकर चित्रण 'जन्म-दिवस'मे भेल अछि । ई हुनक आत्मपरक काव्य थिक ।

5.6.3 संरचना शिल्प

सुमनक काव्य-भाषा मुख्यतः तत्समबहुल आ समास-प्रधान अछि । लोकमे प्रचलित भाषाक प्रयोग सेहो कयलनि अछि, मुदा ओहूमे तत्सम शब्द फेंटल अछि। जतऽ ओ सांस्कृतिक विषयक उल्लेख करैत छथि ततऽ भाषामे तत्सम शब्दक अधिकता रहैत अछि आ जतऽ सामाजिक विषयक वा पात्रक वर्णन करैत छथि ततऽ भाषामे स्वाभाविक सहजता बनल रहैत अछि ।

सामान्यसँ सामान्य विषयकेँ भाव-योजनाक संग उत्तम शैलीमे उपस्थित करब हुनक रचनात्मक विशेषता थिक । परम्परागत छन्दमे रचना करबाक आवेश हुनका आरंभेसँ रहलनि । तेँ पूर्वसँ चल आबि रहल काव्य-शिल्पसँ चाहियोकऽ ओ मुक्त नहि भऽ सकलाह । प्रकृतिक मानवीकरण करबाक कौशल हुनक अद्‌भुत छलनि ।

5.6.4 प्रतिपाद्य

सुमन राष्ट्रवादी कवि छलाह । हुनकामे विकसित राष्ट्रीय चेतना छल । ओ अपन काव्यक केंद्रमे 'मानव'केँ रखलनि आ ओहि मानवक अपेक्षाक अनुकूल राष्ट्रीय चेतनाक विकास-दृष्टिकेँ अपन काव्यमे प्रस्तुत करऽ चाहैत छलाह । एहि लेल ओ भारतीय संस्कृति आ जीवन-दृष्टिकेँ आधार बनौलनि । ओ आधार हुनक कसौटी बनि गेल । ओहि कसौटीपर आधुनिक विचारधाराकेँ जाँचिकऽ कोनो 'वाद' सँ अधिक महत्त्व 'राष्ट्रवाद'केँ देलनि आ मूल्यक दृष्टिसँ भारतीय संस्कृति आ साहित्यकेँ सर्वाधिक मूल्यवान सिद्ध कयलनि । सुमनक मुख्य प्रतिपाद्य सामाजिक धरातलपर राष्ट्रीय चेतनाक विकासकेँ मानल जा सकैत अछि । हुनक प्रतिपाद्यकेँ संपूर्णतामे देखबाक हो तँ 'दत्त-वती' आ 'उत्तरा'क वाचन कयल जा सकैत अछि ।

5.6.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

आचार्य सुमन रचित काव्यक वाचन अहाँ कऽ लेने होयब । हुनक काव्यक विशेषताक उल्लेख हम उपर्युक्त विवेचनमे कऽ चुकल छी । अहाँक सुविधा लेल प्रस्तुत काव्यक व्याख्या दऽ रहल छी । अहाँ अपन भाषामे एकर व्याख्या करबाक प्रयास अवश्य करी । प्रस्तुत 'जन्म-दिवस' कवितामे एक संग चारि गोट चित्र अंकित अछि– पुजा-पाठ, शुभकामना, भाग्यफल आ कालज्ञान ।

व्याख्या: कवि कहि रहल छथि जे आइ हमर जन्म-दिवस थिक । माय गोसाउनि फल-फूल समर्पित करैत हमरा लेल गोसाउनि (कुलदेवता)कें मना (प्रसन्न कऽ) रहलि छथि । क्यौ सुरभित तन अर्थात् युवती पत्नी सिङरहार फूल सन खुलिकऽ हँसैत सादर पयर छुबि प्रणाम कऽ रहलीह अछि । हमर कल्याणक कामनासँ पिता पूजाक आसनपर दुर्गासप्तशतीक पाठ कऽ रहल छथि । जन्म-दिवसक आयोजन (गोष्ठी)मे बधाइ-शुभकामना देबा लेल आयल मित्र-मण्डलीक भीड़ लागल अछि। डाक द्वारा रंग-विरंगक पत्र आ पद्यमे अभिनन्दनपत्र भेटल अछि । आइ हमर जन्मदिन थिक तें घर-परिवारमे आनन्दे आनन्द छैक । दोसर दिस, जोतखी वर्ष-प्रवेशक शुभसूचक (नीक फल देबऽवला)आ उच्च ग्रहक गणना कऽ रहल छथि । मुदा हे बन्धु, (तात), हम जीवनक एक-एक क्षण (सेकेण्ड)कें गनि रहल छी जे कुण्डलीमे निर्धारित आयुमेसँ कतेक बीति चुकल अछि ? हाय, जमा भेल आयुरूपी कोष (बैंक)सँ श्वास-पर-श्वास खर्च भेल जा रहल अछि आ नववर्षक प्रवेश (जन्म-दिवस)क एहि हर्षरूपी अमृत(अ-मृत)मे विषसँ भरल अंत (मृत, मरण) घोरल अछि ।

बोधप्रश्न

नीचाँ लिखल प्रश्नक उत्तर दियऽ :

12) 'कविक कवि' किनका कहल गेल अछि -

अ) मधुपकें आ) सुमनकें

इ) किरणकें ई) यात्रीकें

13) सुमन कोन 'वाद'क समर्थक छलाह -

अ) राष्ट्रवाद आ) समाजवाद

इ) अध्यात्मवाद ई) साम्यवाद

14) 'जन्म-दिवस'मे कयटा चित्र अंकित अछि, तकर नाम लिखू ।

अभ्यास

8) रंग-विरंगक पत्र डाकसँ अभिनन्दन केर छन्द
जन्म-दिवस थिक हमर आइ घर भरि उमड़ल आनन्द
–एहि पाँतीक सरल भाषामे व्याख्या करू ।

5.7 वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

मैथिली काव्यमे समाज आ देशक वास्तविक स्थितिक वर्णन करब शुरू कयलनि चन्दा झा। हुनक अगिला पीढ़ीक सीताराम झा, काशीकान्त मिश्र 'मधुप', भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' प्रभृति कवि सामाजिक यथार्थक चित्रणमे युग-युगसँ प्रताड़ित आ उपेक्षित वर्गकेँ काव्यक विषय बनौलनि, ओकरा लेल युगचेतनाक स्वर व्यक्त कयलनि। मुदा ओहि स्वरमे ललकार नहि छल। से देलनि यात्री। स्वाधीनतासँ पूर्वहि ओ अपन समकालीन अग्रज-अनुज कविसँ कहने रहथि– 'आइ छन्दमे एक ललकार आ स्वरमे दृढ़ता चाही'। वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' अपन काव्य-कलासँ, प्रचलित काव्य-व्यवस्थाक अतिक्रमण कऽ मैथिली काव्य-धाराकेँ नव मोड़ देलनि, जाहिसँ मैथिलीक प्रकृतिक अनुरूप काव्यकेँ नव दिशा आ दृष्टि भेटलैक।

जीवन परिचय : यात्री दरभंगा जिलाक तरौनी गामक छलाह। हिनक जन्म 11 जून 1911 केँ ज्येष्ठ पूर्णिमा दिन भेल छलनि। प्रारंभिक शिक्षा गामहि-घरमे भेटलनि। बादमे वाराणसीसँ शास्त्री आ कोलकातासँ काव्यतीर्थ कयलनि। तकर बाद बौद्धभिक्षु बनि श्रीलंका चल गेलाह। पश्चात् तिब्बत आ रूसक यात्रा सेहो कयलनि। कतेको देशी-विदेशी भाषा सिखने रहथि। बादमे, बौद्धधर्म छोड़ि अपन कौलिक धर्म स्वीकार कऽ लेलनि। मैथिली, हिन्दी, संस्कृत आ बंगला भाषामे रचना कयलनि। मैथिली पत्रिकामे 1930 सँ हिनक रचना छपऽ लागल। हिन्दीमे अधिक रचना कयलनि आ नागार्जुन नामसँ प्रगतिवादी कवि-लेखक रूपमे नामी छथि। मैथिलीमे दूटा काव्य-संग्रह छनि– चित्रा तथा पत्रहीन नग्न गाछ। हुनक समस्त मैथिली रचना 'यात्री समग्र'मे प्रकाशित अछि। 5 नवम्बर 1998 केँ हुनक निधन भऽ गेलनि।

यात्रीक प्रकृति-प्रेमक प्रसिद्ध रचना 'सिनुरिआ आम' एतऽ दऽ रहल छी, जकर अहाँ आगाँ वाचन करब।

5.7.1 काव्य-वाचन

यात्रीक काव्यमे शुरुहेसँ प्रगतिशील काव्य-तत्त्व विद्यमान रहल अछि। तेँ, हुनक काव्यमे कमासुत जन-बोनिहार आ कल-कारखानामे खटैत मजूरक प्रति आवेश प्रकट भेल अछि तँ सामाजिक-राजनीतिक शोषणसँ सामान्य जनक मुक्ति आ अधिकारप्राप्तिक स्वर सेहो व्यक्त भेल अछि। संगहि, हुनक काव्यमे हृदयक मधुर संवेदना (भावना)क मनोहर चित्र प्रस्तुत भेल अछि। राष्ट्र, मातृभूमि, नारी, प्रकृति आदि विषयक प्रेमपरक रचनामे कविक सहृदयता साकार भऽ गेल अछि। यात्रीक 'सिनुरिआ आम' प्रकृति-सौंदर्यक कविता थिक। 1950 ई. मे 'किरण' (अंक-1) पत्रिकामे ई छपल छल।

सिनुरिआ आम

दुइ फेँड़वला बुढ़वा[1] गाछ ....
कोनइला[2]तर ठाढ़ छी–
करइ अछि आकृष्ट[3] मनकेँ
डारियर लटकल सिनुरिआ आम

काल्हि परसू आ कि चारिम दिन जएतइ पाकि
पाबि सिहकी[4] रात्रिशेषक[5]
टब्ब दए खसि पड़त चुप्पेचाप
के कहओ, लगतैक ककरा हाथ

[1] पुरान (सरही-किल्लू)। [2] कोन परहक गाछ। [3] आकर्षित, अपना दिस घीचि रहल अछि। [4] सिहकल बसात। [5] भोरहरवाक।

किछु होअओ, भावीक[6] चिन्ता नहि करी
एखन तँ झरकल[7] नयनकेँ जुड़ा[8] ली[9] तत्काल[10]
दिव्य[11]ओ अभिराम[12]
करइ अछि आकृष्ट मनकेँ
डारिपर लटकल सिनुरिआ आम ।

5.7.2 भाव पक्ष

यात्रीक जीवन शुरुहेसँ संघर्षमय रहल, जीवन भरि यात्रीए (घुमक्करे) बनल रहलाह । अभाव आ अपमानसँ आहत (घायल) लोकसभकेँ लगसँ देखने रहथि । ओ अभाव आ तिरस्कारक चेतना हुनक काव्यक प्रेरक शक्ति बनल, जकर पूर्ण प्रभाव हुनक काव्य-यात्रापर पड़ल । यात्रीक काव्यकेँ हुनक जीवन-चित्र सेहो कहल जा सकैत अछि । आत्मसंघर्षसँ यात्रीक जीवन आ काव्यमे एकरूपता देखल जाइत अछि । सामाजिक आ राजनीतिक व्यवस्था-परिवर्तनक संघर्षमे सक्रिय रहलाह तँ ओजपूर्ण रचनात्मक सहयोग सेहो दैत रहलाह । एही लेल यात्रीक काव्यमे क्रान्तिक स्वर अधिक मुखर अछि ।

यात्रीक जीवन अभावक जीवन रहल, मुदा भावक अभाव कहियो नहि भेलनि । हुनक काव्यमे भावक विविधता अछि, जाहिमे लोक-जीवनसँ जुड़ल अनेक चित्र प्रस्तुत भेल अछि । हुनक प्रेममूलक रचनामे नारी-सौन्दर्यक प्राकृतिक चित्र अत्यंत मनोरम अछि । प्रकृति-प्रेमक अंकनमे ग्राम्य-प्रकृतिक यथार्थ आ सौन्दर्य, दुहू प्रकारक चित्रण भेल अछि ।

'सिनुरिआ आम' सौन्दर्यमूलक काव्य थिक । आम प्राकृतिक फल थिक । जेठ मासमे एकाध आम जखन पकबाक स्थितिमे अबैत अछि, तखन जकर नजरि ओहि सिनुरिआ आमपर पड़ैत छैक, ओ ओकर मिठासक अनुभव कऽ आ बाहरी सुन्दरतासँ मुग्ध भऽ जाइत अछि आ चाहैत अछि जे ओ आम हाथ लागि जाय । प्रस्तुत काव्यक माध्यमसँ कवि कहि रहल छथि– गाछ छैक पुरान । सेहो एक कातमे । ओकर डारिमे लटकल डम्हायल सिनुरिया आम मनकेँ आकर्षित कऽ रहल अछि । एही दू-चारि दिनमे ओ पाकिकऽ भोरहरबामे हवाक सिहकीपर टभ दऽ खसि पड़तैक । ओ ककरा हाथ लगतैक– से के कहत ! अच्छे, जे होइ, भविष्यक सोच नहि करी । एखन एहि प्राकृतिक सौन्दर्य आ माधुर्यसँ भरल फलकेँ निहारिकऽ देखी आ अपन अतृप्त नयन (आँखिकेँ) जुड़ा(तृप्त कऽ)ली । एहिसँ मन अपनहि प्रसन्न भऽ जाइत छैक । सुन्दर आ मनोहर सिनुरिआ आम मनकेँ अपना दिस घीचि रहल अछि, अर्थात् होइत अछि जे प्रकृतिक एहि अपूर्व रचना दिस आँखि गड़ौने रही आ आनन्द-रसक पान करैत रही ।

5.7.3 संरचना शिल्प

यात्रीक काव्य-भाषा लोकचलित (सामान्य लोक द्वारा बाजल जाइवला) भाषा थिक । बोलचालक भाषाकेँ साहित्यिक भाषा बनयबाक श्रेय, कविवर सीताराम झाक बाद, हिनकहि छनि । मैथिल स्वभावक अनुकूल काव्यमे स्वाभाविक भाषा, टोन, ध्वनि, व्यंग्य आ बातकेँ घुमाकऽ बजबाक (वक्र उक्ति)-शैलीक भरखरि (सघन रूपेँ) प्रयोग कयलनि अछि । कहल जाइत अछि जे अभिव्यक्ति-शैलीमे ई क्रान्ति आनि देलनि । पूर्वसँ चल आबि रहल काव्य-शिल्पक रूढ़िसँ ई बचल रहबाक प्रयास कयलनि । बन्धनहीन छन्दक प्रयोग कयलनि । मुदा ओहि मुक्तछंदकेँ लय आ संगीतसँ जोड़ने रहलाह । प्राचीन (संस्कृत)छन्दकेँ नव रूप

---

[6] भविष्यक । [7] अतृप्त । [8-9] तृप्त कऽ ली, शीतल कऽ ली [10] थोड़ेकाल, सम्प्रति । [11] अति प्राकृतिक, सुन्दर । [12] मनोहर ।

दऽ छन्दोबद्ध रचना कयलनि । लोकोक्ति, मोहाबिरा हिनक काव्यक अलंकार बनि गेल अछि । कतेको ठाम बिम्बक माध्यमसँ सेहो अपन भाव प्रकट कयलनि अछि । उपमा देबामे नव-नव उपमानक प्रयोग करब यात्रीक सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक थिक ।

5.7.4 प्रतिपाद्य

यात्रीक जीवन-संघर्षक उपलब्धि थिक– सामाजिक आ यथार्थ दृष्टि, जे हुनक काव्यमे देखल जाइत अछि । 'कविक स्वप्न' काव्यक माध्यमसँ यात्री आरंभेमे सामन्तप्रिय काव्य-व्यवस्थापर प्रहार कऽ दीन-हीन, दलित-पीड़ितकेँ काव्यक प्रतिपाद्य बनयबाक घोषणा कऽ चुकल छलाह । किसानकेँ क्रान्ति-दूत मानैत रहथि । हुनका नजरिमे परम सत्य मनुक्ख छल । मनुक्ख-समाजक उन्नति आ वृद्धि-विकास लेल संघर्षकेँ सत्य मानलनि । ओ सत्य संघर्ष यात्रीक जीवन आ काव्य दुनूक प्रतिपाद्य थिक । यात्री सौन्दर्य आ प्रेमक सेहो कवि छथि । सहज भावसँ रचल गेल ओहन काव्यक अपन पृथक आकर्षण आ महत्त्व छैक ।

5.7.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

यात्रीक 'सिनुरिआ आम'क विषयमे बहुत किछु हम उपर्युक्त विवेचनमे कहि चुकल छी । अहाँ अपनहि ध्यानसँ काव्यक वाचन कऽ अपन भाषामे व्याख्या कऽ सकैत छी ।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ–

15) सिनुरिआ आमक प्रतिपाद्य थिक–

अ) नारी-सौन्दर्य　　आ) जीवन-संघर्ष

इ) आर्थिक वैषम्य　　ई) प्रकृति-सौन्दर्य

16) यात्री तथा नागार्जुन कोन भाषामे कोन नामसँ प्रसिद्ध छथि–

अ) मैथिलीमे ......

आ) हिन्दीमे ......

.7) यात्रीक काव्यक प्रेरक शक्ति कोन चेतना बनल ? लिखू ।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

9) किछु होअओ, भावीक चिन्ता नहि करी
एखन तँ फरकल नयनकेँ जुड़ा ली तत्काल
दिव्य ओ अभिराम
करइ अछि आकृष्ट मनकेँ
डारिपर लटकल सिनुरिआ आम ।
–अपन भाषामे एहि पद्यांशक व्याख्या करू ।

....

....

....

....

....

5.8 रामकृष्ण झा 'किसुन'

मैथिली काव्यमे, स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद, 'नवकविता'क नामसँ नवीन प्रवृत्तिक उदय भेल, जाहिमे पूर्वसँ चल आबि रहल छन्द, लय, यति, कथ्य आदिकेँ अस्वीकार कऽ, नव शिल्प-शैली, विम्ब-प्रतीक आदि संग नव भाव-बोध आ युगीन चेतनासँ संपृक्त रचनाकेँ महत्त्व देल गेल । एहि प्रकारक 'नव कविता'क आरंभ यात्री कयने रहथि । मुदा, ओकरा व्यापक बनौलनि राजकमल । राजकमलक 'स्वरगंधा'(1958)क प्रकाशन आ ओकर भूमिकासँ मैथिलीमे नवकविताक रचना आन्दोलन जकाँ शुरू भऽ गेल । रामकृष्ण झा 'किसुन' सेहो परम्परागत शैलीक रचना करब छोड़ि नवकविताक रचनामे प्रवृत्त भऽ गेलाह तथा वैचारिक स्तरपर विविध निबंधक द्वारा ओकर प्रवक्ता सेहो बनि गेलाह ।

जीवन परिचय : रामकृष्ण झा 'किसुन'क जन्म 1 जनवरी 1923 ई.केँ जिला मुख्यालय सुपौलमे भेल छलनि । पढ़लनि संस्कृत व्याकरण । स्वाध्यायसँ हिन्दी, उर्दू, मैथिली साहित्यक सेहो ज्ञान अर्जित कयने रहथि । गामे (सुपौल)क उच्च विद्यालयमे संस्कृत विषयक अध्यापन कयलनि । ओ साहित्यकेँ सांस्कृतिक चेतनाक अभिव्यक्ति मानैत छलाह । तेँ सुपौलमे सांस्कृतिक संस्थाक स्थापना कयने रहथि। ओहि संस्थाक माध्यमसँ अनेको अविस्मरणीय सांस्कृतिक कार्यक्रमक संपादन कयलनि । गामे-गाम पुस्तकालय-स्थापनाक आन्दोलन चलौने रहथि । सुपौल-सहरसा परिसरक साहित्यिक गतिविधिक केन्द्र बनि गेल छलाह । पुरान आ नव विचारक साहित्यकारक बीच समान रूपसँ प्रतिष्ठित छलाह ।

'किसुन' शुरूमे हिन्दी आ उर्दू साहित्य लिखैत रहथि । 1941सँ मैथिलीमे लिखब आरंभ कयलनि आ 1945मे पहिल कविता मिथिला मिहिरमे छपलनि । हुनक जीवनकालमे एकमात्र मैथिली कविता-संग्रह 'आत्मनेपद' प्रकाशित भेलनि । बादमे हुनक सम्पूर्ण रचनावली तीन खंडमे प्रकाशित भेलनि । ओकर पहिल कविता-खंडक नाम थिक– क्रमश: । एहिमे आत्मनेपदक कविता सहित कुल तिरानबे गोट कविता संकलित अछि । दोसर खण्ड थिक कथा-संग्रह 'स्वयंवर' तथा तेसर खण्ड थिक 'वैचारिकी'– एहिमे विविध विषयक निबन्ध, आलोचना, संस्मरण, भूमिका तथा एकटा एकांकी संगृहीत अछि । किसुन अपन संपादनमे 'मैथिली नवकविता' नामक एक गोट काव्य-संकलन 1967-68मे कयने रहथि, जकर पूर्ण

मुद्रण, हुनक निधनक बाद 1971मे भेल । ओहिमे नवकवितापर किसुनक विशिष्ट संपादकीय अछि । नवकविताक ई प्रतिनिधि संकलन मानल जाइत अछि ।

5.8.1 काव्य-वाचन

किसुनक कवितामे शुरुहेसँ नव भाव-बोध विद्यमान रहल अछि । तेँ हुनक कवितामे नवयुगक आशा आ विश्वासक ध्वनि साफ सुनाइ दैत छैक । लोकचेतनाकेँ उन्नत आ विकसित करब हुनक काव्य-दृष्टि रहल अछि । एहि लेल समाजमे पसरल मिथ्यादर्प (फुसियाही गौरव) आ कूपमण्डूकता (इनारक बेङ जकाँ बाहरी दुनियासँ एकदम अपरिचित) पर प्रहार कयल जाइत अछि । किसुनक 'इज्जति कोन पदार्थ' एही काव्य-दृष्टिक सूचक अछि । ई प्रगतिशील कविता 1960मे मिथिला मिहिरमे छपल छल ।

इज्जति कोन पदार्थ ?

बेटिक गहना बन्हकी[1] रखने जँ चलि रहलै काज
धूम-धामसँ श्राद्ध हैत आ गदगद[2] हैत समाज
फल्लाँ[3] बाबू मुइला, कयलनि चिल्लाँ[4] बाबू भोज
आगाँ-पाछाँ जे हो, क्यो की काज करै अछि रोज[5]?
बापक अरजल खेत राखि सुदभरना[6] करी बिदाइ
गौआँ-घरुआ, सर-कुटुम्ब आ हर्षित होथि जमाइ
की करबै लय, बिका जाय जँ गाछी आ बँसबारि
कन्यादान करब तेहने ठाँ पड़य ने गौआँ गारि
गोलेदारक[7] वा मरबाड़िक बढ़ल जाइछ जँ कर्ज
सरकारी 'लोन'क नोटिश जँ भेटय तँ की हर्ज
मुदा हैत उपनयन ठाठसँ जेहन मुंडन भेल
की न करै अछि लोक कहू तँ अपना इज्जति[8] लेल ?
नोत-पिहानी पुरी वा पाहुन-परक आबि जँ जाथि
भार-दोर दी वा कोनहुना घरपर दू जन खाथि
इज्जतिटा रहि जाय, करब तेहने सब स्वार्थ[9]-परार्थ[10]
मुदा आइधरि के बुझलक जे इज्जति कोन पदार्थ[11] ?

5.8.2 भाव पक्ष

रामकृष्ण झा 'किसुन'क कविताक सभसँ पैघ विशेषता थिक जे ओहिमे 'संप्रेषणीयता'क संकट नहि अछि । जीवनक वस्तुगत यथार्थ हुनक कविताक भाव-भूमि थिक । ओ अपन मनक भावकेँ प्रेम आ प्रकृतिपरक कवितामे 'हम' प्रतीक आ बिम्बक माध्यमसँ प्रस्तुत करैत छथि । एहन कवितामे कतहु-कतहु दार्शनिक आवरण सेहो देलनि अछि । मुदा ''किसुनजी लेल प्रेम आ प्रकृतिसँ बेसी महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय जीवन अछि । कहि सकैत छी जे ओ राष्ट्रीयताक कवि छथि'' । 'उद्घोष', 'आह्वान', 'ओहि सपूतक करब आरती' आदि कवितामे कविक राष्ट्र-भाव व्यक्त भेल अछि । किसुनक नवकवितामे युग-जीवनक कुण्ठा, अनास्था,

---

[1] सूदिपर लेल ऋणक तरी (बदला) मे महाजनक अधीन राखल वस्तु । [2] मनसँ(भीतरसँ) प्रसन्न । [3-4] अमुक व्यक्ति । [5] सभदिन । [6] सूदिक तरीमे खेत भरना राखिकऽ लेल ऋण । [7] अन्न आदि वस्तुक भंडारवला दोकान (गोला)क मालिक । [8] प्रतिष्ठा । [9-10] अपना लेल कि अनका लेल । [11] वस्तु, विषय वा तत्त्व ।

आक्रोश आ जिजीविषाक चित्रण अछि । एहि प्रकारक अधिकांश रचनामे विषय आ भावक बौद्धिक प्रतिपादन भेल अछि ।

'इज्जति कोन पदार्थ' काव्यक माध्यमसँ कवि समाजक ओहन बुधियारसभक व्यंग्यपूर्ण उपहास कयलनि अछि जे अपन आर्थिक दुःस्थितिक चिन्ता नहि कऽ केवल समाजक समक्ष पैघत्व (बड्प्पन) प्रदर्शित करबा लेल अपस्याँत रहैत छथि । ओसभ इज्जति-प्रतिष्ठा बचौने रहबाक हेतु आनेक लेल (परार्थ) अपन सर्वस्व (धन-संपत्ति) उत्सर्ग कऽ देबामे अपन हित (स्वार्थ) बुझैत छथि । देखौँसिपर, बेटिक गहना बन्हकी (बन्धक) लगाकऽ श्राद्धक भोज करब, बापक अरजल (कौनल) खेत सूदिक तरी भरना लगाकऽ जमायक विदाइ करब, गाछी-बँसबारि बेचिकऽ कन्यादान करब, गोलेदार वा मारवाड़ीसँ लेल ऋणक सूद बढ़ैत रहब आ सरकारी लोन (कर्ज)क नोटिस भेटैत रहब– तैयो मुंडने जकाँ बेटाक उपनयन ठाठसँ करबामे, समाजक बीच, अपन इज्जतिकेँ बचा लेबाक गौरव होइत छनि, जखन कि इज्जति कोन पदार्थ थिक अर्थात् कोन शास्त्रीय विषय वा तत्त्व थिक, से क्यो नहि बुझि सकल अछि । प्रस्तुत प्रगतिशील कवितामे समाजक सोच, लोकक मनोवृत्ति आ अर्थसंकटक यथार्थ चित्र अंकित भेल अछि तँ चित्रण द्वारा समाजक सोच, लोकक मनोवृत्ति आ अर्थ-संकटपर गंभीर प्रहारो भेल अछि ।

5.8.3 संरचना शिल्प

किसुनक आरंभिक रचना परंपरागत शैलीमे अछि । गीत छन्दमे छनि । किछु मुक्तककाव्य छन्दबद्ध आ किछु मुक्तछंदमे छनि । जखन 'नवलेखन'मे प्रवृत्त भेलाह तँ नवीन शिल्प-शैली आ आधुनिक भाव-बोधक अनुरूप 'नवकविता'क रचना कयलनि । नव भाव-बोध आ युगीन चेतनासँ सम्पृक्त (जुटल) रचनाकेँ नवलेखन कहल गेल अछि। किसुनक काव्य-भाषा शिष्टवर्गक बोलचालक भाषा थिक, ओहिमे संस्कृतनिष्ठ शब्दक सेहो अधिक ठाम प्रयोग भेल अछि । पौराणिक पात्र आ मिथकीय (परंपरासँ प्रचलित कथा वा किंवदन्ती) चरित्रक प्रतीकात्मक प्रयोग अधिक कयलनि अछि। एकर प्रयोग ओ मात्र अर्थ-विस्तारक हेतु कयलनि ने कि अपन पाण्डित्यक प्रदर्शनक हेतु ।

प्रस्तुत काव्य 'इज्जति कोन पदार्थ' सामान्य लोकक बोलचालक भाषामे रचल गेल अछि । एकर भाव आ अर्थ स्पष्ट अछि । छन्दोबद्ध अछि ।

5.8.4 प्रतिपाद्य

किसुन बहुविधावादी रचनाकार छलाह । कविता, कथा, निबन्ध, एकांकी आदि विधामे हुनक रचना उपलब्ध अछि । मुदा, हुनक अपन संतुष्टिक सर्वाधिक प्रिय साधन कविता छलनि । ओ अपनाकेँ अभिव्यक्त करबाक सभसँ उत्तम, सुलभ आ सशक्त माध्यम कवितेकेँ मानलनि । ओ व्यापक दृष्टिकोणक कवि रहथि । कथ्यक स्तरपर नवीनताक पक्षधर छलाह । नवलेखनक काव्य-तत्त्व हुनक नवकवितामे प्रतिपादित भेल अछि । एहि आधारपर कहल जा सकैत अछि जे देश, समाज आ जीवनक यथार्थ हुनक काव्यक प्रतिपाद्यसँ जुड़ल अछि आ एकरा संगहि लोकमंगलक भावना निहित अछि ।

5.8.5 सन्दर्भ सहित व्याख्या

रामकृष्ण झा 'किसुन'क 'इज्जति कोन पदार्थ' काव्यक प्रायः सभ विषयकेँ उपर्युक्त विवेचनमे स्पष्ट कऽ देल गेल अछि । अहाँक सुविधा लेल कविताक संगहि किछु शब्दक अर्थ दऽ देल गेल अछि । अहाँ स्वयं काव्यक वाचन करब आ अपन भाषामे नीक जकाँ व्याख्या कऽ लेब ।

बोध प्रश्न

नीचाँ लिखल प्रश्नक उत्तर दियऽ–

18) मैथिलीमे नवकविताक प्रवक्ता किनका कहल गेल ? लिखू ।

....

....

....

....

....

19) नवकवितामे कोन प्रकारक रचनाकेँ महत्त्व देल गेल ?
—पाँच पाँतीमे उत्तर दियऽ ।

....

....

....

....

....

शब्दावली

एहि इकाइमे आयल किछु शब्दक अर्थ अहाँक सुविधाक लेल एतऽ देल जा रहल अछि ।

शब्दशक्ति : शब्द-शक्ति अर्थात् शब्दक अर्थ प्रकट करबाक शक्ति तीन प्रकारक होइत अछि - (i) अभिधा– जतऽ शब्दक मुख्य अर्थ अर्थात् लोक-प्रसिद्ध अर्थ लेल जाय ओतऽ अभिधा शक्ति होइत अछि । (ii) लक्षणा– जतऽ मुख्य (साधारण) अर्थकेँ छोड़ि दोसर अर्थ लेल जाय, ओतऽ लक्षणा होइत अछि। तथा (iii) व्यंजना– जतऽ अभिधा आ लक्षणाकेँ टपिकऽ तेसर अर्थक बोध कयल जाइत अछि ओतऽ व्यंजना शक्ति होइत अछि।

अलंकार : अलंकारसँ काव्यक शोभा बढ़ैत अछि । अलंकारक तीन भेद अछि– शब्दालंकार, अर्थालंकार, उभयालंकार । (शब्द)ध्वनिक आधारपर शब्दालंकारक निर्माण होइत अछि आ अर्थक आधारपर अर्थालंकारक तथा शब्द आ अर्थ दुनूक आधारपर उभयालंकारक सृष्टि होइत अछि ।

अवहट्ठ : प्राकृत बोलीक निम्नतम रूप, अपभ्रंशक उत्तरकालक क्षेत्रीय भाषा ।

आतिथ्य : अतिथि-सत्कार ।

आदर्शवादी : साहित्यमे यथार्थसँ अधिक आदर्शकेँ प्रमुखता देनिहार आदर्शवादी कहबैत छथि ।

आलंकारिक : अलंकारसँ युक्त ।

उत्प्रेक्षा : जतऽ एक वस्तु (उपमेय)मे दोसर वस्तु (उपमान)क कल्पना द्वारा संभावना कयल जाइत अछि, ओतऽ उत्प्रेक्षा अलंकार होइत अछि ।

उपमा : उपमालंकारमे उपमेय आ उपमानमे समानता देखाओल जाइत अछि ।

i) उपमेय– जकर उपमा देल जाय ।

ii) उपमान– जकरासँ उपमा देल जाय ।

जेना, चन्द्रमुखी अर्थात् चन्द्रमा सन मुखवाली, एतऽ चन्द्र भेल उपमान आ मुख भेल उपमेय ।

निदर्शना : वस्तुक सम्बन्ध संभव हो वा असम्भव, जखन बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव द्वारा ओहिमे संबंध देखाओल जाइत अछि तँ ओ निदर्शना अलंकार कहबैत अछि ।

स्वभावोक्ति : कोनो वस्तुक स्वाभाविक वर्णनकेँ स्वभावोक्ति अलंकार कहल जाइत अछि ।

लोकोक्ति : ई कहबी थिक । काव्यमे एकर प्रयोग भेलासँ चमत्कार उत्पन्न होइत अछि, तँ ई लोकोक्ति अलंकार कहबैत अछि ।

किंवदन्ती : पूर्वसँ चल आबि रहल एहन उड़न्ती बात जकर कतौ थाह-पता (प्रमाण)नहि हो, मुदा समाजमे मानल जाइत हो ।

चौपाइ : ई मात्रिक छंद थिक । मैथिलीमे चन्दा झा जयकरी छंद आ चौपाइकेँ एके मानि एकर दुनू चरणकेँ 15-15 मात्राक आ लालदास अवधी जकाँ एकर दुनू चरण 16-16 मात्राक माननलि अछि ।

दोहा : एहि मात्रिक छंदमे चारि चरण होइत अछि, जकर पहिल आ तेसर चरण 13 मात्राक आ दोसर-चारिम 11 मात्राक होइत अछि ।

छंद : काव्य लेल वर्ण वा मात्राक बनल बन्धन छंद थिक । छन्दयुक्त काव्य छन्दोबद्ध आ छन्दरहित रचना मुक्तछन्द वा छन्दमुक्त कहबैत अछि ।

तत्सम : संस्कृत शब्द जे मैथिलीमे ओहिना प्रचलित अछि ओ तत्सम तथा संधि -समासयुक्त तत्सम शब्द संस्कृतनिष्ठ कहबैत अछि । संस्कृतक सन्निकट शब्द अर्धतत्सम थिक । जेना-रात्रि-राति ।

तद्भव : एहन शब्द जे संस्कृत प्राकृतसँ विकृत भेल मैथिलीमे आयल अछि । जेना-चतुर्थ-चउट्ठ =चौठ ।

देशज : मैथिली क्षेत्रक लोकभाषाक अपन शब्द ।

देसिल बयना : देशी भाषा, मैथिली ।

प्रतिपाद्य : प्रतिपादनक मुख्य विषय, प्रमुख कथ्य ।

परम्परा : पूर्वसँ चल अबैत परिपाटी ।

प्रतीक : कोनो वस्तु वा विषयकेँ कोनो आन वस्तु वा विषयक रूपमे वर्णन करब वा मानब ।

बिंब : शब्दक द्वारा कोनो वस्तु, दृश्य वा भावक प्रतिरूप निर्मित करब ।

उपमान : जकरासँ तुलना कयल जाय । जेना– चन्द्रवदनमे चन्द्र ।

कुण्ठा : ग्लानि, नैराश्य ।

अनास्था : अविश्वास, उपेक्षा ।

आक्रोश : अव्यवस्थाक विरुद्ध तामस, व्यथाजन्य चीत्कार ।

जिजीविषा : जीवाक इच्छाशक्ति ।

यथार्थ : वास्तव, वस्तु-सत्य ।

लीला : खेल, भगवानक ओ खेल जे मनुष्य नहि जानि सकैत अछि, उमंग भरल क्रिया-कलाप ।

लोकभाषा : सामान्य जनताक परस्पर बोलचालक भाषा ।

लोकोन्मुख : सामान्य जनता दिस तकैत, जन-सामान्यकेँ ध्यानमे राखि ।

विधा : काव्य, कथा, नाटक आदि साहित्यक विभिन्न रूप साहित्यक विभिन्न विधा थिक ।

शील : स्वभाव, चरित्र, प्रवृत्ति ।

शैली : रचनाक अभिव्यक्तिक विशेष ढंग, भाव आ भाषाकेँ समन्वित करबाक ढंगकेँ सेहो 'शैली' कहल जाइत अछि ।

संवेदना : भावना, तीव्र अनुभूति, प्रत्यक्ष ज्ञान ।

संस्कृति : परम्परागत सामुदायिक जीवन-पद्धति आ आचार-विचार ।

हाव-भाव : आन्तरिक भावनाक शारीरिक अभिव्यक्ति ।

5.9 सारांश

हम मानिकऽ चलैत छी जे एहि इकाइकेँ अहाँ नीक जकाँ अध्ययन कऽ लेने होयब । एहिमे हम अधोलिखित मुख्य-मुख्य बिन्दुक उल्लेख कयलहुँ अछि ।

- साहित्यक एक प्रमुख विधा काव्यसँ अहाँकेँ चिन्हारय (परिचय) कराओल गेल अछि । मैथिलीक सात प्रतिनिधि कविक एक-एक कविताक वाचन (पाठ) भेल अछि । एहिसँ अहाँकेँ मैथिली काव्यक संक्षिप्त परिचय भेटल अछि । आब अहाँ वाचन कयल सातो कविक काव्य-प्रवृत्तिक विशेषता कहि सकैत छी ।
- पढ़ल गेल सातो कविक जाहि काव्य-धारासँ संबंध छल, हुनक ओहि विशेषताक उल्लेख सेहो इकाइमे कयल गेल अछि । एहिसँ अहाँ विद्यापति-काव्य, चन्दाझा-युगीन काव्य, प्रगतिशील काव्य आ नवकविताक प्रमुख विशेषता कहि सकैत छी ।
- पठित कवि विद्यापति, चन्दा झा, लालदास, मधुप, सुमन, यात्री आ किसुनक काव्यक विभिन्न पक्षक संक्षेपमे विवेचन कयल गेल अछि । आब अहाँ अपनहि एहि कविसभक काव्यगत विशेषतापर प्रकाश दऽ सकैत छी ।
- सातो कविक पठित कविताक अहाँ अपन भाषामे व्याख्या कऽ सकैत छी आ ओकर विशेषता सेहो कहि सकैत छी ।

5.10 बोध प्रश्न/ अभ्यासक उत्तर

अभ्यास

1) अ) विद्यापतिक महेशवाणीक पदक ई अंश थिक । (वस्तुतः) निर्धन (गरीब)क आदर-सत्कार केओ नहि करैत अछि ।

   आ) विद्यापतिक महेशवाणीक ई पाँती थिक । कवि कहैत छथि– असल बात ई कहू जे (आन्तरिक गुणसँ नहि) बाहरी प्रदर्शनहि (आडम्बरे)सँ अर्थात् वेष-भूषासँ सजल रहलेपर सभ ठाम आदर-सम्मान होइत अछि ।

2) चन्दा झा रामायणक एहि गीतक अंशमे निदर्शना अलंकारक प्रयोग भेल अछि–
   सिरिस सुमन बरु होय अशनि सन, अशनि तेहन भय जाय रे ।
   से बरु होय, होथि नहि अकरुण, अहँकाँ बडका भाय रे ।।

3) चन्दा झा रामायणक गीतक अंश : सीता लक्ष्मणसँ कहैत छथि– हम की कहब, किछु कहबाक योग्य हम रहलहुँ कहाँ ? अहाँसभ लेल हम भार अर्थात् बलाय भऽ गेल छलहुँ (तेँ अयोध्यासँ दूर एहि वनमे छोड़ल गेलहुँ अछि) । (मुदा एकटा बात मानि लियऽ) हम कतहु रहब, लोकसभ एहि जानकीकेँ श्रीरघुनंदनेक पत्नी कहत, अर्थात् श्रीरामेक हँसी होयतनि ।

4) लालदासकेँ रामायण रचबाक उद्देश्य छलनि– रामकथाक माध्यमसँ रामकेँ सगुण ब्रह्म आ सीताकेँ आदिशक्तिक प्रधान रूपमे प्रतिपादित करब ।

(5) लालदास रचित रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक चौपाइक ई अंश थिक– मिथिलाक भूमिमे लक्ष्मी अयलीह आ ऋद्धि(संपन्नता)-सिद्धि (सफलता)केँ संग लऽ (सीताक रूपमे) अवतरित भेलीह ।

6) 'चुट्टीसँ' काव्यक द्वारा मधुप निर्भीक, स्वाभिमानी, उत्साही आ उद्योगी बनबाक प्रेरणा देलनि अछि तथा अपनामे (मनुष्य-मनुष्यमे) ऊँच-नीचक भेद-भाव नहि रखबाक संदेश सेहो देलनि अछि ।

7) मधुप अपन संस्कृतिक गौरवशाली परंपराक प्रशंसक छलाह तँ जाति-भेद, दीन-दलितक शोषण आ मिथ्याभिमानमे अन्हरमारि करैत समाजक प्रखर आलोचक सेहो छलाह ।

8) सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'जन्म-दिवस' काव्यक ई पाँती थिक । कवि कहैत छथि– डाकक द्वारा रंग-विरंगक भाव भरल शुभकामनापत्र आ पद्यबद्ध अभिनंदन-पत्र भेटल अछि । आइ हमर जन्म-दिन थिक, तेँ घर-परिवारमे आनन्दे आनन्द छैक ।

9) यात्रीक 'सिनुरिआ आम'क ई पाँती थिक । एहिमे कविक प्रकृति-प्रेमक भाव प्रगट भेल अछि – अच्छे, जे होइ, भविष्यक चिन्ता नहि करी । एखन एहि प्राकृतिक सौंदर्य आ माधुर्यसँ भरल फलकेँ निहारि कऽ देखी आ अपन अतृप्त नयनकेँ जुड़ा (तृप्त कऽ) ली । सुन्दर आ मनोहर सिनुरिआ आम मनकेँ अपना दिस घीचि रहल अछि– डारिपर लटकल सिनुरिआ आम । अर्थात् कवि ततेक मुग्ध भऽ गेल छथि जे होइत छनि– प्रकृतिक एहि अपूर्व रचना दिस आँखि गड़ौने रही आ आनन्द-रसक पान करैत रही ।

बोध प्रश्न

1) अ) गीतकाव्यसँ आ) शिव-लीलाक

2) अ) देसिल बयना आ) कातिक धवल त्रयोदशि जान ।।

3) विद्यापति अपन काव्यक मुख्य प्रतिपाद्य सखा-भावसँ राधा-कृष्णक प्रेम-वर्णन, सामान्य नायक-नायिकाक मिलन-विरहक शृंगारिक वर्णन तथा शिव-लीलाक भक्ति-गायनकेँ बनौने छलाह ।

4) चन्दा झा

5) मिथिलाभाषा रामायण

6) जानकीके नाम हँसारति (उपहास)क डर होइत छनि । माय-बाप कहथिन जे स्पर्शमणि सन पुरुषक हाथमे सौंपि देलियनि जे स्त्रीरत्न बनि जयतीह- से अपन नाम हँसाकऽ-कुलकलंकिनी बनिकऽ अयलीह अछि ।

7) इ) दोहा-चौपाइ

8) सीता-रामक कथा

9) विष्णुरूप रामक अवतार अयोध्यामे भेल तथा लक्ष्मीरूपा सीताक अवतार मिथिलामे भेल ।

10) इ) कविचूड़ामणि

11) अ)यथार्थ आ प्रगतिशील

12) आ) सुमनकें

13) अ) राष्ट्रवाद

14) जन्म-दिवस काव्यमे चारि गोट चित्र अंकित अछि -

i) पूजा-पाठ (ii) शुभकामना (iii) भाग्यफल तथा (iv) कालज्ञान ।

15) ई) प्रकृति-सौंदर्य

16) अ) मैथिलीमे यात्री (आ) हिन्दीमे नागार्जुन

17) यात्री अभाव आ अपमानसँ आहत लोकसभकें लगसँ देखने रहथि । ओ अभाव आ तिरस्कारक चेतना हुनक काव्यक प्रेरकशक्ति बनल ।

18) मैथिलीमे नवकविताक प्रवक्ता रामकृष्ण झा 'किसुन'कें कहल गेल अछि ।

19) मैथिलीक 'नवकविता'मे, पूर्वसँ चल आबि रहल छन्द, लय, यति, कथ्य आदिकें अस्वीकार कऽ, नव शिल्प-शैली, नव बिम्ब-प्रतीक-उपमानक संग नव भाव-बोध आ युगीन चेतनासँ संपृक्त रचनाकें महत्त्व देल गेल ।

इकाइ 6 कथा : ग्रामसेविका (प्रो. हरिमोहन झा)

इकाइक रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 कथा : ग्रामसेविका

6.3 कथा-सार

6.4 संदर्भ सहित व्याख्या

6.5 कथावस्तु

6.6 चरित्र-चित्रण

6.7 परिवेश

6.8 संरचना-शिल्प

6.9 प्रतिपाद्य

6.10 सारांश

6.11 बोधप्रश्न / अभ्यास सभक उत्तर

6.0 उद्देश्य

आधार पाठ्यक्रममे एखन धरि अहाँ तिरहुता/मिथिलाक्षर लिपिक ज्ञान प्राप्त कयलहुँ अछि । मिथिलाक्षरमे आब अहाँ लिखि-पढ़ि सकैत छी । एकर अतिरिक्त, शब्दक निर्माण, प्रकार आदिक संग वाक्यमे मुहाविरा ओ कहबीक महत्त्वकेँ बुझि गेल होयबैक । संगहि, संस्कृतिक जनतयक संग मिथिलाक संस्कृति आ किछु प्रमुख पाबनि-तिहारसँ परिचित भऽ गेल होयब । व्यक्तिक विकासमे परिवारक की योगदान छैक, से जानि गेल होयब । एहि खण्डमे मैथिली काव्यक विकासक्रम आ किछु प्रमुख कविक रचनासँ अवगत भऽ गेल होयब । एही खण्डमे अहाँ साहित्यक विभिन्न विधाक अध्ययन करब । प्रस्तुत इकाइमे अहाँ कथाक विभिन्न पक्षक विशेषताकेँ बुझब ।

एहि इकाइकेँ पढ़लाक बाद अहाँ:

- कथाक सार बुझि सकब आ एकर महत्त्वपूर्ण अंशक व्याख्या कऽ सकब,
- कथावस्तुक विश्लेषण कऽ सकब,
- कथाक प्रमुख पात्रक चरित्र-चित्रण कऽ सकब,
- कथाक परिवेशक विशेषता कहि सकब,
- कथाक शैली, भाषा ओ संवादक स्वरूपकेँ बुझा सकब,
- उपर्युक्त विश्लेषणक माध्यमसँ कथाक महत्त्वकेँ जाँचि सकब ।

6.1 प्रस्तावना

एखन धरि अहाँ मिथिलाक्षर सिखलहुँ अछि, शब्द आ मुहाबिराक ज्ञान प्राप्त कयलहुँ अछि तथा संस्कृति आ समाजक विषयमे बुझलहुँ अछि । एहि खण्डमे अहाँ साहित्यक विविध विधाक

अध्ययन करब । छठम इकाइमे प्रो. हरिमोहन झाक चर्चित कथा 'ग्रामसेविका'क पाठ देल जा रहल अछि । हरिमोहन झाक कतोक श्रेष्ठ कथामे ई अन्यतम अछि । हिनक जन्म वैशाली (बिहार) जिलाक कुमर बाजितपुर गाममे 18 सितम्बर 1908 ई. कँ भेलनि । ई दर्शनशास्त्रमे एम.ए. कऽ पहिने पटना विश्वविद्यालयक बी.एन. कॉलेज, फेर पटना कॉलेज आ तकर बाद विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्र विभागक अध्यक्ष पदपर कार्य कऽ अवकाश प्राप्त कयलनि । बादमे ई पाँच वर्ष धरि विश्वविद्यालय सेवा आयोगक 'रिसर्च प्रोफेसर' रहलाह । ई अखिल भारतीय दर्शनशास्त्र कांग्रेसक अध्यक्ष पदकँ सेहो सुशोभित कयलनि । हिनक देहावसान 23 फरवरी 1984कँ भेलनि । ई जीवन पर्यन्त लेखन-कार्यमे सन्नद्ध रहलाह । हिनक अंतिम कृति छनि 'जीवन-यात्रा', जे हिनक आत्मकथा थिकनि । एकर अतिरिक्त हिनक कृति अछि– कन्यादान, द्विरागमन(दुनू उपन्यास); प्रणम्य देवता, रंगशाला (दुनू कथासंग्रह); खट्टर ककाक तरंग(व्यंग्य); चर्चरी (विविध) । एक कथासंग्रह 'एकादशी' नामसँ सेहो प्रकाशित छनि, जाहिमे असंगृहीत-संगृहीत एगारह गोट श्रेष्ठ कथा अछि । 1983मे हिनका अभिनन्दनग्रंथ समर्पित कयल गेलनि तथा जीवन-यात्रापर 1985क साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि ।

हरिमोहन झा अपन लेखनक माध्यमसँ मैथिली कथा साहित्यकँ नव जमीन तँ प्रदान करबे कयलनि, नव दिशाबोध सेहो करौलनि । ई अपन हास्य-व्यंग्य शैलीक माध्यमे मिथिलामे व्याप्त जड़ताकँ तोड़बाक चेष्टा कयलनि आ ताहि लेल नारी-जागरणकँ आवश्यक बुझलनि । वस्तुतः ई वैवाहिक समस्याक आवरण दऽ मूलतः नारी-विमर्शपर जोर देलनि । ओना, ई समाजमे व्याप्त पाखण्डकँ, ताहि पाखण्डसँ गछाड़ल मनुक्खकँ देखार करबामे कनेको कोताही नहि कयलनि, जकर उदाहरण अछि हिनक कालजयी कृति– खट्टर ककाक तरंग ।

विवेच्य कथा 'ग्रामसेविका' गत शताब्दीक मध्यक थिक । हरिमोहन झा अपन कथाक माध्यमे जाहि नारी-उत्थान लेल सम्पूर्ण लेखन-ऊर्जाकँ लगौलनि, तकर जागरणक सपना ओ तहिए देखि लेने रहथि । आइ ओ सपना साकार भेल अछि, पचास प्रतिशत भागीदारीक संग ओ पुरुषक संग डेगमे डेग मिलाकऽ चलि रहल अछि, घरसँ बाहर धरि अपन अनिवार्यता ओ सफलताकँ सिद्ध कऽ रहल अछि । कथामे एही कथ्यक विश्लेषण कयल गेल अछि । बोध-प्रश्न ओ अभ्याससँ ई बुझि पायब जे अहाँ कथाकँ कतेक दूर धरि हृदयंगम कऽ सकलहुँ ।

6.2 कथा : ग्रामसेविका

मकुनाही पोखरिपर लूटन मिसर वैद्यकँ मुँह धोइत देखि काशीनाथ कहलथिन्ह– वैद्यजी, एकटा नव गप्प सुनलिऐक अछि ?

वैद्यजी साकांक्ष होइत पुछलथिन्ह– की ? कोन बात भेलैक अछि ?

काशीनाथ बजलाह– अपना इलाकामे एकटा ग्रामसेविका आएल अछि ।

वैद्यजी पुछलथिन्ह– 'ग्रामसेविका'क की अर्थ ? कि ओ संपूर्ण गामक पैर दबाओति ?

काशीनाथ– ओ घर-घर घूमि कऽ स्त्रीगणकँ शिक्षा देति ।

वैद्यजी– की शिक्षा देति ?

काशीनाथ– यैह जे पर्दा तोड़िकऽ सभ काज करै जाइ ।

वैद्यजी दातमनिक जिभिया फेकैत बजलाह– आब जे-जे ने हो !

फूदन चौधरी घाटपर बैसल लोटा मँजैत रहथि ।

ई गप्प सुनि बजलाह– ओकर वयस की हैतैक ?

काशीनाथ ठिकियबैत कहलथिन्ह– यैह करीब अठारह-उनैस ।

चौ.– विवाहिता अछि कि कुमारि ?

का.– देखबामे त कुमारिए जकाँ लगैत अछि ।

चौ.– तखन ओ अनका की सिखौतैक ? नतिनी सिखाबय बुढ़दादीकेँ !

का.– चौधरीजी, से नहि कहियौक । ओ बहुत पढ़लि छैक । तेँ सरकार एहि काजपर ओकरा बहाल कैने छैक ।

चौधरीजी कुरुड़ करैत बजलाह– हौ, तोँ सरकारेकेँ की बुझैत छह ? अनकर बहु-बेटीकेँ नचाकऽ देखबामे बड़ मन लगैत छैक । पतिव्रतासँ ओकरा कोन काज ?

तावत् कानपर जनउ चढ़ौने पहुँचि गेलाह पंडितजी । बजलाह– एहि युगमे भ्रष्टक उदय छैक । जे स्वयं भ्रष्टा रहैत अछि से सभकेँ अपने सन बनाबय चाहैत अछि । ओ आबिकऽ सौंसे गामक स्त्रीगणकेँ दूरि कय छोड़ि देत । तखन कि एकोटा बेटी-पुतोहु कथा मानत ? ओकरा 'ग्रामसेविका' नहि 'ग्रामशोधिका' बुझू ।

बौकूबाबू एतीकाल धरि ढोंढ़ी पर्यन्त जलमे ठाढ़ भेल 'अघमर्षण सूक्त' जपैत छलाह । आब नहि रहि भेलैन्ह । बजलाह– हम त कित्रहु ओहि छौंड़ीकेँ अपना आंगनमे नहि उपय देबैक ।

काशीनाथ– बाबा, ओना 'छौंड़ी' नहि कहिऔक । ओ अफसर भऽकऽ आइलि अछि ।

बौकूबाबू उत्तेजित होइत बजलाह– एहि गाममे अफसरी शान नहि चलतैक । जौं हमरा घरकेँ बिगाड़य आओति त झोंट धऽकऽ मारि करचीकेँ, मारि करचीकेँ घूठ तोड़ि देबैक ।

तावत् बौकूबाबूक पौत्र हकमैत ओहि ठाम पहुँचि गेलैन्ह । बौकूबाबू पुछलथिन्ह– की हौ भुटकुन ! एना दौड़ल किएक ऐलाह अछि ? घरमे साँप बहरैलैह अछि की ?

भुटकुन हैफैत-हँफैत कहय लगलथिन्ह– एकटा मौगी खूब उज्जर नूआ पहिरने आइलि अछि । दलानमे कुरसीपर बैसलि अछि । कहै छैक जे आंगन जाकऽ सभसँ भेंट करब । माय-काकी त तैयार छथिन्ह । परन्तु दादी कहलन्हि जे दौड़िकऽ अपना बाबासँ बुझने आबह ।

बौकूबाबू सशंकित होइत पुछलथिन्ह– ओ के थीक ? की करय आइलि अछि ? हमरा आँगनसँ कोन काज छैक ?

भुटकुनकेँ चुप्प देखि काशीनाथ पुछलथीन्ह– की हौ भुटकुन ! ओकर माथ उघारे छैक कि ने ?

भुटकुन– हँ ।

काशीनाथ– हाथमे बैगो छैक ?

भुटकुन– हँ ।

काशीनाथ– तखन निश्चय वैह थीक ।

बौकूबाबू क्रोधसँ बताह होइत बजलाह– हड़ाशंखिनीकेँ और कोनो घर नहि भेटलैक ? सभसँ पहिने हमरे शोधय आयल अछि ?

पं.जी, वैद्यजी ओ चौधरीजी आनन्दसँ मुस्कुरा उठलाह । बौकूबाबूकेँ किछु नहि फुरलैन्ह, चट दऽ एक थापड़ कसिकऽ भुटकुनक गालमे लगा देलथिन्ह ।

जखन बौकूबाबू आँगन पहुँचलाह त चकित भऽ उठलाह । जकरा ओ भरि बाट डाइन, राक्षसी, कुलटा आदि नाना प्रकारक उपाधि दैत आयल छलथिन्ह, तकरा देखै छथि जे आँचर कसने, एक हाथमे भाडू ओ दोसरामे फेनाइल लेने, हुनका आँगनक मोड़ी साफ करबामे लागल अछि और अपना आँगनक स्त्रीगण मरौत काढ़ने पाछाँ ठाढ़ि भेल बक्कर-बक्कर ताकि रहल छथिन्ह । बौकूबाबूकेँ आँगनमे पैर दितहि मोड़ीक गंध लगैत छलैन्ह । नित्य प्राणायाम करैत अबै छलाह । से आइ खुलिकऽ साँस लेलैन्ह । ओसारापर सभ दिन कूड़ा-कचराक ढेरी टपिकऽ जाय पड़ैत छलैन्ह । आइ देखैत छथि त एकदम लाइन क्लीयर । कतहु एकटा फालतू चीज नहि । चौकठि लग एकटा कोइला सन कारी लालटेन टाँगल रहैत छलैन्ह, से कय दिन माथमे ठेकि जाइत छलैन्ह । आइ देखैत छथि त ओ लालटेन साफ चमकैत एक कोनमे खुट्टीसँ लटकल अछि । ई कायापलट कोना भऽ गेलैक ? हुनका घरमे जे छौ माससँ जे भोल जमल छलैन्ह तकर आइ नामोनिशान नहि । बौकूबाबू सोचय लगलाह– अहा ! एहने संस्कारवाली यदि अपनो घरमे रहैत तखन नित्य किएक गदहकिच्चन होइत ?

बौकूबाबू पूजापर बैसलाह त जँगलासँ देखाइ पड़लैन्ह जे ओ लड़की पछुआड़मे ठाढ़ि अछि । कान्हमे एकटा बैग लटकौने, जाहिपर सुन्दर अक्षरमे 'विमला देवी' अंकित छैक । एकटा नेबोक गाछमे कीड़ा लागल छलैक । ताहिमे ओ कोनो दवाइ घोरिकऽ पिचकारी दय रहल अछि । बीच-बीचमे स्त्रीगणकेँ किछु बुझा रहल छैन्ह ।

देखैत-देखैत एकटा आश्चर्य बात भय गेल । जे बरछड्‌बावाली सासुक देखा-देखी सदिखन नाक भपने रहैत छलीह से एकाएक विमला देवीक निर्देशानुसार भरकछ मौड़ि हाथमे कोदारि लेलन्हि और बाड़ीमे नेना द्वारा अपवित्र कैल माटिकेँ काटि कय फेकय लगलीह । देखैत-देखैत बाड़ी साफ भय गेल ।

थोड़ेक कालक बाद विमला देवी साबुन लऽकऽ हाथ धोयलन्हि । एक मिनट बच्चाकेँ दुलार कैलथिन्ह । तदुपरान्त दुनू हाथ जोड़ि सभकेँ 'नमस्ते' करैत विदा भऽ गेलीह । बौकूबाबू मंत्रमुग्ध भय देखैत रहलाह । ई त चांडालिन जकाँ नहि, मुनि-कन्या जकाँ लगैत अछि । जतहि जायत, ततहि तपोवन बना देत । बलहुँ बेचारीक प्रति ओतबा अपशब्द कहलिऐक । बौकूबाबू दुर्गापाठ करय लगलाह । किन्तु घुरि-फिरिकऽ वैह लाल ठोपवाली श्वेतवसना ध्यानमे आबि जाइन्ह ।

भोजनकाल बौकूबाबू स्त्रीकेँ कहलन्हि– देखलिऐक, बंगालिन लड़कीक पानि ?
स्त्री कहलथिन्ह– ओ बंगालिन नहि, देशीए अछि ।
बौकूबाबू कहलथिन्ह– ई हम मानि नहि सकैत छी । एतय ओ पानि कहाँ पाबी ?

स्त्री कहलथिन्ह– बंगला नूआ देखने नहि बुझियौक । ओ मैथिलानीए थीक । कमलपुर घर छैक । ई सुनैत बौकूबाबूकेँ धक्क दऽ करेज सालि देलकैन्ह । पहिलुक प्रफुल्लता विलीन भऽ गेलैन्ह । स्याह होइत मनमे सोचय लगलाह– बंगालिन किंवा पंजाबिन रहैत त ई सभटा छजितैक । परन्तु मैथिल कन्या भऽकऽ एना करैत अछि ? अनकच्छल बात ! खंजन चललीह बगड़ाक चालि, अपनो चालि बिसरि गेलीह ! देशी मुर्गी विलायती बोल ! प्रकाश्यतः बजलाह– एकरा माय-बाप नहि छैक की ? एखन धरि कुमारिए किएक अछि ?

स्त्री कहलथिन्ह– हम पुछलिऐक, 'हे दाइ ! तों एहेन सुन्दरि छह । विवाह किएक नहि करैत छह ?' तखन हँसय लागलि । बाजलि– 'बच्चा उत्पन्न करयवाली देशमे बहुत गोटा छथि । एखन सेवा करयवालीक कमी छैक । तैँ हम वैह मार्ग अपनौने छी ।' हम कहलिऐक– 'हे दाइ ! तोरा एतबेटामे एतेक रासे बुद्धि कोना भऽ गेलौह ?' तखन फेर हँसय लागि गेल ।

बौकूबाबू कहलथिन्ह– अन्य देशी रहैत त हम सभटा बात शिरोधार्य कऽ लितिऐक । परंच एही माटिसँ बहराकऽ ई एतबा शान देखाओत से कोना मानि लेबैक ? कतबो बंगला नूआ पहिरथु, परन्तु धातु त तिरहुतिए छैन्ह । ई चाली भऽकऽ साँफक देखाउस करै छथि । किछु भऽ जेतैन्ह त सभटा फुचफुच्ची बहार भऽ जेतैन्ह ।

किछुए दिनमे विमला देवीक ज्योतिसँ घर-घर आलोकित भऽ उठल । बुचौलीवालीक इनारमे कीड़ा सहसह करैत छलैन्ह । से आब ब्लीचिंग पाउडर पड़ि गेलैन्ह । जहाँ सभ घैल सतत मुँह बौने रहैत छलैन्ह, तहाँ आब साफ मलमलक टुकड़ासँ झाँपल रहैत छैन्ह । रुपौलीवालीक नेनाक देहपर सेर भरि रिट्ठा-रिट्ठी लादल रहैत छलैन्ह से उतरि गेलैन्ह । जहाँ बंगटक नाकमे सतत पोटा लटकल रहैत छलैन्ह, तहाँ आब हाइड्रोजन पेरौक्साइड लऽकऽ हुनक कान साफ कैल जाइ छैन्ह । ठकौलीवालीक बच्चा जहाँ दुरुखेमे नदी फीरि दैत छलैन्ह तहाँ आब घरसँ बाहर जाकऽ लघी कऽ अबैत छन्हि । सिसौनावाली बारह बजे मुँह धोबय बैसैत छलीह, से आब सूर्योदयसँ पहिनहि स्नान कय लैत छथि । मुजौनावालीकेँ नित्य बेरूपहर खुटौनावालीसँ झगड़ा होइत छलैन्ह, से आब दुनू गोटा बैसिकऽ ऊनी मौजा बुनैत छथि । एवंप्रकारेँ गामक आमूल परिवर्तन भऽ गेल । विमला देवीक डरसँ कोनो बच्चाक आँखिमे काँची नहि । सभक नख साफ । कोनो सड़कपर नाक मुनबाक काज नहि । सभक बाड़ी-झाड़ीमे कोबी, टमाटर ओ मटरक छीमी लहराइत । बिट्ठोवाली पर्यन्त भिटैमिन बुझय लागि गेलीह ।

नारी समाजक ई नव जागरण केवल घरे धरि सीमित नहि रहल । बाहरो ओकर किरण प्रस्फुटित होबय लागि गेल ।

एक दिन पंचलोकनि दलानपर रहथि । देखैत छथि जे समौलवाली मोसम्मात सामने खेतमे मोढ़ापर बैसि धान कटा रहल छथि । ई देखि पंडितजीकेँ लेसि देलकैन्ह । बजलाह– आब गाममे अकरहर भऽ रहल अछि ।

काशीनाथ कहलथिन्ह– घरमे पुरुष-पात नहि छैन्ह । तेँ स्वयं कटबा रहल छथि । एहिमे कोन दोष ?

पं.जी बजलाह– सैह छलन्हि त दोग-दागसँ कटबा लितथि । एना बीच ठाम मढोखा जकाँ बैसिकऽ पुरुषक छातीपर मूँग किएक दरैत छथि ?

काशीनाथ कहलथिह– ग्रामसेविका ...

ग्रामसेविकाक नाम सुनितहि पं.जीक क्रोधाग्नि भड़कि उठलैन्ह । हुनका पहिने घर-घरसँ नेओत पड़ैत रहैं छलैन्ह । विमला देवीक ऐलासँ बहुत किछु कम्म भऽ गेलैन्ह । एहि द्वारे ओ खौंफाएल रहैत छलाह । बजलाह– गाममे तेहन ने चंडालिन आइलि अछि जे आब एकोटा धर्म-कर्म एहि गाममे नहि रहय देति । एतबा दिनक संचित मर्यादा आब नासीमे बूड़ल जा रहल अछि ।

वैद्यजी ग्रामसेविकापर विशेष प्रसन्न नहि छलाह । कारण जे विमला देवी बभनटोलीसँ लय मुसहरटोली धरि घर-घर जाकऽ स्त्रीगणकेँ मुफ्त दबाइ दऽ अबैत छलथिन्ह । कतेक युवतीकेँ इंजेक्शनो देनाइ सिखा देने छलथिन्ह । एहि सभसँ वैद्यजीक आमदनी मारल जाइ छलैन्ह । ओ फुफुकार छोड़ैत बजलाह– सभ फसादक जड़ि थीक ई ग्रामसेविका । वैह केंचुआ सभकेँ फूकि-फूकि साँप बना रहल अछि । जौं किछु दिन और एहि गाममे रहि गेल त हमरालोकनिक निर्वाह हैब कठिन ।

फूदन चौधरिकेँ अपना घरक मर्यादापर बड्ड गर्व छलैन्ह । बजलाह– जौं हमरा घरक स्त्री एना करय त गरदनिमे....

एतबा बजैत-बजैत चौधरीजी एकाएक चिहुँकि उठलाह । जेना सहसा बिजलीक धक्का लागि गेल होइन्ह । सड़क कातक कोल्हुआड़मे हुनक स्त्री स्वयं ठाढ़ भऽकऽ गुड़क चेकी बनबा रहल छलथिन्ह । चौधरीजी चुप्प भऽ गेलाह ।

वैद्यजी पं.जी दिस आँखि मारलथिन्ह । पं.जी बजलाह– कलिकाल जे ने कराबय ! वैद्यजी उत्तर देलथिन्ह– कलिकाल की करतैक ? हमरा आँगनमे कथमपि एना नहि भऽ सकैत अछि ।

परन्तु वैद्योजीक गर्व खर्व होइत देरी नहि लगलैन्ह । कारण जे जैखन ओ पं.जीक संग सड़कपर ऐलाह कि देखैत छथि जे बैदाइन अपना पाँच वर्षक कन्याकेँ आँगुर धराकऽ स्कूलमे नाम लिखाबय लऽ जा रहल छथि । वैद्यजी अनठाकऽ दोसर बाट धऽ लेलन्हि ।

पं.जी मुसुका उठलाह । हुनका विश्वास भऽ गेलैन्ह जे ग्रामसेविका सभ स्त्रीकेँ बहत्रा बना देलकैन्ह । केवल हुनके पँडिताइन टा बाँचल छथिन्ह । एहि विचारसँ प्रसन्न होइत पं.जी अपना दलानमे ऐलाह त स्तंभित रहि गेलाह । पँडिताइन दरबज्जापर ठाढ़ि भेल अपना समधिसँ निर्धोख गप्प कऽ रहल छलीह । पं.जीकेँ देखि सहज शान्त स्वरसँ बजलीह– 'देखू, कतीकालसँ समधि बैसल छथि । आब अपन दुनू गोटा गप्प करू । हमरा आँगनमे काज अछि ।

पं.जी ई दृश्य देखि अवाक् रहि गेलाह ।

एक दिन सम्पूर्ण गामक लोक आँखि खोलिकऽ देखि लेलन्हि जे नारी-समाजक सामूहिक शक्ति केहन होइ छैक । विमला देवीक नेतृत्वमे गामक समस्त बेटी-पुतोहु आँचर कसने श्रमदान द्वारा महिला-पुस्तकालयक नेव देबय जा रहल छथि । बूढ़ लोकनिक मुँह तेहन भऽ गेलैन्ह जेना केओ चिरैताक काढ़ा पिया देने होइन्ह । बुढ़ी लोकनिकेँ बुझा गेलनि जे आब जँतनाइ-पिचनाइ ओ ढील हेरनाइ गेल । किन्तु एहि प्रवाहकेँ रोकब असंभव छल ।

थोड़बे दिनमे 'महिला-क्लब' तैयार भऽ गेल । जे बात स्वप्नोमे विश्वास करबा योग्य नहि छल से आब प्रत्यक्ष होमय लागल । बुचौलीवाली नित्य अखबार पढ़य लागि गेलीह । पँडिताइन आ बैदाइन ग्रामसुधारक योजना बनाबय लगलीह । बरहड़बावाली भखराइनवालीसँ समाजवादपर बहस करय लगलीह । तनौतावाली तानपुराक सुर चढ़ाबय लगलीह । मुजौना ओ खुटौनावाली बैडमिंटन खेलाय लगलीह ।

दुइये वर्षमे गामक कायाकल्प भऽ गेल । तेहन उत्साहक लहरि आयल जे फुदन चौधरीक भाभहु स्कूलमे मास्टरी करय लगलीह । बैदाइनक बेटी नर्सक काज सीखय लगलीह । और पँडिताइनक पुतहु रेडियोमे जाकऽ बाजय लगलीह ।

ग्रामसेविका नारी-समाजक उन्नति देखि पुलकित भय उठलीह । एतबा कम दिनमे एहन क्रान्ति ! हुनका आशातीत सफलता भेटल छलैन्ह । जेना ककरो रोपल कलम दुइए वर्षमे फरय लागि जाइक, तहने आनन्दसँ हुनक हृदय भरि गेलैन्ह । परन्तु आइ जो अपन उद्यानकेँ छोड़िकऽ जा रहल छथि । हुनका दोसर इलाकामे बदली भऽ गेल छलैन्ह ।

आइ विमला देवी गामसँ विदा भऽ रहल छथि । ताहि उपलक्ष्यमे सभा आयोजित अछि । पुरुषोसँ बेसी महिलाक संख्या देखयमे अबैत अछि । आबालवृद्धवनिता सभक आँखिमे नोर भरल अछि ! जेना कोनो बेटी सासुर जा रहल हो ! अथवा मन्दिरमे प्रतिमाक विसर्जन भऽ रहल हो ! नवयुवती सभ विमला देवीकेँ फूलक माला पहिरौलथिन्ह । युवक लोकनि मानपत्र देलथिन्ह । वृद्ध लोकनि दूर्वाक्षत लय आशीर्वाद देलथिन्ह । वृद्धागण खोंइछ देलथिन्ह । सभसँ वयोवृद्धा छलीह पण्डितजीक पितामही । ओ कहलथिन्ह– बेटी, तोहर गुण हमरालोकनि कहियो नहि बिसरब । आँखि निपटट छल । से तँ आबिकऽ फोलि देलह । भगवान तोहर कल्याण करथुन्ह ।

विमला देवी अत्यन्त नम्रता ओ शालीनतापूर्वक उत्तर देलथिन– हम अहाँ लोकनिक बेटी थिकहुँ । सेवा करब हमर धर्म थीक । हम केवल अपना कर्त्तव्यक पालन कैलहुँ अछि । एहिमे हमर बड़ाइ कोन ? सफलताक श्रेय अहाँ लोकनिकेँ अछि जे सभ गोटा मिलिकऽ हमरा सहयोग दैत ऐलहुँ । अहाँ लोकनि हमरा जे स्नेह प्रदान कैलहुँ से हम जीवन भरि स्मरण राखब । एही अधिकारपर हम एक वस्तु मँगैत छी । एहि गाममे जे ज्योति जागल अछि तकरा मिझाय नहि देब । यैह हमर सभसँ पैघ बड़का बिदाइ थीक ।

लोकक आँखि भरि ऐलैक । भगवान करथु घर-घरमे एहने विमला सन बेटी होथि । गामक बेटी-पुतोहु श्रद्धावश विमलाक आरती उतारय लगलीह । एक युवती हारमोनियमपर समदाउनि उठौलन्हि ।

ताही काल टमटमसँ उतरलाह बतहूबाबू । बौकूबाबूक बड़का भाय, जे आइ तीन वर्षपर कामाख्यासँ आबि रहल छथि । स्त्री-पुरुषक एहन अद्‌भुत सम्मेलन देखि ओ क्षुब्ध भय किछु काल आँखि फाड़ि तकैत रहलाह । एहि ठाम एना भैरवी-चक्र किऐक लागल अछि ? पुनः अपन आँखि-कान टोएलन्हि जे कतहु गड़बड़ त ने अछि । तखन अपना पौत्रकेँ सोर कैलन्हि– की हौ, बुच्चुन छऽ हौ ? सौंसे गाम बताह भऽ गेल अछि कि हमहीं बताह भऽ गेल छी ?

बुच्चुन पैर छुबैत कहलथिन्ह– बाबा, एको शब्द नजियौक जुनि । आबे गाम सम्मत भेल अछि ।

बोध-प्रश्न :

अहाँ कथाकेँ नीक जकाँ पढ़ि लेने हॅायब । आब निम्नलिखित प्रश्नसभक सही उत्तर कोष्ठकमे उपसंख्या लिखिकऽ दियऽ आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ मिलाउ ।

1) गाममे 'ग्रामसेविका'क आगमनपर गण्यमान्य व्यक्तिसभ केहन प्रतिक्रिया व्यक्त कयलनि ?

   क) आश्चर्य व्यक्त कयलनि । ख) स्वागतक भाव देखौलनि ।

   ग) प्रसन्नता भेलनि । घ) विरोधात्मक भाव व्यक्त कयलनि ।

   (   )

2) बौकूबाबूक मोनक तामस किएक ग्रामसेविकाकेँ देखितहिं शान्त भऽ गेलनि ?

   क) ग्रामसेविकाक बाजब सुनिकऽ । ख) ग्रामसेविकाक स्वरूप देखिकऽ ।

   ग) अपन घर पहुँचिकऽ ।

   घ) ग्रामसेविकाक संस्कार आ क्रिया-कलाप देखिकऽ । (   )

3) ग्रामसेविकाक पदार्पणसँ गाममे कोन प्रकारक क्रान्ति आयल ?

   क) गामक स्त्रीगण पर्दा-मर्यादा त्यागि देलनि ।

   ख) गामक स्त्रीगण हिनको कथापर ध्यान नहि देबऽ लगलीह ।

   ग) गामक स्त्रीगण स्वास्थ्य एवं शिक्षाक प्रति सचेष्ट भेलीह ।

   घ) गामक स्त्रीगण पाश्चात्य फैशनक अनुकरण करऽ लगलीह । (   )

4) 'बौकूबाबू मोनमे विचारलनि जे ई त चाण्डालिन जकाँ नहि, मुनिकन्या जकाँ लगैत अछि । जत्तहि जायत तत्तहि तपोवन बना दैत ।' उक्त प्रसंगमे मुनिकन्या शब्दसँ किनका दिस संकेत कयल गेल अछि ?

क) विमला देवी ख) मुजौनावाली

ग) खुटौनावाली घ) बैदाइन ( )

5) बौकूबाबू प्रथम दर्शनमे आचार-व्यवहार आ वेश-भूषासँ विमला देवीकेँ बंगालिन बुझलनि आ मोने-मोन हुनक काजक सराहना कयलनि । किन्तु जखन पत्नीसँ ज्ञात भेलनि जे ई अन्य देशी नहि, मैथिल कन्या थिकीह तँ मोन पुनः घोर भऽ गेलनि -किएक ?

क) अपन सोच मिथ्या प्रमाणित भेलाक कारणेँ ।

ख) विमला देवीक वेश-भूषामे बंगला-संस्कारक छाप देखिकऽ ।

ग) पत्नीक मुहेँ विस्तृत जानकारी पयबाक कारणेँ ।

घ) चिरसंचित मानसिक संकीर्णताक कारणेँ । ( )

6) 'ग्रामसेविका' कथामे कोन दशकक मैथिल-समाजक चित्र उपस्थित कयल गेल अछि ?

क) सत्तरि-अस्सीक दशकक ।

ख) अस्सी-नब्बेक दशकक ।

ग) पचास-साठिक दशकक ।

घ) साठि-सत्तरिक दशकक । ( )

7) बौकूबाबूक जेठ भायक की नाम छलनि ?

क) काशीनाथ ख) फूदनबाबू

ग) बतहूबाबू घ) भुटकुन ( )

8) विदाइ कालमे ग्रामसेविका विमला देवीकेँ के आशीष देलनि ?

क) पंडितजीक पितामही ख) पंडिताइन

ग) पंडितजीक माय घ) बैदाइन ( )

6.3 कथा-सार

अहाँ कथाकेँ ध्यानपूर्वक पढ़ने होयब । अहाँ बुझि गेल होयब जे हरिमोहनबाबू एहि कथाक माध्यमसँ की कहऽ चाहलनि अछि । कथापर विस्तृत विचार करबासँ पूर्व हमरालोकनि कथाक सार बुझि ली ।

'ग्रामसेविका' कथा पारम्परिक ग्रामीण ठेठ मैथिल-जीवनसँ संबंधित अछि । एहि कथाक नायिका विमला देवी ग्रामसेविकाक रूपमे पदस्थापित भऽ मिथिलांचलक एक एहन गाममे अबैत छथि जे रूढ़िवादिता एवं कुसंस्कारक संग अशिक्षासँ सेहो गछारल छल । तेँ हुनक आगमनपर गामक पुरुषलोकनिक भहुँ तनि गेलनि । मोनमे डर सन्हियाय लगलनि । गामक पाखण्डी मुँहपुरुषवर्ग हुनक विरोध रंग-रंगक तर्कसँ करैत छथि । ओ गामकेँ, गामक संस्कारकेँ यथास्थितिमे रखबाक पक्षधर छथि, तेँ ग्रामसेविकाक विरोधमे तर्क-युद्ध जारी रखैत छथि ।

एम्हर, ग्रामसेविका विमला देवी एहि तर्कसँ निरपेक्ष अपन कर्त्तव्य-पथपर बढ़ैत जाइत छथि । ओ ताहि लेल पुरुषक अपेक्षा महिलावर्गमे अपन पहुँच बढ़बैत छथि । पसरल सभ कुसंस्कारकेँ स्वयं आगाँ बढ़ि तोड़ैत छथि । अपन संकोचकेँ, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्यकेँ टारैत, परिवर्त्तनक आकांक्षाक संग आगाँ बढ़ैत छथि ।

हुनक एहि समर्पणकेँ देखि विभिन्न वयसक स्त्रीगण समाज हुनका हुलासक संग ग्रहण करैत छथि । ओलोकनि पुरुषवर्गक कुल्लम बर्जनाकेँ अबडेरैत, हुनक डेगमे डेग मिला संग दैत छथिन । ओकरे फलस्वरूप नहुँ-नहुँ विरोधक स्वर आशीष-रूपमे परिणत होबऽ लगैत अछि ।

एहि परिवर्त्तनमे, पछाति जे जागरण-रूपमे सोझाँ अबैत अछि, विमला देवीकेँ दू वर्ष लागि जाइत छनि । दू वर्षक बाद ओ गामसँ स्थानान्तरणक कारणेँ जा रहलि छथि । ओहि अवसरपर गाममे विदाइ-समारोहक आयोजन होइत अछि, जाहिमे सम्पूर्ण गामक लोक भाग लैत छथि । क्यो हुनका फूलक माला पहिरबैत छथि तँ क्यो मानपत्र दैत छथि । वृद्धलोकनि दूर्वाक्षत दैत छथिन तँ वृद्धालोकनि खोइँछ । गामक सभसँ बूढ़ि पण्डितजीक पितामहीक उक्ति होइत छनि जे आँखि निपट्ट छल, से तोँ आबिकऽ फोलि देलह । एहिपर विमला देवीक सकल समाजक सोझाँ विनम्र उत्तर होइत छनि जे एहि गाममे जे ज्योति जागल अछि तकरा मिझाय नहि देबैक । यैह हमर सभसँ पैघ बड़का बिदाइ थिक ।

एहि अवसरपर वातावरण नोरा जाइत अछि । सभक मोनमे समवेत कामना अँकुराइत छैक जे भगवान करथुन घर-घरमे एहने विमला देवी सन बेटी होथि । तेँ श्रद्धावश बेटी-पुतोहु हुनक आरती उतारऽ लगैत छथि । एक युवती तँ समदाउनि उठा दैत छथि । एना लगैछ, जेना कोनो बेटी अपन गुणक सुरभि गाममे लुटाकऽ सासुर विदा भऽ रहलि अछि ।

तखने गामक मुँहपुरुष बौकूबाबूक जेठ भाइ बतहूबाबू तीन वर्षपर कामाख्यासँ घुरैत छथि । ई परिवर्त्तन देखि हुनका तराटक लागि जाइत छनि । हुनका मतिभ्रमक शंका होइत छनि । ओ तकर पुष्टि लेल अपन पौत्रसँ पुछैत छथि जे बताह हम भऽ गेलहुँ अछि आकि गामे ?

पौत्र उत्तर दैत छनि जे एको शब्द नहि बजियौक । आब गाम सम्मत भेल अछि । एहि तरहेँ युवतम मोनमे सकारात्मक सोचकेँ अँकुराइत देखाय कथा परिवर्त्तनक दिशाकेँ दर्शबैत अन्त होइत अछि ।

6.4 सन्दर्भ सहित व्याख्या

एतऽ हम कथाक किछु महत्त्वपूर्ण अंशक संदर्भ सहित व्याख्या कऽ रहल छी, जाहिसँ अहाँकेँ कथाक मर्म बुझबामे सहयोग भेटत ।

उद्धरण : 1

ई त चाण्डालिन जकाँ नहि, मुनि-कन्या जकाँ लगैत अछि । जतहि जायत, ततहि तपोवन बना देत । बलहुँ बेचारीक प्रति ओतबा अपशब्द कहलिऐक । बौकूबाबू दुर्गापाठ करय लगलाह । किन्तु घुरि-फिरिकऽ वैह लाल ठोपवाली श्वेतवसना ध्यानमे आबि जाइन्ह ।

संदर्भ : प्रस्तुत उद्धरण हास्य-व्यंग्य सम्राट कथाकार प्रो. हरिमोहन झाक कथा 'ग्रामसेविका'सँ लेल गेल अछि । एहि कथामे बौकूबाबू नामक एक मुख्य पात्र छथि, जे गाममे विमला देवी नामक ग्रामसेविकाक पदार्पणसँ खिन्न छथि । ओ पोखरिपर अपन समान-सोचक लोकक बीच तकर खिधांस आ आलोचना करैत आङन घुरलाह अछि ।

व्याख्या : बौकूबाबू आङन आबि ग्रामसेविकाक कार्य ओ व्यवहार देखि चकित रहि गेलाह । अपन आङन, बाड़ी आ घरक कायाकल्प भेल देखि मंत्रमुग्ध भऽ गेलाह । ओकर शुचिता ओ संस्कारमे टटकापन हुनका अपन मान्यता बदलऽ लेल विवश कऽ देलकनि । ओ सोचऽ लगलाह जे ई तँ मुनिकन्या जकाँ लगैत अछि । अनेरो ने तखनसँ एकरा एक चाण्डालिन रूपमे देखैत रही ! ई कन्यारत्न तँ जाही घरमे जायत, तकरे स्वर्ग बना देत । बौकूबाबू ओकरा

प्रति ततेक बेसी मोहित भऽ उठलाह जे ओकरामे गुणे-गुण देखाइ पड़ऽ लगलनि । मोन एकाग्र नहि भऽ पबनि । लाख दुर्गापाठमे मोनकेँ रमाबऽ चाहथि, मुदा बेर-बेर ध्यानमे वैह लाल ठोपवाली श्वेतवसना आबि जाइन । जेना हुनका अपन दुर्गापाठक फल भेँटि गेल होइन । कतहु वैह विमला देवी तँ ने हमर शक्तिरूपा थिकीह, जे हमर साधनाक रूपमे फल देबा लेल आइ हमर मन-परिसरमे टहलि हमर भीतरक कलुषकेँ पवित्र कऽ रहलीह अछि !

विशेष :

1) बौकूबाबूक जे जीवन-परिवेश रहल छलनि, से हुनक सोच आ संस्कारकेँ गाड़िकऽ रखने छलनि । ग्रामसेविकाक आगमन हुनक भीतर लागल झोलकेँ साफ करबामे सहायक भेल अछि ।

2) विचार-परिवर्तन व्यवहारक पवित्रतासँ सेहो संभव थिक- एहि गूढ़ तत्वकेँ हरिमोहनबाबू एहि कथाक माध्यमे व्यक्त कयलनि अछि । ओ सपना जे पचासक दशकमे देखलनि, ई कथा तकरा साकार करैत अछि ।

3) एहिमे कथाकार जाहि ललित भाषाक प्रयोग कयलनि अछि, से कथ्यकेँ स्पष्ट करबामे बेस सहायक भेल अछि ।

उद्धरण 2

एहि ठाम एना भैरवी-चक्र किएक लागल अछि ? पुनः अपन आँखि-कान टोएलन्हि जे कतहु गड़बड़ त ने अछि ! तखन अपना पौत्रकेँ सोर कैलन्हि- की हौ, बुच्चुन छऽ हौ ? सँसे गाम बताह भऽ गेल अछि कि हमहीं बताह भऽ गेल छी ?

बुच्चन पैर छूबैत कहलथिन्ह- बाबा, एको शब्द बजियौक जुनि । आबे गाम सम्मत भेल अछि ।

संदर्भ : प्रस्तुत उद्धरण हास्य-व्यंग्य सम्राट प्रो. हरिमोहन झाक कथा 'ग्रामसेविका'सँ लेल गेल अछि । दुइ वर्षक अभ्यंतर गाममे भेल आमूल-चूल परिवर्तनसँ अनभिज्ञ बौकूबाबूक जेठ भाइ बतहूबाबू जखन कामाख्यासँ घुरैत छथि तँ हुनका त्राटक लागि जाइत छनि । ओहि काल ग्रामसेविका विमला देवीक विदाइ समारोह भऽ रहल छलनि आ ओतऽ गामक आबालवृद्धवनिता उपस्थित रहथि ।

व्याख्या : बतहूबाबूकेँ एतऽ ई परिवर्तन अपन दिमागकेँ सही रहबाक दिशामे संदेह उत्पन्न करऽ लगलनि । हुनका तँ पहिने जेना बुझयलनि जे हम कामाख्यामे तँ ने छी ! एतहुक माहौल हुनका तंत्र-साधनाक माहौल सन बुझयलनि। ओहि साधनाक एक क्रिया भैरवी-चक्र सन बुझयलनि । फेर लगलनि जे हुनका मतिभ्रम भऽ गेलनि अछि । एहि प्रसंग ओ अपन पौत्रसँ जनतब लेबऽ चाहलनि ! मुदा ओ तँ नव्यतम पीढ़ीक अग्रिम स्वर बुझयलनि । ओ कहलकनि जे गाम तँ एखन धरि विमत लोकक हाथमे छल । आबे ई सम्मत भेल अछि । एहि तरहेँ कथाकार एहि उद्धरणक माध्यमसँ ई सिद्ध करऽ चाहलनि अछि जे नव पीढ़ीक सोच पुरान पीढ़ीक सोचसँ आगाँ होइत छैक । ओकर सोचमे तर्कक एहन अमोघ अस्त्र छै जे वैह टा रूढ़िभंजन कऽ सकैछ ।

विशेष

1) उक्त उद्धरणक अंतिम वाक्य विद्युत्-प्रवाह जकाँ पुरान सोचकेँ मूर्छित कऽ नवीन सोचकेँ स्थापित करैत अछि ।

2) युग-परिवर्त्तनक सपनाकेँ कथाकार बहुत सहज ओ स्वाभाविक रूपमे व्यक्त कयलनि अछि ।

3) ई कथा पढ़लापर स्वतः सिद्ध भऽ जाइछ जे जतऽ ने जाथि रवि ओतऽ जाथि कवि, अर्थात् सूर्य केवल वर्तमानकेँ प्रकाशित करैत छथि, मुदा रचनाकार भविष्योकेँ प्रकाशित कऽ दैत छथि ।

अभ्यास : (1) निम्नलिखित उद्धरणक सप्रसंग व्याख्या करू -

एक दिन सम्पूर्ण गामक लोक आँखि खोलिकऽ देखि लेलैन्ह जे नारी–समाजक सामूहिक शक्ति केहन होइ छैक । विमला देवीक नेतृत्वमे गामक समस्त बेटी-पुतोहु आँचर कसने श्रमदान द्वारा महिला-पुस्तकालयक नेव देबय जा रहल अछि । बूढ़ लोकनिक मुँह तेहन भऽ गेलैन्ह जेना केओ चिरैताक काढ़ा पिया देने होइन्ह ।

संदर्भ :

....

....

....

....

....

....

व्याख्या :

....

....

....

....

....

....

विशेष :

....

....

....

....

....

....

....

6.5 कथावस्तु

कथावस्तु कथाक अनिवार्य तत्त्व थिक । एकर निर्माण घटनाक्रम आ पात्रसभक पारस्परिक संयोगसँ होइत अछि । किछु कथानकमे परिवेशक प्रभाव विशेष रूपेँ देखल जाइत अछि । कथाक मूल कथ्यक अनुसारेँ कथा-लेखक कथावस्तुक निर्माण करैत छथि जाहिमे कखनहु कोनो कथावस्तु घटना-प्रधान बनि जाइछ तँ कोनो चरित्र-प्रधान । कखनोकऽ कथावस्तुमे परिवेश वा वातावरणक प्रधानता स्पष्ट रूपेँ लक्षित होइत अछि । एहि कथामे घटना-क्रम सीमित अछि । ओना, चर्चा तँ अनेक पात्रक कयल गेल अछि, मुदा प्रधानता तीन-चारि पात्र मात्रकेँ देल गेल अछि । तँ ई कहल जा सकैछ जे एहि कथामे घटनाक्रम, पात्र आ परिवेश- तीनू समान रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि ।

कथाक आरम्भ : 'ग्रामसेविका' प्रो. हरिमोहन झाक श्रेष्ठ कथाकृतिमेसँ एक थिक । एहि कथामे घटनाक्रमक विस्तार बेसी नहि अछि आ ने ओ अस्वाभाविक रूपेँ दर्शाओल गेल अछि । कथाक आरंभ मिथिलांचलक एकटा सुदूर ग्रामीण अंचलमे 'ग्रामसेविका'क आगमनक चर्चाक संग होइत अछि । कथाकार गामक पोखरिक परिवेशक वर्णन करैत पण्डिताउ प्रवृत्तिवला किछु पात्र, यथा- वैद्यजी, काशीनाथ, बौकूबाबू आदिक चरित्र उपस्थित करैत छथि । गाममे महिला ग्रामसेविकाक प्रवेश हिनकालोकनिक रूढ़िवादी मानसिकताकेँ ग्राह्य नहि छनि आ तँ ओहि प्रसंग सभ अपन-अपन मन्तव्य प्रकट करैत छथि । सभकेँ एकहिटा भय छनि जे माथ उघारने घरे-घरे घुमऽवाली स्त्रीक सम्पर्क भेलासँ हुनका घरक नारी-सदस्या लोकनि सेहो अमर्यादित आचरण ने करऽ लागथि । तँ सभ एक स्वरेँ ओहि अपरिचिता ग्रामसेविकाक प्रति विरोधक भाव व्यक्त करैत छथि जे आर जे होअय, मुदा ओ ओहि ग्रामसेविकाकेँ अपना आङनमे टपऽ नहि देताह । ग्रामीण परिवेशमे प्रातःकाल जलाशयपर होबऽवला क्रियाकलापक बहुत सुन्दर आ सजीव चित्र उपस्थित कयल गेल अछि । क्यो दातमनि करैत छथि, क्यो लोटा मजैत छथि, क्यो जलमे ठाढ़ स्तोत्र पाठ कऽ रहल छथि । मुदा, विविध क्रियामे लागल रहितो सभक ध्यान ग्रामसेविका-प्रकरणपर केन्द्रित छनि । वैद्यजी, काशीनाथ आ फूदन चौधरीक मध्य चलैत चर्चामे भाग लैत बौकू चौधरी स्पष्ट घोषणा कयलनि जे एहि गाममे ओ ग्रामसेविकाक अफसरी शान नहि चलऽ देताह । तखनहि हुनक पौत्र हकमैत ओहिठाम पहुँचलथिन आ हुनका सूचना देलथिन जे दलानपर एकटा अपरिचिता स्त्री बैसलि छथि आ ओ आङनक महिलालोकनिसँ भेट करऽ चाहैत छथि । माय-काकी तँ भेट करऽ लेल तैयार छथिन मुदा बाबीक कहब छनि जे बाबासँ अनुमति लऽ लेल जाय । एहि सूचनापर बौकूबाबू सशंकित भऽ जाइत छथि आ पुछैत छथि जे ओ के थिक ? की करऽ आयलि अछि ? आँगनक महिलालोकनिसँ कोन काज छै ?

पौत्र भुटकुन कोनहु उत्तर नहि दऽ पबैत छनि ।

काशीनाथ भुटकुनसँ पुछैत छथि - **की हौ भुटकुन, ओकर माथ उघारे छैक किने ?**

भुटकुन- हँ ।

काशीनाथ- हाथ मे बैगो छैक ?

भुटकुन- हँ ।

काशीनाथ- तखन निश्चय वैह थीक ।

बौकूबाबू क्रोधसँ बताह होइत बजलाह- हड़ाशंखिनीकेँ और कोनो घर नहि भेटलैक ? सभसँ पहिने हमरे शोधय आयल अछि ?

जलाशयपर उपस्थित वैद्यजी, पंडितजी आ चौधरीजीक ठोरपर मुसकी आबि गेलनि आ बौकूबाबू उत्तेजनामे पौत्रकेँ एक थापड़ मारि बैसलाह । ई कथाक प्रथम भाग अछि । एहि

भागकेँ पढ़लासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलामे नारीक प्रति केहन दृष्टिकोण छल । शिक्षा ओ संस्कारक प्रति तथाकथित पंडितवर्गक की सोच छल ? नारीक शिक्षित होयबाक अर्थ हुनकालोकनिक दृष्टिमे अमर्यादित भऽ जायब छल । हुनकालोकनिक संस्कारमे घोघ-मरौत काढ़ने, घर-आँगनक देहरिमे बन्हायल स्त्रीक अतिरिक्त आर कोनो नारी-छवि अक्षम्य छल । एहि कथामे संवादक माध्यमे पंडितवर्गक रूढ़िवादी मनोभावक बहुत सजीव वर्णन कयल गेल अछि ।

कथाक विकास : कथाक दोसर भाग बौकूबाबूक आड़नसँ प्रारंभ होइत अछि । **जखन बौकू आँगन पहुँचलाह त चकित भऽ गेलाह । जकरा ओ भरि बाट डाइन, राक्षसी, कुलटा आदि नाना प्रकारक उपाधि दैत आयल छलथिन्ह, तकरा देखैत छथि जे आँचर कसने, एक हाथमे झाड़ू ओ दोसरामे फेनाइल नेने हुनका आँगनक मोड़ी साफ करबामे लागल अछि और अपना आंगनक स्त्रीगण मरौत काढ़ने पाछाँ ठाढ़ि भेल बक्कर-बक्कर ताकि रहल छथिन्ह** । जे बौकूबाबू किछु क्षण पूर्व धरि अपना मोनमे ग्रामसेविकाक कल्पित छवि निर्मित कऽ पूर्वाग्रहग्रस्त होयबाक कारणेँ अपन विकार रोषपूर्ण वाणी आ आचरणसँ व्यक्त कऽ रहल छलाह, ग्रामसेविकाक साक्षात दर्शन पबिते अपन मनोभावकेँ बदलैत पौलनि । घरक अव्यवस्थित दशा कनियेँ कालमे ग्रामसेविकाक सघल अभ्यस्त हाथक स्पर्श पाबि सुव्यवस्थित भऽ गेल छल । घरक ई परिष्कृत संस्कार बौकूबाबूकेँ सोचबा लेल बाध्य कऽ देलकनि जे एहने संस्कारवाली जँ हुनको घरमे रहितनि तँ नित्य कलह आ क्लेश नहि होइतनि ।

जखन बौकूबाबू पूजापर बैसलाह तँ खिड़कीसँ देखाइ पड़लनि जे ओ कन्या पछुआड़क बाड़ीमे ठाढ़ि भेलि नेबोक गाछमे कोनो दवाइ छीटि रहलि छलि आ संगहि हुनका घरक स्त्रीगणकेँ किछु बुझा रहलि छलनि । से, ओहि विमला देवीक निर्देशक प्रभाव तत्काले देखाइ पड़लनि । जे बड़हरबावाली सासुक अनुसरण करैत सदिखन घोघ-मरौत काढ़ने रहैत छलीह, सेहो सक्रिय भऽ सफाइमे जुटि गेलीह ।

तकर बाद तँ ई घर-घरक बात भऽ गेल । सभ घरक स्त्रीगण सचेष्ट आ स्वास्थ्य-शिक्षाक प्रति सजग रहऽ लगलीह । क्रमशः ग्रामसेविका विमला देवीक प्रभाव-क्षेत्र बढ़ल गेल आ भरि गामक स्त्रीलोकनि मुक्त भावसँ ओ सभटा काज निष्पादित करऽ लगलीह जे आइ धरि हुनक क्षेत्रसँ बाहर बुझल जाइत छल । गाममे नारी-जागरणक लहरि व्याप्त भऽ गेल । महिला-क्लबक स्थापना भेल आ दुइए वर्षमे गामक कायाकल्प भऽ गेल । आब आन ठाम जकाँ कोनो स्त्रीकेँ काज करबामे संकोच वा परहेज नहि रहलनि । ग्रामसेविका गामक ई रूप देखि आनन्द-विह्वल छलीह । मुदा, ओहि गाममे हुनक कार्यावधि समाप्त भऽ गेल छलनि आ आब हुनका ओ गाम छोड़ि कोनो दोसर इलाका लेल प्रस्थान करबाक छलनि ।

कथाक परिणति : कथाक तेसर आ अंतिम भाग विमला देवीक विदाइ लेल आयोजित सभासँ आरंभ होइत अछि । ओहि सभामे पुरुषोसँ बेसी महिलाक संख्या छल । सभक आँखि नोरायल, **जेना कोनो बेटी सासुर जा रहल हो । अथवा मंदिरसँ प्रतिमाक विसर्जन भऽ रहल हो** । नवयुवती सभ पुष्पमाल्य पहिरा अपन श्रद्धा व्यक्त कयलनि आ नवयुवकलोकनि मानपत्र दऽकऽ । गामक बूढ़-पुरान दूर्वाक्षत लऽ आशीर्वाद देलथिन तँ वृद्धागण खोंइछ देलथिन । सभसँ वयोवृद्धा पंडितजीक पितामही आशीष दैत कहलथिन– **बेटी तोहर गुण हमरा लोकनि कहियो नहि बिसरब । आँखि निपट्ट छल । से तोँ आबिकऽ फोलि देलह । भगवान तोहर कल्याण करथुन्ह ।**

ग्रामसेविका विमला देवी एहि भावपूर्ण विदाइसँ अभिभूत छलीह आ नम्रता ओ शालीनतापूर्वक बजलीह जे ओ तँ अपन कर्त्तव्यक पालन टा कयलनि अछि, हुनके सभक बेटी छथि, सेवा

करब हुनक धर्म छनि । संगहि ओ विदाइक रूपमे समस्त ग्रामवासीसँ वचन लेबऽ चाहलनि जे ज्योति ओ एहि गाममे अनलनि से कहियो मलिन नहि होअय । जखन हारमोनियमपर समदाउन गाओल जा रहल छल, ताही काल टमटमसँ बौकूबाबूक जेठ भाय बतहूबाबूक आगमन भेल, जे तीन वर्षसँ कामाख्यामे रहैत छलाह । स्त्री-पुरुषक एहन अद्‌भुत सम्मेलन देखि ओ क्षुब्ध भऽ आँखि फाड़ि तकैत रहलाह । अपन जिज्ञासा शान्त करबा लेल पौत्रकेँ बजौलनि– **की हौ, बुच्चुन छऽ हौ ? सौंसे गाम बताह भऽ गेल अछि कि हमहीं बताह भऽ गेल छी ?**

बुच्चुन पैर छुबैत कहलथिन्ह– बाबा, एको शब्द बजियौक जुनि । आबे गाम सम्मत भेल अछि ।

कथान्तमे प्रयुक्त एहि संवादक माध्यमे हरिमोहनबाबू मिथिलांचलमे स्त्री-जागरणक उद्‌घोष करैत आबऽवला समयक भविष्यवाणी कयलनि अछि ।

बोध प्रश्न :

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ–

9) विमला देवीक कोन बातपर लोकक आँखि भरि अयलैक ?

क) हम अहींलोकनिक बेटी थिकहुँ ।

ख) हम केवल अपन कर्त्तव्यक पालन कयलहुँ अछि ।

ग) एहि गाममे जे ज्योति जागल अछि तकरा मिझाय नहि देब ।

घ) एहिमे हमर कोन बड़ाइ ? ( )

10) बुच्चुन अपन पितामहसँ की कहलक ?

क) बाबा, दलानपर चलू ।

ख) हम अबै छी, ता अहाँ बढ़ू ।

ग) ग्रामसेविकाक विदाइ भऽ रहल छै ।

घ) आबे गाम सम्मत भेल अछि । ( )

11) काशीनाथक गपपर, ग्रामसेविकाक मादे चौधरीजी की कहलथिन, अपन शब्दमे लिखू–

....

....

....

....

....

12) बौकूबाबू मंत्रमुग्ध भऽ की देखैत रहलाह ? पाँच पंक्तिमे लिखू–

....

....

....

....

....

6.6 चरित्र-चित्रण

चरित्र कोनो कथाक प्रमुख तत्त्व होइत छैक, जकर क्रिया-व्यवहारसँ कथा चरमोत्कर्षकेँ प्राप्त करैत अछि । एहि कथामे अनेक चरित्रक नामोल्लेख भेल अछि, मुदा मुख्यरूपेँ दूटा चरित्रक विकास दर्शाओल गेल अछि । ई दुनू पात्र विमला देवी आ बौकूबाबू छथि । एकर अतिरिक्त जलाशयपर भेल गप-सपमे भाग लेनिहार किछु ग्रामीणक चरित्र आयल अछि, तहिना विमला देवीक विदाइ-सभामे किछु चरित्र आयल अछि । बौकूबाबूक आङनक दृश्य-वर्णनक क्रममे हुनक परिवारक सदस्य लोकनिक चर्च प्राप्त होइत अछि । किछु पात्र एहनो छथि जनिक उल्लेख अछि, किन्तु कथामे प्रत्यक्ष प्रवेश नहि होइछ । बौकूबाबू आ विमला देवी कथाक पहिल भागक मुख्य चरित्र छथि । मध्य भागमे विमला देवीक संग गामक नारी-समुदायक विविध चरित्रक नामोल्लेख प्राप्त होइत अछि, तथा अंतिम भागमे सेहो विमला देवी, बौकूबाबू आ पूर्वोल्लिखित पात्र सभक संग किछु नव चरित्रक आगमन भेल अछि, जाहिसँ कथाक विकासमे गति आबि गेल अछि । बतहू बाबू, पँडिताइन, बुन्नुन आदि एही कोटिक चरित्र छथि । कथाकार एहि सभ पात्रकेँ गढ़ैत काल परिवेश आ देश-कालकेँ सतत ध्यानमे रखलनि अछि । तेँ कोनो पात्र एहन नहि लगैत अछि जे मुखर नहि होअय । पंडिताउ मानसिकता रखनिहार ग्रामीण लोकनिक जे पारम्परिक चरित्र होइत अछि से बतहू बाबू, वैद्यजी, लूटन मिसर, काशीनाथ, बौकूबाबू, फूदन चौधरी, भुटकुन आदिक माध्यमे उपस्थित भेल अछि । तहिना, शिक्षा ओ सभ्यताक आलोकसँ वंचित अंधविश्वासपूर्ण रूढ़िवादी परिवेशमे साँस लेनिहारि ठेठ मैथिलानी चरित्र खुटौनावाली, बिट्ठोवाली, भखराइनवाली, तनौतावाली, बुचौलीवाली, बड़हरवावाली, मुजौनावाली आदिक रूपमे चित्रित भेल अछि । 'ग्रामसेविका'क कथाक प्रतिपाद्य विषय अछि गाममे ग्रामसेविकाक आगमनपर ग्रामीण लोकनि द्वारा असहयोगात्मक विचार प्रदर्शित करब तथा कालक्रमे ग्रामसेविकाक क्रिया-व्यवहारसँ प्रभावित भऽ हुनक कथनक औचित्य स्वीकारि लेब । उपर्युक्त सभ पात्र एहि घटना-चक्रमे सहयोग करैत छथि । एतऽ कथाक दुनू मुख्य पात्रक विषयमे चर्चा करब समीचीन होयत–

विमला देवी : विमला देवी शिक्षित अविवाहित मैथिल कन्या थिकीह, जे मिथिलांचलक एक एहन क्षेत्रमे ग्रामसेविका-रूपमे पदस्थापित भऽकऽ अयलीह जतऽ लोक महिलाकेँ घोघ-मरोत आ घर-आङनमे देखबाक अभ्यस्त छल । महिला अफसरक कल्पना ओहि ठामक मानसिकता लेल अग्राह्य छल, तेँ ग्रामसेविकाक मादे रंग-विरंगक अवधारणा बनऽ-पसरऽ लागल । विमला देवी व्यवहारपटु, मृदुभाषी, स्फूर्तियुक्त संयमी चरित्रक नारीक रूपमे उपस्थित भेलि छथि, जे अपन ठोस क्रियाक प्रमाणक बलेँ कुतर्क, प्रवादक एहि बिरड़ोकेँ रोकबा लेल समतल भूमि तैयार कयलनि, आ ओ भूमि छल अशिक्षा-अंधविश्वासक जालसँ मुक्त सचेष्ट जागरूक महिला वर्गक । विमला देवीक आगमनसँ सौंसे गाममे जागरणक लहरि पसरि गेल, घर-घरक गंदगी स्वच्छतामे परिणत भऽ गेल । सभक धीया-पूता साफ आ नीरोग रहऽ लागल । महिलालोकनि निधोख घर-बाहरक काज सम्हारऽ लगलीह । पँडिताइन सन लोकक तँ चर्चे नहि, सभसँ बूढ़ पँडितजीक पितामही पर्यन्त नव चेतनाक समर्थन करऽ लगलीह । ई निश्चित रूपेँ विमला देवीक चरित्रक उत्कर्ष-बिन्दु अछि । कथामे सर्वत्र विमला देवीक गतिविधिक चर्चा भेटैत अछि, मुखर तँ ओ अंतिम भागमे वर्णित विदाइ-प्रसंगमे भेलीह अछि । जँ तत्कालीन परिवेश आ कालावधिकेँ ध्यानमे राखल जाय तँ विमला देवी सन चरित्रक उपस्थिति समाजमे नगण्ये सन भेटत, किन्तु तत्कालीन मिथिलांचलक जाहि परिवेशक चित्रण भेल अछि, तकर सुधार-परिष्कारक हेतु एहने चरित्रक होयब आवश्यक छल, जे एकटा माध्यम बनि मिथिलांचलकेँ समसामयिक शिक्षा-संस्कारसँ जोड़ि सकय । कथाकार एहि चरित्रक संग पूर्ण न्याय करबामे सफल भेलाह अछि ।

बौकूबाबू : बौकूबाबू 'ग्रामसेविका'क सह-नायकक रूपमे चित्रित भेलाह अछि । बौकूबाबू कथाक आरंभमे ग्रामसेविकाक प्रबल विरोधी चरित्रक रूपमे उपस्थित होइत छथि । ई सहज-सरल भावनाक वशीभूत भऽ तदनुरूप क्रिया कयनिहार पंडित-चरित्र छथि, जनिक उग्रता विमला देवीक शील-संस्कारक आभा देखि क्रमशः शान्त होबऽ लगैत छनि । तैयो मोनमे एकटा कसक रहि जाइत छनि जे ई मैथिलकन्या थिकीह । अर्थात् विमला देवीक रूपमे ओहि नारी-चरित्रक सभटा क्रिया-व्यवहार हुनका मान्य होइत छनि, मुदा बंगबाला सन बगय-बानिवाली एहन महिला मिथिलांचलक होथि, एकरा स्वीकार करब हुनका लेल कठिन भऽ जाइत छनि । ओ भीतरे-भीतर मानसिक स्तरपर जे-जतबा विरोध देखा देने होथि, मुदा कतहु विमला देवीक कार्यमे अवरोध उत्पन्न करैत नहि देखाओल गेलाह अछि । ई कहल जा सकैछ जे एहि चरित्रक रूपमे कथाकार तत्कालीन परिवेशमे जीबऽवला पुरुष-मानसिकताक चित्रण कयलनि अछि, जे क्रमशः सहज गतिएँ परिवर्तित ओ परिवर्द्धित भेल ।

अभ्यास :

2) निम्नलिखित उद्धरणक आधारपर विमला देवीक चरित्रक विशेषता बुझाउ–

क) दुइये वर्षमे गामक काया-कल्प भऽ गेल । तेहन उत्साहक लहरि आयल जे फूदन चौधरीक भावहु स्कूलमे मास्टरी करय लगलीह, बैदाइनक बेटी नर्सक काज सीखय लगलीह और पंडिताइनक पुतहु रेडियोमे जाकऽ बाजय लगलीह ।

....

....

....

....

....

....

ख) हम अहीं लोकनिक बेटी थिकहुँ । सेवा करब हमर धर्म थीक । हम केवल अपना कर्त्तव्यक पालन कैलहुँ अछि । एहिमे हमर बड़ाइ कोन ?

....

....

....

....

....

....

6.7 परिवेश

कथाक रचनामे देश-कालक बहुत महत्त्व होइछ । देश-कालसँ तात्पर्य अछि ओ परिवेश, जाहिमे सम्पूर्ण कथाक घटनाक्रम घटित होइछ । तेँ, परिवेश कथ्यकेँ निर्धारित करबामे मुख्य भूमिकाक निर्वाह करैत अछि । परिवेशक माध्यमसँ तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आ राजनीतिक स्थितिक यथार्थपरक परिचय प्राप्त होइछ ।

'ग्रामसेविका' कथाक रचना हरिमोहनबाबू पचासक दशकमे कयलनि । ओहि काल भारतमे नवे-नव स्वतंत्र देशकेँ पुनर्गठित करबा लेल जोर-सोरसँ अभियान चलि रहल छल । कोनो राष्ट्रक शक्ति तखने सबल भऽ सकैछ जखन ओकर आम जनता साक्षर, सज्ञान आ जागरूक होअय । तेँ पुनर्जागरणक ओहि कालमे राष्ट्रक जनशक्तिक महत्त्वपूर्ण अर्द्धांश अर्थात् स्त्रीकेँ सेहो जाग्रत आ साक्षर बनयबाक प्रयास चलि रहल छल, मुदा युग-युगान्तरसँ पराधीनताक बेड़ीमे गछाड़ल ग्रामीण मानसिकता अपन चारूकात रूढ़िवाद, अंधविश्वास आ परम्पराक तेहन गहन जाल बुनि लेने छल, जकरा भेदिकऽ नवजागरणक प्रकाश ओहि वर्ग धरि पहुँचब कठिन छल । हरिमोहनबाबू ओहि कालखण्डक स्पंदनकेँ चिन्हलनि, समयक मांग बुझलनि । तकरे परिणाम थिक ई कथा ।

ओहि कालमे मिथिलांचलमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचलन नहि छल । गाममे सभ लेल शिक्षित वा साक्षर होयब आवश्यक बुझलो नहि जाइत छल । सम्पूर्ण आबादीक दस वा बीस प्रतिशत संस्कृत-माध्यमे व्याकरण-ज्योतिष वा वेद-वेदान्तक शिक्षा ग्रहण कऽ लैत छल आ शेष घर-गृहस्थी-कृषिमे व्यस्त रहैत दिन बिता लैत छल । एहि जीवन-शैलीक कारणेँ हुनकालोकनिकेँ कखनो अभाव नहि रहैत छलनि । गामक सिमान टपबाक सौभाग्य किनको-किनको प्राप्त होइत छलनि, तेँ सभक सोचक परिधि सेहो सीमित आ संकीर्ण छल । ग्रामसेविका कथामे जलाशयपर गप्पक चौखड़ी एहि तथ्यक प्रमाण थिक जे कोना कोनो विषयक छिद्रान्वेषण कऽ ओकरा प्रति गलत धारणा बनाओल जाइत छल । ओहि कालमे पुरुष-मानसिकता अत्यंत अहंकारी छल । स्त्रीक अर्थ मानल जाइत छल– घर-दुआरिमे व्यस्त एकटा मानव आकृति । एहि मानवाकृतिक कोनो इच्छा भऽ सकैछ, एकरो स्वतंत्र रूपे विचार करबाक क्षमता भऽ सकैछ, इहो कोनो काजमे क्षम भऽ सकैछ, ई सभटा गप तत्कालीन पुरुष-समाज लेल अकल्पनीय छल ।

'ग्रामसेविका' कथामे एहन ग्रामीण परिवेशक विस्तृत चित्रण तँ नहि अछि, मुदा विभिन्न घटना, दृश्य एवं संवादक माध्यमे जतबा व्यक्त भेल अछि से पर्याप्त अछि । पर्दाप्रथा आ संकीर्णताक पक्षधर काशीनाथ, वैद्यजी, फूदन चौधरी, बौकूबाबू– सभ एकहि चिंतासँ ग्रस्त छलाह जे इलाकामे एकटा ग्रामसेविका आयलि अछि । सभक एके आशंका छलनि जे ओ आबिकऽ सौंसे ग्रामक स्त्रीगणकेँ दूरि कऽ देति, एकोटा बेटी-पुतोहु कथा नहि मानत, सभक घर बिगाड़ि देति । हरिमोहनबाबू पात्रानुकूल भाषाक प्रयोग कऽ संवादमे जीवंतता तँ अनबे कयलनि अछि, संगहि सम्पूर्ण परिदृश्यकेँ स्पष्ट रूपेँ चित्रित करबामे सफल भेलाह अछि । पंडितजीक संवादमे पंडिताउ तत्सम शब्दक प्रयोग, गाममे प्रचलित लोकोक्तिक प्रयोग आदिसँ परिवेशक चित्र बेसी प्रभावी बनल अछि । एकटा ठेठ ग्रामीण परिवेश बौकूबाबूक घरक चित्रणक माध्यमे सोझाँ आयल अछि । आङनमे मोड़ी गंध करैत, असोरापर कूड़ा-कचराक ढेरी, चौकठि लग एकटा कोइला सन कारी लालटेन टाङल, पछुआरक बाड़ी गंदगीसँ पाटल, नेबोक गाछमे कीड़ा लागल । तात्पर्य ई जे स्त्री घरक धुरी होइत अछि । ओहि परिवेशमे स्त्री स्वयं स्वच्छता आ शिक्षा-संस्कारसँ वंचित छलीह तँ अपन घर कोना स्वच्छ रखितथि ?

हरिमोहनबाबू ग्राम्य वातावरणक सृष्टि करबा लेल तद्भव आ देशज शब्दक बेसी प्रयोग कयलनि अछि । यथा– महोखा, गदहकिच्चनि, बक्कर-बक्कर, हड़ाशंखनी आदि । यत्र-तत्र प्रयुक्त लोकोक्ति सेहो परिवेशक प्रभावकेँ बढ़यबामे सहायक भेल अछि, यथा– आँखि निपट्ट छल, नतिनी सिखाबय बुढ़ दादी के, खंजन चलली बगराक चालि अपनो चालि बिसरि गेली, देसी मुर्गी विलाइती बोल आदि ।

हरिमोहनबाबू नवजागरणक परिणामसँ अवगत छलाह । ओहि कालक मिथिलांचलमे जे परिवेश अकल्पनीय छल, तकरा साकार करबाक आकांक्षी छलाह । हुनक वैह सपना एहि कथाक

माध्यमे प्रस्फुटित भेल अछि । ग्रामसेविकाक आगमनक किछु दिनक बाद सम्पूर्ण गामक लोक आँखि खोलिकऽ देखि लेलनि जे नारी-समाजक सामूहिक शक्ति केहन होइत छैक । विमला देवीक नेतृत्वमे गामक समस्त बेटी-पुतहु आँचर कसने श्रमदान द्वारा महिला-पुस्तकालयक नेव देबय जा रहलि छथि । बूढ़ लोकनिक मुँह तेहन भऽ गेलनि जेना केओ चिरैताक काढ़ा पिया देने होइन । बूढ़ी लोकनिकेँ बुझा गेलनि जे आब जतनाइ-पिचनाइ ओ ढील हेरनाइ गेल । किन्तु एहि प्रवाहकेँ रोकब असंभव छल । गाममे महिला-क्लब बनल, जे बात स्वप्नोमे विश्वास करबा योग्य नहि छल, से आब प्रत्यक्ष होबऽ लागल । बुचौलीवाली नित्य अखबार पढ़ऽ लागि गेलीह । पँडिताइन ओ बैदाइन ग्रामसुधारक योजना बनबऽ लगलीह । बड़हरबावाली ओ भखराइनवाली समाजवादपर बहस करऽ लगलीह । तनौतावाली तानपुराक सुर चढ़ाबऽ लगलीह । मुजौना ओ खुटौनावाली बैडमिंटन खेलाय लगलीह । दुइए वर्षमे गामक कायाकल्प भऽ गेल ।

अभिप्राय ई जे एहि कथामे दूटा परिवेश उपस्थित भेल अछि । प्रथम, जे तत्कालीन मैथिल समाजक सत्य छल । दोसर, जे कथाकारकेँ अभीष्ट छलनि । कथाकार दुनू परिवेशक चित्रणमे सफल सिद्ध भेलाह अछि । एहि क्रममे कथाकार मिथिलांचलक पारंपरिक संस्कार सेहो नहि बिसरलाह । गामक स्त्रीगण द्वारा मानस कन्या विमला देवीक विदाइपर देल खोंइछ आ आशीर्वचनक संग समदाउनक उल्लेख एहि तथ्यक प्रमाण थिक ।

6.8 संरचना-शिल्प

कथाक रचना भाषामे होइत अछि आ भाषाक कलात्मक उपयोग कथाक कथ्य आ प्रतिपाद्यकेँ संप्रेष्य बनबैछ । तेँ, कोनो कथाक श्रेष्ठता लेल कथ्य आ प्रतिपाद्य मात्रक उत्कृष्ट होयब पर्याप्त नहि थिक, अपितु इहो जरूरी थिक जे अभिव्यक्ति ओ सम्प्रेषणीयता सेहो उत्तम कोटिक होअय । ई अभिव्यक्ति ओ सम्प्रेषणीयता भाषाक माध्यमसँ होइत छैक तेँ भाषाक शिल्प ओ शैली कथा-संरचनाक मुख्य अंग मानल जाइत अछि ।

शैली : 'ग्रामसेविका' कथा हरिमोहनबाबूक उत्कृष्ट रचनामेसँ एक मानल जाइत अछि । ई कथा जतबा कथ्य ओ प्रतिपाद्यक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि ततबे भाषा ओ शिल्पक दृष्टिसँ सेहो । कथाक भावभूमि ग्राम्य जीवनपर आधारित अछि । हरिमोहनबाबू एहि कथामे अपन कथ्यकेँ यथार्थपरक दृष्टिसँ प्रस्तुत कयलनि अछि । तेँ, हुनक शैली सेहो यथार्थवादी अछि । यथार्थवादी शैलीक विशेषता ई होइत अछि जे रचनाकार जीवनक यथार्थकेँ ओही रूपमे प्रस्तुत करैत छथि, जाहि रूपमे ओ होइत अछि । मुदा, एहन होइतो कथाकारक दृष्टि तथ्ये धरि सीमित नहि रहैछ । कथाकार तँ जीवनक वास्तविकताकेँ पाठकक समक्ष यथार्थ रूपमे एहि अभिप्रायसँ उपस्थित करैछ, जाहिसँ पाठक स्वयं ओहि स्थितिमे परिवर्त्तनक आवश्यकताक अनुभव करय आ ओकरा लेल उचित माध्यमक संधान करय । कथाक उत्तरार्द्धमे आदर्शोन्मुख यथार्थक चित्रण भेटैत अछि । तात्पर्य ई जे कथाकार खाली यथार्थक उपस्थापन कऽ स्वयंकेँ निर्विकार नहि रखैत छथि, अपितु ओकर समाधानक मार्ग सेहो देखबैत छथि । हरिमोहन झाक दृष्टि यथार्थपरक समस्याक निदानक एही संभावनापर केन्द्रित अछि । कथाक रचना ओ एहि प्रकारेँ कयलनि अछि जाहिसँ प्रस्तुत कयल गेल समस्या अपन पूर्ण तार्किकताक संग प्रकट भेल अछि ।

'ग्रामसेविका'क जँ विश्लेषण करी तँ एहि बातकेँ बेसी सरलतासँ बुझि सकब । कथाक आरंभ एकटा छोट सन घटनासँ होइत अछि । गाममे ग्रामसेविकाक रूपमे बहाल भऽ विमला देवीक आगमन भेल अछि । एकटा पढ़ल-लिखल महिला अफसरक आगमनक खबरिसँ गामक पुरुषवर्ग आक्रान्त भऽ उठल छथि । सभकेँ आशंका छनि जे आब एहि ग्रामसेविकाक सम्पर्कमे

अयलासँ गामक सभ स्त्रीगण दूरि भऽ जयतीह, मर्यादा भंग भऽ जायत । एही प्रसंगे सभ अपना-अपनी कऽ विमला देवीक प्रति विरोधात्मक भाव प्रकट करैत छथि । कथाक दोसर भागसँ नव मोड़ अबैत अछि । जे बौकूबाबू प्रबल स्वरेँ विमला देवीकेँ अपना आङनमे नहि पैसऽ देबाक प्रण लऽ रहल छलाह, हुनके आङनमे विमला देवीक पहिल बैसार भेलनि । ओ आङनक स्त्रीगणकेँ अपन वाक्-कौशल आ व्यवहार-पटुतासँ ओहि सभकेँ इच्छानुसार संचालित करऽ लगलीह । हुनक बगय-बानि आ आचार-व्यवहार देखि बौकूबाबू सेहो मोनेमोन हुनका मुनिकन्याक आसनपर प्रतिष्ठित कऽ देलनि । तकर बाद तँ जेना एकटा बिहाड़ि उठल नवजागरणक । घर-घर शिक्षा आ संस्कारक ज्योतिसँ आलोकित भऽ उठल । एहि ठाम कथाक पूर्वार्द्धसँ सेहो एकाध प्रसंगकेँ जोड़ल गेल अछि जे, जे पंडिताइन कहियो घरक देहरि नहि टपैत छलीह से निधोख भऽ दरबज्जापर ठाढ़ि भऽ समधिसँ गप्प कऽ रहलि छलीह । अर्थात् नारीवर्गमे जागरणक लहरि एहि सीमा धरि व्याप्त भऽ चुकल छल जे पंडिताइन आ बैदाइन ग्रामसुधारक योजना बनबऽ लगलीह । एहि सभ स्थितिकेँ देखि पुरुषवर्ग द्वारा स्वीकारक भाव प्रकट करब एहि बातक संकेत थिक जे स्थितिमे नियंत्रण आब हुनकहिटा हाथमे नहि रहि गेल छलनि । स्त्रीक दलित-स्थितिक चित्रण करैत कथाकार क्रमशः स्थितिमे सुधार अनबाक मार्ग देखबैत छथि आ पूर्णरूपेण नारी-चेतनाक जागरण-बिन्दुपर आनि कथाकेँ समाप्त करैत छथि । 'ग्रामसेविका'क शैलीक यैह विशेषता थिक आ यैह आदर्शोन्मुख शैली एहि कथाकेँ श्रेष्ठ बनबैत अछि ।

भाषा-प्रयोग : उल्लेख कऽ चुकल छी जे हरिमोहन झा ग्राम्य वातावरणक सृष्टि करबा लेल तद्भव आ देशज शब्दक बेस प्रयोग कयलनि अछि, जे बोलचालक भाषाक अधिक लगीच लऽ अनैत अछि । अहाँ देखब जे एहि कथामे ई यत्र-तत्र अद्भुत देशज शब्दक प्रयोग कयलनि अछि, यथा– गदहकिच्चनि, महोखा, हड़ाशंखिनी, बक्कर-बक्कर आदि । ताहिना, कथामे यत्र-तत्र लोकोक्तिक प्रयोग सेहो भेल अछि, जे कथाकेँ सर्वग्राह्य ओ मनोरम बनयबामे सहयोग कयलक अछि । हिनक ई प्रयोग कतहुसँ ने तँ ठूसल लगैत अछि आ ने ठकरू । लगैछ जे ई संबंधित पात्रसभक संस्कारमे रचल-बसल अछि । किछु उदाहरण– नातिनी सिखाबय बुढ़ दादीकेँ, देसी मुर्गी बिलाइती बोल, खंजन चलली बगराक चालि अपनो चालि बिसरली आदि । ओना, तत्सम शब्दक प्रयोग सेहो भेल अछि । मुदा से अपढ़ पात्रक संदर्भमे नहि, अपितु संस्कृत पढ़ल पात्रक मुँहसँ बहरायल अछि, अथवा ओही संदर्भमे भेल अछि ।

कथाक शिल्प चित्रात्मक अछि । अहाँ पढ़ू आ पढ़ितहि लागऽ लागत जे हम ओहि स्थानपर स्वयं ठाढ़ छी, ओहि स्थितिक सहभागी छी... ।

कथामे कतहु अतिरिक्त स्थितिक चित्रण नहि अछि । एकोटा शब्द वा वाक्य अनावश्यक नहि भेटत । सभक सभ कथाकेँ परिणति धरि पहुँचयबा लेल आनुषंगिक रूपेँ काज करैत रहैत अछि । एहि प्रसंग एकटा संवादक उल्लेख करैत छी । कथाक अंतमे जखन बतहूबाबू अपन पौत्रसँ प्रश्न करैत छथिन तँ ओ उत्तर दैत छनि–

'बाबा एको शब्द बजियौक जुनि । आबे गाम सम्मत भेल अछि ।'

एहि वाक्यखण्डमे 'बजियौक' आ 'सम्मत' शब्द सम्पूर्ण कथाकेँ एक ठाम समेटिकऽ राखि दैत अछि । पहिल तँ परिवर्त्तनक जे बसात गाममे चलल छैक, ताहिमे आब अहाँसभ सन मानसिकतावला लोककेँ बजबापर प्रतिबंध, अर्थात् पुरना पीढ़ीक सोच अप्रासंगिक । दोसर, 'सम्मत' अर्थात् एखन धरिक सम्पूर्ण सोच असम्मत छल, दिग्भ्रान्त छल । कथाकार एतऽ दुइए शब्द 'बाजब' आ 'सम्मत'क प्रयोग कऽ अपन अभिप्रेतकेँ स्पष्ट कऽ देलनि अछि ।

संवाद : संवाद तँ एहि कथाक जीवनी शक्ति अछि । सम्पूर्ण कथामे ई आत्मा रूपमे वास करैत अछि । एहि कारण कथामे क्षिप्रता आयल अछि । पात्रक चरित्र-निर्धारण करबामे तथा परिवेशकेँ आँखिक सोझाँ ठाढ़ करबामे एकर महत्त्वपूर्ण योगदान अछि । सम्पूर्ण कथा संवाद-बहुल अछि । एकटा उदाहरण देखू-

ओकर वयस की हैतैक ?

काशीनाथ ठिकियबैत कहलथिन्ह- यैह करीब अठारह-उनैस ।

चौ.- विवाहिता अछि कि कुमारि ?

का.- देखबामे त कुमारिए जकाँ लगैत अछि ।

चौ.- तखन ओ अनका की सिखौतैक । नतिनी सिखाबय बुढ़ दादीकेँ ।

एहि माध्यमसँ कथाकार आसन्न परिवर्त्तनसँ निरपेक्ष मानसिकताकेँ सोझाँमे आनि ठाढ़ कऽ देलनि अछि । एहि संवाद-शिल्पक द्वारा एतबहि गप कथाकार नहि कयलनि अछि, अपितु ओहि आसन्न स्थितिक हँसी सेहो उड़ौलनि अछि । एहि तरहेँ ई कथा शैली, भाषा-प्रयोग ओ संवाद, सभ दृष्टिएँ उत्कृष्ट उतरल अछि ।

बोध प्रश्न :

13) 'ग्रामसेविका' कथासँ एहन छओ गोट शब्द बाहर करू जे ठेठ होअय ।

(क) .... (ख) .... (ग) ....

(घ) .... (ङ.) .... (च) ....

14) कथामे बौकूबाबूक तामस व्यक्त भेल अछि । पढ़िकऽ ओहि तामसवला संवादकेँ नीचाँ लिखू-

....

....

....

....

....

अभ्यास:

3) 'ग्रामसेविका' कथाकेँ आदर्शोन्मुखी कथा कहल गेल अछि । एहि दृष्टिसँ एहि कथाक तीन टा विशेषता लिखू-

....

....

....

....

....

....

4) निम्नलिखित उद्धरणसँ एहन कोन तीन बात उजागर भेल अछि जे विमला देवीक चरित्रमे निखार अनैत अछि–

'थोड़ेक कालक बाद विमला देवी साबुन लऽकऽ हाथ धोएलन्हि । एक मिनट बच्चाकेँ दुलार कैलथिन्ह । तदुपरान्त दुनू हाथ जोड़ि सभकेँ 'नमस्ते' कय बिदा भऽ गेलीह । बौकूबाबू मंत्रमुग्ध भय देखैत रहलाह ।'

....

....

....

....

....

6.9 प्रतिपाद्य

कोनहु रचनाकार जखन कलम पकड़ैत छथि तँ हुनका भीतर पहिने लेखनक उद्देश्यक जन्म होइछ । लेखन निरुद्देश्य भैए नहि सकैछ । लेखक जाहि उद्देश्यसँ प्रेरित भऽ लेखन करैत छथि, वैह प्रतिपाद्य विषय कहबैत अछि । एकरा एना बुझू जे जाहि उद्देश्यसँ प्रेरित भऽकऽ रचनाकार रचना करैत छथि, कथाक वैह प्रतिपाद्य कहबैछ ।

अहाँ 'ग्रामसेविका' कथाकेँ मोन लगाकऽ पढ़ने होयब तथा ताही प्रसंग उक्त विभिन्न विश्लेषणकेँ सेहो हृदयंगम कयने होयब । ताही क्रममे ई स्पष्ट भऽ गेल होयत जे हरिमोहन झा एहि कथाक माध्यमसँ की कहऽ चाहलनि अछि । प्रस्तुत अनुभागमे हम पुनः ओही बातकेँ प्रस्तुत करऽ चाहब । ई कथा पचासक दशकक कथा अछि । देशमे आजादीक टटकापन अपन शीर्षपर छल । सर्वत्र उल्लासक वातावरण पसरल छलैक । एही संग नवस्वतंत्र देशकेँ पुनर्गठित करबा लेल जोर-सोरसँ अभियान चलाओल जा रहल छल । कोनहु देश तखने सबल ओ क्षम भऽ सकैछ, जँ ओकर नागरिक साक्षर, सज्ञान ओ सचेष्ट होइक । तँ पुनर्जागरणक ओहि कालमे देशक अर्द्धांश अर्थात् नारीवर्गकेँ सेहो साक्षर, सज्ञान ओ सचेष्ट बनयबाक जोर-सोरसँ अभियान चलाओल जा रहल छलैक । मुदा, युग-युगसँ पीड़ित-प्रताड़ित, अंध विश्वासकेँ अपन जीवनक सार्थकता माननिहारि, यथास्थितिक पक्षपाती ओहि वर्गकेँ तेनाकऽ लुंज-पुंज कऽ देल गेल छलैक जे तकरा मुख्य धारामे आनब पाथरपर दूबि उगायब सन छलैक ।

हरिमोहन झा एहि नारकीय स्थितिकेँ चिन्हलनि, तकरा संग देशक नवजागरणक स्पंदनकेँ टोलनि आ तदनुसार एकरा एक आमंत्रण-रूपमे ग्रहण करैत अपन कलमक धारकेँ मुखर कयलनि । प्रस्तुत कथा 'ग्रामसेविका' ताही दिशामे उठल एक उद्देश्यपूर्ण डेग थिक ।

एहि कथामे विमला देवी नामक एक पात्रक कल्पना कयल गेल अछि, जे मिथिलांचलक सुदूर देहातक एक गाममे नारी-जागरणक निमित्त सरकारी स्तरपर पदस्थापित कयल गेलीह अछि । हुनक पदस्थापनसँ रूढ़िवादी पुरुष समाजमे हाहाकार मचि जाइत अछि । ओकर आलोचना कयल जाइछ । रंग-विरंगक उपालम्भ देल जाइछ । मुदा ग्रामसेविका ताहि सभसँ निरपेक्ष अपन अभियानमे लागलि रहैछ, नारी-समाजक अन्तर्मनमे युग-युगसँ पसरल अन्हारकेँ चिरबा लेल व्यावहारिक प्रयोग सभ करैछ, आङन-आङन जाय मोड़ी साफ करैछ, लालटेन साफ कऽ यथास्थान रखैछ, गाछ-वृक्षमे कीटनाशक औषधि छीटैछ, अपनहिसँ धीयापूताकेँ पोछपाछ कऽ सचेष्ट ओ स्वस्थ बनबैछ । ग्रामसेविकाक एहि तरहक क्रिया-कलापसँ नारीसमाज प्रभावित

होइछ । ग्रामसेविका ओहि वर्ग लेल अन्हारसँ इजोतमे आनऽवाली पथ-प्रदर्शिका बनि जाइछ । एहि तरहेँ दू वर्षक कठिन परिश्रम अपन परिणाम सोझाँ अनैछ । गामक अबाल-वृद्ध-वनिता ओहि पथ-प्रदर्शिकाक गुणक सोझाँ नतमस्तक भऽ जाइछ ।

एहि कथामे विमला देवीक दृढ़ इच्छाशक्तिकेँ देखबैत कथाकार ई स्पष्ट करऽ चाहलनि अछि जे जँ इच्छा आ कर्त्तव्य इमानदार होअय तँ किछु असंभव नहि थिक । हरिमोहन झाक कथा होअय अथवा उपन्यास, सभ ठाम नारीजागरणक विमर्श कयल गेल अछि । ताहि लेल ओ माध्यम चुनलनि हास्य-व्यंग्य । हुनक सम्पूर्ण रचना-संसार एहिसँ ओतप्रोत अछि । जँ कि ओ अपन लेखन लेल आम जनक अर्द्धांशिकेँ अपन प्रतिपाद्य बनौलनि, तँ आइ ओ नारीजागरणक नेतृत्व कयनिहार लेखक-रूपमे घर-घरमे आदरणीय छथि ।

कथाक शीर्षक 'ग्रामसेविका' राखल गेल अछि, जे कथाक मूल प्रतिपाद्यकेँ, कथ्यकेँ, चरित्रकेँ सम्पूर्ण अभिव्यक्त करैत अछि । कथाक आरंभ ग्रामसेविकाक आगमनपर चर्चा-कौचर्यसँ होइत अछि । मध्यमे ओकर अभियानक चर्च चलैत अछि । ग्रामसेविका मुदा मौन-मौन अपन काजमे लागलि रहैछ । अपन काज सम्पन्न भऽ गेलापर अंतसँ किछु पूर्व मुँह खोलैछ– अपन विदाइक क्रममे, मात्र एक ठाम, एक बेर ओ एतबे कहैत अछि जे 'हम अहाँलोकनिक बेटी थिकहुँ । सेवा करब हमर धर्मे थीक । हम केवल अपना कर्त्तव्यक पालन कैलहुँ अछि । . .. एही अधिकारपर हम एक वस्तु मँगैत छी । एहि गाममे जे ज्योति जागल अछि तकरा मिझाय नहि देब...।' अंतमे कथा चरम परिणतिपर पहुँचैत अछि जखन ओहि गामक नव्यतम पीढ़ीक प्रतीक रूपमे आयल बुच्चुन बजैत अछि 'आबे गाम सम्पत भेल अछि ।' एही ठाम आबिकऽ शीर्षकक सार्थकता सिद्ध होइछ जे 'ग्रामसेविका' अपन धर्म 'सेवा' लऽकऽ 'कर्त्तव्य'-पथपर आगाँ चलैत अछि, जकर पाछाँ खाली नारिए समाजक सभ वयसक लोक नहि अछि, अपितु पुरुष समाजक नव्यतम पीढ़ी सेहो पुरना सोचक मुखर विरोध करैत अछि ।

बोध प्रश्न

15) 'ग्रामसेविका' कथाक मूल उद्देश्य की अछि ?

क) नारी-जागरण

ख) बौकूबाबूक चरित्र-चित्रण

ग) नोकरी करब

घ) पुरुषवर्गकेँ दिक करब । ( )

16) निम्नलिखितमेसँ सही-गलतमे टिक लगाउ–

क) विमला देवीक नाम ग्रामसेविका थिक । (सही/गलत)

ख) ग्रामसेविकाक नाम विमला देवी थिक । (सही/गलत)

ग) हरिमोहन झा नारी-जागरणक प्रवक्ता छथि । (सही/गलत)

घ) विदाइक समय उदासी गाओल गेल । (सही/गलत)

अभ्यास:

5) 'प्रतिपाद्य' ककरा कहल जाइछ ? चारि पँक्तिमे स्पष्ट करू ।

....

....

....

6) एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार की संदेश देलनि अछि ? स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

6.10 सारांश

अहाँ उक्त कथाकेँ मोन लगाकऽ पढ़ने होयब आ तकर कयल गेल विश्लेषणकेँ सेहो गंभीरतासँ अध्ययन कयने होयब ।

- 'ग्रामसेविका'क कथावस्तु नारीजागरणपर केन्द्रित अछि । ग्रामसेविका-रूपमे विमला देवी एक सुदूर देहातमे सरकारी पदाधिकारी रूपमे पदस्थापित भऽकऽ आयलि छथि । ओ अपन सेवा ओ कर्त्तव्यनिष्ठाक बलपर अपन अभियानमे सफल होइत छथि । अहाँ कथावस्तुक आधारपर कथाक विश्लेषण कऽ सकैत छी ।
- विमला देवी एहि कथाक मूल चरित्र छथि । ओ नोकरीए मात्र नहि करैत छथि, अपितु ओकर उद्देश्यक संग जीबैत छथि । ओकर उद्देश्यक प्रति समर्पित छथि । अहाँ एहि चरित्रक विशेषताक व्याख्या कऽ सकैत छी ।
- मिथिलांचलक तत्कालीन समाजक की दशा छल, तकरा एहि कथाकेँ पढ़लापर बुझि सकैत छी । आब अहाँ स्वयं उक्त 'परिवेश'क विश्लेषण कऽ सकैत छी ।
- 'ग्रामसेविका'क शैली आदर्शोन्मुखी, भाषा सहज ओ संवाद स्वाभाविक अछि । एकर अहाँ एहि कथाक संरचना-शिल्पक विशेषता कहि सकैत छी, आ
- 'ग्रामसेविका' तत्कालीन यथार्थसँ युक्त कथा थिक । एहि कथाक प्रतिपाद्यक ताहि आधारपर विश्लेषण सेहो कऽ सकैत छी ।

6.11 बोध प्रश्न / अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न :

1) घ

2) घ

3) ग

4) क

5) घ

6) ग

7) ग

8) क

9) ग

10) घ

11) काशीनाथ जखन ग्रामसेविकाक मादे कहलथिन जे ओ सरकारी पदाधिकारी भऽकऽ ग्राम-सुधारक वास्ते आयलि अछि तँ चौधरीजी एहि बातकेँ सुनिते सरकारपर बरसि पड़लथिन । ओ सरकारक नेतपर प्रश्न उठा देलथिन जे सरकार गलत कऽ रहल अछि । अनकर बहु-बेटीकेँ बेनंगन कऽकऽ राखि देबऽ चाहैए । ओकरा पतिव्रता स्त्रीक संस्कारसँ ईर्ष्या होइत छैक । तँ ओ ओकर चरित्रकेँ भ्रष्ट करऽ चाहैए।

12) बौकूबाबू मंत्रमुग्ध भऽ देखैत रहलाह जे ई तँ चांडालिन जकाँ नहि, मुनिकन्या जकाँ लगैत अछि । जत्तहि जायत, तत्तहि तपोवन बना देत । बेकारे बेचारीकेँ ओतबा बात कहलिऐक ।

13) क. अकरहर   ख. बंगट   ग. फोँट

घ. ढौंढ़ी   ङ. करची   च. बगरा

14) 'एहि गाममे अफसरी शान नहि चलतैक । जौँ हमरा घरकेँ बिगाड़य आओति तऽ फोँटा भऽकऽ मारि करचीकेँ, मारि करचीकेँ भूठ तोड़ि देबैक ।'

15) नारी-जागरण

16) क.- गलत

ख.- सही

ग.- सही

घ.- गलत

अभ्यास

1) **संदर्भ :** प्रस्तुत उद्धरण हास्य-व्यंग्य सम्राट प्रो. हरिमोहन झाक प्रसिद्ध कथा 'ग्रामसेविका'सँ लेल गेल अछि । गाममे ग्रामसेविका विमला देवीक पदस्थापन भेलनि । ओ अपन काजमे अबितहि तन-मनसँ लागि गेलीह । हुनक एहि प्रकारक समर्पणसँ गामक नारीसमाजपर अनुकूल प्रभाव देखाइ देबऽ लागल । ओहि समाजमे सोच ओ विचारक स्तरपर अरुणोदय होयब आरंभ भऽ गेलैक ।

व्याख्या : एहि प्रसंगमे एक समय अथवा एक एहनो दिन आयल जे पुरुष समाज ओहि स्थितिकेँ देखितहि रहि गेलाह । हुनकालोकनिक सोझाँ नारीसमाजक सामूहिक शक्ति मूर्त्तरूप लऽ रहल छल । बाट देखौनिहारक अभाव छलैक, जे विमला देवीक रूपमे प्राप्त भेलनि । हुनका नेतृत्वमे गामक बेटी-पुतोहु श्रमदान द्वारा महिला-पुस्तकालयक स्थापना लेल न्यो देबऽ लगलीह । हुनकालोकनिक उत्साह अद्वितीय छल । गामक बूढ़लोकनिक बकार बन्द छलनि । मुँह एना अनचिन्हार ओ टेढ़ सन भऽ गेलनि, जेना चिरैताक काढ़ा पीलाक बाद भऽ जाइत छैक । अर्थात्, पुरुष-प्रभावी समाजक अंत भऽ रहल छल जेना ! अथवा एना कही जे आबे सम्पूर्ण समाजक उदय भऽ रहल छल । तकर मौन ओ विवश-विरोध गामक बूढ़लोकनि कऽ रहल छलाह । मुदा ग्रामसेविका विमला देवीक सफल नेतृत्व तकर बिनु परवाहि कयने आगाँ मुहेँ बढ़ि रहल छल ।

विशेषः 1) एहिमे सही नेतृत्वक औचित्यकेँ देखाओल गेल अछि ।

2) एहिमे कर्त्तव्यनिष्ठा ओ लगनक बलपर केहनोसँ केहनो कार्य सिद्धि भऽ सकैछ, से भाव प्रबल रूपमे आयल अछि ।

2) क) विमला देवी एक कर्त्तव्यपरायण महिला पदाधिकारी छथि, जे अपन उद्देश्यमे तन-मनसँ लागलि रहैत छथि । ओ सामाजिक विरोधकेँ आमंत्रण रूपमे ग्रहण करैत छथि आ जकर सामना सहज रीतिएँ करैत कर्त्तव्यक पालन करैत चलैत छथि । कखनहुँ मुखर नहि होइत छथि । मुखर हुनका द्वारा कयल काजक परिणाम होइत अछि, जेना कोनो पुतोहु शिक्षिकाक काज करऽ लगैत छथि, कोनो बेटी नर्सक काज सीखऽ लगैछ, क्यो अपन भावनाकेँ रेडियोक माध्यमे व्यक्त करब आरंभ कऽ दैत छथि ।

ख) प्रस्तुत उद्धरण विमला देवीक कर्त्तव्यनिष्ठा ओ समर्पणक निष्कर्ष थिक । अर्थात् गाममे आमूल-चूल परिवर्तन भऽ गेल । एहि स्थितिकेँ अनबामे हुनका दू वर्ष लागि गेलनि । एतेक पैघ उपलब्धिक बादो हुनकामे अहंकार नामक कोनहु चेन्ह नहि । ओ तँ बेटी भऽकऽ काज करैत रहलीह, जकर धर्म होइछ सेवा करब । ओ परिणाम सोचिकऽ कर्त्तव्य नहि कयलनि । ओ तँ कर्त्तव्य मात्र कयलनि । ओ कहलनि– तँ महान हम नहि, अहाँ लोकनिक ई पूरा समाज थिक । एहि तरहेँ सर्वगुणसम्पन्न नारीक विशेषता एहि उद्धरण द्वारा व्यक्त भेल अछि, जे विशेषता विमला देवीमे निहित देखाओल गेल अछि ।

3) एहि कथामे तत्कालीन मैथिल समाजक यथार्थक चित्रण करैत समाजमे व्याप्त समस्याक समाधानक बाट देखाओल अछि ।

- एहि कथामे एक एहन ग्रामसेविकाक परिकल्पना कयल गेल अछि जे समाजक मार्गदर्शन करबामे आदर्श चरित्रक रूपमे आयल अछि ।
- ग्रामसेविकाक चारित्रिक वैशिष्ट्यसँ प्रभावित भऽ गामक पँडिताउ मानसिकता रखनिहार पुरुषवर्गक वैचारिक परिवर्त्तनक चित्रण समाजक नवनिर्माण लेल शुभसंकेतक प्रतीक थिक ।

4) – शुचिता
- स्नेह
- व्यवहार-कुशलता

5) रचनाकार रचना कोनो उद्देश्यकेँ ध्यानमे राखिए कऽ करैत अछि । रचना निरुद्देश्य भैए नहि सकैत अछि । तात्पर्य ई जे कथाकारक अभिप्रेत भाव प्रतिपाद्य थिक । एकरा एहुना कहल जा सकैछ जे जाहि उद्देश्यसँ प्रेरित भऽ रचनाकार रचना करैछ, कथाक वैह प्रतिपाद्य कहबैछ ।

6) विमला देवीक दृढ़ इच्छाशक्तिकेँ एहि कथाक मुख्य आधार मानल गेल अछि । एहि कथामे ई संदेश देल गेल अछि जे जँ इच्छा आ कर्त्तव्य इमानदार हो तँ कोनो काज असंभव नहि । एहि माध्यमे नारी-विमर्शक सेहो संकेत देल गेल अछि । एहिमे एक आर संदेश स्पष्ट भेल अछि जे जाधरि नारीसमाज नहि जागत, ताधरि समाज विकास नहि कऽ सकैछ ।

इकाइ 7 निबंध : पीयर आँकुर (मणिपद्म)

इकाइक रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

एहि खंडक छठम इकाइमे अहाँ प्रो. हरिमोहन झाक कथा 'ग्रामसेविका'क अध्ययन कऽ चुकलहुँ अछि । एहि इकाइमे अहाँ मणिपद्मक निबंध 'पीयर आँकुर'क अध्ययन करऽ जा रहल छी ।

एहि इकाइकेँ पढ़लाक बाद अहाँ–

- मणिपद्मक कृतित्वक एक नव स्वरूप हुनक निबंधकार-व्यक्तित्वसँ साक्षात्कार कऽ सकब,
- निबंधक सार लिखि सकब,
- निबंधक अंतर्वस्तुकेँ बुझिकऽ समुचित विवेचन-विश्लेषण कऽ सकब,
- निबंधमे व्यक्त लेखकक वास्तविक व्यक्तित्वसँ परिचित भऽ सकब,
- निबंधक रचनाकालीन परिवेशक जनतब प्राप्त कऽ सकब,
- निबंधक संरचना-शिल्पक विवेचन-विश्लेषण कऽ सकब,
- निबंधक शीर्षक एवं प्रतिपाद्यक समुचित व्यख्या कऽ सकब ।

7.1 प्रस्तावना

एतऽ अहाँ मैथिली लोककाव्यक विशेषज्ञ एवं बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न मणिपद्मक निबंधक अध्ययन करऽ जा रहल छी । निबंध एक गद्य-विधा थिक, जकर स्वरूप, कथ्य ओ अन्यान्य

विशेषता अहाँ पढ़ि चुकल छी । एतऽ हम निम्नलिखित चारि बिन्दुक आधारपर मणिपद्मक निबंध-रचनाक स्वरूपगत, कथ्यगत ओ शिल्पगत विशेषताकेँ स्पष्ट करबाक प्रयास करब ।

- निबंध एक सशक्त गद्य रचना थिक ।
- एहिमे लेखक अपन भाव-विचारकेँ क्रमबद्ध ओ तर्कसंगत ढंगसँ सोझे व्यक्त करैत अछि ।
- एहिमे लेखकक व्यक्तित्वक स्पष्ट प्रकाशन होइत अछि ।
- एहिमे निबंधकार अपन भाव-विचारकेँ कलात्मक अभिव्यक्ति देबाक प्रयास करैत अछि ।

विशेषतासूचक एहि सभ बिन्दुकेँ ध्यानमे रखैत एहि इकाइमे हम 'पीयर आँकुर'क विस्तृत विवेचन-विश्लेषण करब । तेँ, निबन्धकारक जीवनक किछु तथ्य जानि लेब अहाँ लेल आवश्यक होयत ।

डा. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क जन्म 7 सितम्बर 1918 केँ दरभंगा जिलान्तर्गत घनश्यामपुर प्रखण्डक बाउर गाममे भेल छलनि । हिनक कर्मभूमि बहेड़ा छलनि । मणिपद्म मैथिली, हिन्दी, अंगरेजी ओ बंगलाक गम्भीर ज्ञाता रहथि । एकर अतिरिक्त होमियोपैथीक नीक वैद्य छलाह । ई साहित्यक अनेक विधामे प्रचुर रचना कयलनि । लोकगाथाक हिनका विशेषज्ञ मानल जाइत छनि । अनेक उपन्यास लिखने छथि । किछु प्रमुख उपन्यासक नाम थिक– विद्यापति, कोब्रागर्ल, लोरिक विजय, नैका बनिजारा, राजा सलहेस, लवहरि-कुशहरि, राय रणपाल, फुटपाथ, दुलरा दयाल, अर्धनारीश्वर । एकर अतिरिक्त दू गोट हिनक अनूदित पुस्तक सेहो अछि– 'कोशी प्रांगणक चिट्ठी' आ 'बंगला साहित्यक इतिहास' । हिनक लोकमहागाथापरक उपन्यास 'नैका बनिजारा' 1973क साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त कयने अछि । हिनक संस्मरण-संग्रह 'हुनकासँ भेंट भेल छल', कविता-संग्रह 'मणिकण' तथा कथा-संग्रह 'साहित्यकारक दिन' मृत्यूपरान्त प्रकाशित भेल । विभिन्न पत्र-पत्रिकामे एखनहुँ कविता, निबन्ध, समीक्षा विषयक अनगनित रचना छिड़िआयल अछि । अपन समयक ई सभसँ आशु लेखक रहथि ।

मणिपद्म जेहने उच्च कोटिक रचनाकार रहथि, तेहने ओजस्वी वक्ता छलाह । हिनक व्याख्यान लोक मंत्रमुग्ध भऽकऽ सुनैत छल । ई स्वतंत्रता सेनानी सेहो छलाह । 'भारत छोड़ो' आंदोलनक क्रममे ई 1942 मे गिरफ्तार भेलाह आ 1946 मे मुक्त भेलाह । 1975 मे भारत सरकार द्वारा 'स्वतंत्रता सेनानी'क रूपमे सम्मानित कयल गेलाह । अपन उत्कृष्ट साहित्यिक अवदानक हेतु विभिन्न संस्था द्वारा सम्मानित भेलाह । मिथिला-मैथिल-मैथिलीक सर्वांगीण विकास मणिपद्मक चिन्तनधारा ओ कर्मधाराक मुख्य विषय रहलनि ।

7.2 निबंधक वाचन

पीयर आँकुर

से, ओ खूब विशाल ढेङ छल । कतोक दिनसँ पड़ल । बेस चाकर-चौरस आ भरिगर । से ढेङ सहसा उठि गेल । देखैत छी ओकरा तरमे मुरझायल, मरइमान पीयर-पीयर घास आ कते तरहक सुन्नर-सुन्नर बीजक पीयर-पीयर आँकुर । मुदा सभटा मिरमिराइत । आलोक लेल बेलल्ला भेल । आइ जखन ओ ढेङ हँटि गेलैक तँ आँकुर सभ टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि, आब एहि सभमे नवजीवनक संचार होयतैक । ई आँकुर सभ आलोक पाबि सबल होयत आ रंग-बिरंगक पत्र-पुष्प आ फलक संग प्रकट होयत ।

की एहिना युग-युग दासत्वक ढेङ हमरालोकनिक धरतीक प्रवृत्तिक आँकुरकेँ नहि दबने रहल ? की हमरालोकनि जन-समाजक उच्च भावनाक आँकुर-आलोकक लेल बेलल्ला होइत युग-युगसँ नहि मिरमिराइत रहलहुँ ?

ई धरतीक प्रवृत्ति की ? आ ओकर अँकुर ककरा कहब ? गेल छलहुँ एक बेर सरकस देखबाक हेतु । बाघ-सिंह आदि हिंसक पशुक बड़ भयानक खेल देखलहुँ। रस्सापर शून्यमे बड़-बड़ डेराओन तमाशा देखल । मोटरसाइकिल, घोड़सवारी आ अस्त्र-संचालनक एहन दृश्य आँखिक आगूमे आयल जकरा मोन पाड़ि एखनो काँपि जाइत छी । उत्सुकतावश सरकसिया लोकनिक परिचय बुझलहुँ तँ ज्ञात भेल जे सभ मराठी छलाह गोट-गोटकऽ ।

महाराष्ट्रक भूमिका वीरताक प्रवृत्ति, गुलामीक ढेङ तर दबि सरकसक खेलक रूपमे प्रकट भऽ रहल छल । वीरताक एहि प्रवृत्तिकेँ जखन उपयुक्त वायु, प्रकाश नहि भेटि सकलैक तँ ओ लोककेँ बाघ-सिंहक भयानक खेल देखाकऽ संतुष्ट होयबा लेल बाध्य कयलक । मुदा, ओ वीरत्वक भावना मुइल नहि छल, केवल विकासक सुविधाक अभावमे सिरसिराइत छल । ओहू गुलामीक ढेङ तर जँ दोग-दाग भेटि गेलैक तँ भगवान तिलक सनक व्यक्तित्व आलोकक अन्वेषणमे बहराइत, प्रयत्न करैत, होमरूल आंदोलन आ गीता-रहस्य सन पुष्प आ फल देलथिन ।

ओएह सुनू सैनिकक बिगुल ! 'राइट-लेफ्ट' प्रारंभ भऽ गेल । गोरखा फौज कबायद कऽ रहल अछि । बाघ-भालु, ठभड़-खाभड़, चोटी-घाटी आ बोन-फाड़क भूमि हिनकालोकनिमे असीम साहस भरने अछि । हिनकामे अनुशासनक भावना एहि कोटिक अछि जे संसारमे कम्मे ठामक लोक हिनकासभ सन आदर्श सैनिक भऽ पबैत अछि । मुदा विकासक असुविधाक ढेङ तर पिलपिलाइत हिनका चपरासी, दरबान, संतरी, होटलक नोकर आ साम्राज्यवादी अंग्रेजक सैनिक बनि संतोष करऽ पड़ैत छनि।

आ, लगक बात थिक । चन्द्रगुप्तक वाहिनीक जे सैनिक विश्व-विजयिनी ग्रीकसेनाकेँ पराजित कयलक, जतऽक वीरलोकनिक तरुआरि समुद्रगुप्तक नेतृत्वमे समस्त आर्यावर्तमे चमकल, जतऽक वीरभावना शेरशाहक आगू-आगू चलि दिल्लीपर विजय पओलक, जाहि ठामक स्वातन्त्र्यप्रियता सन् सत्तावनमे वीर कुँवर सिंहक कंठसँ रणहुंकार बनि प्रकट भेल, ओहि आरा, छपरा आ पटना जिलाक सैनिक-भावनाक अँकुर परतन्त्रताक ढेङ तर तेना दबकल रहल जेना हुनकालोकनिकेँ कान्सटेबुल, जमादार, दरबानजी आ जमींदारक सिपाही बनबा लेल मजबूरी बाध्य होमऽ पड़ल।

मध्यप्रेदशक एकटा गाममे छलहुँ । किछु साहित्यिक बन्धुक अनुरोधपर रामलीला देखऽ गेलहुँ । अरे, ई की ? रामलीलावला तँ सभ केओ गौआँ-घरुआ छलाह, अपना जवारक लोक । गामपरक महिषमोड़सभक मुँहसँ आन प्रान्तक स्टेजपर गीतगोविन्द, विद्यापतिक तिरहुत आ बटगवनी सुनि, आन भाषाभाषीकेँ मुग्ध भऽ भऽ लोटि खसैत देखलहुँ । नयनाभिराम ऐक्टिंग, कोकिल-कंठ, साधारण स्टेज, कुल तीन चिरीचोँत भेल परदा, बिनु स्कूलक मुँह देखने एक्टर, जर्जर वस्त्र-भूषा, मुदा हजार-हजार दर्शकक मंत्रमुग्ध भीड़ ।

मिथिलाक माँटि-पानिमे युग-युगसँ साहित्य, कला आ दर्शनक बीज संचित छैक । जहिया कहियो विकासक सुविधा भेटलैक, ओ बीज वृक्ष बनि अयाची, मंडन, वाचस्पति, उदयनाचार्य आ विद्यापतिक रूपमे पत्र-पुष्पसँ युक्त भेल । दर्शन, कला ओ साहित्यक फल तकरे परिणाम थिक ।

मुदा, गुलामी आ प्रतिकूल वातावरणक दाबनि पड़ि गेलासँ ओहि अमर बीजसभक अँकुर पीयर पड़ि गेलैक तथा ओकर बाढ़ि अवरुद्ध भऽ गेलैक अछि ।

विकसित नहि होयबाक कारण ओ रामलीलावला नटकिया, भनसीया, कीर्त्तनियाँ आ कथावाचकक रूप लऽ लेलक तथा एहि भूमिक चित्रकला कोबरक भीतपर कनैत रहि गेल, नृत्यकलाकेँ

मनचुम्मी आ जालिमसिंहक रूप लेमऽ पड़लैक, साहित्य एकर नारीक कंठसँ समदाउनि बनि कानि उठलैक, संगीत ओकर डोमक ओढ़नीक स्वरमे कुसुमा दीनाक विलाप बनि चीत्कार कऽ उठल, ज्योतिष एकादशी ओ अतिचारक निर्णय करैत कुण्ठित भऽ गेलैक आ दर्शन श्राद्धस्थलीमे शास्त्रार्थ करैत हपसऽ लगलैक ।

अहाँके की विश्वास अछि ?- एकटा वृद्ध विद्वानकेँ पुछलियनि, स्वतंत्र भारतकेँ मिथिलाक की देन होयतैक ?

वृद्ध मुस्कयला- जँ विकासक समुचित अवसर भेटय तँ मिथिलाक धरतीक ई आँकुरसभ कवि, दार्शनिक, अभिनेता, लेखक, चित्रकार ओ कलाकारक रूपमे प्रस्फुटित भऽ उठत । फेर एकर पुष्पक मधुर गंध संसार भरि व्याप्त भऽ उठत ।

ओ कनियेँ ठमकिकऽ कहलनि- सभसँ बेसी प्रगति करती मैथिलानी । सीता, गार्गी आ भारतीक परम्परा नष्ट नहि भऽ गेलैक अछि- केवल सुषुप्त छैक । ओकरा जाग्रत होयबामे कनियोँ काल नहि लगतैक ।

अंग्रेजसभ विभिन्न स्थानक माँटि-पानिक एहि आँकुरविशेषकेँ बहुत हद धरि चिन्हैत छल । ओ एहि स्थानीय विशेषतासँ अपन ढंगपर लाभो उठओलक । सिक्खकेँ भारतक खड्गहस्त, गोरखाकेँ राइफलधारी, भोजपुरीकेँ पुलिस, मद्रासक शास्त्रधुरीणकेँ आइ.सी.एस., बंगालक भद्रलोकनिकेँ किरानी आ स्टेशनमास्टर बनओलक । मुदा ठोकि-ठाकिकऽ ओतबे दूर धरि उठबाक अवसर देलकनि जते दूर धरि ओ ओकरा लेल उपयोगी भऽ सकितथि । हँ, ई भिन्न बात जे एहि देशक संस्कृतिक जड़ि दर्शनक माँटिमे एतेक गँहीर तक गेल छलैक, जे एहू विपन्न स्थितिमे महात्मा गाँधी, महाकवि टैगोर, महावैज्ञानिक रमण आ महादार्शनिक राधाकृष्णनक आविर्भाव भऽ सकल, जखन कि आन उपनिवेश- अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आ कनाडा सन देश एकोटा उल्लेखनीय कवि, कलाकार, वैज्ञानिक आ दार्शनिक नहि दऽ सकल ।

मुदा, आइ तँ अंग्रेज नहि अछि । गुलामीक पाथर ढेङ आब हँटि गेल अछि । देखैत छी ओकरा, सुन्नर-सुन्नर बीजक आँकुर युग-युगसँ अन्हारमे रहैत-रहैत कतेक अधिक पीयर पड़ि गेल अछि, मिरमिरा रहल अछि ।

एहि आँकुर सभ लेल आलोक चाही, जल चाही आ खाद चाही, से कोना प्राप्त होयतैक ? सभसँ पहिने समाजमे ई चेतना चाही जे आलोक, जल आ खादक अभावमे ई आँकुर सभ नष्ट भऽ जायत । उपयुक्त वातावरण नहि भेटने ओकर विकास नहि भऽ सकतैक ।

एहन आँकुरसभक विकासक लेल सभसँ आवश्यक छैक स्थानीय विश्वविद्यालयसभक, जाहिमे ओहि ठामक विशेषतासँ युक्त विषयकेँ सभसँ अधिकतम प्रोत्साहन देल जा सकय । मगध विश्वविद्यालयमे सैनिक विषयक प्रमुखता आ मिथिला विश्वविद्यालयमे कला आ दर्शन विषयक प्रधानता, नहि जानि कतेक-कतेक महानकेँ उत्पन्न कऽ सकत ।

हमर कथनक ई अर्थ कथमपि नहि जे मिथिलामे करियप्पा अथवा नेपालक गोरखामे विद्यापति नहि भऽ सकैत अछि । मानव अद्‌भुत आ असाधारण जीव थिक । ओ कतऽ कखन आ कोना कोन रूपमे अपन विकास करत, से कहब कठिन। मुदा, विभिन्न माँटि-पानिमे स्थानीय विशेषता होइछ, तकरा अस्वीकार नहि कयल जा सकैछ। केरलक नरिकेर-कुंज आ मिथिलाक आम्रवन अपन-अपन विशेषताक सहज परिणाम थिकैक । ई के कहत नहि ?

से ओएह देखियौक ने कला, साहित्य ओ दर्शनक अमर बीजक पीयर-पीयर आँकुर । पिलपिलाइत, क्षीण आ मौलायल- जेना चिकरि-चिकरि कहि रहल हो- स्थान, अधिक स्थान चाही; आलोक, अधिक आलोक चाही ।

बोध प्रश्न

1) मिथिलावासी एखनो विकासक गतिमे पछुआयल किएक छथि ? निम्नलिखित उत्तरमेसँ सही उत्तर लेल कोष्ठक संख्याक निर्देश करू–

क) दासत्वक ढेङ तर पड़ल रहबाक कारणेँ ।

ख) सामाजिक चेतना जाग्रत नहि होयबाक कारणेँ ।

ग) अनुकूल वातावरण नहि रहबाक कारणेँ ।

घ) राजनीतिक अवहेलना भेटबाक कारणेँ । (   )

2) कथीक अभावमे आँकुर नहि पनपि सकल ?

क) ओकर जड़िकेँ कोड़ल नहि गेल ।

ख) ओकरापर ककरो ध्यान नहि गेल ।

ग) आलोक, जल आ खादक अभाव भेल ।

घ) समुचित देखभाल नहि कयल गेल । (   )

3) मिथिलाक विकास लेल की आवश्यक अछि ?

क) शिक्षा ओ सामाजिक चेतनाक विकास ।

ख) गुलामी आ प्रतिकूल वातावरणकेँ दूर करबाक प्रयास ।

ग) राजनीतिक संरक्षण भेटबाक दिशामे प्रयास ।

घ) जाति-पातिक भेदभाव मेटयबाक दिशामे प्रयास । (   )

7.3 निबंधक सार

प्रस्तुत निबन्धमे लेखक भारतक विभिन्न प्रान्तक क्षमतावान लोक लेल अवरुद्ध विकासक मार्ग ओ हुनक दुर्दशापर चिंतन कयलनि अछि । कतेको युगसँ गुलामीक बेड़ीमे जकड़ल भारतीय प्रतिभा कुंठित भऽ दिशाहीन भऽ गेल । प्रस्तुत निबंधक माध्यमसँ ओहन लोकक हेतु उपयुक्त वातावरण तैयार कऽ हुनका अंकुरित ओ प्रस्फुटित होयबाक दिशामे पहल करबाक प्रयासपर गम्भीर चिन्तन कयल गेल अछि ।

भारतीय प्रतिभा देशहि नहि, विदेशोमे अपन लोहा मनबा रहल अछि, मुदा दोसर पक्ष ईहो अछि जे बहुतो प्रतिभा उचित वातावरणक अभावमे कुंठित भऽ रहल अछि । ओकरा ओ दिशा आ प्रकाश नहि भेटि रहलैक अछि जे ओकर गुणकेँ सार्थक आ सजीव रूप दऽ सकैक । एहि प्रसंग लेखक सर्वप्रथम महाराष्ट्रक लोकक वीरताक उल्लेख कयलनि अछि । मुदा, ओकर वीरताक प्रवृत्ति गुलामीक ढेङ तर दबि गेलासँ जखन विकासक सुविधा नहि भेटि सकल तँ ओ सरकसमे बाघ-सिंहक खेल देखबऽ लागल । ओहनो परिस्थितिमे जँ दोग-दागसँ वायु-प्रकाश भेटि गेलैक तँ तिलक-सन व्यक्तित्व सेहो उत्पन्न भेलाह ।

तहिना, गोरखा फौज अपन वीरता ओ साहस लेल प्रसिद्ध रहल अछि । सीमापर अनेकानेक साहसिक कार्य द्वारा ओ अपन लोहा मनबा आदर्श सैनिकक उपाधि पौलक अछि । ओकरालोकनिमे अनुशासनक भावना प्रबल रहल अछि, मुदा विकासक अभावमे ओहोसभ चपरासी, दरबान, संतरी बनि रहि गेल । ओहिना, वीर कुँवर सिंहक भूमि आरा आ छपरा जिलाक लोकमे सैनिक भावनाक आँकुर दबिकऽ रहि गेल आ ओ सभ कान्सटेबुल, दरबान इत्यादि बनबा लेल बाध्य भेल ।

लेखक मध्यप्रदेशक एकटा गाममे रामलीला देखऽ गेलाह । ओतऽ देखि आश्चर्य भेलनि जे ओसभ अपने गौआँ-घरुआ आ जिला-जयवारक रहथि । हुनकासभक मुँहसँ विद्यापतिक गीत, तिरहुत आ बटगवनी सुनि लेखक विस्मित रहि गेलाह । हुनकालोकनिक कोकिलकंठ आ सुन्दर अभिनय हजारक हजार दर्शककेँ मंत्रमुग्ध कऽ देने छल ।

मिथिला अपन गौरवशाली संस्कृति, साहित्य, कला, दर्शन एवं एकसँ एक महान विभूतिक जन्मस्थली होयबाक कारणेँ प्रसिद्ध रहल अछि । किन्तु जतबे गौरवशाली अतीत रहल, ओतबे कारुणिक वर्तमान बनि गेल अछि । अशिक्षा, निर्धनता, बेरोजगारी, प्राकृतिक प्रकोप आ रूढ़िवादिताक चाङुरमे जकड़ल मिथिलावासीकेँ पथ-प्रदर्शकक घोर अभाव रहल, जाहि कारणेँ एतुक्का लोक आजीविकाक हेतु रामलीला, नटकिया, मनसिया आ कीर्तनियाँ बनबा लेल विवश भेल ।

एहि तरहेँ मणिपद्मजी भारतभूमिक विभिन्न क्षेत्रक विशेष क्षमतावान लोकक विवशता आ दुर्दशाक मूलभूत कारणक तहमे जाय तकर व्याख्या बड़ सहज ढंगसँ कयलनि अछि । एहि निबंधमे सभसँ पहिने लेखक मनुष्यक हेतु उपयुक्त वातावरण ओ विकासक मार्गक अनिवार्यतापर जोर देलनि अछि । मनुष्यक उन्नतिक हेतु ई दुनू अपरिहार्य अछि । हुनक स्पष्ट मान्यता छनि जे उपयुक्त वातावरणक अभावमे मानवीय गुणक क्षय होइत छैक, जकर उदाहरण ढेङ तर पिचायल पीयर आँकुर थिक ।

एहि निबंधक पाठसँ स्पष्ट बुझना जाइछ जे लेखक समाजक सम्यक् विकासक प्रबल आकांक्षी छथि । ओ ओहन प्रतिभा लेल चिंतित छथि, जे उचित वातावरणक अभावमे अंकुरित होयबासँ पूर्वहि मौला जाइत अछि, निर्देशनक अभावमे दिशाहीन भऽ जाइत अछि । लेखक मैथिलानीमे सुषुप्त गार्गी आ भारतीक प्रतिभा दिस सेहो ध्यान आकृष्ट कयलनि अछि । हुनका विश्वास छनि जे उचित वातावरण तैयार भेलासँ मैथिलानी सेहो बेस प्रगति करतीह । हुनक कहब अछि जे भारतीय पुरुष आ स्त्रीमे ओ सम्पूर्ण सिद्धांत आ आदर्श उपलब्ध अछि जकरा मानवीय गुणक संज्ञा देल जाइत अछि । मुदा, दुर्भाग्य जे उचित वातावरणक अभावमे ओ पनपि नहि पबैत अछि ।

मणिपद्मजी एहि बातक उल्लेख कयलनि अछि जे अंग्रेजलोकनि विभिन्न माटि-पानिक आँकुरकेँ चिन्हबामे पारंगत रहथि । भारतपर शासन करबाक क्रममे विभिन्न प्रान्तक लोकसँ हुनक विशेषताक अनुरूप कार्य करबौलनि । एक दिस गोरखालोकनिकेँ राइफलधारी आ भोजपुरवासीकेँ पुलिस बनौलनि तँ दोसर दिस दक्षिण भारतीयकेँ आइ.सी.एस. ओ बंगालीसँ किरानी आ स्टेशन मास्टरक काज करौलनि । भारतीय संस्कृतिक जड़ि एहि माँटिमे एतेक सोर धरि गेल छल जे पराधीनताक ओहू स्थितिमे महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रसिद्ध वैज्ञानिक सी.बी. रमण आ महान दार्शनिक राधाकृष्णनक अविर्भाव भेल, जखन कि आन उपनिवेश यथा अफ्रिका, आस्ट्रेलिया आ कनाडा सन देश एहन कोनो कवि, कलाकार, वैज्ञानिक आ दार्शनिक नहि दऽ सकल ।

आइ हमरालोकनि स्वतंत्र छी । गुलामीक भरिगर ढेङ आब हँटि गेल अछि। ढेङ तर मिरमिराइत सुन्दर आँकुर अन्हारमे रहैत-रहैत पीयर भऽ गेल । आब ई चेतना जाग्रत करबाक अछि जे प्रकाश, जल आ खादक अभावमे आँकुर नष्ट ने भऽ जाय। ओकरा लेल उपयुक्त वातावरण तैयार करी, जाहिसँ ओ प्रस्फुटित ओ विकसित भऽ सकय ।

लेखकक सुझाव छनि जे एहन आँकुरसभक विकास लेल स्थानीय विश्वविद्यालय स्थानविशेषक विशेषतासँ युक्त विषयकेँ प्रोत्साहित करय । जेना मगध विश्वविद्यालयमे सैनिक विषयक प्रमुखता देल जाय आ मिथिला विश्वविद्यालयमे कला आ दर्शन विषयक प्रमुखता देल जाय

तँ कतेको महान विभूति उत्पन्न भऽ सकैत अछि । ओना, मनुष्य अद्‌भुत आ असाधारण जीव अछि । ओ कतऽ कोन रूपमे विकसित भऽ जायत से कहनाइ कठिन । मुदा तँ विभिन्न माटि-पानिमे जे स्थानीय विशेषता होइछ- ओकरा नकारलो नहि जा सकैछ ।

7.4 अंतर्वस्तु

निबंधक मूल पाठ ओ ओकर सार पढ़ि अहाँ बुझि गेल होयब जे मणिपद्मजी एहिमे की कहऽ चाहलनि अछि । एहि भागमे हमसभ निबंधक अंतर्वस्तुपर विचार करब । मणिपद्मजी एहि निबंधमे भारतक विभिन्न क्षेत्रक क्षमतावान लोकक विवशता आ दुर्दशाकेँ अपन विषय बनौलनि अछि । अत: निबंधक अंतर्वस्तु राष्ट्रीय ओ समाजशास्त्रीय रूप ग्रहण करैत अछि । परिणामत: एहिमे मणिपद्मजीक राष्ट्रीय चिंतन आ सामाजिक विचार विशेष रूपेँ प्रकट भेल अछि । लेखक कवि सेहो छथि । तेँ निबंधमे स्थान-स्थानपर हुनक भावुकताक परिचय सेहो भेटैत अछि । विचारक संग एहिमे हुनक भावनाक सेहो समुचित योगदान अछि । अत: एतऽ हमसभ अंतर्वस्तुक दृष्टिसँ हुनक विचारपक्ष ओ भावपक्ष– दुनूक विवेचना करब ।

7.4.1 विचारपक्ष

'पीयर आँकुर'केँ समस्याप्रधान होयबाक कारणेँ एकरा विचारमूलक निबंध सेहो कहल जा सकैछ । एहिमे निबन्धकार मुख्य रूपसँ चिंतक ओ विचारकक रूपमे हमरासभक समक्ष उपस्थित भेल छथि । समस्याक विश्लेषणमे ओ अपन राष्ट्रीय ओ सामाजिक सोचक परिचय देलनि अछि । लेखकक चिंतन छनि जे मनुष्य जीवनकेँ सुंदर ओ उपयोगी बनयबाक हेतु सिद्धांतसँ संबंध राखऽवला अंतर्मुखी शक्तिकेँ सम्पूर्ण विकासक सुविधा देबऽ पड़त । जा धरि आंतरिक ओ बाह्य विकास एक दोसरपर निर्भर भऽ एक दोसरक संग जुड़ि आगाँ नहि बढ़त ता धरि हमरालोकनि ने तँ ढंगसँ जीबि सकब आ ने अपन सम्यक् विकास कऽ सकब ।

वस्तुत: निबन्ध अभिव्यक्तिक ओ रूप थिक, जकर कोनो पद्धति, विषय अथवा विचारक पूर्वसँ कोनो धारणा नहि रहैछ । निबन्धकार कोनो विषयपर किछु कहबा लेल भाषा ओ शिल्पक चयन अपन रुचिएँ करैत छथि ।

मैथिलीमे जतबा तरहक निबंध लिखल गेल अछि, तकरा तीन कोटिमे राखल जा सकैछ– वस्तुसम्बद्ध, भाव-विचारसम्बद्ध एवं सन्दर्भसम्बद्ध । पुन: एहि तीन वर्गकेँ विभिन्न उपवर्गमे विभाजित कयल जा सकैत अछि । एहि तरहेँ वस्तुसम्बद्ध निबंधक अन्तर्गत तथ्यात्मक, वर्णनात्मक ओ संस्मरणात्मक निबंधक गणना होयत । तहिना भाव-विचारसम्बद्ध निबंधक अन्तर्गत लोकगीतात्मक, विचारात्मक, भावात्मक ओ वैयक्तिक आ ललित निबंध परिगणित होयत । सन्दर्भसम्बद्ध निबंधमे ग्रन्थ-भूमिका, हास्यस्तम्भीय निबंध, सम्पादकीय ओ भाषणिक निबंध सम्मिलित कयल जायत ।

मणिपद्मजीक 'पीयर आँकुर' भाव-विचारसम्बद्ध निबन्धक अन्तर्गत विचारात्मक निबंधक कोटिमे अबैत अछि । प्रस्तुत रचना स्वतंत्रताक पश्चात लिखल गेल अछि । ओहि समयक परिस्थिति, वातावरण भिन्न प्रकारक छल । आजुक सामाजिक राजनीतिक वातावरण बदलि चुकल अछि । स्वतंत्रताक बाद, विशेष रूपसँ भारतीय संविधानक निर्माणक बाद, सभ क्षेत्रमे अधिकारक गांरटी देल गेल । मुदा, मणिपद्मजी जाहि समस्याक उल्लेख कयलनि अछि से एखनो प्रासंगिक अछि । सिद्धांत आ व्यवहारक बीच एखनो बेस दूरी अछि । एहि तरहेँ निबंधक तद्‌युगीन सामाजिक परिवेशकेँ वर्त्तमान युगक सामाजिक-राजनीतिक परिवेशक सोझाँ राखि देखी तँ लेखकक चिंतन बेसी साफ आ सार्थक बुझना जायत ।

उपर्युक्त विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे मणिपद्मजीक एहि निबंधमे राष्ट्रीय ओ सामाजिक चिंतन आ विचारक प्रधानता अछि । मनुष्यक हेतु उपयुक्त वातावरण ओ विकासक मार्ग खुजब आवश्यक अछि, तखनहिं राष्ट्रक प्रगति सम्भव थिक ।

7.4.2 भावपक्ष

हमरालोकनि पहिनहि चर्चा कऽ चुकल छी जे मणिपद्मजी कवि सेहो छथि । एहू निबंधमे हुनक भावुकता चिंतन आ विचारपर अपन छाप छोड़ने अछि । भाव आ विचार परस्पर विरोधी नहि थिक, अपितु एक दोसरक पूरक थिक । अनुभव विचारक आधार होइत अछि । कोनो प्रकारक अनुभव अपन संदर्भक सीमामे भाव रहैत अछि, मुदा वैह समाजक बाहरी संबंधक बीच कटि-छँटि, बनि-ठनिकऽ विचार, बुद्धि आ विवेकक रूप धारण कऽ लैत अछि । भावक संग कर्त्तव्यक एक हल्लुक बोध समाहित रहैत अछि, मुदा वैह जखन विवेक-युक्त विचारक रूप धारण कऽ लैछ तँ कर्त्तव्य-बोध बेसी व्यापक ओ तीव्र भऽ जाइत अछि । मणिपद्मजीक संबंधमे सेहो भाव आ विचारक यैह स्थिति अछि ।

लेखक भारतीय लोकक समस्या एवं दुर्दशाक कारणपर तर्कपूर्ण विचार करैत भावुक भऽ उठैत छथि । खासकऽ मिथिलांचलक लोकक दुर्दशाक चित्रण करैत लेखक कहैत छथि 'विकसित नहि होयबाक कारण ओ रामलीलावला, नटकिया, भनसिया, कीर्तनियाँ आ कथावाचकक रूप लऽ लेलक तथा एहि भूमिक चित्रकला कोबरक भीतपर कनैत रहि गेल, नृत्यकलाकेँ मनचुब्बी आ जालिमसिंहक रूप लेमऽ पड़लैक, सहित्य एकर नारीक कंठसँ समदाउनि बनि कानि उठलैक, संगीत ओकर डोमक ओढ़नी स्वरमे कुसुमा दीनाक विलाप बनि चीत्कार कऽ उठल, ज्योतिष एकादशी ओ अतिचारक निर्णय करैत हपसऽ लगलैक ।' वस्तुतः एतऽ निबंधकारक आत्मानुभव आधारित भाव व्यक्त भेल अछि । एहि प्रकारक भावात्मक स्थल निबंधक चिंतन ओ विचारप्रधान रूपकेँ कतहु खण्डित नहि करैछ, अपितु एहन स्थल विचारपक्षकेँ पुष्ट करैत ओकरा सरस, आकर्षक ओ पठनीय बना दैत अछि ।

7.5 परिवेश

प्रस्तुत निबंधमे व्यक्त विचारकेँ लऽ अहाँक मनमे कतेको तरहक आशंका भऽ सकैत अछि, कारण आजुक सामाजिक राजनीतिक परिवेश बहुत दूर धरि बदलि गेल अछि । प्रस्तुत निबंध स्वतंत्रताप्राप्तिक तुरंत बाद लिखल गेल अछि । ओहि समय एक दिस स्वाधीनता आंदोलन अपन चरमोत्कर्षपर छल तँ दोसर दिस अछूतोद्धार आंदोलन, नारीमुक्ति आंदोलनक संग समाज-सुधारक बहुतो आंदोलन चलि रहल छल । मुदा, लेखक जाहि समस्याकेँ उठौलनि अछि से आइयो प्रासंगिक अछि । सिद्धांत आ व्यवहारक बीचक दूरी आइयो पर्याप्त मात्रामे वर्त्तमान अछि । अनेकानेक परंपरागत रूढ़िवादी संस्कारक चाङुरसँ लोक पूर्णरूपेण मुक्त नहि भऽ सकल अछि । आर्थिक विकास ओ सुविधा मुट्ठी भरि लोकक जेबीक वस्तु बनल अछि । पूजीवादी सामाजिक व्यवस्था आइयो एतेक मजगूत अछि जे ओ जनसामान्यक विकासक मार्ग अवरुद्ध कयने अछि । तेँ एखनहुँ हमरालोकनि पूर्णरूपेण स्वतंत्र नहि छी आ ने संघर्ष समाप्त भेल अछि ।

प्रस्तुत निबंधमे मनुष्यक अवरुद्ध मार्ग आ ओकर विवशताकेँ विषय बनाओल गेल अछि । लेखकक चिंतन छनि जे मनुष्यक जीवनकेँ सुंदर ओ उपयोगी बनयबाक हेतु सिद्धान्तसँ संबंध राखऽयला अंतर्मुखी शक्तिकेँ संपूर्ण विकासक सुविधा देबऽ पड़त ।

इहो उल्लेखनीय अछि जे लेखक गुलामीक पीड़ाक स्वयं भुक्तभोगी छलाह । ओ भारतक लोकक परवशता आ दुर्दशाक प्रत्यक्षदर्शी रहथि आ ओहि दंशसँ छटपटाइत लोकक पथरायल

आँखि बिसरल नहि छल होयतनि । ओहि पीड़ा आ दंशसँ मुक्त भऽ स्वतंत्र वातावरणमे पाँखि पसारि उड़बाक उत्कट आकांक्षा कहियो ओहो कयने होयताह । लेखकक ओही आकांक्षाक स्पष्ट झलक हुनक एहि निबंधमे भेटैत अछि ।

7.6 लेखकीय व्यक्तित्वक अभिव्यक्ति

रचना कोनो हो, ओहिमे लेखकक व्यक्तित्वक छाप रहिते छैक । कोनोमे अप्रत्यक्ष रूपमे रहैत छैक तँ कोनोमे प्रत्यक्ष रूपमे । निबन्ध विधा एहन थिक जाहिमे लेखकक व्यक्तित्व सभसँ बेसी उजागर भऽकऽ समक्ष अबैत छैक । पीयर आँकुरमे मणिपद्मक व्यक्तित्व, हुनक दृष्टिकोण, विचारधारा उभरिकऽ सोझाँ आयल अछि । उदारता, सहानुभूति, परदुःखकातरता, करुणा आ सेवाभाव हुनक व्यक्तित्वक अभिन्न अंग छलनि । आलोच्य निबंधमे लेखकक ई सभ पक्ष परिलक्षित होइत अछि ।

मणिपद्मजीक व्यक्तित्वक प्रथम आ मूलभूत विशेषता थिक सहज-सरल हृदय आ कविसुलभ भावुकता । प्रस्तुत निबंधमे विपरीत परिस्थितिमे जिवितो मनुष्यक प्रतिभाक जे चित्र उपस्थित कयल गेल अछि, से हुनक हृदय आ कविसुलभ भावुकताक परिचय दैत अछि । लेखक विपरीत परिस्थितिकेँ अनुकूल बनयबा लेल सुझाव देलनि अछि जे मानवीय गुणकेँ ककरो कखनो छोड़बाक नहि चाही । हुनक ई सुझाव हुनक दृढ़ व्यक्तित्वक परिचायक थिक । निबंधकार राष्ट्रीय ओ सामाजिक तंत्रक शोषण आ अन्यायपर बड़ सहजतासँ आक्रोश व्यक्त कयलनि अछि, जाहिसँ हुनक समाज-सुधारकक रूप उद्घाटित होइत अछि । मणिपद्मजीक जीवन-शैली संयमित आ संतुलित रहल । लोकसेवाक भावना एहन जे साहित्य-कर्मक संग-संग ओ चिकित्सा-सेवा सेहो आजीवन करैत रहलाह । हुनक व्यक्तित्वक ई विशेषता हुनक रचना-शैलीक माध्यमसँ उद्घाटित भेल अछि । कहल जाइत अछि जे शैलिए ककरो व्यक्तित्व होइछ । मणिपद्मजीक संदर्भमे सेहो ई उक्ति पूर्णतः चरितार्थ होइछ । अपन प्रतिरोध -प्रतिकार, स्वीकृति-अस्वीकृति, आग्रह-अनुरोध एतेक संयत, संतुलित आ कलात्मक ढंगसँ प्रस्तुत करैत छथि जे ओकर प्रभाव स्थायी आ गंभीर पड़ैत अछि । शैलीक एहि गुणकेँ प्राचीन साहित्यशास्त्रीलोकनि 'कान्तासम्मित उपदेश'क संज्ञा देलनि अछि । कहबाक तात्पर्य जे जाहि तरहेँ प्रियतमा पत्नीक सुझावकेँ पति बिना कोनो दबावक प्रेमपूर्वक स्वीकार करैत अछि, ओहिना मणिपद्मजीक बात पाठक प्रेमपूर्वक सुनैत अछि आ ओकरा मानैत अछि ।

मणिपद्मजी लोकगाथाक गम्भीर अन्वेषक रहथि आ संभवतः ओही कारणेँ उपेक्षित जनजीवनक प्रति अनुराग ओ श्रद्धाक भाव रखैत छलाह । हुनक रचनामे सर्वत्र आशाक किरण दृष्टिगोचर होइछ । लेखकक कोनो पात्र दुर्बल नहि भेटत आ ने परिस्थितिक दासे भेटत । ई हुनक दृढ़ व्यक्तित्वक परिचायक थिक । ओ साबित करऽ चाहैत छथि जे लेखनी तरुआरिसँ विशेष शक्तिशाली होइत अछि । मणिपद्मजी कखनो निराश नहि होइत छथि, अपितु मनुष्यक सार्थक जीवनक प्रति पूर्ण अस्था रखैत आबऽवला समयक प्रति आशावान छथि । हिनक मातृभूमिक प्रति प्रेम देखबाक हो तँ से हिनक 'विद्यापति' उपन्यासमे देखल जा सकैत अछि । विद्यापतिक चरित्रक आलम्बन लऽ मणिपद्मजी अपन जन्मभूमिक गौरव-गरिमाक गान कयने छथि । मिथिलाक गौरव हिनक तूलिकाक रंगसँ जेना चमकि उठल । प्रो. हरिमोहन झा हिनक 'विद्यापति' उपन्यासपर अपन सम्मति दैत कहने छलाह जे ''विद्यापति मिथिलाक हेतु जे कैलनि से मणिपद्मजी विद्यापतिक हेतु कैलनि । एहन पितृऋण चुकौनिहार सुपुत्र लाखोमे एक होइत अछि ।'' एवंप्रकारेँ मणिपद्मजीक व्यक्तित्वक अनेको विशेषताक अभिव्यक्ति हुनक रचनामे देखल जा सकैत अछि ।

बोध प्रश्न

एखन धरि अहाँ निबंधक मूल पाठक संगहि ओकर सार, ओकर अंतर्वस्तु, परिवेश आ निबंधमे लेखकीय व्यक्तित्वक अभिव्यक्तिक अध्ययन कऽ चुकलहुँ अछि । आब अहाँ निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर कोष्ठकमे उपसंख्या लिखिकऽ दियऽ आ इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ ओकरा मिलाकऽ जाँचू ।

4) प्रतिकूल वातारणक दाबनिसँ मणिपद्मजी कोन तथ्यक अभिव्यक्ति कलयनि अछि ?

   क) वातारवरणक स्वच्छताकेँ देखौलनि अछि ।

   ख) वातावरणक महत्त्वकेँ व्यक्त कयलनि अछि ।

   ग) वातावरणक दबावक सम्बन्धमे कहलनि अछि ।

   घ) विपरीत परिस्थितिक सम्बन्धमे कहलनि अछि । ( )

5) दर्शन, कला ओ साहित्यक विकासक हेतु की आवश्यक अछि ?

   क) शिक्षकक नियुक्ति । ख) विकासक सुविधा ।

   ग) सुन्दर भवनक निर्माण । घ) उपयुक्त वातावरण । ( )

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नक नीचाँ देल गेल रिक्त स्थानमे उत्तर दियऽ आ तकरा इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ मिलाकऽ जाँचू ।

1) निबंधमे लेखक भारतक प्रतिभावान लोकक दुर्दशाक कारण की कहलनि अछि ? अपन उत्तर पाँच पंक्ति मे दियऽ ।

....

....

....

....

....

....

2) आंतरिक ओ वाह्य विकासक परस्पर सम्बन्ध छौ पँक्तिमे स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

....

....

3) युगीन भारतीय परिवेशकें ध्यानमे रखैत सिद्ध करू जे मणिपद्मजी भारतीय प्रतिभावान लोकक समस्याक यथार्थ चित्रण कयलनि अछि । उत्तर पाँच पंक्तिमे सीमित हो ।

....

....

....

....

....

4) मणिपद्मजीक व्यक्तित्वक तीन प्रमुख विशेषताकें स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

7.7 सरंचना-शिल्प

आब हमसभ प्रस्तुत निबंधक सरंचना-शिल्पपर विचार करऽ जा रहल छी । कथा, उपन्यास, नाटक प्रभृति साहित्यक अन्य गद्यविधासँ निबंधक सरंचना-शिल्पमे बहुत अंतर अछि । निबंधकें गद्यक कसौटी मानल जाइत अछि । चुस्त-दुरुस्त आ सुगठित विधाक कारण निबंधमे भाषा ओ शैली दुनूक विषयमे लेखककें पर्याप्त सावधानी राखऽ पड़ैत छनि । एहि दृष्टिसँ रचनाकार बेसी स्वतंत्रताक उपयोग नहि कऽ सकैछ । सिद्धहस्त लेखक भाषा-शैलीक मान्य सिद्धान्तक उपेक्षा करितो अपन रचना-कौशलक परिचय दैत अछि । विषयगत सुकुमारता एवं अभिव्यक्तिक स्वच्छताक कारणें निबन्ध, गद्यमे रहितहुँ गीतक आनंद प्रदान करैत अछि । ओना, निबंध लेल प्रायः भाषाक मिश्रित ओ बोलचालवला रूप वर्जित अछि । मणिपद्मजी निबन्ध-रचनाक आदर्श रूप प्रस्तुत कयलनि अछि ।

संरचना-शिल्पक दृष्टिसँ भाषा आ शैलीपर फराक-फराक विचार कऽ हमसभ निबंधक विशेषताकें बुझबाक प्रयास करब ।

7.7.1 भाषा

निबंध एक सुगठित ओ सुचिंतित रचना थिक, तेँ एहिमे भाषाक व्याकरणसम्मत स्तरीय परिनिष्ठित रूपकें स्वीकार करऽ पड़ैत छैक । मणिपद्मजी संस्कृतनिष्ठ रूपक आग्रह छोड़ि मैथिलीक तद्‌भव-तत्सम संयुक्त रूपकें स्वीकार कयलनि अछि । एकरा प्रसाद गुण (सरल)सम्पन्न साधु (सहज) भाषाक संज्ञा देल जा सकैछ । एकरा एक उदाहरणक माध्यमसँ सहज रूपमे बुझल जा सकैछ- ''एहन आँकुर सभक विकासक लेल सभसँ आवश्यक छैक स्थानीय विश्वविद्यालयसभक, जाहिमे ओहि ठामक विशेषतासँ युक्त विषयकें सभसँ अधिकतम प्रोत्साहन देल जा सकय । मगध विश्वविद्यालयमे सैनिक विषयक प्रमुखता आ मिथिला विश्वविद्यालयमे कला आ दर्शन विषयक प्रधानता नहि जानि कतेक-कतेक 'महान'कें उत्पन्न कऽ सकत ।''

एतऽ आवश्यक, स्थानीय, विशेषता, प्रोत्साहन, प्रमुखता, प्रधानता आदि शब्द तद्भव शब्दक संग जुड़ि मैथिलीक प्रकृतिक अनुकूल सहज भाषाक स्वरूप प्रस्तुत करैत अछि ।

निबंधकेँ गद्यक कसौटी मानल गेल अछि । संस्कृतक प्राचीन काव्यशास्त्रीलोकनि 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' कहि गद्यकेँ कविक कसौटी स्वीकार कयलनि अछि । कोनो कविक सफल काव्यभाषाक आधार हुनक गद्यभाषाक प्रवीणता थिक । मुदा, कोनो कविक गद्यमे हुनक काव्यात्मक भाषाक योगदानकेँ अस्वीकारल नहि जा सकैछ । मणिपद्मजी जखन कोनो मार्मिक प्रसंगक विश्लेषण करैत छथि तँ हुनक कवि-सुलभ भावुकता अति सहज रूपेँ प्रकट होइत अछि ।

'आइ जखन ओ ढेङ हँटि गेलैक तँ आँकुर सभ टुकुर-टुकुर ताकि रहल अछि । आब एहि सभमे नवजीवनक संचार होयतैक । ई आँकुर सभ आलोक पाबि सबल होयत आ रंग-बिरंगक पत्र-पुष्प आ फलक संग प्रकट होयत ।'

उपर्युक्त तथ्यक आधारपर कहल जा सकैत अछि जे मणिपद्मक गद्यभाषा निबंध रचनाक सभ अपेक्षाकेँ पूर्ण कऽ व्याकरणसम्मत, तद्भव-तत्समयुक्त अत्यन्त सहज भाषा अछि, जे तार्किक प्रसंगमे काव्यात्मक रूप लऽ लैत अछि ।

7.7.2 शैली

लेखकीय व्यक्तित्वक अभिव्यक्तिक संदर्भमे हमसभ मणिपद्मजीक निबंध शैलीपर संक्षेपमे विचार कऽ चुकल छी । एतऽ हुनक शैलीक स्वरूपक किछु विस्तारसँ परिचय आवश्यक अछि । मुख्यतः तीन प्रकारक शैली होइछ– वर्णनात्मक, विवेचनात्मक ओ भावात्मक । उपर्युक्त शैलीक संग ओहिमे अंतर्भूत किछु आर शैली अछि जकरा लाक्षणिक शैली, सांकेतिक शैली, चित्रात्मक शैली प्रभृति नाम देल गेल अछि । गंभीर चिंतन, विचार-प्रधान अथवा समस्या-प्रधान निबंधमे एकर उपयोग प्रायः नहि होइछ । मणिपद्मजीक प्रस्तुत निबंधकेँ समस्यामूलक होयबाक कारणेँ विवेचनात्मक शैलीक कहल जा सकैछ ।

'पीयर आँकुर' निबंधक आरम्भ गुलामी ओ अनुपयुक्त वातावरणक वर्णनसँ भेल अछि । एकरा स्पष्ट करबा लेल कथाकार विपरीत परिस्थितिमे कार्य करैत भारतीय लोकक दुर्दशाकेँ उदाहरणक रूपमे लेलनि अछि तथा ओकर माध्यमसँ उपयुक्त वातावरण ओ विकासक मार्गक अनिवार्यताकेँ रेखांकित कयलनि अछि । अपन मान्यताक पुष्टि लेल उदाहरण दैत ओ लिखलनि अछि– ''मिथिलाक माटि-पानिमे युग-युगसँ साहित्य, कला आ दर्शनक बीय संचित छैक । जहिया कहियो विकासक सुविधा भेटलैक ओ बीज वृक्ष बनि आयाची, मंडन, वाचस्पति आ विद्यापतिक रूपमे पत्र-पुष्पसँ युक्त भेल ।''

प्रस्तुत निबंधमे पराधीनताजन्य समस्या आ ओकर मूल कारणक समाजशास्त्रीय व्याख्या कयल गेल अछि । भारतीय प्रतिभाक कोन तरहेँ दुरुपयोग होइत अछि आ कोना ओ शारीरिक ओ मानसिक यातना भोगबाक हेतु बाध्य होइत अछि– एहि कटु सत्यक विवेचन-विश्लेषण कयल अछि । अवरुद्ध विकासक समस्या आ ओकर कारणक राष्ट्रीय सन्दर्भमे समाजशास्त्रीय व्याख्या करैत ओ भावात्मक शैलीक प्रयोग करैत देखल जाइत छथि । जेना दासत्वक ढेङ तर दबल भारतीय प्रतिभाक दयनीय स्थितिक वर्णन करैत निबंधकार भावुक भऽ उठल छथि– ''देखैत छी ओकरा तरमे मुरझायल, मरइमान पीयर-पीयर घास आ कते तरहक सुन्नर बीजक पीयर-पीयर आँकुर, मुदा सभ मिरमिराइत, आलोक लेल बेलल्ला भेल । आइ जखन ओ ढेङ हँटि गेलैक तँ आँकुर सभ टुकर-टुकर ताकि रहल अछि, आब एहि सभमे नवजीवनक संचार होयतैक । ओ आँकुर सभ आलोक पाबि सबल होयत आ रंग-बिरंगक पत्र-पुष्प आ फलक

संग प्रकट होयत ।'' मणिपद्मजी पूर्ण आशावान छथि जे आबऽवला समय निश्चित रूपसँ सुखद होयत, जाहिमे भारतीय प्रतिभाक उचित मूल्यांकन सम्भव भऽ सकत ।

एहि प्रकारेँ प्रस्तुत निबंधमे भारतीय प्रतिभाक संग भेल अन्याय ओ शोषणक अत्याचार पाठककेँ आंदोलित करबामे पूर्ण समर्थ भेल अछि । सम्पूर्ण निबंधमे विवेचनात्मक शैलीक संग भावात्मक शैलीक प्रयोग निबंधक निष्कर्षकेँ यथार्थ आ प्रामाणिक बना देलक अछि ।

7.8 शीर्षक ओ प्रतिपाद्य

कोनो रचनामे, निबन्धमे सेहो, शीर्षकक बड़ महत्त्व अछि । लेखकक अभीष्ट शीर्षकेसँ झलकि जयबाक चाही । ताहूमे विषयनिष्ठ निबंधक शीर्षक चुनबामे निबंधकारकेँ बहुत सावधानी राखऽ पड़ैत छनि । अहाँ ऊपरे-ऊपर देखब तँ बुझायत जे शीर्षकसँ एहि निबंधक अंतर्वस्तु अथवा प्रतिपाद्यक कोनो विशेष संबंध नहि अछि, मुदा एहि निबंधक गहन अध्ययन कयलाक बाद अहाँ बुझि गेल होयब जे मणिपद्मजी 'पीयर आँकुर' शीर्षककेँ प्रतिपाद्यक संग कोना कुशलतापूर्वक जोड़लनि अछि । लेखक कोनो निश्चित उद्देश्यसँ प्रेरित भऽ रचना करैत छथि । ओ उद्देश्ये रचनाक प्रतिपाद्य होइछ । एहि निबंधमे सेहो मणिपद्मक एक निश्चित उद्देश्य छनि, जकरा एकर प्रतिपाद्य कहल जा सकैछ । मिथिलाक माटि-पानिमे युग-युगसँ कला, साहित्य आ दर्शनक बीज संचित छैक । वैह बीज प्रस्फुटित भऽ एकसँ एक मनीषीकेँ तैयार कयलक अछि, जकर सुगंधिसँ देश-विदेश सुरभित भेल । मुदा, प्रतिकूल वातावरणक कारणेँ ओहि गतिमे ठहराव आबि गेल । निबंधकार ओही समस्याक संबंधमे चिंतन कऽ ओकर निराकरणक मार्ग प्रशस्त कयलनि अछि ।

वस्तुतः वैह निराकरणक मार्ग निबंधक प्रतिपाद्य थिक । निबंधकार भारतीय नागरिककेँ आ विशेष कऽ मिथिलाक लोककेँ जागरूक बनयबाक प्रयास कयलनि अछि । आइ हमरालोकनि स्वतंत्र भारतक नागरिक छी, मुदा एखनो कोनो-ने-कोनो रूपेँ परवशताक शिकार छीहे । तेँ बहुत पहिनहिँ लिखल गेल प्रस्तुत निबंध आइयो प्रासंगिक बनल अछि । हमरासभ लेल ई आइयो विचारणीय थिक ।

बोध प्रश्न

आब अहाँ इकाइक सम्पूर्ण अध्ययन कऽ चुकल छी । एतऽ इकाइसँ सम्बन्धित प्रश्नक उत्तर दियऽ । अन्तमे देल गेल उत्तरसँ मिलाकऽ जाँच करू-

6) एहि निबंधक भाषामे कोन तरहक शब्दक प्रधानता अछि ?

   क) तद्भव-तत्समसँ युक्त

   ख) तत्सम

   ग) तद्भव

   घ) संस्कृत ☐

7) एहि निबंधमे कोन शैलीक प्रधानता अछि ?

   क) भावात्मक शैली

   ख) विवेचनात्मक शैली

   ग) वर्णनात्मक शैली

   घ) व्यंग्यात्मक शैली ☐

8) एहि निबंधक प्रतिपाद्य की अछि ? सही उत्तर कोष्ठकमे निर्दिष्ट करू ।

क) नारी-समस्याक चित्रण,

ख) भारतीय प्रतिभाक दुर्दशाक चित्रण,

ग) गुलामीक चित्रण,

घ) मिथिलांचलक समस्याक चित्रण । 

9) मणिपद्मजीक विवेचनात्मक शैलीमे नीचाँ देल गेल किछु तथ्य सही अछि आ किछु गलती । निशान लगाकऽ कहू जे कोन सही अछि आ कोन गलती ?

क) भारतीय लोकक समस्याक पुनर्व्याख्या कयल गेल अछि । (सही/गलत)

ख) स्वानुभवक आश्रय लेल गेल अछि । (सही/गलत)

ग) समस्याक निवारणपर जोर देल गेल अछि । (सही/गलत)

घ) आलोक आ जलक महत्त्वपर विचार कयल गेल अछि । (सही/गलत)

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ आ इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ मिलाकऽ जाँच करू ।

5) एहि निबंधक भाषा संबंधी विशेषताकेँ छौ पंक्तिमे स्पष्ट करू ।

6) एहि निबंधक शैली संबंधी कोनो तीन विशेषताक उल्लेख करू।

7) एहि निबंधक प्रतिपाद्यक सभसँ महत्त्वपूर्ण पक्षकेँ स्पष्ट करू।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

7.9 सारांश

'पीयर आँकुर' शीर्षक निबंधसँ संबंधित एहि इकाइकेँ पढ़लाक बाद अहाँ निम्नलिखित तथ्यकेँ नीक जकाँ बुझि अपन भाषामे व्यक्त कऽ सकैत छी ।

- मणिपद्मजीक कवि व्यक्तित्व ओ गद्यकार व्यक्तित्वक अंतरपर एहि इकाइमे विस्तारसँ विचार कयल गेल अछि । हुनक जीवनशैलीक वास्तविक प्रतिनिधित्व हुनक गद्यसाहित्य करैत अछि । प्रस्तुत इकाइक अध्ययनक बाद एहि तथ्यकेँ अहाँ नीक जकाँ व्यक्त कऽ सकैत छी ।
- निबंधक अंतर्वस्तु विचार-पक्ष आ भाव-पक्षक विशेषताकेँ बुझबाक संगहि अहाँ विचार ओ भावक परस्पर संबंधक विश्लेषण सेहो कऽ सकैत छी ।
- कविसुलभ भावुकता, सहानुभूति आ सहृदयता मणिपद्मक व्यक्तित्वक मूलभूत विशेषता थिक । एहि तथ्यकेँ अहाँ नीक जकाँ बुझि अपन भाषामे लिखि सकैत छी ।
- निबंधक रचनाकालीन सामाजिक परिवेशकेँ एहि इकाइक माध्यमसँ बुझलाक बाद अहाँ मणिपद्मक विचारक वर्तमान संदर्भमे सही मूल्यांकन कऽ सकैत छी ।
- एहि इकाइमे सरंचना-शिल्पक संदर्भमे मणिपद्मक गद्यभाषाकेँ हुनक काव्यभाषासँ भिन्न मैथिलीक प्रकृतिक अनुकूल प्रयोगपर विशेष रूपसँ प्रकाश देल गेल अछि । एहि तथ्यकेँ बुझि अहाँ स्वयं ओहिपर समुचित विचार अपन भाषामे कऽ सकैत छी ।
- ओना मणिपद्मक शैली विवेचनात्मक अछि, मुदा ओहि लेल तर्क-वितर्क ओ व्याख्या-विश्लेषणक अपेक्षा ओ स्वानुभूत भावकेँ विशेष आधार बनौलनि अछि । अतः हुनक विवेचनात्मक शैलीमे भावात्मक शैलीक समावेश कुशलताक संग भेल अछि । अहाँ एकरा नीक जकाँ बुझि विवेचित-विश्लेषित कऽ सकैत छी ।
- निबंधक शीर्षकक महत्त्वकेँ रेखांकित करैत ओकरा प्रतिपाद्यसँ जोड़बाक विशेष प्रयास कयल गेल अछि । एकरा बुझिकऽ अहाँ निबंधक प्रतिपाद्यकेँ सहजतासँ भाषामे व्यक्त कऽ सकैत छी ।

7.10 शब्दावली (मूल पाठमे प्रयुक्त)

ढेङ : खसल लकड़ीक पैघ टुकड़ा
चाकर : चौरस, चौड़गर
मरइमान : मरणासन्न
आँकुर : अंकुरित बीया
मिरमिराइत : दीन-हीन, कमजोर
बेलल्ला : व्याकुल
टुकुर-टुकुर : कातर दृष्टिसँ देखब
आलोक : प्रकाश
दासत्वक ढेङ : गुलामीक बोझ
तमाशा : दर्शनीय खेल
प्रवृत्ति : स्वभाव
उपयुक्त : उचित
संतुष्ट : आत्मतुष्टि
अन्वेषण : खोज
प्रयत्न : प्रयास
पिलपिलाइत : कमजोर
नेतृत्व : नेताक गुण, दिशा देखयबाक क्षमता
संचित : जमा कयल
दाबनि : जकरा द्वारा कोनो वस्तु अथवा व्यक्तिकेँ दबाकऽ राखल जाय
अवरुद्ध : ठमकि जायब
विकसित : फुलायब
समदाउनि : लोकगीतक प्रभेद (विछोह गीत)
विलाप : रुदन
प्रस्फुटित : फुलायल
गहीँर : भीतर धरि
विपन्न : आर्थिक रूपसँ हीन
आविर्भाव : उत्पत्ति
विशेषता : गुण
परिणाम : नतीजा
मौलायल : मुरझायल
अतिचार : प्रतिबंधित समय
चीत्कार : तेज करुण स्वर
सुषुप्त : सूतल
परम्परा : पूर्वसँ अबैत कोनो नियम, व्यवस्था

7.11 बोध प्रश्न/अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न

1) क

2) ग

3) क

4) घ

5) घ

6) क

7) ख

8) ख

9) क) सही

ख) सही

ग) सही

घ) गलत

अभ्यास

1) भारतीय प्रतिभा परवशताक बेड़ीमे जकड़ल रहबाक कारणें अपन समुचित विकास करबामे असमर्थ रहल । गुलामीक बेड़ीमे जकड़ल ओकर प्रतिभा पंगु भऽ कुंठित भऽ गेल । तेँ ओ बहुत दिन धरि दीन-हीन अवस्थामे रहि गेल ।

2) व्यक्तिगत अनुभवसँ जुड़ल भाव व्यापक सामाजिक संदर्भसँ संयुक्त भऽ विचारक संज्ञा प्राप्त करैत अछि । स्वानुभव जा स्व-संबंध धरि सीमित रहैछ ता भाव कहबैत अछि, मुदा वैह जखन समाजक बाह्य संबंध आ दोसरक अनुभवक बीच कटि-छँटि आ बनि-ठनि बुद्धि-विवेकक रूप धारण कऽ लैत अछि तँ विचारक संज्ञा प्राप्त करैछ । तेँ भाव आ विचार एक दोसरक पूरक आ अन्योन्याश्रित अछि, अर्थात् एक दोसरापर आश्रित अछि ।

3) भाग 7.5 (परिवेश) मे देल गेल सामग्रीक आधारपर एकर सही उत्तर अहाँ स्वयं लिखि सकैत छी ।

4) मणिपद्मक व्यक्तित्वक पहिल विशेषता अछि सहृदयता । ओ कोनो दुःखद प्रसंगपर करुणासँ अभिभूत भऽ जाइत छथि । हुनक व्यक्तित्वक दोसर विशेषता अछि पीड़ित व्यक्तिक प्रति असीम सहानुभूति, जकर उदाहरण निबंध द्वारा भेटैत अछि । हुनक व्यक्तित्वक तेसर विशेषता अछि अन्याय ओ शोषणक विरुद्ध विरोधक प्रवृत्ति । एहि निबंधमे हुनक व्यक्तित्वक ई तीनू विशेषता प्रमुखताक संग उद्घाटित भेल अछि ।

5) भाषाक तत्सम संस्कृतनिष्ठ रूपक आग्रहकेँ छोड़ि मणिपद्म तद्भव-तत्समसँ संयुक्त शब्दावलीकेँ अपन निबंधक आधार बनौलनि अछि । बहुतो तत्सम शब्द तद्भवक संग एहि कुशलतासँ राखल गेल अछि जे ओ मैथिलीक वास्तविक प्रकृतिक अनुकूल सहज, सरल ओ प्रवाहमय भाषाक रूप प्रस्तुत करैत अछि । हुनक भाषा व्याकरणसम्मत अछि ।

6) मणिपद्मक शैलीक प्रमुख विशेषता थिक हुनक विवेचनात्मकता । दोसर विशेषता विवेचनक संग भावात्मकताक कुशल संयोग । तेसर विशेषता अछि तर्क-वितर्क आ खण्डन-मण्डनक बौद्धिकताक स्थानपर विषयक पुष्टि लेल विभिन्न उदाहरण ओ स्वनुभूत जीवनतत्त्वक आश्रय लेब ।

7) एहि निबंधक मुख्य प्रतिपाद्य भारतीय प्रतिभाक दुर्दशाक विभिन्न पक्षक उद्घाटन करैत ओकर वास्तविक कारणसँ अवगत कराय मनुष्य समुदायकेँ जाग्रत करब थिक । एहि प्रक्रियामे अवरोधक तत्त्वसँ लेखक हुनका सभकेँ सावधान कयलनि अछि। मनुष्य अपन क्षमताक सदुपयोग स्वयं जागरूक भऽ कऽ सकैत अछि । यैह आलोच्य निबन्धक निष्कर्ष थिक ।



इकाइ 8 एकांकी : हथटुट्टा कुरसी (सुधांशु 'शेखर' चौधरी)

इकाइक रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

एहि इकाइमे हम मैथिलीक प्रसिद्ध नाटककार सुधांशु 'शेखर' चौधरीक एकांकी 'हथटुट्टा कुरसी'क अध्ययन करऽ जा रहल छी । एकर अध्ययनक पश्चात अहाँ :

- साहित्यक एक विधाक रूपमे एकांकीक विशेषताक ज्ञान प्राप्त कऽ सकब,
- नाटककार आ एकांकीकारक रूपमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक महत्त्वकेँ बुझि सकब,
- एकांकीक कथासार एवं ओकर अन्तर्वस्तुक ज्ञान प्राप्त कऽ सकब,
- एकांकीक चरित्र-विधानक विशेषता जानि सकब,
- रचनाक युगीन परिवेशकेँ लेखकक अपन मानसिकताक संदर्भमे हृदयंगम कऽ सकब,
- एकांकीक अभिनेयता एवं संवाद-कौशलक संदर्भमे ओकर रचना-शिल्पक सूक्ष्मताकेँ बुझि सकब,
- एकांकीक प्रतिपाद्यसँ अवगत भऽ सकब ।

8.1 प्रस्तावना

अहाँ एहि खण्डक पूर्वक इकाइसभमे कविता, कथा एवं निबन्धक अध्ययन कयलहुँ अछि । एहि इकाइमे अहाँ एक गोट एकांकीक अध्ययन करब । उपन्यास, कविता, निबन्धक यथेष्ट आनन्द पढ़िकऽ वा सुनिकऽ लेल जा सकैत अछि, मुदा नाटक जकाँ एकांकीक वास्तविक आनन्द रंगमंचपर दृश्यक अवलोकनहिसँ प्राप्त कयल जा सकैत अछि । गद्य विधाक अन्तर्गत कथा एवं उपन्यासमे जे अन्तर अछि, सैह अन्तर नाटक ओ एकांकीमे अछि । कथाकेँ जेना

लघुउपन्यास आ उपन्यासकेँ पैघ कथा नहि कहल जा सकैछ, ओहिना एकांकीकेँ लघुनाटक तथा नाटककेँ पैघ एकांकी नहि मानल जा सकैछ । कथा सदृश एकांकी साहित्य पृथक एवं स्वतंत्र विधा थिक । कथे जकाँ एकांकियोमे जीवनक कोनो एक मार्मिक घटना, मार्मिक दृश्य अथवा महत्त्वपूर्ण स्थितिक अभिव्यक्ति होइत अछि । किन्तु, कथा एवं एकांकीक शिल्प-संरचनामे पर्याप्त अन्तर अछि । कथामे जतऽ कथाकार घटनाकेँ एक-दोसरासँ जोड़बामे आ चरित्रक चित्रण करबामे स्वतंत्र होइत छथि, एकांकीकारकेँ एहन स्वतंत्रता नहि रहैत छनि । ओ पात्रक पारस्परिक वार्त्तालाप (गप-सप) आ ओकर क्रिया-कलापक माध्यमहिसँ कथाकेँ विस्तार दैत छथि । कोनो पात्रक चरित्रक विषयमे अथवा रचनाक उद्देश्यक विषयमे हुनका अपना दिससँ किछु कहबाक स्वतंत्रता नहि रहैत छनि, फलस्वरूप कथासँ भिन्न रंगमंचीयता एकांकीक महत्त्वपूर्ण उपकरण वा तत्त्व मानल जाइत अछि ।

एकांकी मैथिली गद्य साहित्यक अपेक्षाकृत नव किन्तु विकसित विधा थिक । आधुनिक मैथिली साहित्यमे प्रहसन एवं एकांकी रचनाक श्रीगणेश बीसम शताब्दीक चारिम दशकमे भेल । मैथिलीक ई विधा संस्कृत साहित्यक लक्षणानुसार प्रारंभ भेल छल, जकर उदाहरण अछि– मुंशी रघुनन्दन दासक 'दूतांगद व्यायोग'। किन्तु आधुनिक भारतीय भाषा एवं पाश्चात्य भाषा साहित्यक प्रभाव मैथिली एकांकीक शिल्प-संरचनापर आशातीत पड़ल, जकर सुपरिणाम भेल जे कतिपय एकांकीकार, यथा– कुमार गंगानन्द सिंह, प्रो. हरिमोहन झा, डॉ. कांचीनाथ झा'किरण', प्रो. तन्त्रनाथ झा, व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', चन्द्रनाथ मिश्र'अमर' क्रमशः जीवन-संघर्ष, अयाची मिश्र, कर्ण, घटकक पराभव, शस्त्र ओ शास्त्र, ब्रह्मस्थान सन प्रसिद्ध एकांकीक रचना कऽ मैथिली साहित्यक एहि विधाकेँ तीव्र गति प्रदान कयलनि । सम्प्रति मैथिली साहित्यक एहि विधामे कतिपय नव प्रयोग भेल अछि, जाहिमे ध्वनि-रूपक (रेडियो एकांकी) अत्यधिक गति पकड़लक अछि ।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी मैथिलीक प्रसिद्ध लेखक थिकाह । प्रारम्भमे ई हिन्दीक अनेक मंचोपयोगी लोकप्रिय नाटक लिखलनि, उपन्यासक रचना कयलनि, संगहि मैथिलीमे कथा आ कविता लिखैत छलाह । 1960 मे मिथिला मिहिरमे सम्पादक भेलाक बादहिसँ विशुद्ध मैथिलीक लेखक भऽ गेलाह । ई उपन्यास, निबन्ध, समीक्षा, कथा, कविता प्रभृति अनेक विधामे स्तरीय रचना कयलनि, किन्तु अपनाकेँ मूलतः नाटककार मानैत रहलाह । हिनक नाटक आ एकांकीकेँ नवीन शिल्प एवं तकनीकसँ युक्त मैथिली साहित्यक विशिष्ट निधि मानल गेल अछि । हिनक प्रकाशित उपन्यास थिक– तऽर पट्टा ऊपर पट्टा, दरिद्रछिम्मड़ि, ई बतहा संसार एवं निवेदिता । 'ई बतहा संसार' पर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित भेल छथि । समालोचनात्मक निबन्धसंग्रह– सन्दर्भ एवं विवेचना (सम्पादित) थिकनि । ई मैथिली नाट्यजगतमे एक नव शिल्पक प्रयोग कयलनि । जे प्रसिद्धि हिनका नाट्यकृति लऽकऽ भेटलनि, से आन विधामे नहि । हिनक प्रसिद्ध नाटक थिक– भफाइत चाहक जिनगी, लेटाइत आँचर, पहिल साँझ आ लगक दूरी । एहि चारू नाटकक महत्त्व नाट्य-शिल्पक नव प्रयोग तथा ओकर अनुरूप कथाक नव विन्यास लऽकऽ अछि । 'शेखर' ओहि कालक नाट्यकार रहथि जनिक मानस नव टेकनीककेँ लऽकऽ बेसी चिन्ताकुल रहलनि । ई खास नाट्य-शिल्पक अनुसंधानमे एक सेट ओ एक कालखण्डक नव नाट्य-प्रयोग मैथिलीमे अनलनि । एहि प्रयोगक ई प्रवर्तक भऽ गेलाह ।

एहि इकाइमे अहाँ सुधांशु 'शेखर' चौधरीक एकांकी 'हथटुट्टा कुरसी'क अध्ययन करऽ जा रहल छी । शेखरजीक जन्म भेल छलनि 1922 इस्वीमे आ मृत्यु भेलनि 1990 इस्वीमे । ई दरभंगाक मिश्रटोलाक वासी छलाह, मुदा जीवनक महत्त्वपूर्ण समय पटनामे बितौलनि । पटनासँ प्रकाशित 'मिथिला मिहिर' नामक पत्रिकाक सम्पादक-रूपमे हिनका बेस ख्याति भेटलनि । 'हथटुट्टा कुरसी' शेखरजीक प्रसिद्ध एकांकी थिकनि । एहिमे एक नोकरिहारा पुत्रक प्रति

पिताक भावनाकेँ अभिव्यक्ति देल गेल अछि । मिथिलाक आर्थिक स्थिति कतेक दयनीय छैक आ ओ एहि ठामक लोकक सोच-विचारकेँ कतेक दूर धरि प्रभावित कयने अछि, तकर एक फाँकी एहि रचनामे भेटैत अछि । कमौआ पूतक मोल बढ़ब एहन समाज लेल महत्त्वपूर्ण घटना थिक । एही घटनाकेँ उद्घाटित करबाक उद्देश्यसँ ई एकांकी लिखल गेल अछि, जकर मूल पाठ अहाँक गहन अध्ययन लेल प्रस्तुत कयल जा रहल अछि ।

8.2 एकांकीक वाचन

हथट्टुा कुरसी

पात्र : कंटीर, नेनमणि, डाकपिन ।

[**स्थान-** निम्नमध्यवित्त गृहस्थक एकटा घर । घर दुमूहाँ अछि, सोझाँक देबालमे एक चौकठि-केबाड़ लागल अछि, जाहि दऽकऽ लोक आङन दिस जाइत अछि । दोसर चौकठि-केबाड़ दहिन भाग देबालमे अछि, जाहि बाटेँ लोक बाहरसँ अबैत अछि । घरक जे स्थिति अछि ताहिसँ स्पष्ट बुझना जाइछ जे कोनो खास व्यक्तिक रहबाक हेतु ई आइए खाली कराओल गेल अछि । एकटा चौकी मात्र राखल छैक, सेहो उचित स्थानपर नहि । देबालक झोलझाल एखनो विद्यमान अछि, जे सफैयाक बाट जोहि रहल अछि । समय प्राय: दिनक नओ बजैत होयतैक । पर्दा उठैत आङनक दिससँ आश्रमक मुखिया नेनमणि बाबू हहायल-फुहायल अबैत छथि आ चौकीकेँ यथास्थान नहि देखि पहिने एकसरे ओकरा घुसकयबाक चेष्टा करैत छथि, मुदा पार नहि लगैत छनि । दू-तीन बेर चेष्टा कयलाक बादो जखन असफल रहैत छथि तँ डाँड़मे बान्हल गमछाकेँ खोलि अरदर बजैत पसेना पोछैत छथि आ एमहर-ओमहर ताकि हाक लगबैत छथि।]

नेनमणि : गेनमा ! रौ गेमना ! (**कनेक थम्हि**) अभगला, गेलेँ कतऽ ? (**एतबेमे हुनुक जेठ बालक, जकर बयस वर्ष तीसेक होयतैक, हथट्टुा कुरसी लेने प्रवेश करैत अछि**) ई की उठाकऽ लऽ अनलह कंटीर ? हरेकेँ ई नीक लगतनि ?

कंटीर : (**कुरसीकेँ रखैत**) नहिएँ नीक लगतनि तँ हम की करबनि । गाममे जेहने वस्तु रहतैक तेहने लऽकऽ ने लोक काज चलाओत ?

नेनमणि : (**कुरसी दिस बढ़ैत**) हौ, बोचबाबू तोरा ठकि लेलथुन । जे से दऽ कऽ टारि देलथुन । अपन कमौआ अबैत छनि तँ कोना निकहा कुरसी बाहर करैत छथि !

कंटीर : नीक वस्तु आनेकेँ दऽ देतैक तँ लोककेँ अपना लेल की रहतैक ? मङनी आखिर मङनिए होइत छैक ।

नेनमणि : (**तमसाइत जकाँ**) हम खूब बुझैत छिअहु ! कोँढ़ दरकैत छहु तोहर ।

कंटीर : (**लोहछल सन**) बाबू, अनेरे अहाँ किदन-कहाँदन सोचि लैत छी । हमरा जँ कोँढ़ फटैत तँ अन्हरोखेसँ एतेक अपस्याँत नहि रहितहुँ । दू बेकती रहताह आ ताहि लेल घरक सभ वस्तु जहाँ-तहाँ फेकल गेल । कतेक मेहनतिसँ ढंगाबाली कोठी बनौने छलि से एहि उनट-फेरमे भसकि गेल । कोठीक काज-प्रयोजन तँ आखिर हमरेलोकनिकेँ होइत अछि ने !

नेनमणि : हँ हौ कंटीर, कोठी फुटि गेलहु, बड़का जमा चल गेलहु । हम आइए कहैत छिऐक गेनमाक मायकेँ जे पड़ि देतहु कोठी । मुदा एतबा धरि

सदिकाल मोन राखह जे हरेक परतर तोँ कहिओ नहि पयबह । एह, बेटा हो तँ एहन ! हाकिम-हुक्काम बनि गेल, मुदा गौरवक नाम-गाम नहि । तोँ ओकरासँ जरैत किएक छहक, हौ ?

कंटीर : फेर अहाँ वैह कथा दोहरौलहुँ । बाबू, हमरा हरेसँ जरनी किएक होयत ? हमही॑ जरबैक तँ आन आर सुड्डाह होयतैक जरि-जरि । हम तँ यैह कहऽ चाहैत छी जे हमरा लोकनि जे छी से हरेकेँ बुझले छैक, घरमे जे वस्तु-जात छैक से ओकर देखले छैक, तखन एतेक आहे-माहेक प्रयोजने, कोन ?

नेनमणि : हौ, तोँ नहि बुझैत छहक । बेटा हो वा भातिज, हाकिम आखिर हाकिमे होइत छैक । हाकिमकेँ तँ कने लटक-चटक चाहबे करी । ओहि बेचारा जोगर तँ हमरा घरमे किछु अछिए नहि । मुदा जतबा कऽ सकैत छी ताहि लेल जी किएक चोरायब ?

कंटीर : जँ सत्य पूछी बाबू, तँ हमरा मङनी-चङनी नीक नहि लगैत अछि । अहाँ कहैत छी तँ दरबज्जे-दरबज्जे बौआ अबैत छी । हमर बस चलैत तँ घूरिकऽ ककरो दरबज्जाक मुह नहि देखितिऐक, इह ! कतेक कहलियनि बोचबाबूकेँ निकहा कुरसी दियऽ, मुदा ओ अन्त धरि हमरा फुसिअबैत रहलाह । कहलनि जे यैह कुरसी छैक ।

नेनमणि : आरौ तौरीके ! कालिहए हम देखने रहिऐक ओहि कुरसीकेँ, पालिससँ चमचम करैत रहैक । रातिए भरिमे बीझ लागि गेलनि ? जाय दहक कंटीर, जे अनका लेल मलेच्छ बनैत अछि से जिनगी भरि मलेच्छे बनल रहि जाइत अछि ।

कंटीर : की करितहुँ ! मोन मारिकऽ अहाँक डरेँ यैह उठा अनलहुँ । ने तँ सोझेमे तेनाकऽ पटकि दितियनि जे हाथ तँ टुटले छनि, टाङो टूटि जइतनि ।

नेनमणि : अनके जकाँ नहि सोची, बाबू ! जे देलथुन से बहुत देलथुन । हरे अपन काज एहीसँ चला लेताह ।

कंटीर : काज तँ बिनु कुरसिओक चलि जइतैक । एतबा दिन हरे कोन कुरसी-सोफापर बैसलाह ? गाममे जे पढ़लनि-लिखलनि से हमरालोकनि देखबे कयलियनि । दरभंगा सेहो देखिए आयल छियनि । तखन रहल पटना, तँ से ओतऽ कोना की कयलनि से टा हमरा बुझल नहि अछि ।

नेनमणि : हौ, तोँ भागलपुर भऽ आयल रहितह तँ एना नहि बजितह । अपन हरे इन्द्रासनक सुख भोगि रहल अछि ओतऽ । हम जे पहिले-पहिल ओकर बासामे पैसलहुँ तँ चकबिदोर लागि गेल । दूध-सन उज्जर धप-धप डेढ़हत्थी एतेकटा बत्ती जरैत, ठीक ओहने जेहन कि दरभंगा टीसनमे लगा देलकैक अछि आ नीचाँ घरमे कुरसी सब रहैक से की कहियहु । गद्दी सब ओकर तेहन कोमल जेना नेनुपर बैसि रहल होइ । हौ, हमरा तँ होइत अछि, हरे पूर्व जनमक चूकिसँ हमर बेटा भऽकऽ आयल अछि, ने तँ कहाँ हम, कहाँ ओ !

कंटीर : से तँ ठीके । हम नहि पढ़लहुँ-लिखलहुँ तँ हरे-कोदारिमे लागल रहलहुँ, ओ पढ़ि गेल तँ हाकिम बनि गेल ।

नेनमणि : सब अपन-अपन भाग लऽकऽ अबैत अछि । आ तोरे कथीक दुःख छहु ? मेहनति करैत छह, अपन पालन करैत छह । जिनगीक दोसर प्रयोजने कोन ?

कंटीर : **(उतरल मुहसँ)** बाबू, तँ एहि कुरसीकेँ की करिऐक ?

नेनमणि : करबहक की, राखि दहक । नहि, कने झाड़ि-पोछिकऽ तेलपनियाँ चढ़ा दहक । जैह कनेक चमचमा जयतैक । **(कंटीरक जयबाक हेतु उद्यत भेलापर)** थम्हह, कनेक हमरा चौकी धरओने जाह । **(धरबैत छनि)** ।

कंटीर : बाबू, एकटा चौकी आर चाही किने ? अपनवला बहार कऽ दिऐक ?

नेनमणि : चाही तँ अवस्से, मुदा तोँ अपनवला कथी लेल बहार करबह ? मायकेँ कहुन, ओएह दऽ देथिन । बूढ़ि-सूढ़ि लोक कतहु पटिएपर पड़ि रहतीह । **(एकाएक)** हौ, गेनमा कतऽ गेल ? पहर भरिसँ ताकि रहल छिऐक, निपत्ता भेल अछि ।

कंटीर : अपने तँ नथुनी बाबूक ओहिठाम चद्दरि लेल पठओने रहिऐक ।

नेनमणि : बेस मोन पाड़लह, चद्दरिए लाबऽ गेल अछि । हमरो घर महादेवेक घर भेल अछि । जकर बेटा डिप्टी कलक्टर तकरा घरमे एकटा बढ़िआँ चद्दरियो नहि । जाय दहक, जखन हरे गाम आबिए रहल छथि तँ अपने आखिएँ सब किछु देखि लेताह ।

कंटीर : आबि जयताह तखने बूझब जे आबि गेलाह ।

नेनमणि : हौ, आन बेर हम बजबैत रहियनि तँ लिखथि जे चेष्टा करब आ एहि बेर तँ ओ अपनहिँ लिखलनि अछि । एहि बेर अवश्ये अओताह । **(एकाएक बाहरक केवाड़ दिस ताकि)** के, गेनमा ?

डाकपिन : **(नेपथ्यसँ)** नहि, हम छी निरसू ।

नेनमणि : **(सशंकित होइत आगाँ बढ़ि)** निरसू ? आबह, एम्हरे चल आबह । ई घर एखन पुरुखाहे भऽ गेल अछि ।

डाकपिन : **(प्रवेश कऽकऽ)** घर एकदम चिक्कन-चुनमुन देखैत छी ! की बात थिकैक ?

नेनमणि : हौ, तोँही चिट्ठी दऽ गेलाह आ तोरहि नहि बूझल ? आइ हरे आबि रहल छथि । जे क्षण ने पहुँचल छथि ।

डाकपिन : तखन तँ मधुर खयबे करब हम, एतेक दिनपर अओताह । आब अहाँसभक दिन अवश्ये घूरत ।

नेनमणि : से की कहैत छह ? हमर दिन अधलाहे कहिया रहल ? ओमहर अपन हरे कमाइत-खाइत छथि, एमहर कंटीर अपन आश्रम चलबैत छथि । हमरा चाहबे की करी ?

डाकपिन : से तँ ठीके । **(हाथसँ चिट्ठी दैत)** लियऽ अपन चिट्ठी । **(जयबाक उपक्रम)** हरेबाबू आबथि तँ हमरो खबरि देब ।

नेनमणि : **(सोचमे पड़ि)** चिट्ठी ? थम्हह, कने तोहीं पढ़ि दैह । कंटीर पढ़बे ने करताह आ हमरा चश्मा ताकऽ पड़त ।

डाकपिन : **(चिट्ठी पढ़ैत)** बाबूकें सादर प्रणाम । हम एहू बेर नहि आबि सकलहुँ । एकटा संगी पकड़ि लेलक । सपरिवार काश्मीर जा रहल छी । घुरब तँ फेर चिट्ठी देब ।

नेनमणि : **(काठ जकाँ होइत)** काश्मीर ! निरसू, ई काश्मीर कतऽ छैक ? एहि गामसँ की ओ सुन्नर स्थान छैक ?

डाकपिन : सुनैत छिऐक जे काश्मीर धरतीक स्वर्ग थिकैक ।

नेनमणि : बेस कहलह । ओ स्वर्ग होयतैक । हमर हरे एहि गामक, एहि घरक नहि, ओ ओही जोगरक लोक अछि । हमरालोकनि तँ कीड़ा-मकोड़ा छी । एतहि रहब, सड़ब-गलब । ओ हाकिम अछि, कमौआ अछि । हमरालोकनि साल भरि जोतब-कोड़ब तँ कोठी नहि भरत आ ओ तँ अपन कमाइसँ टका लऽकऽ बखारी भरत । **(आँखिमे नोर भरि अबैत छनि)**

कंटीर : बाबू, हम जनिते रही । ओ भला आब एहि देहातमे की करऽ अओताह ?

नेनमणि : **(जोरसँ निसाँस लैत)** तों एखन नेना छह । बापक हृदय केहन होइ छैक, की बुझबहक ? कतेक जतनसँ हम गाछ रोपलहुँ, मुदा फुलाय-फड़य बेरमे.... । जाय दैह, हरे कतहु रहथु, सुखी रहथु ।

डाकपिन : हँ, नेनमणि बाबू, सन्तानेक सुख लऽकऽ माय-बापकेँ सुख । मुँह मलिन नहि करी । जँ हरेबाबू जिबैत रहलाह तँ कहिओ मोन अवश्ये बदलतनि ।

नेनमणि : अधलाह कथा नहि बाजह निरसू ! ओ जीताह किएक नहि ? हम अपन जनैत आइ धरि कोनो पाप नहि कयलहुँ । तखन हुनक अनिष्ट किएक होयतनि ? कतहु रहथु, दनदनाइत रहथु ।

कंटीर : **(बात बदलि)** बाबू, तँ ई कुरसी बोचबाबूकें दऽ अबियनि ?

नेनमणि : अवश्ये दऽ अबहुन । राखथु अपन हथटुट्टा कुरसी ! ओ हरेकें बूझि की लेलथिन ? ओ मामूली लोक नहि छथि, डिप्टी कलक्टर छथि । कहि दिअहुन, हमर हरे एहन अभागल नहि छथि जे हुनक हथटुट्टा कुरसीपर बैसताह ।

[कंटीर कुरसी लऽकऽ जाइत अछि । पाछाँ-पाछाँ मुसकी भरैत डाकपीन चल जाइत अछि । नेनमणि हताश भावें चौकीपर बैसि रहैत छथि । हाथ माथपर चल जाइत छनि । पर्दा खसैत अछि ।]

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर कोष्ठकमे क्रमसंख्याक निर्देश द्वारा दियऽ एवं इकाइक अन्तमे देल गेल उत्तरसँ मिलाकऽ देखू ।

1) हथटुट्टा कुरसीमे कोन परिवेशक घटना घटित अछि ?

(क) ग्राम्य (ख) नगर ( )

2) नेनमणिक अर्थिक स्थिति केहन छनि ?

(क) मध्यवित्त गृहस्थक (ख) निम्नमध्यवित्त गृहस्थक ( )

3) बोचबाबू नीक कुरसीक अपेक्षा हथट्टा कुरसी दऽ अपन कोन चरित्रक परिचय देलनि ?

(क) ईर्ष्याक (ख) अनुदारताक

(ग) श्रेष्ठताक भाव (घ) हीनभाव ( )

4) "गाममे जेहने वस्तु रहतैक तेहने लऽकऽ ने लोक काज चलाओत !" एहि कथनसँ कंटीरक केहन व्यक्तित्व प्रकट होइत अछि ?

(क) यथार्थवादी (ख) ग्रामोन्मुखी विचार ( )

5) "जँ सत्य पूछी बाबू, तँ हमरा मझनी-चढनी नीक नहि लगैत अछि ।" एहि कथनसँ कंटीरक स्वभावक कोन पक्ष उजागर होइत अछि ?

(क) स्वाभिमानी (ख) प्रतिक्रियावादी ( )

8.3 कथासार

एहि एकांकीमे कथा एवं घटनाक अद्‌भुत तारतम्य अछि । एहिमे नोकरिहारा पुत्रक प्रति पिताक भावनाकेँ अभिव्यक्ति देल गेल अछि । मिथिलाक आर्थिक स्थिति कतेक दयनीय छैक आ ओ एहि ठामक लोकक सोच-विचारकेँ कतेक दूर धरि प्रभावित कयने अछि, तकर प्रतिमान एहि रचनामे भेटैत अछि । जेनरेशन गैपपर आधारित एहि एकांकीक पिता नेनमणि झा निम्नमध्यवर्गीय किसान छथि । हिनक छोट बालक हरे एही वातावरणमे रहि आइ डिप्टी कलक्टर भऽ गेल छथिन । हुनक गाम अयबाक सम्बन्धमे पत्र आयल छलनि । नेनमणि झा अपन डिप्टी कलक्टर पुत्रक आगमनक आतुर प्रतीक्षा करैत हुनक स्वागत लेल घर-दुआरिकेँ सरियबैत छथि, जाहिसँ हरे ई नहि बुझथि जे हुनक आगमनपर हिनकासभमे उत्साह नहि छनि । एतबे नहि, पिता अपन पैघ बालक कंटीरकेँ बोचबाबूक ओहि ठामसँ हरेकेँ बैसबा लेल कुरसी आनऽ पठबैत छथि । मुदा बोचबाबू हुनका हथट्टा कुरसी दैत छथिन । नेनमणि हुनक एहि ईर्ष्या आ कृपणतापर अत्यन्त दुखी भऽ जाइत छथि– "ई की उठाकऽ लऽ अनलह कंटीर ? हरेकेँ ई नीक लगतनि ?"

नेनमणि आइ एहि बातकेँ बिसरि जाइत छथि जे हरे सेहो एही वातावरणमे रहि डिप्टी कलक्टर भेल छथि । जखन पैघ बालक अपन परिवारक वास्तविक स्थितिसँ पिताकेँ अवगत करबैत छथिन तँ ओ कहि उठैत छथि– "एतबा सदिकाल मोन राखह जे हरेक परतर तों कहियो नहि पयबह । एह ! बेटा हो तँ एहन ! हाकिम-हुक्काम बनि गेल, मुदा गौरवक नाम-गाम नहि । तों ओकरासँ जरैत किएक छहक हौ ?" पिता (नेनमणि) केँ नीक सन ओछाओन नहि छनि जे हरेक अयलापर बिछौताह । एहि आर्थिक विपन्नतापर हुनका मार्मिक दैन्य स्थितिक अनुभूति भऽ रहल छनि– "हमरो घर महादेवेक घर भऽ गेल अछि । जकर बेटा डिप्टी कलक्टर तकरा घरमे एकटा बढ़ियाँ चदरियो नहि ! जाय दहक, जखन हरे गाम आबिए रहल छथि तँ अपने आँखियेँ सब किछु देखि लेताह ।" एहि ठाम नेनमणिकेँ आशा छनि जे हाकिम बेटा आओत तँ हमर दुःख-दैन्य देखत आ ओकर समाधानक लेल किछु ध्यान देत । मुदा, जखन हरेक पत्र अबैत छनि – "बाबूकेँ सादर प्रणाम । हम एहू बेर नहि आबि सकलहुँ । एकटा संगी पकड़ि लेलक । सपरिवार काश्मीर जा रहल छी । घुरब तँ फेर चिट्ठी देब ।" पिता ई सुनि मर्माहत भऽ उठैत छथि । बड़का बेटा कंटीर कहैत छनि– "बाबू, हम जनिते रही, ओ आब

एहि देहातमे की करऽ औताह ?'' नेनमणि कंटीरकें डाँटि दैत छथिन आ रसें निसाँस लैत कहैत छथि– ''तों एखन नेना छह । बापक हृदय केहन होइत छैक, की बुझबहक ? कतेक जतनसँ हम गाछ रोपलहुँ, मुदा फुलाय-फड़य बेरमे .. । जाय दैह, हरे कतहु रहथु, सुखी रहथु ।''

चिट्ठी पढ़ितहिं नेनमणिक हृदय फाटि जाइ छनि । आँखिसँ नोर खसऽ लगैत छनि । डाकपीनसँ काश्मीरक सुन्दरताक प्रशंसा सुनि ओ कहैत छथि– '' बेस कहलह । ओ स्वर्ग होयतैक । हमर हरे एहि गामक, एहि घरक नहि, ओ ओही जोगरक लोक अछि । हमरालोकनि तँ कीड़ा-मकोड़ा छी । एतहि रहब, सड़ब-गलब । ओ हाकिम अछि, कमौआ अछि । हमरालोकनि साल भरि जोतब-कोड़ब तँ कोठी नहि भरत आ ओ तँ अपन कमाइसँ टका लऽकऽ बखारी भरत ।''

8.4 कथ्य आ अन्तर्वस्तु

आलोच्य एकांकीमे लेखक कथ्य आ अन्तर्वस्तुक दू बिन्दु दिस संकेत कऽ रहल छथि । पहिल एक निम्नमध्यवित्त गृहस्थ, किन्तु डिप्टी कलक्टरक पिताक दैन्य स्थिति दिस, दोसर दू पीढ़ीक (जेनरेशन गैप) सोचक अन्तरालसँ उत्पन्न स्थिति दिस। विडम्बना ई अछि जे पिताक ओही दैन्य स्थितिमे रहि हरे आइ डिप्टी कलक्टर छथि, किन्तु पिताक स्थितिक प्रति एकदम्मे संवेदनहीन । मुदा स्वाभाविक अछि जे पिता नेनमणि आ जेठ भाइ अनपढ़ कंटीरकें हुनकासँ किछु अपेक्षा राखब स्वाभाविके । हरे नागरिक जीवन-शैलीमे घुलि-मिलि अपन अतीतकें विसरि जाइत छथि, किन्तु हुनक पिता आ भाइ एखनहुँ हुनका वैह हरे बुझैत छथिन ।

मिथिलाक सामाजिक जीवनमे एखनहुँ वैह कटुता, घृणा, ईर्ष्या, मात्सर्य व्याप्त अछि । दोसरक नीक देखि प्रसन्न होयब दुर्लभ । नेनमणि आ कंटीरकें अपन समाजमे किनकोसँ कोनो अनावश्यक अपेक्षा नहि छनि, किन्तु जँ ओहि परिवारसँ हरे डिप्टी कलक्टर भऽ गेल छथि, तँ समाजक सम्पन्न बोचबाबू सन लोककें के पूछय, गामक डाकपिन निरसू सेहो व्यंग्य करबामे पाछाँ नहि रहैछ । जँ डिप्टी कलक्टर हरे पिताक आर्थिक स्थितिकें सुधारि देने रहितथि तँ एहि बातक संभावना बनैत जे लोक नेनमणिक बदलल परिस्थितिमे अनावश्यक कटाक्ष नहि करैत । हरे गाम जयबाक बदला काश्मीर जा रहल छथि, पिता नेनमणि ई समाचार सुनि मर्माहत आ विछोहसँ अश्रुपूरित भऽ उठैत छथि, तैयो पुत्रक प्रति कोनो अशुभ नहि सोचैत छथि ।

8.5 चरित्र-विधान

एतऽ अहाँ एकांकीक चरित्र-विधानक अध्ययन करऽ जा रहल छी । चरित्र-चित्रण एकांकीक महत्त्वपूर्ण तत्त्व मानल गेल अछि । घटनासँ अधिक शक्तिशाली चरित्र होइछ । घटना तँ मरुस्थलक सदृश स्थिर रहैछ, मुदा चरित्र निर्झर जकाँ बाधासँ लड़ैत आगाँ बढ़ैत रहैछ । ओहिमे स्वभावानुसार क्रिया-प्रतिक्रिया होइछ जाहिसँ जीवनक किरण फुटि पड़ैछ ।

'हथटुट्टा कुरसी' एकांकी विधाक महत्त्वपूर्ण रचना मानल जाइछ । केवल तीन पात्रक नियोजनसँ ई एकांकी अपन उत्कृष्टताकें प्राप्त कयने अछि । ई एकांकी स्त्री-पात्र रहित अछि । जेनरेशन गैपपर आधारित एहि एकांकीक प्रमुख पात्र नेनमणि झा एक निम्नमध्यवित्त गृहस्थ छथि । हिनक छोट बालक हरे एही वातावरणमे रहि डिप्टी कलक्टर भऽ गेल छथिन । हुनक गाम अयबाक सम्बन्धमे पत्र आयल छलनि । नेनमणि अपन पुत्रक आगमनक प्रतीक्षा करैत हुनक स्वागत लेल घर-दुआरिकें सरिअबैत छथि, जाहिसँ हरे ई नहि बुझथि जे हुनक आगमनपर हिनकासभमे उत्साह नहि छनि । नेनमणि आइ एहि बातकें विसरि जाइत छथि जे

हरे सेहो एही वातावरणमे रहि पैघ पदपर पहुँचल छथि । जखन पैघ बालक कंटीर अपन लचरल पारिवारिक स्थितिसँ पिताकेँ अवगत करबैत छथिन तँ ओ कहि उठैत छथि-''एतबा धरि सदिकाल मोन राखह जे हरेक परतर तोँ कहियो नहि पयबह ! बेटा हो तँ एहन ! हाकिम-हुक्काम बनि गेल, मुदा गौरवक नाम-गाम नहि । तोँ ओकरासँ जरैत किएक छहक हौ ?'' नेनमणिकेँ एकटा नीक सन चद्दरि नहि छनि जे हरेक अयलापर बिछौताह । ओ कहि उठैत छथि ''हमरो घर महादेवेक घर भेल अछि । जकर बेटा डिप्टी कलक्टर तकरा घरमे एकटा बढ़ियाँ चद्दरियो नहि ! जाय दहक, जखन हरे गाम आबिए रहल छथि तँ अपने आँखिएँ सभ किछु देखि लेताह ।'' एहि ठाम नेनमणिक अन्तःकरणमे ई आशा जगैत छनि जे हाकिम बेटा आओत तँ हमर दुख-दैन्य आ ओकर समाधान लेल किछु ध्यान देत । मुदा, जखन हरेक पत्र अबैत छनि जे- '' बाबूकेँ सादर प्रणाम । हम एहू बेर नहि आबि सकलहुँ । एकटा संगी पकड़ि लेलक । सपरिवार काश्मीर जा रहल छी । घुरब तँ फेर चिट्ठी देब ।'' पिता नेनमणि मर्माहत भऽ उठै छथि । बड़का बेटा कंटीर कहैत छनि- ''बाबू, हम जनिते रही, ओ भला आब एहि देहातमे की करऽ औताह ?'' नेनमणि कंटीरकेँ डाँटि दैत छथि आ जोरसँ निसाँस लैत कहैत छथि- ''तोँ एखन नेना छह । बापक हृदय केहन होइत छैक, की बुझबहक ? कतेक जतनसँ हम गाछ रोपलहुँ, मुदा फुलाय-फड़य बेरमे... । जाय दैह, हरे कतहु रहथु, सुखी रहथु ।'' एतऽ स्पष्ट अछि जे पिताकेँ पुत्रक प्रति स्वाभाविक ममता उमड़ि पड़ल अछि ।

जतऽ पिताकेँ पुत्र-मोह छनि, ओतहि पैघ पुत्र कंटीर शत-प्रतिशत यथार्थवादी छथि । हुनका ई बुझाइत छनि जे पिता अपन हाकिम बेटाक सत्कार लेल भावनामे बहि गेल छथि । कंटीर अपन यथार्थ स्थितिसँ पूर्णतः अवगत छथि । हरेक आगमनक प्रतीक्षा हुनको छनि, मुदा अपन पिता जकाँ नहि । ओ अपन पिताकेँ नग्न यथार्थसँ अवगत करबैत छथि-''हम तँ यैह कहऽ चाहैत छी जे हमरालोकनि जे छी से हरेकेँ बुझले छैक । घरमे जे वस्तु-जात छैक से ओकर देखले छैक- तखन एतेक आहे-माहेक प्रयोजन कोन ?''

एहि एकांकीक तेसर चरित्र डाकपिन (निरसु) जे पढ़ल-लिखल, ग्राम्य संस्कारसँ चुटकट्टीमे प्रवीण छथि, चिट्ठी पढ़ि देलाक बाद नेनमाणिकेँ ई कहि उकेरैत छथि- ''हँ नेनमणि बाबू, सन्तानेक सुख लऽकऽ माय-बापकेँ सुख । मुख मलिन नहि करी । जँ हरे बाबू जीबैत रहलाह तँ कहियो मोन अवश्ये बदलतनि ।''

एकांकीकार एहि एकांकीक कोनो पात्रक चरित्र शिथिल नहि होबऽ देलनि अछि । 'हथटुट्टा कुरसी'क चरित्र-चित्रणमे मानसिक संघर्षक अति सूक्ष्म चित्रण भेल अछि । निर्झरक गति जकाँ प्रत्येक चरित्र प्रवहमान अछि । एकरा एकांकीक प्राण कहल जाइत छैक ।

8.6 परिवेश

एहिमे एकांकीकार एक निम्नमध्यवित्त गृहस्थक क्षीण आर्थिक स्थिति एवं जेनरेशन गपसँ उत्पन्न संकटकेँ देखौलनि अछि । एहन देखल जाइछ जे एक साँझ भूखल रहियोकऽ मिथिलाक कतिपय परिवार अपन धीया-पूताकेँ शिक्षा देबा लेल दिन राति लागल रहैत अछि आ जखन ओ शिक्षित भऽ कोनो नोकरी-चाकरीमे लागि जाइत अछि तँ अपन परिवारक विपन्न स्थितिकेँ बिसरि जाइत अछि । एहि एकांकीमे एहने परिवेशक चर्चा अछि । मिथिला सभ दिनसँ प्राकृतिक प्रकोपसँ लड़ैत आबि रहल अछि, तैयो ओकरा आर्थिक विपन्नतासँ मुक्ति नहि भेटलैक अछि । मिथिलाक एहने आर्थिक परिवेशमे कतेक परिवार कुहरि रहल अछि । 'हथटुट्टा कुरसी'क नेनमणि झाक परिवार ओहने छनि । तैयो अपन पुत्रकेँ शिक्षित बनौलनि । पुत्र हरे डिप्टी कलक्टर भऽ गेलाह, मुदा कहियो घर-द्वारि दिस उनटिकऽ नहि तकलनि ।

सम्प्रति स्वकेन्द्रित परिवारवादक अवधारणा पनपि रहल अछि । सम्मिलित परिवारक विषयमे सोचब बन्द भऽ गेल अछि । माता-पिताक प्रति सेवाभाव विलुप्त भऽ रहल अछि । जँ ई भाव रहितनि तँ हरे निश्चित रूपेँ काश्मीर नहि जाय पिताक सान्निध्यलाभ लितथि । ग्राम्य परिवेश व्यतीत कयनिहार लोकक बुद्धि उपभोगवाद दिस ओतेक नहि गेल छैक जतेक नागरिक जीवन व्यतीत कयनिहारक । एकांकीकार एहिमे जाहि परिवेशक उल्लेख कयलनि अछि, ओ प्रायः एखनहुँ देखल जाइछ । गरीब परिवारक लोक एखनहुँ नोकरिहाराक प्रति सद्भाव रखैत अछि, जेना नेनमणि झाकेँ हरेक प्रति छनि ।

8.7 शीर्षक

आब 'हथटुट्टा कुरसी' शीर्षकक सार्थकतापर विचार कयल जा रहल अछि । वस्तुतः ई समाजमे व्याप्त ईर्ष्या एवं उपेक्षाक प्रतीक थिक, जे एकांकीक अन्तर्वस्तुकेँ रचनाक प्रतिपाद्यक संग पूर्ण कुशलतापूर्वक जोड़लक अछि । नेनमणि झाक बेटा डिप्टी कलक्टर छथि, मुदा बापकेँ हाकिम बेटाक गाम आगमनपर बैसबा लेल कुरसीक बेगरता पड़ि गेल छनि । पिता अपन उल्लास एवं पुत्र-प्रेम प्रदर्शित करबा लेल अपस्याँत छथि । हुनका एतेक उपाय नहि छनि जे एकटा कुरसी राखथि, मुदा सेहन्ता छनि डिप्टी कलक्टर पदक अनुरूप स्वागतक । ओम्हर, हाकिम बेटा पिताक क्षीण आर्थिक स्थितिसँ पूर्णतः अवगत छथि, तैयो हुनक दीनताक प्रति उदासीन-अन्यमनस्क छथि ।

नेनमणि झा अपन पैघ पुत्र कंटीरकेँ बोचबाबूक ओहि ठाम कुरसी लेल पठबैत छथि । समाजक सम्पन्न व्यक्ति बोचबाबू निकहा कुरसी नहि अछि तकर बहन्ना बना हथटुट्टा कुरसी दैत छथिन । लेखक हथटुट्टा कुरसी प्रस्तुत कऽ एकांकीक संघर्ष तत्त्वकेँ सबल बना देलनि अछि । एतऽ हथटुट्टा कुरसीक माध्यमे नेनमणि झाक मङनीपर उपहास आ ओहिपर डिप्टी कलक्टर बैसत तकर पृष्ठभूमिमे बोचबाबूक ईर्ष्याक भाव व्यक्त होइछ । ओना, एहि एकांकीक शीर्षक 'डिप्टी कलक्टर' सेहो भऽ सकैत छल, किन्तु 'हथटुट्टा कुरसी' बेसी मार्मिक अछि । ई शीर्षक एकांकीक विषयवस्तुकेँ गति प्रदान करैछ आ पिता-पुत्रक बीच अन्तर्द्वन्द्व वा संघर्षकेँ उजागर करैछ, जे एकांकीक प्राण होइछ ।

बोध प्रश्न

एखन धरि अहाँ एकांकीक मूल पाठ-वाचनक संग ओकर कथासार, कथ्य आ अन्तर्वस्तु, चरित्र-विधान, परिवेश एवं शीर्षकसँ सम्बन्धित सामग्रीक अध्ययन कयलहुँ अछि । एहिसँ सम्बद्ध प्रश्नक उत्तर कोष्ठकमे क्रमसंख्याक निर्देश द्वारा दियऽ आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अन्तमे देल गेल उत्तरसँ मिलाकऽ जाँच करू ।

6) हरेक आगमनक प्रतीक्षामे सभसँ उत्साहित के छथि ?

(क) कंटीर (ख) नेनमणि । ( )

7) हरे कोन कारणसँ गाम नहि अबैत छथि ?

(क)घरक दयनीय आर्थिक स्थितिक कारणेँ ।

(ख) नागरिक जीवन शैलीक प्रभावसँ । ( )

8) बेचबाबूक हथटुट्टा कुरसी देबाक पाछाँ कोन प्रवृत्ति काज करैछ ?

(क) कृपणताक (ख) नीचाँ देखयबाक ( )

9) हरेक नहि अयलापर सभसँ दुखी के छथि ?

(क) नेनमणि (ख) कंटीर ( )

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर रिक्त स्थानमे लिखू आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अन्तमे देल गेल उत्तरसँ मिलाकऽ जाँचू ।

1) नेनमणि कोन कारणसँ हरेक सुविधा लेल मङनी-चङनी करैत छथि ?

....

....

....

....

....

....

....

....

2) कंटीर कोन विचारक लोक छथि ?

....

....

....

....

....

....

....

....

3) एकांकीक अन्तर्वस्तुकेँ छौ पंक्तिमे लिखू ।

....

....

....

....

....

....

4) एहि एकांकीक चरित्र-विधानक विशेषताकेँ छौ पँक्तिमे लिखू ।

....

....

....

....

....

....

5) मिथिलाक निम्नमध्यवित्त परिवारक आर्थिक स्थिति केँ स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

....

6) एकांकीक शीर्षकक मूल आशयकेँ स्पष्ट करैत ओकर सार्थकतापर अपन विचार छौ पँक्तिमे प्रस्तुत करू ।

....

....

....

....

....

....

8.8 सरंचना-शिल्प

एतऽ अहाँ हथटुट्टा कुरसीक संरचना-शिल्पपर विचार करऽ जा रहल छी । अहाँ देखने होयब जे कथा वा निबन्धमे सेहो पात्रक वार्तालापमे संवाद-योजना रहैछ। किन्तु ओहि विधामे संवादक महत्त्व गौण रहैछ । दृश्य आ विशेष रूपसँ रंगमंचीय विधा होयबाक कारणेँ एकांकी लेल संवादे सर्वाधिक महत्त्व रखैत अछि। नाटक आ एकांकीक सम्पूर्ण सरंचना संवादहिपर निर्भर करैछ । एहि लेल एकांकीक संरचना-शिल्पकेँ भाषा आ शैली एहि दुइ पृथक-पृथक भागमे विभाजित कऽ समुचित ढंगेँ विवेचित-विश्लेषित नहि कयल जा सकैछ । रचनाक ई दुनू उपकरण एकांकीमे संवादक अंग बनिकऽ अबैछ । अतः एकर भाषा आ शैलीक स्वरूपमे अधिक अंतर आबि जाइछ । नाटकीय संवादक भाषामे पदरचना, वाक्यरचनाक सन्दर्भमे व्याकरणक नियमक उपेक्षा भेटैछ । एकरा संगहि अनुतान, बलाघात, दुइ शब्दक बीचक

अन्तराल, विराम चिह्न, मनोभावसूचक चिह्न आदिक प्रयोगसँ अभिव्यक्तिकेँ विशेष प्रभावशाली बनाओल जाइछ ।

एकांकीक सरंचना-शिल्पक दोसर महत्त्वपूर्ण विशेषता अछि ओकर रंगमंचीयता । एकांकीक रचना रंगमंचक उद्देश्यसँ होइत अछि । एहि लेल कुशल आ सचेत एकांकीकारकेँ अपना दिससँ कोष्ठकमे वातावरण, ध्वनि, छाया, प्रकाश, मंच-सज्जा, पात्रक मनोदशा तथा आंगिक चेष्टाक सम्बन्धमे किछु संकेत सेहो देबऽ पड़ैत छैक, जकरा पारिभाषिक शब्दावलीमे रंगनिर्देश कहल जाइत अछि । अतः उपर्युक्त तथ्यकेँ ध्यानमे राखि रंगमंचीयता आ संवाद-कौशलक दृष्टिएँ 'हथटुट्टा कुरसी'क सरंचना-शिल्पपर विचार करब विशेष उपयोगी आ सार्थक होयत ।

8.8.1 रंगमंचीयता

रंगमंचीयता एकांकीक पहिल आ मूलभूत विशेषता थिक । एकांकीक रचना अभिनयक उद्देश्यसँ होयबाक चाही । एकांकी तँ भाषिक कंकाल थिक, रंगमंच ओकर प्राण-प्रतिष्ठा करैत अछि । रंगमंच नाट्य कलाक परम व्यावहारिक पक्ष थिक । रंगमंच नाट्यकारक हेतु ओ शक्ति एवं तत्त्व थिक, जाहि माध्यमे नाटक अपन मूर्त एवं जीवन्त रूप धारण करैछ । एहि अर्थमे रंगमंच नाट्यकारक हेतु ओतबे आवश्यक अछि जतेक चित्रकारक हेतु रंग आ रेखा । रंगमंचक कला ने अभिनय थिक, ने नाटक, ने दृश्य आ ने नृत्य, प्रत्युत ओहि सभ तत्त्वक समन्वय थिक जे ओहिसँ निर्मित होइत अछि ।

'हथटुट्टा कुरसी'क मंचनक हेतु साधारण, सहज आ स्वाभाविक रंगमंचक प्रयोजन अछि, जकरा लेल कोनो साज-सज्जाक आवश्यकता नहि । मंचक रूपमे निम्नमध्यवित्त गृहस्थक एक साधारण घर अछि । घर दुमुहाँ अछि । सोझाँक देबालमे एक चौकठि । केंवाड़ दहिन भागक देबालमे अछि, जाहि बाटेँ लोक बाहरसँ अबैत अछि । घरक जे स्थिति अछि ताहिसँ स्पष्ट बुझाइ पड़ैत अछि जे कोनो खास व्यक्तिक रहबाक हेतु ई आइसँ खाली कराओल गेल अछि । एक चौकी मात्र राखल छैक, सेहो उचित स्थानपर नहि । देवालपर झोल-झाल एखनो लागल छैक, जे सफैयाक बाट जोहि रहल छैक ।

जतऽ धरि पात्रक चयनक प्रश्न अछि, एहिमे केवल तीन पात्र अछि । नेनमणि आ कंटीर पिता-पुत्र छथि । एक अन्य पात्र डाकपिन (निरसू) छथि । ई एकांकी स्त्री-पात्र रहित अछि । स्थान आ समयक संकलनक दृष्टिसँ एकांकी तीससँ चालिस मिनटमे सहजतासँ प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि । एक कुशल रंगशिल्पीक रूपमे शेखरजी ध्वनि, छाया-प्रकाश आदि अनेक युक्तिक योगसँ मैथिली रंगमंचक क्षेत्रमे अनेक प्रयोग कयलनि अछि । मुदा, एहि एकांकीमे एहि युक्तिक आलम्बन नहि लेल गेल अछि । अतः एहिमे कोनो कुशल, प्रशिक्षित निर्देशकक आवश्यकता नहि अछि । दृश्य-योजना अथवा दृश्य-परिवर्तनक अभावमे एहि एकांकीक मंचन एकदम सरल अछि । समय वा काल तथा स्थानक एकताक संगहि कार्यक एकता अर्थात् एक निश्चित बिन्दुपर वार्तालापसँ, संकलन-त्रयक दृष्टिसँ सेहो, ई एकांकी रंगमंचीयताक शर्तकेँ स्वीकार करैत अछि । दोसर, बोचबाबूक म्लेच्छ प्रवृत्तिक चर्चा आंशिक रूपमे भेल अछि, किन्तु ई चर्चा एकांकीक अन्तर्वस्तु आ प्रतिपाद्यक हेतु पूर्ण प्रासंगिक अछि । 'हथटुट्टा कुरसी' निम्नमध्यवित्त परिवारक क्षीण आर्थिक स्थिति आ दू पीढ़ीक अन्तरसँ उत्पन्न दृष्टिकोणकेँ रेखांकित करैत अछि । एकांकीक विषय-वस्तु अत्यन्त ज्वलंत अछि । फलतः विषय-वस्तुक अनुकूल पात्रक संघर्ष आ अन्तर्द्वन्द्व कतहु शिथिल नहि भेल अछि । एहि प्रकारेँ ई एकांकी रंगमंचीयताक सभ शर्तक नीक जकाँ निर्वाह करैत अछि ।

8.8.2 संवाद-योजना

एंकाकीक प्राण होइछ ओकर सहज स्वाभाविक संवाद । एहिमे लेखक रंग-कौशलक सरल स्वरूपकेँ प्रयोगमे आनि एकर संवाद-कौशलकेँ चरमोत्कर्षपर पहुँचा देलनि अछि । एकांकीक संवाद अत्यन्त चुस्त-दुरुस्त एवं संक्षिप्त होयबाक चाही, जाहिसँ पात्रक मनोदशा नीक जकाँ व्यक्त भऽ सकय । एकरा संगहि रंगशालामे उपस्थित प्रेक्षकपर सेहो ओकर गहन प्रभाव पड़य । ओ ई नहि बुझय जे नाटक देखि रहल छी । जीवनमे साक्षात उपस्थित वास्तविक क्रिया-कलापक अनुभूति दर्शक कऽ सकय, यैह महत्त्वपूर्ण कार्य संवादक माध्यमसँ पूर्ण होइछ । एहि कौशलक परिचय एहि एकांकीमे होइत अछि :

(नेनमणि झा अपन नोकर गेनमाकेँ सोर पड़ैत छथि । एतबेमे हुनक जेठ बालक, जनिक वयस वर्ष तीसेक होयतनि, हथटुट्टा कुरसी लेने प्रवेश करैत छथि)

नेनमणि : ई की उठाकऽ अनलह कंटीर ? हरेकेँ ई नीक लगतनि ?

कंटीर : (कुरसीकेँ रखैत) नहियेँ नीक नीक लगतनि तँ हम की करबनि ? गाममे जेहने वस्तु रहतैक तेहने लऽकऽ ने लोक काज चलाओत ?

नेनमणि : (कुरसी दिस बढ़ैत) हौ, बोचबाबू तोरा ठकि देलथुन । जे-से दऽकऽ टारि देलथुन । अपन कमौआ अबैत छनि तँ कोना निकहा कुरसी बहार करैत छथि !

कंटीर : नीक वस्तु आनेकेँ दऽ देतैक तँ लोककेँ अपना लेल की रहतैक ? मङनी आखिर मङनीयेँ होइत छैक ।

नेनमणि : (तमसाइत जकाँ) हम खूब बुझैत छी ! कोँढ़ दरकैत छहु तोहर !

कंटीर : (लोहछल सन) बाबू, अनेरे अहाँ किदन-कहाँदन सोचि लैत छी । हमरा जँ कोँढ़ फटैत तँ अन्हरोखेसँ एतेक अपस्याँत नहि रहितहुँ । दू बेकती रहताह आ ताहि लेल घरक सभ वस्तु जहाँ-तहाँ फेकल गेल । कतेक मेहनतिसँ ढंगावाली कोठी बनौने छली से एहि उनटफेरमे भसकि गेल । कोठीक काज-प्रयोजन तँ आखिर हमरेलोकनिकेँ होइत ने !

एहि संवादक सहजता ग्राम्य-प्रेक्षककेँ पूर्ण रूपेँ अपना दिस आकृष्ट करबामे क्षम अछि । ई एक निम्नमध्यवित्त परिवारक, जकरा अपन डिप्टी कलक्टर पुत्रकेँ बैसयबाक हेतु एकटा कुरसियो नहि छैक, नग्न आर्थिक दशाकेँ अभिव्यक्त कऽ रहल अछि । जेठ बालक कंटीर यथार्थवादी छथि, किन्तु पिताकेँ कमौआ पुत्रक सुख-सुविधाक चिन्ता छनि, परम्परावादी सोच छनि । पिताकेँ पूर्ण विश्वास छनि हुनक आगमनक ।

नेनमणि : बेस मोन पाड़लह, चद्दरियो लाबऽ गेल अछि । हमरो घर महादेवेक घर भेल अछि । जकर बेटा डिप्टी कलक्टर तकरा घरमे एकटा बढ़ियाँ चद्दरियो नहि ! जाय दहक, जखन हरे गाम आबिए रहल छथि तँ अपने आँखियेँ सभ किछु देखि लेताह ।

कंटीर : आबि जयताह तखने बूझब जे आबि गेलाह ।

नेनमणि : हौ, आन बेर हम बजबैत रहियनि तँ लिखथि जे चेष्टा करब आ एहि बेर तँ ओ अपने लिखलनि अछि । एहि बेर अवश्ये औताह । (एकाएक बाहरक केबाड़ दिसि ताकि) के ? गेनमा ?

डाकपिन : (नेपथ्यसँ) नहि, हम छी निरसू ।

नेनामणि : (सशंकित होइत आगाँ बढ़ि) निरसू ! आबह इम्हरे चल आबह । ई घर एखन पुरुखाहे भऽ गेल अछि ।

डाकपिन : (प्रवेश कऽकऽ) घर एकदम चिक्कन-चुनमुन देखैत छी ? की बात थिकैक ?

नेनमणि : हौ तोँही चिट्ठी दऽ गेलाह आ तोरे नहि बुझल ? आइ हरे आबि रहल छथि ने ! जे क्षण नहि पहुँचल छथि ।

डाकपिन : तखन तँ मधुर खयबे करब हम, एतेक दिनपर औताह । आब अहाँसभक दिन अवश्ये घुरत ।

नेनमणि : से की कहैत छह ? हमर दिन अधलाहे कहिया रहल ? ओम्हर अपन हरे कमाइत-खाइत छथि, एम्हर कंटीर अपन आश्रम चलबैत छथि, हमरा चाहबे की करी ?

डाकपिन : से तँ ठीके । (हाथसँ चिट्ठी दैत) लियऽ अपन चिट्ठी । (जयबाक उपक्रम) हरे बाबू आबथि तँ हमरो खबरि देब ।

नेनमणि : (सोचमे पड़ि) थम्हह, तोँही कने पढ़ि दैह । कंटीर पढ़बे ने करताह आ हमरा चश्मा ताकऽ पड़त ।

डाकपिन : (चिट्ठी पढ़ैत) बाबूकेँ सादर प्रणाम ! हम एहू बेर नहि आबि सकलहुँ । एकटा संगी पकड़ि लेलक । सपरिवार काश्मीर जा रहल छी । घुरब तँ फेर चिट्ठी देब ।

एहि संवादक सहजता प्रेक्षककेँ अपना दिस एकाग्र करबामे क्षम अछि । मंचपर उपस्थित दुनू बाप-बेटाक वार्तालापसँ घरक स्थिति स्पष्ट भऽ जाइत अछि, संगहि दुनूक वार्तालापसँ एकांकीक विषय-वस्तु कतहु शिथिल नहि होइछ । एहि एकांकीक संवादक माध्यमे पात्रक बीच वैचारिक वैषम्यसँ ओकर व्यक्तित्वक स्पष्ट रूप प्रेक्षकक समक्ष उतरि अबैत छैक । संवादे एकांकीक एहन तत्त्व थिक जे पात्रक संघर्ष आ अन्तर्द्वन्द्वपरसँ परदा उठबैत अछि । एकांकीक प्रारंभमे नेनमणि झा अपन डिप्टी कलक्टर पुत्रक गुणगान करैत छलाह, किन्तु पत्र अयलापर ''हम एहू बेर नहि आबि सकलहुँ । एकटा संगी पकड़ि लेलक । सपरिवार काश्मीर जा रहल छी । घुरब तँ फेर चिट्ठी देब ।''–नेनमणि अड़राकऽ खसि पड़ैत छथि ।

उपर्युक्त विश्लेषणसँ हम कहि सकैत छी जे 'हथट्टा कुरसी' अपन संवाद-कौशलक कारणहुँ महत्त्वपूर्ण अछि । एकांकीकारक रंगमंचीय दृष्टि सूक्ष्म अछि आ संवाद-कौशलक कारणेँ पात्रक मानसिकताकेँ बुझबामे प्रेक्षककेँ कतहु असौकर्य नहि होइत छनि ।

8.9 प्रतिपाद्य

आब हम 'हथट्टा कुरसी'क प्रतिपाद्यपर विचार करऽ जा रहल छी । शीर्षकक उपयुक्तता आ प्रासंगिकतापर विचार करैत हम एकांकीक प्रतिपाद्यक दिस संकेत कयने छी । एहि प्रक्रियामे हम देखैत छी जे एक निम्नमध्यवित्त गृहस्थ परिवारक स्थिति एहन छनि जे डिप्टी कलक्टर बेटा लेल ने एकटा कुरसी छनि जाहिपर ओ गाम अयलापर बैसताह आ ने एकटा नीक चद्दरि छनि जे चौकीपर बिछौताह । बेटा डिप्टी कलक्टर अपन घरक क्षीण स्थितिसँ

पूर्णतः अवगत छथि, मुदा नागरिक जीवनशैलीकेँ स्वीकार कऽ परक स्थितिक प्रति असंवेदनशील भऽ गेल छथि । ओतहि पिता नेनमणि पुत्रक आगमनक प्रति अति उत्साहित आ संवेदनशील छथि । पिता जेठ बालककेँ बोचबाबूक ओतऽ कुरसी लेल पठबैत छथि तँ नोकर गेनमाकेँ नथुनीक ओहिठाम नीक चद्दरि लेल । किन्तु हुनक पैघ पुत्र कंटीरकेँ अपमानित होबऽ पड़ैत छनि । गरीब लोककेँ सेहो स्वाभिमान होइत छैक, मुदा पिताक आज्ञाक पालन करबा लेल कंटीर दोसराक ओहि ठाम मङनी करऽ चलि दैत छथि ।

जँ ओ नेनमणिक जेठ पुत्र आ डिप्टी कलक्टरक पैघ भाइ छथि तँ पिताक आज्ञाकेँ मन मसोसि कऽ स्वीकार करैत छथि । तैयो पिता कहि दैत छथिन जे-''कोँढ़ दरकैत छहु तोहर ।'' तथापि कंटीर अपन शिष्टताकेँ छोड़ैत नहि छथि । जँ कंटीर प्रारंभहिमे नेनमणिक आदेशकेँ नकारि दितथि तँ पिता-पुत्रक सम्बन्धपर आघात पड़ैत । प्रेक्षकमे एकर अशोभनीय संदेश जाइत । साहित्य समाजक दर्पण होइछ, तँ एकरा सत्य, शिव एवं सुन्दरक रूपमे ग्रहण कयल जाइछ ।

दोसर दिस समाजमे ईहो देखल जाइछ जे जँ ककरो आर्थिक स्थिति अकारण दयनीय भऽ रहल छैक तँ आन लोकसभ व्यंग्य करैत छैक, डाकपिन निरसू सेहो नेनमणिसँ चुटकी लेबासँ वंचित नहि रहैछ, यथा-''एतेक दिनपर अओताह । आब अहाँसभक दिन अवश्ये घूरत ।'' एतबे नहि, ओ पुनः कहैत छथि ''मुँह मलिन नहि करी । जँ हरेबाबू जिबैत रहलाह तँ कहिओ मोन अवश्ये बदलतनि ।''

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर कोष्ठकमे क्रमसंख्याक निर्देश दैत दियऽ आ अन्तमे देल गेल उत्तरसँ मिलाकऽ जाँचू ।

10) 'हथटुट्टा कुरसी' एकांकीक रंगमंचीय सफलता लेल कोन तत्त्वकेँ सर्वाधिक प्रमुख मानल जा सकैत अछि ?

क) रंगमंचक सरलता आ सहजता,

ख) ध्वनि, प्रकाश आ छायाक निर्देश,

ग) कुशल संवाद योजना,

घ) व्यावहारिक भाषा । ( )

11) एहि एकांकीक पात्र मुख्यतः समाजक कोन वर्गसँ लेल गेल अछि ?

क) उच्च वर्ग,

ख) उच्चमध्य वर्ग,

ग) निम्नमध्य वर्ग,

घ) निम्न वर्ग । ( )

12) '' जँ सत्य पूछी बाबू, तँ हमरा मङनी-चङनी नीक नहि लगैत अछि ।'' कंटीरक ई कथन हुनक कोन प्रवृत्तिक सूचक अछि ?

क) अपन मिथ्या अहंकेँ व्यक्त करबा लेल,

ख) अपन व्यावहारिकताक,

ग) अपन आदर्शवादिताक,

घ) अपन स्वाभिमानक । ( )

13) एहि एकांकीक मुख्य प्रतिपाद्य की अछि ?

क) समाजमे निम्नमध्य वर्गक यथास्थितिक उद्घाटन,

ख) समाजमे मिथ्या प्रतिष्ठा,

ग) जेनरेशन गैपसँ उत्पन्न आर्थिक संकट,

घ) समाजमे व्याप्त ईर्ष्या-द्वेष । ( )

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर रिक्त स्थानमे दियऽ आ अपन उत्तरकेँ अन्तमे देल गेल उत्तरसँ मिलाकऽ जाँच करू ।

7) एहि एकांकीक भाषा आ शैली अत्यन्त बोधगम्य अछि । एहि सम्बन्धमे पाँच पंक्तिमे अपन विचार प्रस्तुत करू ।

....

....

....

....

....

....

8) एहि एकांकीक रंगमंचीयतापर पाँच पंक्तिमे अपन विचार व्यक्त करू ।

....

....

....

....

....

....

9) एहि एकांकीमे प्रयुक्त संवाद-कौशलकेँ छौ पंक्तिमे स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

....

....

10) एहि एकांकीक प्रतिपाद्यकेँ पाँच पंक्तिमे स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

....

11) एहि एकांकीक अन्तर्वस्तु आ ओकर प्रतिपाद्यसँ पाठक-प्रेक्षकक मध्य समाजक निम्नमध्य वर्गक कोन स्थितिक वर्णन भेल अछि ? उत्तर छौ पंक्तिमे दियऽ ।

....

....

....

....

....

....

8.10 सारांश

एहि इकाइक समुचित अध्ययन कयलाक पश्चात अहाँ निम्नलिखित तथ्यकेँ बुझि ओकरा अपन भाषामे लिखि सकैत छी–

- एहिमे एकांकीक महत्वपर प्रकाश देल गेल अछि, जाहिसँ अहाँ एक साहित्य-विधाक रूपमे एकांकीक महत्वपर अपन विचार व्यक्त कऽ सकैत छी ।
- एहिमे एकांकीक सार आ ओकर अन्तर्वस्तुक विस्तृत विवेचन-विश्लेषण कयल गेल अछि । एकरा पढ़ि अहाँ एहि एकांकीक अन्तर्वस्तुक विशेषताकेँ स्वयं अपन भाषामे लिखि सकैत छी ।
- एहि एकांकीक परिवेशपर गंभीरताक संग विचार करैत एकर शीर्षकक सार्थकतापर सेहो विवेचना कयल गेल अछि, जकरा रेखांकित कऽ सकैत छी।
- एहिमे एकांकीक संरचना-शिल्पपर रंगमंचीयता एवं संवाद-कौशलक संदर्भमे विचार कयल गेल अछि, जाहिमे एकर भाषा आ शैली सम्बन्धी विशेषता सेहो सोदाहरण विवेचित-विश्लेषित भेल अछि । एहिसँ सम्बद्ध सभ विशेषताकेँ अहाँ अपन भाषामे नीक जकाँ व्यक्त कऽ सकैत छी ।
- एहिमे एकांकीक प्रतिपाद्यक विश्लेषण करैत ओकर अन्तर्वस्तुक मूल्यांकन कयल गेल अछि । अतः अहाँ अपन भाषामे प्रतिपाद्यपर विचार कऽ ओकर अन्तर्वस्तुक समुचित मूल्यांकन कऽ सकैत छी ।

8.11 बोध प्रश्न/अभ्यासक उत्तर

(1) क	(2) ख	(3) ख	(4) क	(5) क
(6) ख	(7) ख	(8) क	(9) क	(10) क
(11) ग	(12) घ	(13) क		

अभ्यासक उत्तर

1) पिता नेनमणिक मनमे वैहटा बात घुमैत छनि जे हमर बेटा हरे तँ डिप्टी कलक्टर छथि, ओ गाम आबि रहल छथि तँ हुनका लेल किछु विशेष व्यवस्था करी । किन्तु नेनमणिक आर्थिक स्थिति एहन नहि छनि जे हाकिम बेटाकें सुतबा लेल चौकी आ बैसबा लेल कुरसी होनि । हुनका ई होइत छनि जे हाकिम बेटा ई नहि सोचथि जे हुनक आगमनपर हिनका कोनो उत्साह नहि छनि, तैं कारण थिक जे ओ बोचबाबूसँ कुरसी मङनी लेल कंटीरकें पठबैत छथिन । ओ ई बिसरि जाइत छथि जे हरे एही घरसँ पढ़ि-लिखि डिप्टी कलक्टर भेल छथि । हाकिम बेटा तँ हिनक आर्थिक स्थितिकें सुधारबासँ अन्यमनस्क आ विमुख छथिहे, तैयो पिता अपेक्षाक क्षीण आशा पोसने छथि, जे स्वाभाविक थिक ।

2) कंटीर यथार्थवादी एवं स्वाभिमानी छथि, हुनका हरेक स्वागत लेल पिताक आहे-माहे नीक नहि लगैत छनि । जखन नेनमणि कंटीरकें बोचबाबूक ओहिठाम कुरसी मङनी कऽ अनबाक लेल पठबैत छथिन तँ ओ शालीनतापूर्वक कहैत छथि– 'हम तँ इएह कहऽ चाहैत छी जे हमरालोकनि जे छी से हरेकें बुझले छैक, घरमे जे वस्तु-जात छैक से ओकर देखले छैक, तखन एतेक आहे-माहेक प्रयोजने कोन ?'' कंटीरकें अपन पिताक मिथ्या क्रियाकलाप आ पुत्रमोह-प्रदर्शन अनसोहाँत लगैत छनि । ओ छथि तँ अनपढ़, किन्तु हुनक स्वाभिमान यथार्थपर आधारित छनि, यथा– ''जँ सत्य पूछी बाबू, तँ हमरा मङनी-चङनी नीक नहि लगैत अछि ।''

3) नेनमणि झा एक निम्नमध्यवित्त गृहस्थ छथि । ओहि घरसँ छोट पुत्र हरे डिप्टी कलक्टर भऽ गेल छनि, तैयो पिता नेनमणि झा घरक क्षीण आर्थिक स्थितिसँ उबरि नहि सकलाह अछि । एहन देखल जाइछ जे मिथिलाक प्रायः ग्राम्य जीवन आर्थिक संकटसँ संघर्ष कऽ रहल अछि, चाहे ओहि परिवारक लोक कतबो टाका कमाथि । एकर एक कारण अछि– दू पीढ़ीक अन्तारक सोच । क्यो पढ़ि-लिखि कोनो पैघ पदपर पहुँचि जाइत अछि आ टाका कमाय लगैत अछि तँ ओ अपन परिवारक दुखद आर्थिक स्थिति वा विपन्नताकें बिसरि जाइत अछि । तैयो ओहि परिवारक लोककें अपन हाकिम-हुक्कामसँ कने-मने अपेक्षा रहितहिं छैक । एहि एकांकीक कथ्य अथवा अन्तर्वस्तु यैह अछि ।

4) 'हथट्टा कुरसी'मे केवल तीन पुरुष पात्र अछि– पिता नेनमणि, जेठ पुत्र कंटीर आ डाकपिन निरसू । पिता अपन डिप्टी कलक्टर पुत्रक आगमनपर ओकरा लेल आहेमाहेमे लागल छथि । कंटीरकें हरेकें बैसबा लेल बोचबाबूक ओहिठाम कुरसी मङनी करऽ पठबैत छथि, जे कंटीरकें नीक नहि लगैत छनि । एहि बिन्दुपर पिता-पुत्रक बीच वैचारिक विषमता ऊपर-नीचाँ भऽ रहल अछि । हठात् डाकपिन हरेक पत्र लऽकऽ अबैत अछि । नेनमणिकें चश्मा लगमे नहि रहलाक कारणें डाकपिन निरसुए पत्र पढ़ैत अछि । ओ पत्र पढ़ि व्यंग्य करैत अछि– ''सन्तानेक सुख लऽकऽ माय-बापकें सुख । मुँह मलिन नहि करी । जँ हरेबाबू जिबैत रहलाह तँ कहियो मोन अवश्ये बदलतनि ।'' एहि प्रकारें हम देखैत छी जे एहि एकांकीक सभ पात्र गतिशील अछि, जाहि कारणें कथावस्तु कतहु शिथिल नहि भेल अछि ।

5) नेनमणि झा एक निम्नमध्यवित्त गृहस्थ छथि । मिथिलामे एहन निम्नमध्यवित्त गृहस्थ परिवार बहुत अछि । एहन देखल गेल अछि जे जँ परिवारसँ कियो पढ़ि-लिखि पैघ पदपर चल जाइत अछि तँ ओ उनटिकऽ घरक आर्थिक स्थिति सुधारबा लेल ध्यान नहि दैत अछि । अपन सीमित परिवारक अवधारणा लऽकऽ गामकेँ बिसरि जाइत अछि । परिणाम होइत अछि जे जाहि घरसँ पढ़ि ओ हाकिम भेल अछि ओहि परिवारक स्थिति यथावते रहि जाइत अछि । हरेक डिप्टी कलक्टर भेलाक बादो नेनमणि झाक आर्थिक स्थिति नहि सुधरैत छनि । तैयो ओहि निम्नमध्यवित्त परिवारक लोक हाकिम-हुक्कामसँ क्षीण आशाक आकांक्षा पोसने रहैत अछि ।

6) 'हथटुट्टा कुरसी' एकांकीक ई शीर्षक निम्नमध्यवित्त परिवारक स्थितिक प्रतीक थिक । एहन परिवारमे एकटा कुरसी, चौकी आ नीक चद्दरिक अभाव रहिते छैक । लोक एखनो कोनो विशेष प्रयोजनपर मङनी-चङनी करैत अछि । मुदा, ओहन प्रयोजनपर गामक सुखी-सम्पन्न लोक अपन नीक वस्तु नहि दैत अछि । जँ से नहि रहितय तँ बोचबाबू हथटुट्टा कुरसी नहि दितथि । लोक सार्वजनिक काजमे घरक अधलाहे वस्तु दैत आयल अछि । नेनमणिक डिप्टी कलक्टर पुत्रकेँ बैसबा लेल नीक कुरसी किएक दितथि बोचबाबू ? हुनका तँ नेनमणिक आर्थिक स्थितिकेँ हरेक नजरिमे उघारबाक जे छलनि !

7) 'हथटुट्टा कुरसी'क भाषा-शैली अत्यन्त सरल आ बोधगम्य अछि । एकांकीक भाषा-शैलीक तारतम्य एकर कथावस्तु, संवाद, पात्र आ परिवेश सभकेँ लऽकऽ आगाँ बढ़ल अछि । एकर भाषाक कारणेँ कोनो तत्त्वपर आघात नहि पहुँचल अछि । प्रेक्षकमे एकर भाषाक संप्रेषणीयता अत्यन्त जीवन्त अछि, एकांकीमे पिताक भाषा, अनपढ़ जेठ पुत्रक भाषा आ ओकर स्वाभिमान आ डाकपिनक व्यंग्य-भरल भाषा-शैली विलक्षण अछि ।

8) मंचनक दृष्टिकोणसँ 'हथटुट्टा कुरसी' अत्यन्त सरल अछि । एकर मंचन लेल कोनो साज-सज्जाक आवश्यकता नहि अछि, मंचक रूपमे निम्नमध्यवित्त गृहस्थक एक साधारण घर अछि । घर दुमुहाँ अछि, पात्रक वेश-भूषामे कोनो लम्फ-लम्फा नहि । प्रकाश योजनाक आवश्यकता अवश्य अछि । एकर कारण अछि– पात्रक बीच अन्तर्द्वन्द्व । एहि सम्बन्धमे एकांकीकारक कोनो मंच-संकेत नहि अछि । एकांकीकार बहुत-किछु निर्देशकपर छोड़ि देने छथि । निर्देशककेँ बहुत-किछु करबाक संभावना बनैत अछि ।

9) एकांकीक प्राण होइछ– ओकर सहज-स्वाभाविक संवाद । जँ संवाद जीवन्त आ संप्रेषणीय नहि रहत तँ एकांकीक सभ तत्त्व शिथिल आ गतिहीन भऽ जायत । एकांकीक संवाद वीणाक तार सदृश होइछ, जाहिमे तारक स्पर्श मात्रसँ संगीतमे चमत्कार आबि जाइछ । एहि एकांकीमे अहाँ देखब जे पिता-पुत्रक बीच भेल वार्तालाप कोन तरहेँ सम्बन्धकेँ स्वरूप दैत अछि :

नेनमणि– (तमसाइत जकाँ) हम खूब बुझैत छी ! कोँढ़ दरकैत छहु तोहर ।

कटीर– (लोहछल सन) बाबू, अनेरे अहाँ किदन-कहाँदन सोचि लैत छी । हमरा जँ कोँढ़ फटैत तँ अन्हरोखेसँ एतेक अपस्यात नहि रहितहुँ ।...

एहि एकांकीक संवाद ग्राम्य विचारक समीचीन संवाहक अछि, जे पात्र आ प्रेक्षकमे स्वाभाविक तारतम्य स्थापित कयलक अछि ।

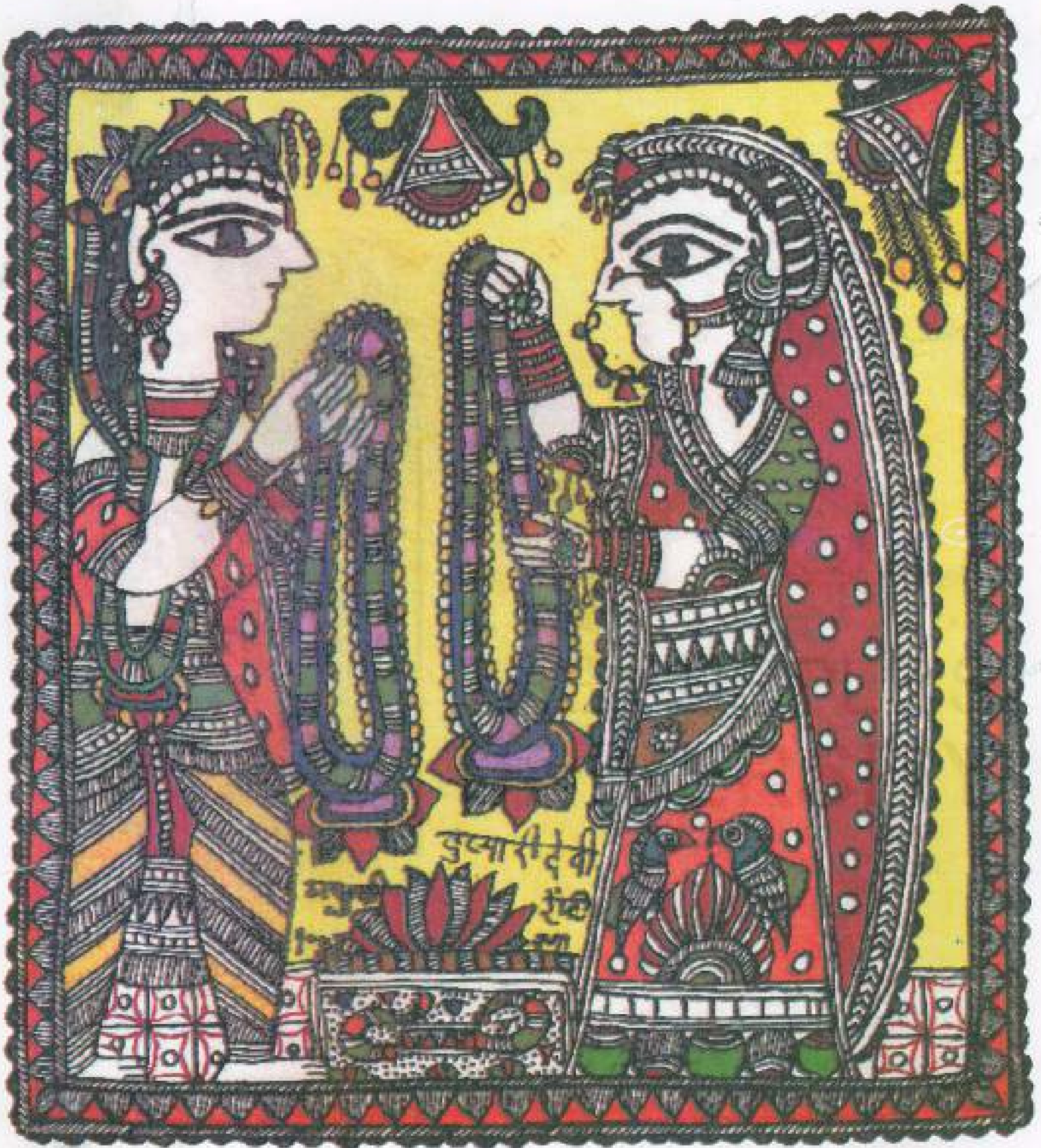
10) एहि एंकाकीक प्रतिपाद्य अछि एक निम्नमध्यवित्त परिवारक क्षीण आर्थिक स्थितिकेँ उजागर करब, एहि परिवारसँ जे हरे डिप्टी कलक्टर बनि गेल छथि ओ उनटिकऽ एकर दुखद स्थितिक निवारण लेल अन्यमनस्क छथि । घरक लोककेँ ई आशा छैक जे ओ कहियो-ने-कहियो घरक स्थितिकेँ सुधारबा लेल उन्मुख होयताह । किन्तु, परिणाम विपरीत अबैत अछि । हरे गाम नहि आबि मित्रक आग्रहपर काश्मीर चल जाइत छथि । पिताकेँ बिसरि जाइत छथि, हुनक स्नेह-सान्निध्यकेँ बिसरि नागरिक जीवन-शैलीक अन्धानुकरण करऽ लगैत छथि । ओम्हर, पिता नैनमणि मिथ्या पुत्र-मोहकेँ हृदयस्थ कऽ अपन जीवन काटि रहल छथि ।

11) एहि एकांकीक पाठक आ प्रेक्षकक मध्य एक निम्नमध्यवित्त परिवारक लचरल स्थितिक दुखद घटनाक प्रस्तुति भेल अछि । कोनो घरक एक सदस्यक डिप्टी कलक्टर भऽ गेलाक बादो ओहि घरक आर्थिक स्थिति पूर्ववते रहि जाइछ । यैह समस्या पाठक-प्रेक्षकक बीच राखल गेल अछि । भाइ तँ भाइ होइत अछि, किन्तु पिताक प्रति तँ सन्तानक विशेष दायित्व होइत छैक । बेटा हरे, जे डिप्टी कलक्टर भऽ गेल छथि, चिट्ठीक माध्यमे अपन सुनिश्चित गाम आगमनकेँ त्यागि मित्रक आग्रहपर काश्मीर चल जाइत छथि । एतबे नहि, चिट्ठीमे एकर उल्लेख नहि करैत छथि जे ओ दोसर बेर गाम औताह, 'अपितु काश्मीरसँ आपस होयब तँ पुनः पत्र लिखब'– कहि अपन कर्त्तव्यक पालन भरि कऽ लैत छथि । गाम-घरमे एहि रूपक यथार्थ घटना होइते रहैत अछि, किन्तु एहि घटनाकेँ एकांकीकार पाठक-प्रेक्षकक बीच प्रस्तुत कऽ नवीन पीढ़ीक शिक्षित समाजकेँ आत्मीय स्वजनक प्रति कर्तव्यविमुखताकेँ देखार कयलनि अछि ।

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001

मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम



व्यावहारिक मैथिली

3

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

- इन्दिरा गाँधी



"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001

मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

खंड

3

व्यावहारिक मैथिली

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

डॉ. भीमनाथ झा
पूर्व प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा
डॉ. नीता झा
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा
डॉ. नवीन चन्द मिश्र
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, बी.आर.ए.बिहार वि.वि.
मुजफ्फरपुर
डॉ. नन्दनन्दन झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, जे.एन. कॉलेज, मधुबनी
प्रो. अजीत कुमार वर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा

संकाय सदस्य
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068
डॉ. स्मिता चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाइ लेखक
डॉ. राजाराम प्रसाद (इकाइ 9)
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
एम.एल.टी. कॉलेज, सहरसा
डॉ. धीरेन्द्रनाथ मिश्र (इकाइ 10)
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा
डॉ. महेन्द्र झा (इकाइ 11)
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
पी.जी. सेन्टर, सहरसा
डॉ. उमाकान्त झा (इकाइ 12)
पूर्व प्राध्यापक, मैथिली विभाग,
एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा

पाठ्यक्रम संपादक
डॉ. भीमनाथ झा

पाठ्यक्रम संयोजन

एकेडमिक संयोजक
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

प्रबन्ध संयोजक
डॉ. ए. एन. त्रिपाठी
डॉ. एस. एस. सिंह
क्षेत्रीय निदेशक,
इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र,
दरभंगा

सामग्री निर्माण

श्री सी. एन. पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)

जनवरी, 2012

ISBN-978-81-266-5782-7

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए इसके मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068 स्थित कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. रीतारानी पालीवाल, निदेशक, मानविकी विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

*मुद्रक : **राज प्रिंटर्स**, ए-9, सेक्टर बी-2, ट्रॉनिका सिटी औद्योगिक क्षेत्र, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)–201102.*

खण्ड 3 क परिचय : व्यावहारिक मैथिली

एहि खण्डमे व्यावहारिक मैथिलीक प्रसंग अध्ययन प्रस्तुत कयल गेल अछि । एहिमे लेखन एवं वार्तालाप कौशलक विकासपर बल देल गेल अछि । पहिल तीन इकाइ, अर्थात् इकाइ संख्या 9, 10, 11 लेखन कौशलसँ सम्बन्धित अछि तथा इकाइ 12 वार्तालाप कौशलसँ ।

भाषाक काज दैनन्दिन जीवनमे होइछ । ककरोसँ गप करब, ककरो चिट्ठी लिखब, कोनो कार्यालयमे आवेदनपत्र देब, कतहु काज करैत छी तँ कार्यालय संचिका लिखब– ई सभ दैनन्दिन काज थिकैक । तहिना, कखनो एहनो अवसर आबि जा सकैत अछि जखन अहाँकेँ अंगरेजीमे कहल बातकेँ मैथिलीमे उल्था कऽकऽ कहऽ पड़य ।

एहि खण्डमे हम लेखन कौशल सिखयबाक हेतु ओहन प्रसंगकेँ चुनलहुँ अछि, जकर प्रयोजन अहाँकेँ प्रत्येक दिन पड़ैत अछि । दैनिक जीवनमे भाषा-प्रयोगक फलक ततेक विस्तृत छैक जे सम्पूर्ण लेखन सिखायब असम्भव अछि । एतऽ दिशा-संकेत मात्र कयल गेल अछि ।

एहि चारू इकाइमे बोध प्रश्न आ अभ्यास देल गेल अछि, जकरा नीक जकाँ हल कऽ लेलाक पश्चात् अहाँकेँ व्यावहारिक मैथिलीक मोटामोटी ज्ञान अवश्य भऽ जायत ।



इकाइ 9 सरकारी पत्राचार, टिप्पण आ प्रारूपण

इकाइक रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 पत्र-लेखनक प्रकार

- 9.2.1 अनौपचारिक पत्र
- 9.2.2 औपचारिक पत्र

9.3 सरकारी पत्राचारक प्रक्रिया

- 9.3.1 टिप्पण (व्याख्या)
- 9.3.2 प्रारूपण (मसौदा लेखन)

9.4 सरकारी पत्राचारक विभिन्न प्रकार

- 9.4.1 सरकारी पत्र
- 9.4.2 अर्ध-सरकारी पत्र
- 9.4.3 कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय अनुमति (आदेश)
- 9.4.4 परिपत्र (सर्कुलर)
- 9.4.5 अधिसूचना आ संकल्प
- 9.4.6 पृष्ठांकन

9.5 सारांश

9.6 शब्दावली (शब्दसमूह)

9.7 अभ्यासक उत्तर

9.0 उद्देश्य

सरकारी पत्राचारसँ संबंधित एहि इकाइमे हम विविध प्रकारक सरकारी पत्राचारक चर्चा करऽ जा रहल छी । व्यावहारिक रूपसँ मैथिलीक प्रयोग विभिन्न क्षेत्रमे होइत अछि आ होयबाक संभावना अछि । विभिन्न स्थिति आ विषयक अनुरूपेँ भाषा आ प्रस्तुतिक स्वरूप बदलैत अछि । एही दृष्टिकेँ ध्यानमे राखि विविध प्रकारक सरकारी पत्र-लेखन सिखायब एहि इकाइक उद्देश्य अछि ।

एहि एकाइकेँ पढ़लाक पश्चात अहाँ :

- लिखित भाषाक अनौपचारिक एवं औपचारिक रूपमे अंतर कऽ सकब,
- अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र लिखि सकब,
- सरकारी पत्राचारक प्रक्रियाक चर्च कऽ सकब,
- टिप्पण आ प्रारूपणक महत्त्वकेँ बुझा सकब,
- कार्यालयमे उपयोग होबऽवला विभिन्न प्रकारक पत्रमे अंतरकेँ चिन्हि सकब,
- प्राप्त पत्रपर टिप्पणी लिखि सकब,
- पत्रक प्रारूप तैयार कऽ सकब ।

9.1 प्रस्तावना

पछिला इकाइमे अहाँ मैथिली साहित्यक चारि मुख्य विधा कविता, कथा, निबन्ध एवं एकांकीक विषयमे नीक जकाँ पढ़ि चुकल छी । एहि इकाइमे व्यावहारिक मैथिली लेखनक विषयमे विस्तारसँ जनतब प्राप्त कऽ सकब । हमरालोकनिक दैनिक जीवनमे पत्र-लेखन महत्वपूर्ण अंग अछि । हमसभ पत्र लिखैत छी, संगहि पत्र प्राप्तो होइत अछि । अहाँ अपन मित्रकेँ, परिवारक सदस्यकेँ पत्र लिखैत छी । जँ अहाँक लगपासक क्षेत्रमे कोनो सार्वजनिक सुविधाक प्रयोजन अछि तँ एहि लेल अहाँ संबंधित अधिकारीकेँ पत्र लिखैत छी । जँ विद्यालय वा कार्यालयसँ छुट्‌टी लेबाक होअय तँ अहाँ अपन अधिकारीकेँ लिखैत छी । एही प्रकार जँ अहाँ नोकरी प्राप्त करऽ चाहैत छी तँ आवेदनपत्र लिखैत छी, कोनो जनतब पाबऽ वा देबऽ चाहैत छी तँ लिखिकऽ पुछैत वा दैत छी, कोनो शिकाइत करऽ चाहैत छी, निवेदन करऽ चाहैत छी तँ सेहो पत्रक माध्यमसँ करैत छी । एहि तरहेँ हमरालोकनिक जीवनमे बहुत रास काज पत्रक माध्यमे चलैत अछि । पत्रसँ हम बहुत दूर बैसल व्यक्तिसँ संपर्क कऽ सकैत छी । एकर अतिरिक्त पत्रमे देल गेल सूचना लिखित दस्तावेज होइत अछि । आवश्यकता पड़लापर ओकरा फेरसँ देखल जा सकैत अछि । संगहि, ओहि पत्रक उल्लेख कयल जा सकैत अछि । शासकीय मामिलामे तँ पत्रक पर्याप्त महत्त्व छैक । सरकारी काजक संचालनमे पछिला पत्र सूचना, संदर्भ, उदाहरण वा प्रमाणक रूपमे काज अबैत छैक । व्यक्तिगत आ सामान्य पत्र सेहो कखनो-कखनो सार्वजनिक महत्त्वक वस्तु भऽ जाइत अछि ।

एहि इकाइमे हमर मुख्य उद्देश्य अहाँकेँ पत्र-लेखन सिखायब अछि । ई सही अछि जे नेनामे अहाँकेँ समान्य पत्र लिखब वा स्कूलमे छुट्‌टी लेल आवेदनपत्र लिखनाइ सिखाओल गेल छल । मुदा आब अहाँ बुझि चुकल छी जे पत्रक आवश्यकता जीवनक विविध क्षेत्रमे पड़ैत अछि । अहाँ सही ढंगसँ पत्र नहि लिखि पबैत छी तँ भऽ सकैत अछि जे, जे प्रसंग अहाँ कहऽ चाहि रहल छी से पत्र प्राप्तकर्ता ठीक तरहेँ नहि बुझि पाबि रहल होअय । ताहिसँ अहाँक काजमे अनेरो व्यवधान उपस्थित भऽ जाय । एहि लऽकऽ सही ढंगसँ पत्र लिखबाक बोध आवश्यक अछि । दोसर महत्त्वपूर्ण बात ई अछि जे सरकारी काज आ व्यवसाय-व्यापारमे पत्राचारक बड़ पैघ भूमिका होइत अछि ।

एहि सभ विषयकेँ ध्यानमे राखि एहि इकाइमे हम व्यक्तिगत आ व्यावसायिक पत्रसभक चर्च करैत सरकारी पत्राचारक प्रसंगमे पढ़ब । सरकारी पत्राचारमे टिप्पण आ प्रारूपणक विशेष भूमिका होइत अछि, अतएव एकर चर्च सेहो कयल जायत ।

9.2 पत्र-लेखनक प्रकार

पत्र-लेखन दू प्रकारक होइत अछि– औपचारिक आ अनौपचारिक । हमरालोकनिक जीवनमे व्यवहारक कैकटा पक्ष होइत अछि । अहाँ विद्यालयमे अध्यापकसँ वा अपन कार्यालयमे अधिकारीसँ वार्ता करबाक ढंग ओ नहि रखैत छी जे अपन आङन-घरमे वा अपन मित्रलोकनिक बीच गप करैत काल रखैत छी । पत्र-व्यवहारमे ई रूप अति स्पष्ट होइत अछि ।

विशेष सूचना : औपचारिक आ अनौपचारिक दुनू प्रकारक पत्रमे लिफाफक ऊपर 'सेवामे' अथवा 'पाबथि' अर्थात् पाबऽवलाक पताक संग बाम दिस नीचाँमे 'प्रेषक' अथवा 'पठबथि' अर्थात् पठबऽवलाक नाम-पता अवश्य लिखू । एहिसँ प्राप्तकर्ताकेँ नहि भेटबाक स्थितिमे डाकघर द्वारा पत्र अहाँ लग घुरिकऽ आबि जायत ।

9.2.1 अनौपचारिक पत्र

अनौपाचारिक पत्र व्यक्तिगत पत्र होइत अछि । एहिमे परिवारक सदस्य अथवा मित्रकेँ गपसपक भाषामे पत्र लिखि सकैत छी । अहाँ जनिका व्यक्तिगत पत्र लिखि रहल छी हुनकासँ अहाँक संबंध औपचारिक नहि अछि । अतएव पत्रक भाषा-शैली कोनो कठिन नियमसँ बान्हल नहि रहैत अछि । माँ-बाबू आ बच्चाक बीच वा पति-पत्नीक बीच वा मित्रसभक बीच लिखल जायवला पत्रक विषयमे विविधता भेटैत अछि । ई विविधता ओतबे व्यापक होइत अछि जतबा मानवीय स्वभाव । एहि प्रकारक पत्रमे लिखऽवला आ पाबऽवलाक अनुकूल भाषाक प्रयोग होइत अछि, किएक तँ पत्र खाली लिखऽ आ पाबऽवलाक बीच समाद स्थापित करैत अछि । ई पद्धति निम्नलिखित अछि ।

1) अनौपचारिक वा व्यक्तिगत पत्रमे लिखऽवलाक पता आ तारीख सभसँ दहिना कात लिखल जाइत अछि ।

2) ओकर पश्चात बामा कात पत्र पाबऽवला लेल संबोधन होइत अछि । अर्थात् माता-पिता वा दोसर सामान्य व्यक्तिक हेतु खासकऽ 'परम आदरणीय' 'माननीय' 'श्रद्धेय' विशेषणक प्रयोग होइत अछि । समतुरिया वा अपनासँ छोटक लेल 'स्नेही' 'प्रिय' चिरंजीवी' लिखबाक व्यवहार अछि ।

3) पुनः अभिवादनक रूपमे नमस्कार, प्रणाम, स्नेह, शुभाशीर्वाद आदि शब्दक प्रयोग होइत अछि । अभिवादन पत्र पाबऽवलाक वयस, लिखऽवलासँ हुनक संबंध आदिक अनुसार होइत अछि ।

4) पत्रक आरंभ कुशल-क्षेमक संग मुख्य समाचार आ पत्रप्राप्तिक संदर्भ, पत्र पयबाक सूचना वा एहन कोनो अन्य प्रसंगक क्रमसँ होइत अछि । पुनः पत्रक मुख्य विषय विशेष रूपसँ लिखल जाइत अछि ।

5) पत्रक अंतमे लिपिबद्ध करऽवला व्यक्ति अपन हस्ताक्षर करैत अछि । हस्ताक्षरसँ पूर्व स्वनिर्देश लिखैत अछि । ई स्वनिर्देश 'अपनेक' 'अहाँक' आ 'तोहर' 'अहाँक' रूपमे लिखल जाइत अछि ।

6) जँ कोनो विचारक अभिव्यक्ति पत्र लिखबा काल छुटि जाइत अछि वा लिखऽवलाकेँ पश्चात किछु ध्यानमे अबैत छनि तँ पुनश्च (पश्चात जोड़ल गेल अंश) लिखि ओहि प्रसंगकेँ जोड़ि देल जाइत अछि ।

अनौपचारिक आ व्यक्तिगत पत्रक बानगी

(1) मकान नंबर 105
अभिलाषा निवास
विद्यापति नगर
सुपौल-852131
09.03.2008

(2) प्रिय सोनी,

(3) बहुत-बहुत स्नेह ।

(4) आइए अहाँक पत्र भेटल....................

अहाँक दीदी
(5) अभिलाषा रानी

(6) पुनश्च : भऽ सकैत अछि जे अगिला मास पूसा अयबाक यात्रा बनि जाय । एहन भेल तँ शुभ होयत ।

अभ्यास 1

1) नीचाँ पत्रक एकटा बानगी देल अछि । ध्यानसँ देखू आ ओहिमे जतऽ कतहु अशुद्धि देखि रहल छी, ओकरा शुद्ध करू ।

अतुल कुमार
बुलाकी रोड गीरीडीह
815301

परम आदरणीय काका जी
नमस्कार ।
बहुत दिनसँ अपनेक कोनो पत्र नहि भेटल..................
सधन्यवाद,

भवदीय
अतुल कुमार

9.2.2 औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र प्राय: हुनकासभक बीच लिखल जाइत अछि जे ने व्यक्तिगत रूपसँ बहुत परिचित होइत छथि आ ने जनिका बीच व्यक्तिगत समस्याक आदान-प्रदान होइत अछि । औपचारिक पत्रमे कतेको प्रकारक पत्र-व्यवहार प्रचलित अछि, जेना–

1) व्यावसायिक पत्र
2) विभिन्न संस्थासभक प्रधान आ समाचारपत्र सभक संपादकसँ अनुरोध, आग्रह, निंदाक पत्र
3) आवेदनपत्र
4) वस्तुक खरीद-बिक्री-पत्र
5) सरकारी पत्र

औपचारिक पत्रक भाषा-शैली आ लेखन-पद्धति विशिष्ट आ निश्चित होइत अछि । ओना, एहिमे समय-समयपर परिवर्तनो होइत रहैत अछि । भिन्न-भिन्न प्रकारक औपचारिक पत्र लिखबाक विशेष ढंग होइत अछि । किछु कथ्य एहन होइछ जे सभ औपचारिक पत्रपर समान रूपसँ लागू होइत अछि ।

औपचारिक पत्र पैघ नहि लिखल जयबाक चाही । आजुक परिवेशमे ककरो ओतेक पलखति नहि रहैत छैक जे दीर्घ पत्र पढ़त । अत: कथनकेँ संपेक्षमे फरिछाकऽ भाषागत शुद्धिक संग तथ्यात्मक रूपसँ समायोजित करबाक चाही । एहन पत्रक आकार एक वा दू पृष्ठसँ बेसी नहि होयबाक चाही । पत्रमे कहल गेल कथ्यमे क्रमबद्धता आवश्यक अछि, एहि लऽकऽ जे पढ़ऽवला ओकरा सहजतासँ बुझि सकय । पत्रमे जँ कोनो पछिला प्रसंगक दृष्टांत (प्रमाणक उल्लेख) देल गेल अछि तँ ओकर तिथि, संख्या, विषय आदि प्रामाणिक होयबाक चाही । छोट सन त्रुटि भेलासँ समय, श्रम एवं धनक हानि भऽ सकैत अछि । एहन त्रुटि व्यावसायिक पत्रमे होइत अछि तँ ओकर प्रभाव ओहि प्रतिष्ठान आ फार्मक साखपर पड़ि सकैत अछि आ जँ आवेदनपत्र वा अनुरोधपत्र होइत अछि तँ पत्र लिखऽवलाकेँ एकर घाटा उठबऽ पड़ि सकैत छनि । प्रशासनिक मामिलामे एहि तरहक गलतीसँ कतोक प्रकारक समस्या उत्पन्न भऽ सकैत अछि ।

औपचारिक पत्रमे निजी विषयक कोनो जगह नहि होइछ । एकर भाषामे असंगति आ नीरसता नहि होयबाक चाही । पत्रमे सहज विनम्र भाषाक उपयोग होयबाक चाही ।

हम कहि चुकल छी जे औपचारिक पत्रक रूपाकार सुनिश्चित होइत अछि । ओहिमे व्यक्तिगत पत्र जकाँ विविधता नहि होइछ आ ओकरा मनमाना ढंगसँ बदलल नहि जा सकैछ । हम इहो चर्च कऽ चुकल छी जे औपचारिक पत्रक व्यवहार कतेको रूपेँ होइत अछि, आ पत्र–व्यवहारक अपन पद्धति होइत अछि । आगाँ हम विभिन्न प्रकारक औपचारिक पत्रक बानगी सहित चर्च करब ।

आवेदनपत्र

आवेदनपत्र कैक प्रकारक भऽ सकैत अछि । जेना– नौकरी लेल, छुट्टी लेल, छात्रवृत्ति लेल, कोनो विशेष अनुमति आ सुविधा लेल ।

1) आवेदनपत्रक आरम्भ बामा आ ऊपरसँ कयल जाइत अछि । सभसँ पहिने 'सेवामे' लिखल जाइत अछि ।

2) पुनः अगिला पाँतीमे ओहि अधिकारीक पदनाम आ ओहिसँ अगिला पाँतीमे हुनक पता लिखल जाइत अछि ।

3) संबोधनक रूपमे 'महोदय' शब्दक प्रयोग होइत अछि ।

4) जँ आवेदन नौकरी लेल अछि तँ नौकरीक विज्ञापनक संदर्भ देल जाइत अछि, जाहिमे विज्ञापन तिथि आ संख्या आदिक उल्लेख होइत अछि । पुनः मुख्य विषयक उल्लेख निवेदन रूपमे कयल जाइत अछि । अतएव, वाक्य प्रायः 'निवेदन अछि' एही शब्दसँ शुरू कयल जाइत अछि ।

5) पत्रक अंतमे 'धन्यवाद सहित' वा 'सधन्यवाद' शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि ।

6) अंतमे स्वनिर्देशक रूपमे दहिना भाग 'भवदीय' 'प्रार्थी' 'विनीत' अथवा 'अपनेक' शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि ।

7) पुनः लिखऽवला अपन हस्ताक्षर करैत अछि आ अपन पता लिखैत अछि ।

8) बाम भाग तिथि लिखल जाइत अछि ।

नोकरी लेल आवेदनपत्रक बानगी

(1) सेवामे,
(2) प्रबंध निदेशक
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड,
पार्लियामेंट स्ट्रीट,
दिल्ली–110001

(3) महोदय,

(4) निवेदन अछि जे तिथि 15.12.2006 क नवभारत दैनिक पत्रमे प्रकाशित अपनेक विज्ञापन सं. 5/7/06 क संदर्भमे मैथिली सहायकक पद लेल आवेदन करऽ चाहैत छी । हमर व्यक्तिगत विवरण एहि प्रकारेँ अछि––

नाम : ....

पता : ....

शैक्षिक योग्यता ....

अनुभवक संबंधमे सूचना ....

अन्य उपलब्धिक सूचना ....

यदि हमरा उक्त पदपर सेवा करबाक अवसर देल जायत तँ हम स्वयं एकर योग्य सिद्ध करबाक पूर्ण प्रयास करब ।

(5) सधन्यवाद,

(6) भवदीय,

(7) ओम प्रकाश
बी भवन/के.पुर
लहेरियासराय, दरभंगा-846001

(8) 21.12.2006

विशेष अनुमति लेल आवेदनपत्रक बानगी

(1) सेवामे

(2) राजकीय महाविद्यालय,
सहरसा ।

(3) महोदय,

(4) सविनय निवेदन अछि जे हम भारतीय कला केन्द्र पटना द्वारा आयोजित संगीत प्रतियोगितामे भाग लेबऽ चाहैत छी । एहि लेल हमरा तिथि 22.01.2007 सँ 25.01.2007 धरि आयोजित भऽ रहल कार्यक्रममे भाग लेबाक हेतु अनुमति प्रदान करबाक कृपा कयल जाय ।

(5) सधन्यवाद,

(6) भवदीय

(7) कल्पना शरण
प्राध्यापिका
संगीत एवं कला विभाग
राजकीय महाविद्यालय,
सहरसा-852201

(8)10.01.2007

कोनो संस्थासँ वा समाचारसँ जँ कोनो प्रकारक असहयोग लेल उपराग देबाक वा शिकाइत करबाक अछि तँ ओहो पत्र प्रायः एही ढंगे लिखल जाइत अछि । खाली संबोधनमे 'महोदय'क बदला 'मान्यवर' आ 'श्रीमान्' आदि शब्दक प्रयोग भऽ सकैत अछि । लिखऽवला चाहथि तँ अपन पताक ऊपर दहिना दिस ओहि ढंगसँ सेहो लिखि सकैत छथि जेना अनौपचारिक पत्रसभमे लिखल जाइत अछि ।

व्यावसायिक अथवा व्यापारिक पत्र

अनौपचारिक पत्रमे व्यापारिक वा व्यावसायिक पत्रकेँ लिखबाक ढंग विशेष रूपेँ सुनिश्चित होइत अछि । एहन पत्र विभिन्न व्यापारिक आ व्यावसायिक संगठनक बीच अपन व्यापारक प्रसंगमे लिखल जाइत अछि तथा दोसर ग्राहककेँ सेहो अपन व्यापारक प्रचारक दृष्टिसँ लिखल जाइत अछि । एहि विषयमे निम्नलिखित तथ्य ध्यान देबाक थिक ।

1) ई पत्र प्रायः संस्थाक 'लेटर हेड'पर लिखल जाइत अछि, जाहिपर संख्या आ फार्मक नाम, पता, दूरभाष नं., तारक पता आदि छपल होइत अछि । जँ 'लेटर हेड' उपलब्ध नहि हो तँ ई विवरण टाइप कऽ देल जाइत अछि । एहिसँ पत्र प्राप्त करऽवलाकेँ उत्तर लिखबामे सुविधा होइत छैक ।

2) कोनो-कोनो व्यावसायिक पत्र-व्यवहार विशेष समय धरि चलबाक संभावना होइत अछि । एहि लऽकऽ एहन पत्रपर पत्र-संख्या अवश्य देल जाइत अछि, जाहिसँ अगिला पत्रसभमे ओकर संदर्भ देल जा सकय । पत्र-संख्याकेँ क्रमांक सेहो कहल जाइत अछि । क्रमांक पत्रक आरंभमे बाम भाग लिखल जाइत अछि ।

3) ओकर नीचाँमे ओहि व्यक्ति वा संस्था आदिक नाम आ पता लिखल जाइत अछि जनिका पत्र लिखल जा रहल अछि ।

4) संबोधन लेल 'प्रिय महोदय' शब्दक प्रयोग होइत अछि । ओना, पत्र एकसँ अधिक व्यक्तिकेँ संबोधित होअय तखनहुँ 'महोदयगण'क संबोधनक प्रयोग नहि होयत ।

5) एकर पश्चात मूल कथन देल जाइत अछि । जँ एकसँ बेसी प्रमुख कथ्य लिखबाक हो तँ ओकर उल्लेख स्पष्ट ढंगसँ आ पृथक-पृथक करबाक चाही । पत्रमे अनावश्यक विस्तार नहि होयबाक चाही । शिष्टाचारक ध्यान सदिखन राखल जयबाक चाही ।

6) एकर पश्चात स्वनिर्देशमे 'भवदीय' लिखल जाइत अछि ।

7) अंतमे हस्ताक्षर कयल जाइत अछि । व्यापारिक पत्रमे हस्ताक्षरक महत्त्व बेसी होइत अछि । जे व्यक्ति हस्ताक्षर कयलनि अछि हुनका प्रसंगमे ई मानल जाइत अछि जे ओ संस्था दिससँ ओहि पत्रक संबंधमे उत्तरदायी छथि । हुनका ओ सभ करबा, कहबाक अधिकार छनि जे पत्रमे लिखलनि अछि । एहि लेल व्यावसायिक पत्रपर प्रायः संस्था आ फारमक मालिक, व्यवस्थापक वा प्रबंधकक हस्ताक्षर होइत अछि । कोनो कम महत्त्वक पत्रपर संस्थाक दिससँ कोनो दोसर व्यक्ति सेहो हस्ताक्षर कऽ सकैत छथि, जनिका एहि तरहक पत्रपर हस्ताक्षरक अधिकार प्राप्त छनि ।

8) पत्रक संग जँ कोनो आनो कागजात पठाओल जा रहल होअय (अर्थात् कोनो भिन्न पत्र अथवा करार (सट्टा) आदिक प्रति, कोनो नियमावली वा सूची आदि) तँ ओकर उल्लेख बाम भाग नीचाँ 'संलग्नक' शीर्षकक अन्तर्गत कयल जाइत अछि ।

व्यावसायिक पत्रक बानगी

(1) मैथिली अकादमी
(प्रकाशक एवं पोथी विक्रेता)
शिवपुरी, पटना 800023

(2) पत्रांक 175/07
तिथि 25/02/2007

(3) सचिव,
साहित्य अकादेमी
35, फीरोजशाह मार्ग, दिल्ली-110001

(4) प्रिय महोदय,

(5) अपनेक माङक अनुसार हम अपन संस्था द्वारा प्रकाशित पोथीक सूची पठा रहल छी । ई सभ पोथी हमरा लग उपलब्ध अछि । हमर नव पोथीक सेट अगिला

मास मार्च धरि छपिकऽ तैयार भऽ जायत । पोथीक दस-दस प्रति किनलापर हम 25% लाभ दैत छी । अनुमतिक संग बीस प्रतिशत राशि अग्रिम पठायब आवश्यक अछि । पैकिंग निःशुल्क अछि । कृपया आदेश पठाकऽ हमरा सेवाक अवसर प्रदान कयल जाय ।

(6) भवदीय

(7) माहेश्वर राम

कृते मैथिली अकादमी

(8) संलग्नक-

पोथीक सूची

अभ्यास 2

I) अपने 21 जून 2007 कें अपन छोट भाइकें 300 टाका मनीआर्डर द्वारा पठौलहुँ । उक्त राशि 16 जुलाइ 2007 कें अहाँक अनुजकें भेटलनि । टाका समयसँ नहि पहुँचबाक कारणें ओ अपन स्कूलक फीस समयसँ नहि दऽ सकलथिन । एकर शिकाइत पोस्टमास्टरसँ करैत एक पत्र लिखू ।

II) अहाँ गरमीमे एक सप्ताह लेल मसूरी जाय चाहैत छी । गरमीमे बहुतो लोक मसूरी घुमबा लेल जाइत अछि । अहाँ चाहैत छी जे ठहरबाक व्यवस्था पहिनहि भऽ जाय । एहि लेल अहाँ पर्यटक-अवासकेन्द्रमे कोठली सुरक्षित करबऽ चाहैत छी । नीचाँ एहि संबंधमे पत्र लिखब आरंभ कयल गेल अछि ।

एकरा पूर्ण करू ।

सेवामे
प्रबंधक,
उत्तर प्रदेश पर्यटन विकास निगम,
मसूरी (उतर प्रदेश)

भवदीय

सरकारी पत्राचार

औपचारिक पत्र-व्यवहारक दोसर रूप अछि सरकारी आ शासकीय पत्राचार । ई पत्र-व्यवहार सरकारक विभिन्न विभागक बीच एवं सरकारी एवं दोसर संस्थाक बीच होइत अछि । हम जनैत छी जे भारतीय शासन प्रणाली मंत्रिमंडलीय शासन प्रणाली अछि । एहिमे शासन व्यवस्थाक काज विभिन्न मंत्रालयमे बाँटि देल जाइत अछि । काजक ओ बँटबारा प्रधानमंत्रीक सलाहसँ राष्ट्रपति करैत छथि । सभ मंत्रालयक कार्यभार एक वा एकसँ अधिक मंत्रीकें सौंपि देल जाइत छनि । मंत्रालयक प्रशासनिक उत्तरदायित्व सचिवक होइत अछि । मंत्रालयक काजक विस्तारकें देखैत ओकरा विभिन्न विभागमे, प्रभागक शाखा सभमे आ अनुभागमे बाँटि देल जाइत अछि। ओकर काजकें देखबा लेल विभिन्न स्तरक अधिकारी होइत अछि, जे क्रमशः संयुक्त सचिव, उपसचिव, अवर सचिव आ शाखा अधिकारी, अनुभाग अधिकारी आदि कहबैत अछि । प्रत्येक अनुभागमे कार्य सम्पादन लेल अधीक्षक, पर्यवेक्षक, सहायक एवं टंकक, लिपिकवर्गीय कर्मचारी, चतुर्थ श्रेणीक कर्मचारी होइत अछि । प्रत्येक कार्यालयमे ओहिसँ सम्बद्ध व्यक्ति, कार्यालय आ संस्थाक पत्र अबैत अछि तथा ओकर उत्तर देल जाइत अछि । प्राप्त होबऽवला पत्रसभकें बहीमे लिखि, अथवा ओहिपर कारबाइ लेल ओकरा प्रस्तुत करबाक एक निर्धारित प्रक्रिया अछि । हमरा व्यक्तिगत पत्र प्राप्त होइत अछि तँ हम स्वयं

ओकर उत्तर दऽ दैत छी । जँ ओ पत्र परिवारक दोसरोसँ संबंधित होइत अछि तखन सभ गोटे ओहि विषयमे अपन-अपन विचार दैत अछि, तखन जाहि व्यक्तिक नामसँ आयल रहैत अछि ओ उत्तर लिखि दैत अछि । मुदा, जखन कोनो सरकारी कार्यालयमे कोनो पत्र अबैत अछि तँ ओकर निष्पादन मौखिक चर्चा द्वारा नहि कयल जा सकैछ, किएक तँ कार्यालयमे जे पत्र अबैत अछि ओ ओहि ठामक कोनो अधिकारीसँ व्यक्तिगत रूपसँ संबद्ध नहि भऽकऽ हुनक पदसँ संबंधित होइत अछि । 'निदेशक'क नामे श्री संबोधित पत्र ओहि व्यक्तिक लेल होयत जे ओहि समय निदेशकक पदपर अछि । मानि लियऽ जे ताँती निदेशक पदपर छथि तँ ओ पत्र हुनके लेल छनि, मुदा दुइ दिनक पश्चात श्री ताँतीक बदली भऽ जाइत छनि आ हुनका स्थानपर श्री राजन आबि जाइत छथि तँ ओ पत्र श्री राजनक लेल भऽ जायत । एहन स्थितिमे ई आवश्यक भऽ जाइत अछि जे पत्रक संबंधमे सभ प्रकारक लिखा-पढ़ी विधिवत रूपमे होअय । एकर अतिरिक्त, कार्यालयमे कोनो पत्रक विषयमे कोनो प्रकारक निर्णय कोनो-ने-कोनो नियमक आधारपर लेल जाइत अछि । अतएव जाहि नियम आ विधिक अधीन कोनो मामिलाक निष्पादन भेल हो तँ ओकर चर्च सेहो आवश्यक होइत अछि, जाहिसँ ई प्रमाणित भऽ सकैक जे उक्त निर्णय उचित लेल गेल अछि । एहि प्रकारेँ कार्यालयमे पत्राचारक एक निश्चित प्रक्रिया होइत अछि ।

9.3 सरकारी पत्राचारक प्रक्रिया

कार्यालयमे प्राप्त पत्रक कार्यालयगत भाषामे 'आवती' कहल जाइत अछि । जखने कोनो पत्र मंत्रालय आ कार्यालयमे पहुँचैत अछि तखने ओकरा आवती बहीमे टिपिकऽ संबद्ध अनुभागक डाइरीकर्ताक लग पठाओल जाइत अछि । डाइरी लिपिक आवतीक डाइरी कऽ (डाइरीमे टिपिकऽ) अनुभाग अधिकारीकेँ प्रस्तुत करैत अछि । अनुभाग अधिकारी ओहिपर संबद्ध सहायकक नाम अंकित कऽ सौंपि दैत अछि । महत्त्वपूर्ण पत्रक जानकारी आ आवश्यक निर्देश लेल डाक स्तरपर सेहो शाखा अधिकारी वा ओकरोसँ ऊपरक अधिकारीकेँ प्रस्तुत कयल जाइत अछि, जतऽ संबंधित सहायक ओहिपर उचित विधानक अनुरूप काज करैत अछि । शाखा अधिकारी आ दोसर उच्च अधिकारी कोनो आवतीपर अनुभागक बिनु कारबाइ कयनहुँ अपना लग राखि लैत अछि ; नहि तँ आवतीपर आद्याक्षर अर्थात् संक्षिप्त हस्ताक्षर कऽकऽ आवश्यक निर्देशक संग अनुभाग अधिकारी लग पठा दैत अछि ।

9.3.1 टिप्पण (व्याख्या)

कार्यालयमे कोनो प्रकारक पत्र प्राप्त होइते ओहिपर कारबाइक क्रम आरम्भ भऽ जाइत अछि, जे अंतिम रूपसँ निष्पादन धरि चलैत अछि । ई कारबाइ टिप्पण अर्थात् व्याख्या कहबैत अछि । काजक सभ चरणमे देल गेल सुझाव, संकेत, निदेश, दर्ज कयल गेल तथ्य, सूचना आदि टिप्पण कहबैत अछि । बिनु टिप्पण कोनो पत्रक अंतिम रूपसँ निष्पादन संभव नहि अछि । पत्र प्राप्त भेलाक पश्चात संबंधित सहायक पत्रकेँ फाइलमे राखि अपन टिप्पणीक संग अनुभाग अधिकारीक समक्ष प्रस्तुत करैत अछि । जँ ओहि विषयक कोनो फाइल पूर्वसँ उपस्थापित नहि हो, अर्थात् पहिल पत्र पहिल कार्यालयमे आयल हो, तखनहि नव फाइल (संचिका) खोलल जाइत अछि ।

आवतीक विषयमे पहिल टिप्पणी संबंधित सहायकक होइत अछि । ओ पत्रक सारांश दैत लिखैत अछि जे ओहिमे देल गेल तथ्य सही अछि वा नहि । जँ कोनो कथन असत्य अछि तँ सेहो उल्लेख कऽ देल जाइत अछि । ओहि मामिलामे जँ कोनो पत्र-व्यवहार भऽ चुकल होअय तँ ओकरो सार टिप्पणमे रहैत अछि । नियम, नीति आ पूर्व निर्णयक उल्लेख कयल जाइत अछि, जाहि अनुसारेँ आवतीपर निर्णय लेब उचित होयत । अंतमे ओहि विषयमे जाहि

प्रसंगपर निर्णय अपेक्षित छी ओकरो चर्चा होइत अछि आ जँ संभव हो तँ निर्णयक दिशाक संकेत सेहो दऽ सकैत अछि । अंतमे सहायक बामा कात अपन हस्ताक्षर करैत अछि । तखन फाइल अनुभाग अधिकारीक समक्ष प्रस्तुत होइत अछि । कोनो विषयमे निर्णय मौखिक चर्चक पश्चातो लेल जा सकैछ, मुदा टिप्पणी स्थायी प्रमाण होइत अछि, जकरा प्रयोजन पड़लापर साक्ष्य रूपमे देखल जा सकैत अछि । संचिकापर भेल टिप्पणी देखिकऽ ई बुझल जा सकैत अछि जे कोन निर्णय कहिया लेल गेल आ कोन परिस्थितिमे अथवा कोन नियम आ प्रावधानक अंतर्गत लेल गेल । अहाँक मनमे प्रश्न उठि सकैत अछि जे टिप्पणी लिखबाक की प्रयोजन छैक ? सोझे उत्तर लिखिकऽ अधिकारीसँ अनुमोदन किएक ने प्राप्त कयल जाइछ ? हम ऊपरमे चर्च कऽ चुकल छी जे टिप्पणीमे सहायक कोन-कोन बातक उल्लेख करैत अछि । एहिसँ पता चलैत अछि जे टिप्पणीक तीनटा उद्देश्य होइत अछि ।

1) प्राप्त पत्रमे देल गेल विषयपर सभ तथ्य आ पूर्ववृत्तक प्रसंग संबंधित अधिकारीकेँ अवगत कराएब ।

2) प्रस्तुत विषयमे जे कारबाइ संभव होअय अथवा विकल्प संभव होअय, ओकरा स्पष्ट करब । एहन करैत काल संगत नियमसभक प्रमाण देब ।

3) ई संकेत करब जे ओहि विकल्पमेसँ ककरा चुनब अभीष्ट होयत । एहि तरहक संकेत दैत समुचित विचार प्रस्तुत करब, जाहिसँ संबद्ध अधिकारी सभ बातसँ, ओहिमे निहित समस्यासभसँ पूर्ण अवगत भऽ सकय ।

एहि तरहक टिप्पणीमे संबद्ध विषयक पछिला जानकारी सेहो होइत अछि आ समाधानक सुझाव सेहो । सम्पूर्ण पृष्ठभूमिकेँ ध्यानमे रखैत अधिकारीकेँ निर्णय लेबामे सुविधा होइत छनि ।

टिप्पणी लेखनक समय ध्यान रखबायोग्य बात

हम चर्च कऽ चुकल छी कोनो विषयपर लेल जायवाला निर्णयमे टिप्पणीक महत्त्वपूर्ण भूमिका होइत अछि । टिप्पणी लिखबा काल निम्नलिखित बातक ध्यान अवश्य रखबाक चाही :

1) **पूर्णता :** टिप्पणी लेखककेँ ई ध्यान रखबाक चाहियनि जे प्रस्तुत पत्रमे जे स्थिति सोझाँमे राखल गेल अछि वा जे प्रश्न उठाओल गेल अछि, ओकर निदान आवश्यक अछि । अतः अपन टिप्पणीमे निदान अवश्य सुझा देबाक चाहियनि, नहि तँ टिप्पणीक कोनो लाभ नहि होयत । ई निदान पूर्ण होयबाक चाही ।

2) **संक्षिप्तता :** टिप्पणीमे कथनकेँ संक्षेपमे आ प्रभावपूर्ण ढंगसँ प्रस्तुत करबाक चाही, किएक तँ अधिकारीकेँ विस्तृत टिप्पणी पढ़बाक पलखति नहि होइछ । एहि लऽकऽ अनावश्यक विस्तारसँ बचैत तर्कसंगत ढंगसँ तथ्य रखबाक चाही ।

3) **तर्कसंगत विचारक्रम :** सम्पूर्ण टिप्पणीमे विचारक स्तरपर पूर्वापर (अगिला आ पछिला) क्रम होयबाक चाही, प्रस्तुत प्रश्नक चर्च आ भविष्यक कारबाइक सुझाव सेहो रहबाक चाही ।

4) **स्पष्टता :** टिप्पणीक भाषा स्पष्ट, सरल आ संयत होयबाक चाही । एहिमे कोनो तरहक भ्रांति आ भूल-चूकक जगह नहि होयबाक चाही । अर्थक कोनो संशय सेहो नहि होयबाक चाही ।

5) **तटस्थता :** टिप्पणीमे कोनो अधिकारी वा संस्था वा दोसर कोनो व्यक्तिक प्रति व्यक्तिगत आक्षेप नहि होयबाक चाही ।

6) कोनो कथनपर अनावश्यक आ अतिरिक्त जोर देबाक प्रयास नहि होयबाक चाही । एहिसँ टिप्पणी लिखऽवलाक स्वार्थ झलकि सकैछ । तेँ निष्पक्ष भावसँ सभ तथ्य आ दृष्टिकोण प्रस्तुत कऽ देबाक चाही ।

7) टिप्पणीमे 'हम' वा 'हमर'क प्रयोग नहि कयल जाइछ, किएक तँ टिप्पणी वैयक्तिक नहि भऽ वस्तुनिष्ठ होइत अछि ।

टिप्पणी लेखन

ऊपर हम विचार कयलहुँ अछि जे सहायककेँ जखन कोनो पत्र प्राप्त होइत अछि, तखन ओ ओकरा फाइल कऽकऽ अपन टिप्पणी प्रस्तुत करैत अछि । अहाँ जानि गेल छी जे टिप्पणी फाइलपर लिखल जाइत अछि । आउ, आब फाइलक पद्धतिकेँ बुझि ली, जाहिसँ टिप्पणी लेखनक प्रसंग नीक जकाँ जानि सकब । फाइलक दू भाग होइत अछि– पहिल टिप्पण भाग, दोसर पत्राचार भाग ।

पत्राचार भागमे आवतीसभ एवं ओहिसँ संबंधित पत्र-व्यवहारक कार्यालय-प्रति राखल जाइत अछि । टिप्पण भागमे विचाराधीन कागज-पत्तरक संबंधमे लिखल गेल टिप्पणी होइत अछि ।

टिप्पणी लिखबा लेल एक विशेष तरहक कागजक उपयोग होइत अछि, जकरा नोटशीट कहल जाइछ । नोटशीटमे बामा कात हशिया होइत अछि ।



1) सभसँ ऊपर ओहि कार्यालयक नाम एवं अनुभागक नाम लिखल होइत अछि जाहिमे टिप्पणी लिखल जाइत अछि ।

2) पुनः पावतीक क्रमांक, तिथि आदिक उल्लेख कयल जाइत अछि ।

3) पुनः विषयकेँ क्रमबद्ध ढंगसँ प्रस्तुत कयल जाइत अछि । विषय प्रस्तुत करबाक पाँच चरण होइत अछिः

I) आवतीक विषय II) कारण (III) नियम

IV) कार्यालयमे कार्यक स्थिति V) सुझाव

पहिल अनुच्छेद छोड़िकऽ दोसर अनुच्छेदपर संख्या देल जाइत अछि । टिप्पणीमे देल गेल संदर्भ, निर्देश सभक क्रम वैह होइत अछि जे आवतीसभक होइछ ।

4) टिप्पणीक अंतमे सहायक बामा दिस तिथि सहित हस्ताक्षर करैत अछि आ अधीक्षक वा अनुभाग अधिकारीकेँ प्रस्तुत करैत अछि । राजपत्रित अधिकारी टिप्पणीक दाहिना कात हस्ताक्षर करैत अछि, अराजपत्रित अधिकारी बामा कात ।

5) फाइल जाहि अधिकारीकेँ प्रस्तुत कयल जाइत अछि ओकर पदनाम लिखिकऽ रेखांकित कऽ देल जाइत अछि । एकरा 'मार्क' करब सेहो कहल जाइत अछि ।

टिप्पणीक नमूना

(1) मैथिली प्रशिक्षण संस्थान
राजभाषा विभाग
भारतीय भाषा संस्थान-मैसूर-570006

2) क्रमांक ....(आवती) पृष्ठ..................................पत्राचार

3) आयकर विभाग दरभंगासँ श्री रतन केसरी आ कुमारी शान्ति एवं सुश्री दयामयी भट्टाचार्यक नाम मैथिली प्रशिक्षण लेल नामित कयल गेल अछि ।

4) अगस्त 2007 सँ प्रारंभ सत्रक लेल प्रशिक्षणार्थीसभक नामक सूचीकेँ अंतिम रूप देल जा चुकल अछि । अक्टूबर 2007 सँ आरंभ होबऽवला सत्रक सेहो विभिन्न विभागसँ नाम आबि गेल अछि, जकर संख्या तीससँ अधिक अछि ।

5) एहन स्थितिमे श्री केसरी आ कु. शान्ति, सुश्री भट्टाचार्यकेँ नवम्बर 2007क सत्रमे प्रशिक्षण देल जा सकैत अछि ।

8) सुधाकर जयपुरिया
मैथिली अधिकारी

21 अगस्त 2007

7) अनुभाग अधिकारी

एहि तरहेँ तैयार कयल गेल टिप्पणी जखन अनुभागकेँ प्रस्तुत कऽ देल जाइत अछि तखन अनुभाग अधिकारी ओकरा साकांक्ष भऽ पढ़ैत अछि । जँ अपना दिससँ किछु जोड़ऽ चाहैत अछि वा कोनो सुझाव देबऽ चाहैत अछि तँ दऽकऽ शाखा अधिकारी लग पठा दैत अछि । जाहि मामिलाकेँ निपटयबामे अनुभाग अधिकारी स्वयं क्षम होइत अछि, ओकरा आगाँ नहि पठाकऽ स्वयं ओहिपर अपन निर्णय दऽ दैत अछि । शाखा अधिकारी स्तरपर सेहो वैह प्रक्रिया होइत अछि । पत्रक विषयक महत्त्वक अनुसारेँ फाइल उप-सचिव, संयुक्त सचिव, सचिव, उपमंत्री, मंत्री स्तर धरि जाइत अछि । एहि तरहेँ कार्यालयमे प्राप्त डाक (कोनो पत्र)पर कयल जायवला कारबाइमे एक निश्चित सरणि अर्थात् ढंग होइत अछि जे डाइरीकर्ता, सहायक, अनुभाग अधिकारी, उपसचिव, संयुक्त सचिव एवं मंत्री स्तर धरि चलैत अछि । मुदा ई नहि बुझबाक चाही जे सभ ममिला मंत्री स्तर धरि जाइते अछि । विषयक महत्त्वक अनुसारेँ विभिन्न स्तरक अधिकारी द्वारा निर्णय लेल जाइत अछि ।

टिप्पणीक प्रकार

क) ऊपर हमरालोकनि देखलहुँ जे जखन कोनो टिप्पणी संबद्ध अधिकारी लग पहुँचैत अछि तँ ओ ओहिपर ढंगसँ कारबाइ कऽ सकैत अछि । जेना–

1) ओ सहमत भऽ जाइत अछि तँ अपन हस्ताक्षर कऽ दैत अछि आ अगिला कारबाइ लेल ऊपरक अधिकारी लग पठा दैत अछि ।

2) सहमत नहि हो तँ अपन मन्तव्य दैत फाइल ऊपरक अधिकारी लग पठबैत अछि ।

3) जँ टिप्पणीमे कोनो बात स्पष्ट नहि हो तँ 'विमर्श' लिखि फाइल टिप्पणी लिखऽवला व्यक्तिकेँ आपस कऽ दैत अछि ।

एहि प्रकारक टिप्पणी 'नेमि' (अर्थात् पहियाक चक्कर जकाँ) टिप्पणी कहबैत अछि। ई गौण वा कम महत्त्वक मामिलामे सामान्य विचार-विमर्श लेल लिखल जाइत अछि आ प्रतिदिन प्रशासनिक पत्र-व्यवहारक अंग बनैत अछि।

उदाहरण

अनुमति लेल प्रस्तुत।

आगाँ कोनो करबाइ अपेक्षित नहि।

देखि लेल, धन्यवाद।

विमर्श।

एहि मामिलाक निष्कर्ष नीचाँमे प्रस्तुत अछि।

ख) आदेशात्मक टिप्पणी : अधिकारी तखन लिखैत अछि जखन ओ कोनो मामिलामे आदेश दैत अछि वा अन्य जानकारी मङैत अछि।

उदाहरण

- जाँचक विस्तृत रिपोर्ट (अर्थात् कार्य-विवरण) देल जाय।
- सभ संबद्ध कर्मचारी लिखि लेथि।
- वित्त मंत्रालयसँ अनुमोदन प्राप्त कऽ लेल जाय।
- एहि करबाइ लेल वेतन लेखा कार्यालयकेँ पठाओल जाय।

ग) अधिकारी स्तरपर टिप्पणी : ई दू स्थितिमे होइत अछि– कखनहुँ ओ सहायक स्तरक टिप्पणीक समान पूर्व टिप्पणीपर आधारित होइत अछि, कखनहुँ स्वतंत्र टिप्पणीक रूपमे। पहिल, अर्थात् पूर्व टिप्पणीपर आधारित टिप्पणीक चर्च हम कऽ चुकल छी, जतऽ सक्षम अधिकारी कोनो मामिलापर निर्णय लैत अछि।

अधिकारी स्तरक दोसर टिप्पणी स्वतंत्र टिप्पणी होइत अछि। ई कोनो पत्रपर आधारित नहि भऽकऽ प्रशासनिक आवश्यकतापर आधारित होइत अछि। एतऽ अधिकारी प्रशासनिक मामिलाकेँ ध्यानमे राखि आगाँक सुझाव दैत अछि आ फाइल आगाँ उच्चतर अधिकारीक समक्ष अनुमोदन लेल प्रस्तुत करैत अछि। उदाहरण लेल कार्यालयमे कार्यक मात्रा बढ़ि जयबाक कारणेँ नव पदक सृजनक मांग लेल टिप्पणी प्रस्तुत करब। ई टिप्पणी स्वतः पूर्ण होइत अछि।

घ) अंतर्विभागीय टिप्पणी : विभागक भीतर टिप्पणीक उपयोग दू शाखाक बीच होइत अछि।

ङ) टिप्पणीक क्रमिक निष्कर्ष (सार) : जखन फाइल सचिव अथवा मंत्री लग पठाओल जाइत अछि तखन नीचाँसँ चल आबि रहल सम्पूर्ण टिप्पणीक सार एक पन्नामे तैयार कयल जाइत अछि, कारण सम्पूर्ण पत्रव्यवहार आ टिप्पणीकेँ पढ़बाक समय प्रायः हुनका लग नहि होइत छनि।

एहि तरहेँ तैयार कयल गेल टिप्पणीक सार निष्कर्ष कहबैत अछि। नेमि अर्थात्(परिधि-चक्रात्मक) ढंगक मामिलामे अनुभाग अधिकारी स्तरेसँ एकर निष्पादन भऽ जाइत अछि। फाइल जाहि प्रक्रियासँ आगाँ बढ़ैत अछि, निष्कर्षपर पहुँचलाक बाद ताही प्रक्रियासँ नीचाँ अबैत पुनः सम्बद्ध सहायक लग पहुँचि जाइत अछि।

अहाँ टिप्पणी लेखनक नमूना देखलहुँ। ओहिपर आगाँ चलऽवला टिप्पणीक प्रक्रियाक उदाहरण आब देल जा रहल अछि।

विभिन्न स्तरपर टिप्पणी लेखनक नमूना

(1) मैथिली प्रशिक्षण संस्थान
राजभाषा विभाग
भारतीय भाषा संस्थान-मैसूर 570006

2) क्रमांक .... (आवती) पृष्ठ..................................पत्राचार

आयकर विभाग, दरभंगासँ श्री रतन केसरी आ कुमारी शान्ति एवं सुश्री दयामयी भट्टाचार्यक नाम मैथिली प्रशिक्षण लेल नामित कयल गेल अछि । अगस्त 2007सँ प्रारम्भ सत्रक लेल प्रशिक्षणार्थी सभक नामक सूचीकेँ अंतिम रूप देल जा चुकल अछि। अक्टूबर 2007 सँ आरंभ होबऽवला सत्र लेल सेहो विभिन्न-विभागसँ नाम आबि गेल अछि, जकर संख्या तीससँ अधिक अछि । एहना स्थितिमे श्री केसरी आ कु. शान्ति एंव सुश्री भट्टाचार्यकेँ नवम्बर-दिसम्बर 2007क सत्रमे प्रशिक्षण देल जा सकैत अछि ।

आदेशार्थ प्रस्तुत

सुधाकर जयपुरिया
मैथिली सहायक
21 अगस्त 2007
अनुभाग अधिकारी
सहायक निदेशक प्रशिक्षण

विमल राय
अनुभाग अधिकारी
21 अगस्त,2007

ठीक अछि । नवम्बर-दिसम्बर 2007 क सत्रमे बजा लेल जाय ।

ललितेश्वर झा
22.08.2007

अनुभाग अधिकारी

आवश्यक पत्रक प्रारूप तैयार करी ।

मैथिली सहायक

विमल राय
22.08.07

अभ्यास 3

मानव संसाधान विकास मंत्रालयक कार्यालय केन्द्रीय मैथिली निदेशालयमे अनुसंधान सहायकक पदपर काज कऽ रहल श्री अमर मेहता अपन योग्यता बढ़यबा लेल निजी स्तरपर मैथिलीमे एम. ए. परीक्षा देबाक अनुमति मङलनि अछि । एहि विषयपर रिक्त स्थानमे टिप्पणी तैयार करू ।

9.3.2 प्रारूपण (मसौदा लेखन)

एखन धरि हम कार्यालयमे आगत पत्रक मात्रा आ ओहिपर लेल जायवला निर्णयक प्रसंगमे चर्चा कऽ चुकल छी । आब प्रश्न ई अछि जे पत्र कार्यालयमे आयल अछि, ओकर उत्तर कोना देल जाइत अछि ? अधिकारी जखन पत्रक विषयमे निर्णय लऽ लैत अछि तँ पठबऽवला विभाग आ संस्था वा व्यक्तिकेँ पत्रक उत्तर लिखल जाइत अछि । आगत पत्रपर टिप्पणकार्य पूर्ण भऽ जाइछ तँ टिप्पणीमे देल गेल अनुमतिक अनुसारेँ उत्तरक 'प्रारूप' वा मसौदा तैयार कयल जाइत अछि । सहायक ई प्रारूप तैयार कऽ अनुभाग अधिकारीक समक्ष प्रस्तुत करैत अछि । अनुभाग अधिकारी ओहिमे आवश्यक परिवर्तन कऽ संबंधित अधिकारीकेँ स्वीकृति लेल प्रस्तुत करैत अछि । अधिकारी जँ आवश्यक बुझैत अछि जे ओहि प्रारूपमे किछु परिवर्तन-संशोधनक प्रयोजन अछि तँ ओ की तँ परिवर्तन स्वयं कऽ दैत अछि अथवा सुझाव दऽ सहायककेँ घुरा दैत अछि । सहायक पुनः प्रारूप तैयार कऽ प्रस्तुत करैत अछि । अधिकारी ओहि प्रारूप पत्रपर अपन स्वीकृति दैत अछि । पुनः पत्रक स्वच्छ प्रति अंतिम रूपसँ तैयार कऽ अधिकारीक हस्ताक्षर कराय पठा देल जाइछ । एहि तरहक टिप्पणी आ प्रारूपण परस्पर संबद्ध होइत अछि । पत्र जाहि अधिकारीक हस्ताक्षरसँ निर्गत होइछ ओ अधिकारी पत्रक प्रारूपकेँ अपनासँ ऊपर अधिकारी लग स्वीकृति हेतु पठबैत अछि ।

प्रारूपणमे ध्यान रखबाक योग्य बात

1) प्रारूपमे देल गेल पत्र सं., तिथि, उद्धरण, संदर्भ आदि सही आ शुद्ध होयबाक चाही।

2) कोनो आवश्यक सूचना, संदर्भ आदि छूटय नहि, उत्तर अपूर्ण नहि रहय ।

3) सभ अपेक्षित प्रसंगक उल्लेख स्पष्ट आ सहज भाषामे होयबाक चाही । वाक्य-विन्यास सरल, सुसंगत आ प्रभावपूर्ण होयबाक चाही ।

4) अनावश्यक विस्तार नहि होयबाक चाही । अर्थ स्पष्ट होयबाक चाही ।

5) प्रारूपक एक निश्चित आ मान्य शैली होइत अछि, जे व्यावहारिक परंपरासँ स्वीकृत होइत अछि । ओहिमे अकारण परिवर्तन करब उपयुक्त नहि होइछ ।

प्रारूप तैयार करब

कार्यालयमे लिखल जायवला पत्र कैक प्रकारक होइत अछि । किछु पत्र बाहरसँ आबऽवला उत्तरक रूपमे लिखल जाइछ । किछु पत्र कार्यालयक विभिन्न विभागमे काज चलबऽ लेल लिखल जाइत अछि । विभिन्न प्रयोजन लेल लिखल जायवला पत्रक प्रारूप अलग-अलग होइत अछि । एतऽ हम प्रारूप तैयार करबाक सामान्य पद्धतिपर विचार कऽ रहल छी । ओकर पश्चात सरकारी पत्राचारक विविध रूपक प्रसंग विचार करब ।

1) शीर्षकः समसँ ऊपर पत्रक शीर्षक होइत अछि, जाहिमे पाँच प्रसंगक उल्लेख होइत अछि–

   I) पहिल पंक्तिमे पत्रसंख्या ।

   II) आगाँक पंक्तिमे 'भारत सरकार' लिखल जाइत अछि, ओकर अगिला पाँतीमे कार्यालय, मंत्रालयक नाम आ विभागक नाम ।

   III) अगिला पाँतीमे पत्र-प्रेषकक नाम आ पुनः अगिला पाँतीमे कार्यालय एवं भारत सरकारक कार्यालयक नाम लिखल जाइत अछि ।

   IV) अगिला पंक्तिमे 'सेवामे' लिखिकऽ ओहि अधिकारी / व्यक्तिक नाम आ पदनाम लिखल जाइत अछि, जनिका पत्र प्रेषित होयतनि । ओकर पश्चात भारत सरकारक कार्यालयक नाम लिखल जाइत अछि ।

   V) स्थान आ तिथि दुनू एक संग दहिना कात पत्रक ऊपर कोनमे लिखल जाइत अछि ।

2) विषय : पत्रक वास्तविक अंश लिखबासँ पहिनहि संबोधनसँ पूर्व 'विषय' शीर्षकसँ ओकर विषयक संक्षिप्त संकेत रूपहि दऽ देल जाइत अछि । एहिसँ पढ़ऽवलाकेँ समयक बचत होइत अछि ।

3) संबोधन : सरकारी पत्रमे संबोधनक रूपमे महोदय/महोदया, महाशय आदिक सैह उपयोग होइत अछि ।

4) पत्रक मुख्य भाग : पत्रक माध्यमसँ जे किछु कहल जाइत अछि ओ एहि भागमे अबैत अछि । जँ प्राप्त करऽवलाक संग कोनो पत्र-व्यवहार पहिनहिसँ चलि रहल अछि तँ ओकर संदर्भ सेहो दऽ देल जाइत अछि । यथार्थ घटनासभक स्पष्टीकरण एतहि होइत अछि एवं संपूर्ण विषयक निष्कर्ष दऽ देल जाइत अछि । एहन करैत काल जे तथ्य आ विचार प्रस्तुत कयल जाइत अछि वा जाहि विवाद आदिक उल्लेख होइत अछि, ओहिसँ संबंधित पछिला पत्रसभक सन्दर्भ अवश्य देल जाइत अछि ।

5) स्वनिर्देश : ऊपर हम कहि चुकल छी जे सरकारी पत्राचारक कैकटा रूप होइत अछि । एहि सभ पत्रमे स्वनिर्देश एक ढंगक नहि होइछ । स्वनिर्देशक रूपमे प्रायः भवदीय/भवदीया शब्दक प्रयोग होइत अछि, मुदा अर्ध-सरकारी पत्रमे 'अपनेक'/ 'अहाँक' स्वनिर्देश सैह प्रयुक्त होइत अछि । एकर नीचाँ प्रेषकक हस्ताक्षर होइत अछि । हस्ताक्षरक नीचाँ कोष्ठकमे ओकर नाम लिखल जाइत अछि । ओकर नीचाँमे पदनाम लिखल जाइत अछि । कखनहुँ-कखनहुँ पदनाम नहियोँ रहैछ ।

6) संलग्न पत्र : जँ पत्रक संग आनो कागज संलग्न कयल जाय तँ ओकर उल्लेख हस्ताक्षरक सीधमे बामा कात होइत अछि ।

7) पृष्ठांकन : जँ पत्रक प्रतिलिपि कोनो दोसर अधिकारीकेँ पठयबाक हो तँ ओकर उल्लेख सेहो वामा भाग नीचाँसँ शुरू होइत प्रायः सम्पूर्ण पाँतीमे कयल जाइत अछि ।

9.4 सरकारी पत्राचारक विभिन्न प्रकार

सरकारी पत्र-व्यवहारमे निम्नलिखित प्रकार होइत अछि ।

1. सरकारी पत्र
2. अर्धसरकारी पत्र
3. कार्यालय ज्ञापन
4. कार्यालय आदेश
5. आदेश
6. पृष्ठांकन
7. अधिसूचना
8. संकल्प
9. प्रेस विज्ञप्ति
10. प्रेस टिप्पणी (नोट)
11. अंतर्विभागीय टिप्पणी
12. तार
13. टेलेक्स संदेश
14. शीघ्र पत्र
15. सेविग्राम
16. परिपत्र

सरकारी प्रशासनमे पृथक-पृथक प्रयोजन लेल पत्राचारक भिन्न-भिन्न प्रकारक उपयोग कयल जाइत अछि । केन्द्र सरकारकेँ, विदेशी सरकारकेँ, राज्य सरकार वा दोसर संस्थाक प्रधान आ गैर सरकारी व्यक्ति सभसँ पत्राचार लेल सरकारी पत्रक आवश्यकता होइत अछि । जँ सरकारी काजक निष्पादनमे विशेष विलम्ब भऽ रहल अछि, एहना स्थितिमे अधिकारीक व्यक्तिगत रूपसँ ध्यान आकृष्ट करायब आवश्यक अछि, तखन अर्धसरकारी पत्रक उपयोग करऽ पड़ैछ । एकर अतिरिक्त मंत्रालयक विभागसभसँ आपसमे प्रशासनिक पत्राचार लेल कार्यालय ज्ञापनक

प्रयोजन होइत अछि। एहि तरहेँ सरकारी विभागसँ आंतरिक प्रशासन लेल कार्यालय आदेशक प्रयोग होइत अछि। अधिसूचना आ संकल्पकेँ भारतक राजपत्र (गजट)मे प्रकाशित कयल जाइत अछि। सांविधिक नियम आ अनुमतिक घोषणाक प्रकाशन अधिसूचनाक रूपमे होइत अछि। नीति संबंधी सरकारी निर्णयसभक, जाँच समिति आ आयोगक नियुक्ति आदिक सार्वजनिक घोषणा संकल्प द्वारा कयल जाइत अछि। परिपत्रक प्रयोग ओहि समय कयल जाइत अछि जखन मंत्रालय वा विभागीय कार्यालय कोनो सूचना अथवा अनुदेश अपन अधीनस्थ कार्यालयसभमे वा कर्मचारीसभकेँ दैत अछि। एकर प्रयोग उक्त कार्यालय आ मंत्रालय धरि सीमित होइत अछि। पृष्ठांकनक प्रयोग तखन होइत अछि जखन पत्रक प्रतिलिपि सूचनार्थ वा आवश्यक कारबाइ आदिक लेल सूचनार्थ अधिक व्यक्तिकेँ पठयबाक प्रयोजन होअय। प्रेस विज्ञप्ति द्वारा कोनो सूचनाक व्यापक प्रचार लेल ओकरा समाचारपत्र सभमे प्रकाशित कराओल जाइत अछि। एतऽ हम कार्यालयसभमे प्रमुख रूपसँ प्रयुक्त होबऽवला किछु पत्र सभक चर्चा करब।

9.4.1 सरकारी पत्र

सरकारी पत्र औपचारिक होइत अछि एवं अर्धसरकारी पत्र अपेक्षाकृत अनौपचारिक। एहि दुनू पत्रक स्वरूपमे अंतर होइत अछि।

सरकारी पत्रक प्रयोगक क्षेत्र

सरकारी पत्राचारमे सरकारी पत्रक प्रयोग सभसँ अधिक होइत अछि। एकर उपयोग निम्नलिखितक संग होइत अछि :

क) विदेशी सरकारक संग

ख) राज्य सरकारक संग

ग) संबद्ध सरकारक संग

घ) संघ लोकसेवा आयोग आदिक संग

ङ) सार्वजनिक उपक्रमक संग

च) जनसंगठन आ सरकारी कर्मचारी लोकनिक संग

छ) गैरसरकारी व्यक्तिक संग।

विभिन्न मंत्रालय आ विभागक आंतरिक पत्रव्यवहार लेल सरकारी पत्रक प्रयोग नहि कयल जाइछ। एकरा लेल निर्धारित कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश आदिक प्रयोग कयल जाइत अछि। सरकारी पत्रक संबंधमे एहि बातक ध्यान रखबाक चाही जे सरकारी पत्र भारत सरकारक आदेशकेँ, विचारकेँ व्यक्त करबा लेल लिखल जाइत अछि, एहि लऽकऽ पत्रमे ई लिखि देल जाइत अछि जे पत्र सरकारक निर्देशसँ लिखल गेल अछि। पत्रक प्रारूपमे प्रायः 'हमरा ई कहबाक निर्देश भेल अछि' एहि वाक्यक प्रयोग कयल जाइत अछि।

सरकारी पत्रलेखन

1) सामान्य रूपसँ ई 'लेटर हेड' पर लिखल जाइत अछि। पैडक ऊपर भारत सरकार आ विभागक नाम आ स्थान छपल होइत अछि। एहि पत्रपर पत्रसंख्या आ तिथि लिखि देल जाइछ। जँ पैड नहि होइक तँ पत्र सं., भारत सरकार, विभागक नाम, सादा कागजपर टाइप कयल जाइत अछि।

2) पुनः पत्र प्राप्तकर्त्ता अधिकारीक नाम आ पदनाम लिखल जाइत अछि। एकर नीचाँ विभाग/मंत्रालयक नाम एवं स्थान लिखल जाइत अछि।

3) पुनः तिथि दहिना भाग लिखल जाइत अछि ।

4) तेसर चरणमे संक्षेपमे पत्रक विषयक उल्लेख होइत अछि ।

5) सरकारी पत्रक चतुर्थ अर्थात् चारिम चरणमे संबोधन रूपमे 'महोदय'क प्रयोग कयल जाइत अछि, मुदा गैरसरकारी व्यक्तिकेँ 'प्रिय महोदय' लिखल जाइत अछि । एकर अतिरिक्त सरकारी पत्रमे नमस्कार, प्रणाम आदि अभिवादनक प्रयोग नहि कयल जाइछ ।

6) पुनः पत्रक मुख्य विषयवस्तु लिखल जाइत अछि । कदाच पत्रमे एकसँ अधिक विषय हो तँ ओहि सभकेँ भिन्न-भिन्न पैराग्राफमे लिखबाक चाही ।

7) सरकारी पत्रक छठम चरणमे 'स्वनिर्देश'क रूपमे 'भवदीय' लिखल जाइत अछि । एकर नीचाँमे पत्र लिखऽवला अधिकारीक हस्ताक्षर, ओकर नीचाँमे नाम, पदनाम आ दूरभाष (टेलीफोन) नम्बर लिखल जाइत अछि ।

8) अंतमे नीचाँ पत्रक बाम कात पृष्ठांकन लिखल जाइत अछि । पहिने पृष्ठांकन संख्या लिखल जाइत अछि । एकर पश्चात एहिमे जाहि-जाहि अधिकारीलोकनि, विभागसभकेँ पत्रक प्रति पठाओल जाइत अछि, हुनक नाम एवं ओहिपर करबाइक दिशाक संकेत होइत अछि । पृष्ठांकनक नीचाँ जाहि विभागसँ पत्र प्रेषित कयल जाइत अछि ओहि अधिकारीक हस्ताक्षर होइत अछि ।

सरकारी पत्रक नमूना

1) सं. ....

भारत सरकार
गृह मंत्रालय

2) सेवामे,
सचिव, सभ राज्य सरकार

(3) नई दिल्ली
तिथि 5.5.95

4) विषय : मृत्युक सजाय समाप्त करबाक प्रस्ताव ।

5) महोदय,

6) हमरा ई कहबाक निर्देश भेल अछि जे भारत सरकारकेँ समय-समयपर देशमे मृत्युक सजाय समाप्त करबा लेल सुझाव प्राप्त होइत रहल अछि । विभिन्न क्षेत्रमे अपराधक रोकथाम आ एकर पता लगयबाक काज राज्य सरकारक अछि । एहि विषयमे नियम-कानून बनयबामे ओ समर्थ अछि । भारत सरकार चाहैत अछि जे सजायकेँ समाप्त करबाक संबंधमे एहन कानून बनाओल जाय, जे सभ राज्यमे समान रूपसँ लागू भऽ सकय । एहि विषयमे अंतिम निर्णय करबासँ पहिने सरकार सुझावसभकेँ नीक जकाँ जाँच-पड़ताल करऽ चाहैत अछि । एहि लऽकऽ सभ राज्य सरकारसँ अनुरोध अछि जे ओ अपन उच्च न्यायालयसँ राय लऽकऽ अपन सुझाव पठबथि । राज्य सरकारसँ अनुरोध अछि जे ओ अपन राज्यसँ संबंधित पछिला तीन वर्षक निम्नलिखित आँकड़ा सेहो पठबथि ।

क) राज्यमे मृत्युक कतेक मामिला दर्ज भेल ?

ख) राज्यमे कतेक लोककेँ मृत्युदंड देल गेल ?

ग) राज्यमे कतेक लोककेँ मृत्युक सजाय माफीक आवेदनक कारणेँ निरस्त कयल गेल ?

7) भवदीय
ह. क ख ग
संयुक्त सचिव,भारत सरकार

8) प्रति : सभ राज्य सरकारकेँ ।

रिक्त स्थानमे सही शब्द भरू

1) सरकारी पत्र............................होइत अछि । (अनौपचारिक/औपचारिक)

2) सामान्य सरकारी पत्रमे संबोधनक रूपमे.............................लिखल जाइत अछि । (महोदय/प्रिय महोदय)

3) सरकारी पत्रमे.............पुरुषक प्रयोग नहि कयल जाइछ । (अन्य/उत्तम)

4) सरकारी पत्रमे स्वनिर्देश लेल........................ क प्रयोग होइत अछि । (अहाँक/भवदीय)

5) सरकारी पत्रमे प्राप्तकर्त्ताक नाम, पदनाम पत्रक.......... लिखल जाइत अछि । (ऊपर/नीचाँ)

9.4.2 अर्ध-सरकारी पत्र

अर्धसरकारी पत्रक प्रयोग कखन आ किएक कयल जाइत अछि ?

सरकारी पत्रक प्रसंग अहाँ जनतब प्राप्त कयलहुँ । आब अर्धसरकारी पत्रक प्रसंगमे बुझी । अहाँ देखलहुँ जे सरकारी पत्र औपचारिक होइत अछि, मुदा अर्धसरकारी पत्रमे औपचारिकताक ध्यान नहि राखल जाइछ । एहि लऽकऽ एहि दुनू पत्रक उद्देश्य आ वाह्य रूप बदलि जाइत अछि ।

क) कोनो मामिलाक निष्पादन लेल अधिकारी सरकारी कार्यपद्धतिक औपचारिकतासँ बचिकऽ आपसमे सलाह-मसविराक हेतु अर्धसरकारी पत्रक उपयोग करैत अछि ।

ख) अर्धसरकारी पत्र द्वारा कोनो मामिलाक निष्पादन लेल एक विभागक अधिकारी दोसर विभागक अधिकारीक ध्यान व्यक्तिगत रूपसँ आकृष्ट करैत अछि ।

ग) कोनो सरकारी काजक निष्पादनमे देरी भऽ रहल होअय आ कैक गोट स्मारपत्र देलाक बादो उत्तर नहि भेटय तँ ओहि काजकेँ शीघ्र पूर्ण करयबा लेल अर्धसरकारी पत्र लिखल जा सकैत अछि । ई अर्धसरकारी पत्र स्मरणपत्रक समान होइत अछि ।

घ) अर्धसरकारी पत्रक प्रयोग साधारणत: अपन समकक्ष अधिकारीक संग कयल जाइत अछि ।

ङ) अर्धसरकारी पत्रमे उत्तम पुरुष अर्थात् हम, स्वयंक प्रयोग कयल जाइत अछि ।

च) अर्धसरकारी पत्र सरकारी पत्रक तुलनामे अनौपचारिक आ स्वाभाविक होइत अछि । एकरा एक अधिकारी दोसर अधिकारीकेँ मैत्रीभावसँ लिखैत अछि । एहि लऽकऽ 'संबोधन' आ 'स्वनिर्देश' मे भिन्नता होइत अछि ।

अर्धसरकारी पत्रलेखन

1) सभसँ ऊपर पृष्ठक दहिना भाग अर्धसरकारी पत्र संख्या, भारत सरकार, विभागक नाम, स्थान आ तिथि लिखल जाइत अछि ।

2) पृष्ठक बामा भाग अर्धसरकारी पत्र पठबऽवला अधिकारीक नाम, पदनाम आ दूरभाष संख्या लिखल जाइत अछि ।

3) संबोधनक रूपमे 'प्रिय श्री' क प्रयोग होइत अछि ।

4) एकर नीचाँ मुख्य विषय होइत अछि ।

5) तत्पश्चात् 'सधन्यवाद' 'साभार' आदिक उल्लेख होइत अछि ।

6) 'स्वनिर्देश'क रूपमे पत्रक नीचाँ 'भवदीय'क स्थानपर 'अपनेक' 'अहाँक' प्रयोग कयल जाइत अछि । तकर नीचाँमे पठबऽवलाक हस्ताक्षर होइत अछि ।

7) अंतमे पृष्ठक बामा कात पत्र प्राप्त करऽवला अधिकारी नाम, पदनाम, विभागक नाम आ स्थानक उल्लेख होइत अछि ।

अभ्यास 5

अहाँ सरकारी पत्रक नमूना देखि चुकल छी । नीचाँ अर्धसरकारी पत्रक नमूना देल जा रहल अछि । दुनूकेँ ध्यानसँ देखिकऽ अर्धसरकारी पत्र आ सरकारी पत्रमे कोन अंतर अछि, से फरिछाकऽ लिखू ।

अर्धसरकारी पत्रक नमूना

1) अ. स. प. सं............................

भारत सरकार

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

नई दिल्ली, तिथि ....

2) विभाकर
उपसचिव
दूरभाष सं. 467582

3) प्रिय श्री कृष्णदेव राम,

4) अहाँकेँ बुझल होयत जे देशमे नव शिक्षानीतिकेँ कार्यान्वित करबा लेल शिक्षा विभाग एक आदर्श पाठ्यक्रम तैयार करबाक योजना बनौलक अछि । एहि विषयमे प्रस्तावक व्यापक रूपरेखाक एक प्रति एहि पत्रक संग अहाँकेँ पठाओल जा रहल अछि । एहि प्रस्तावक संबंधमे जँ अहाँ अपन विचार हमरा शीघ्र पठा सकी तँ हम विशेष उपकृत होयब । एतऽ हम इहो उल्लेख कऽ देबऽ चाहैत छी जे हम एहि प्रस्तावकेँ औपचारिक रूपसँ संबधित विभागक विचार जनबा लेल परिचालित करऽ चाहैत छी ।

5) सामार,

7) श्री कृष्णदेव राम,
निदेशक
शिक्षा मंत्रालय
नई दिल्ली ।

(6) अहाँक,
ह0/ विभाकर मित्तल

अभ्यास 6

1) नीचाँ देल वाक्यमे सही शब्दसँ खाली जगहकेँ भरू ।

क) अर्धसरकारी पत्रमे स्वनिर्देशक रूपमे............................ लिखल जाइत अछि । (महोदय/अहाँक)

ख) अर्धसरकारी पत्रमे प्रेषकक नाम................................ लिखल जाइत अछि । (ऊपर/नीचाँ)

ग) ....पत्र औपचारिक होइत अछि । (सरकारी/अर्धसरकारी)

घ) ....मे धन्यवाद, आभार प्रकट करब आवश्यक नहि । (अर्धसरकारी/सरकारी)

2) नीचाँ देल प्रश्नक 'हँ' वा' 'नहि' मे उत्तर दियऽ ।

क) की मित्रलोकनि आ संबंधीसभकेँ सरकारी पत्र लिखल जा सकैत अछि ?

ख) की प्राप्त करऽवलाकेँ प्रेषक कहल जाइत अछि ?

ग) की सरकारी पत्रमे पृष्ठांकन लिखल जाइत अछि ?

9.4.3 कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेश

एहि पाठक पूर्व भागमे अहाँ सरकारी पत्र आ अर्धसरकारी पत्रक प्रसंगमे पढ़लहुँ । अहाँ देखलहुँ जे सरकारी पत्र आ अर्धसरकारी पत्रक रूप व्यक्तिगत आ व्यावसायिक पत्रसँ मिलैत-जुलैत अछि, मुदा कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेशक रूप एहिसँ एकदम भिन्न होइत अछि ।

कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेशक बाहरी रूप

कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेशक चर्च हम संग-संग कऽ रहल छी, कारण जे एकर बाहरी रूपमे समानता अछि । मुदा, एकर प्रयोगक क्षेत्र एकदम फराक अछि । मोटामोटी कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग विभाग सभक बीच आपसी पत्राचार लेल होइत अछि, जखन कि कार्यालय आदेशक प्रयोग कार्यालयक आंतरिक प्रशासन संबंधी पत्राचार लेल कयल जाइत अछि । आउ, एहि दुनू पत्रक (प्रयोग क्षेत्रक संबंधमे विचार करबासँ पहिने) बाहरी रूपरेखाक विभिन्न चरणकेँ जानी । विवरण एहि प्रकारेँ अछि–

1) कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेशमे सभसँ ऊपर पत्र सं.-भारत सरकारक मंत्रालय आ विभाग एवं स्थानक नाम आ तिथि लिखल जाइत अछि ।

2) दोसर चरणमे पृष्ठक बीचमे 'कार्यालय ज्ञापन' वा 'कार्यालय आदेश' लिखल जाइत अछि ।

3) पुनः 'कार्यालय ज्ञापन'क विषयक संक्षेपमे 'विषय' शीर्षकक अंतर्गत उल्लेख कयल जाइत अछि, जखन कि 'कार्यालय आदेश'मे एकर आवश्यकता नहि होइछ ।

4) चारिम चरणमे कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेशक मुख्य विषयवस्तु होइत अछि । एहि दुनूमे पहिल अनुच्छेद लेल क्रम-संख्या नहि लिखल जाइछ । बादक अनुच्छेदपर 2 सँ आरंभ कऽ क्रम सं. लिखल जाइत अछि।

5) तत्पश्चात् नीचाँ दहिना कात कार्यालय ज्ञापन वा कार्यालय आदेश निर्गत करऽवला अधिकारीक हस्ताक्षर होइत अछि । तकर नीचाँ अधिकारीक पदनाम आ भारत सरकार लिखल जाइत अछि ।

6) छठम चरणमे नीचाँ बामा कात 'कार्यालय ज्ञापन'मे 'सेवामे' आ 'कार्यालय आदेश'मे 'प्रति प्रेषित' लिखिकऽ प्राप्त करऽवला अधिकारी, अनुभाग, विभागक नाम आदि लिखल जाइत अछि,। प्रेषितक स्थानपर 'सेवामे' सेहो लिखल जा सकैछ ।

7) कार्यालय ज्ञापन आ कार्यालय आदेशमे अन्य पुरुष अर्थात् 'ओ' 'हुनकालोकनि'क प्रयोग कयल जाइत अछि । एहि दुनू पत्राचार-प्रकारक भाषा व्यक्तिनिरपेक्ष होइत अछि आ प्रायः एकर वाक्यरचना कर्मवाच्यमे होइत अछि एवं कर्त्ताक लोप भऽ जाइत अछि । किछु उदाहरण देखू-

क) राजपत्रित अर्जित छुट्टी जोड़बाक अनुमति देल जाइत अछि ।

ख) छुट्टीसँ घुरलापर श्री कमल नारायण सहायकँ प्रशासन अनुभागमे नियुक्त कयल जाइत अछि ।

ग) श्री रमण लालकँ स्थानापन्न रूपसँ अनुभाग अधिकारी नियुक्त कयल गेल अछि ।

घ) ई कार्यालय ज्ञापन प्रशासनिक सुधार विभागक सहमतिसँ निर्गत कयल जा रहल अछि ।

ङ) प्रारूप मूल रूपसँ मैथिलीमे तैयार कयल जाय ।

च) टिप्पणी आ पत्र लिखबामे सरल आ शुद्ध मैथिलीक प्रयोग कयल जयबाक चाही ।

कार्यालय ज्ञापनक प्रयोगक क्षेत्र

आब देखी जे कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग कोन-कोन स्थितिमे कयल जाइत अछि?

1) कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग भारत सरकारक मंत्रालय आ विभागक आपसी पत्राचार लेल कयल जाइत अछि ।

2) विभाग कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग अपन कर्मचारीसभसँ सूचना मङबा लेल वा हुनका सूचना देबा लेल करैत अछि ।

3) कार्यालय ज्ञापनक प्रयोग संबद्ध आ अधीनस्थ कार्यालयक संग पत्र-व्यवहार लेल सेहो कयल जा सकैत अछि ।

कार्यालय ज्ञापनक नमूना

1) सं. 200262/5/95-रा.पा.(ग.)

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग (2) लोकनायक भवन, दिल्ली
तिथि: 25 जुलाइ, 1995

3) कार्यालय ज्ञापन

4) विषय : भारत सरकारक कार्यालय सभमे मानदेयक आधारपर अनुवादक काज।

5) 1) एहि विभागक 12 फरवरी 1995क कार्यालय संख्या 17-1742/13/95 रा.पा. (ग.) द्वारा ई निर्देश देल गेल छल जे जाहि कार्यालयमे मैथिली अधिकारी वा अनुवादक नहि अछि, ओतऽ अनुवादक काज कार्यालयेक कोनो योग्य व्यक्तिसँ मानदेयक आधारपर कराओल जाय । एहि काजक लेल 1000 शब्दक लेल 15.00 टाका मानदेय निर्धारित कयल गेल छल ।

2) राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालयसँ एहिपर पुनर्विचार कऽ निर्णय लेलक अछि जे अनुवाद लेल निर्धारित प्रति हजार शब्द पर 15.00 टाकाक स्थान पर 25.00 टाकाक दरसँ मानदेय देल जाय । मानदेयक संबंधमे एहि विभागक 12 फरवरी 1995क कार्यालय ज्ञापनक आन सभ शर्त पूर्ववत रहत ।

3) ई आदेश एहि कार्यालय ज्ञापनक निर्गत होयबाक तिथिसँ प्रभावी होयत ।

4) ई कार्यालय ज्ञापन कार्मिक आ प्रशासनिक सुधार विभागकँ 13.जून 1994क अंतर्विभागीय टिप्पणी सं. 25-13 (भत्ता) 1994मे देल गेल सहमतिसँ निर्गत कयल जा रहल अछि ।

(6) ह/ ए. भसीन
उपसचिव भारत-सरकार

6) प्रति प्रेषित

1) भारत सरकारक सभ मंत्रालय/विभाग ।

2) भारत सरकारक नियंत्रण एवं महालेखा परीक्षकक कार्यालय ।

3) संघ लोकसेवा आयोग ।

4) गृह मंत्रालय आ राजभाषा विभागक सभ संबद्ध आ अधीनस्थ कार्यालय ।

5) राजभाषा विभागक सभ डेस्क/अनुभाग ।

6) राजभाषा विभाग (ग) डेस्क (150 अतिरिक्त प्रति) ।

कार्यालय आदेशक प्रयोग क्षेत्र

कार्यालय आदेशक प्रयोग सामान्य रूपसँ आंतरिक प्रशासन संबंधी निर्देश जारी करबा लेल कयल जाइत अछि । एहि प्रसंगमे निम्नलिखित विषय अबैत अछि :

क) कर्मचारीक नियमित छुट्टीक स्वीकृति,

ख) अधिकारी/कर्मचारीक अनुभागमे काजक बटबारा,

ग) कर्मचारीकेँ एक अनुभागसँ दोसर अनुभागमे स्थानांतरण ।

कार्यालय आदेशक नमूना

1) सं. 5-9195 प्रशा-5

भारत सरकार

केन्द्रीय मैथिली निदेशालय

नई दिल्ली 15.01.07

2) कार्यालय आदेश

3) (विषय नहि लिखल जाय)

4) एहि कार्यालयक सहायक सर्वश्री धनाकर ठाकुर, रूपेश शर्मा, विमलेन्दु मेहता सचिवालय प्रशिक्षण संस्थान, रामकृष्णपुरम, नई दिल्लीसँ तीन मासक प्रशिक्षण पूर्ण कऽ घुरि अयलाह अछि । अतएव हुनका सभकेँ क्रमश: तकनीकी एकक प्रशासन आ लेखा अनुभागमे नियुक्त कयल जाइत अछि ।

5) ह. श्री मोहन

उपनिदेशक (प्रशाखा)

6) प्रति प्रेषित :-

1) श्री धनाकर ठाकुर

2) श्री रूपेश शर्मा

3) श्री विमलेन्दु मेहता

4) संबंधित अनुभाग एक

5) रोकड़ अनुभाग

अभ्यास 7

श्री एस. के. सक्सेना राजभाषा विभागमे तकनीकी सहायक पदपर कार्य करैत छथि । ओ दीयाबातीक अवसरपर 500 टाका पर्व आग्रिम लेल आवेदन कयने छथि। हुनक अग्रिम राशि स्वीकृत भऽ गेल अछि । नीचाँ एहि विषयक कार्यालय अनुमति निर्गत कयल गेल अछि । एहिमे किछु स्थान रिक्त अछि । ओकर पूर्ति करू ।

सं. 1-16/93 स्था.

लोकनायक भवन

साहेब मार्केट

श्री एस.के. सक्सेनाकेँ हुनका तिथि..................क आवेदनपत्रक प्रसंगमे सूचित कयल जाइत अछि जे पर्व अग्रिम हुनका 500 टाकाक राशि स्वीकृत कऽ देल गेल अछि । ई राशि हुनका 50 टाका प्रतिमाहक हिसाबसँ 10 (दस) किस्तमे चुकता करऽ पड़तनि ।

प्रतिलिपि प्रेषित

1) कार्यालय आदेश रजिस्टर
2) वित्त अनुभाग
3) प्रशासन अनुभाग
4) श्री एस. के. सक्सेना

अभ्यास 8

वित्त मंत्रालय राजस्व विभागक निदेशकक ध्यान गेलनि अछि जे कार्यालयक किछु कर्मचारी समयसँ कार्यालयमे नहि पहुँचैत छथि आ कार्यालयक समय समाप्त होयबासँ पहिने चल जाइत छथि । ओ निर्देश देलनि अछि जे एकटा कार्यालय आदेश निकालल जाय जे सभ कर्मचारी कार्यालय-समयक पालन करथि । एकर अवहेलना कयनिहार कर्मचारीक विरुद्ध अनुशासनिक कारबाइ कयल जयतनि । एहि आदेशक प्रारूप तैयार करू ।

9.4.4 परिपत्र (सर्कुलर)

परिपत्रक प्रयोगक प्रमुख उद्देश्य सुचना देब होइत अछि । अतएव एहिमे प्रेषक, संदर्भ, संबोधन आ स्वनिर्देशक रूपमे कोनो शब्द नहि होइछ । कार्यालयक नामक पश्चात अगिला पाँतीमे परिपत्र लिखल जाइत अछि । पुनः अगिला पाँतीमे मूल विषय आरंभ होइत अछि । सम्पूर्ण परिपत्र अन्य पुरुषमे लिखल जाइत अछि । जारी करऽवला अधिकारी मात्र हस्ताक्षर करैत अछि । हस्ताक्षरक बामा कात 'सेवामे' लिखैत अछि एवं जाहि-जाहि अधिकारीकेँ ई पठयबाक होइत अछि, ओकर उल्लेख कऽ देल जाइत अछि । जँ परिपत्रक सूचना पूर्णतः सामान्य हो तँ सभ कर्मचारी लेल लिखि देल जाइत अछि ।

परिपत्रक नमूना

कार्यालय
आयकर आयुक्त
पटना, बिहार
सं.................... ति. 11.12.2001

परिपत्र

विषय: सामान्य भविष्यनिधिक नामांकन परिपत्र भरब ।

अधिकारी एवं कर्मचारीसभकेँ सूचित कयल जाइत अछि जे ओ अपन सामान्य भविष्य निधि खाताक नामांकन फार्म 22.12.2001 धरि भरिकऽ वित्त अनुभागकेँ दऽ देथि ।

(श्वेता सुमाली)
प्रशासनिक अधिकारी

सेवामे,
सभ अधिकारी एवं कर्मचारी

9.4.5 अधिसूचना आ संकल्प

अधिसूचना आ संकल्पक रूप प्रायः एके ढंगक होइत अछि । आरंभमे ई निर्देश होइत अछि जे ई भारतक राजपत्रक कोन भाग आ कोन खंडमे छपत । एहिमे संबोधन वा स्वनिर्देश नहि होइत अछि । अधिसूचना आ संकल्प प्रबंधक, भारत सरकार प्रेसकेँ पठाओल जाइत छैक । एहिमे संयुक्त सचिव स्तरक अधिकारिए हस्ताक्षर करैत अछि । संकल्पक पृष्ठांकनक रूपमे ई आदेश होइत अछि जे संकल्पक प्रकाशन राजपत्रमे होअय ।

अधिसूचनाक नमूना

(भारतीय राजपत्रक भाग-1, खंड 2 मे प्रकाशन लेल)

भारत सरकार
वाणिज्य मंत्रालय
नई दिल्ली,

केन्द्रीय सरकार सं. आ. सं.. तिथि......... वाणिज्य दस्तावेज साक्ष्य अधिनियम 1939 (1939 क 30) क धारा द्वारा देल गेल कागजातकेँ दस्तावेज घोषित कयल जाइत अछि ।

सं...

क.ख.ग

सचिव, भारत सरकार

संकल्पक नमूना

(भारत सरकारक राजपत्र भाग-11, खंड 3मे प्रकाशन लेल)

सं...

भारत सरकार
सड़क परिवहन मंत्रालय
नई दिल्ली

दिनांक...........

संकल्प

पछिला किछु दिनसँ बढ़ैत सड़क दुर्घटनाक रोकथाम लेल सरकार चिंतित रहल अछि। एहि लेल प्राप्त सुझावसभकेँ प्रयोगमे अनबाक हेतु गंभीरतासँ विचार कऽ रहल अछि। आब एहि समस्याक विभिन्न बिन्दुपर विचार करबा लेल एक समितिक गठन करबाक निर्णय लेल गेल अछि, जाहिमे सरकारी प्रतिनिधिलोकनिक अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण जनसेवी संस्था/व्यक्तिकेँ मनोनीत कयल जायत।

2) समितिक अध्यक्ष श्री..होयताह।
निम्नलिखित सदस्य होयताह-

1......................................
2......................................
3................................
4...................................
5......................................

3) समिति निम्नलिखित विषयपर अपन अनुशंसा प्रस्तुत करत-

1.......................................
2.......................................
3.......................................

4) समिति 21 अक्टूबर 98 सँ अपन कार्य आरंभ करत। एकर कार्यकाल.........
मासक होयत।

क.ख.ग

सचिव, भारत सरकार

आदेश : आदेश देल जाइत अछि जे एहि संकल्पक प्रतिलिपि प्रस्तावित समितिक अध्यक्ष एवं सदस्यसभकेँ देल जाय। ईहो आदेश अछि जे एहि संकल्पकेँ भारतक राजपत्रमे प्रकाशित कयल जाय।

क. ख. ग.

सचिव,भारत सरकार

9.4.6 पृष्ठांकन

पृष्ठांकनक प्रयोग निम्नलिखित स्थितिक लेल कयल जाइत अछि--

1) जखन पत्र प्राप्तकर्ताक अलावे आनो लोक वा विभागकेँ ओकर प्रति पठयबाक हो ।

2) जखन सूचना, टिप्पणी वा निष्पत्ति लेल कोनो मंत्रालय अथवा संबद्ध कार्यालयकेँ पठयबाक हो ।

3) यदि पत्र मूल रूपमे प्रेषककेँ घुरयबाक हो ।

4) जखन कोनो कारबाइ वा बैसकक कार्यवृत्त संबद्ध व्यक्तिकेँ पठयबाक हो । एकर अतिरिक्त प्रशासनिक मंत्रालय द्वारा निर्गत वित्तीय स्वीकृतिक प्रति सम्बद्ध अधिकारी लग पृष्ठांकन द्वारा पठाओल जाइत अछि । पृष्ठांकन दू प्रकारक होइत अछि--

क) मूल पत्रक नीचाँ लिखिकऽ ।

ख) फराकसँ प्रारूप बनाकऽ ।

पहिल प्रकारक पृष्ठांकन अहाँ सरकारी पत्र आ परिपत्रक प्रसंगमे पढ़ैत काल देखलहुँ । एतऽ हम एकर एकटा आर नमूना दऽ रहल छी ।

पृष्ठांकनक नमूना-1

प्रतिलिपि...

कें सूचना लेल/ करबाइ लेल / शीघ्र अनुपालन लेल प्रेषित ।

ह. ....

पदनाम

दोसर प्रकारक पृष्ठांकन भिन्न प्रारूपमे कयल जाइत अछि । उदाहरण लेल गृह मंत्रालयमे कोनो आन विभाग वा कार्यालयसँ आयल पत्रक प्रति जँ संबद्ध व्यक्तिकेँ देबाक अछि तँ पृष्ठांकन एक आवरणपत्रक रूपमे तैयार कयल जायत आ पत्रक प्रति संलग्न कऽ देल जायत ।

पृष्ठांकनक नमूना-2

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

नई दिल्ली

सं...

तिथि.....................................

ग्रुपबीमा योजनाक संबंधमे वित्त मंत्रालयक परिपत्र सं............................क प्रतिलिपि सूचना आ आवश्यक कारबाइक लेल प्रेषित कयल जाइछ ।

ह.......................

पदनाम................

संलग्न

वित्त मंत्रालय परिपत्र सं...................... तिथि..................क प्रति ।

अभ्यास 9

औपचारिक पत्र एवं अनौपचारिक पत्रमे कोन-कोन अंतर होइत अछि ? स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

....

....

अभ्यास 10

केन्द्रीय जल आयोग कार्यालयक वार्षिक बजटमे सँ 5000 टाका मैथिली पोथी लेल निर्धारित कयल गेल अछि । कार्यालयक कर्मचारी लोकनिकेँ एहि पोथीक आवश्यकता होइनि तँ एहि राशिमेसँ मैथिली पोथी कीनि लेल जाय, तखने एहि राशिक समुचित सदुपयोग भऽ सकैत अछि । कर्मचारीसभकेँ एकर सूचना दैत हुनक प्रयोजन एवं रुचिक पोथीसभक सूची मङबाओल जयबाक अछि । एहि संबंधमे एक परिपत्र तैयार करू ।

9.5 सारांश

एहि इकाइमे अहाँ विभिन्न प्रकारक पत्र लिखब सिखलहुँ । विषय, संदर्भ आ स्थितिक अनुसारे पत्रक भाषा आ कथ्यक अंतर अहाँ जानि गेल छी । एकर संगहि विभिन्न पत्रकेँ लिखबाक भिन्न-भिन्न ढंग सेहो अहाँक नजरिमे आबि गेल अछि । अनौपचारिक एवं औपचारिक स्थितिमे भाषाक रूप कोन तरहेँ भिन्न भऽ जाइत अछि, ईहो अहाँ जानि गेल होयब । सरकारी कार्यालयमे पत्राचार प्रविधि एवं सरकारी पत्रलेखनक जानकारी प्राप्त कऽ लेलहुँ अछि । विभिन्न प्रकारक सरकारी पत्रक अंतर सेहो बुझि गेल छी । अहाँकेँ मैथिलीक एक विशिष्ट क्षेत्र अर्थात् कार्यालयी मैथिलीक जनतब आब भऽ गेल अछि ।

9.6 शब्दावली

दस्तावेज : लिखित प्रमाणक रूपमे उपयोग होबऽवला कोनो कागज ।

स्वनिर्देश : अपन प्रसंगमे उल्लेख । (अहाँक, अपनेक, भवदीय-भवदीया)

लैटर हेड : पत्र लिखबाक लेल उपयोग होबऽवला ओ कागज जाहिपर संबद्ध व्यक्ति वा संस्थाक नाम पता आदि विवरण छपल होअय ।

अनुमोदन : सक्षम अधिकारी द्वारा कोनो मामिलामे देल गेल स्वीकृति ।

पूर्ववृत्त : कोनो पत्र वा व्यक्तिक पछिला विवरण ।

आद्यक्षर : नामक आरंभिक अक्षर । उदाहरण लेल राजकुमारीक आद्यक्षर अछि रा.कु. ।

प्रायोजित : संबद्ध विभाग द्वारा पठाओल गेल ।

अनुस्मारक : स्मरण करयबा लेल लिखल गेल पत्र ।

सरणि : ढंग, तरीका, व्यवस्था ।

राजपत्र : गजेट

9.7 अभ्यासक उत्तर

अभ्यास 1

मौर्या निकेतन
119-ए, आशियाना नगर
पटना-800025
6 मार्च 2006

आदरणीय काकाजी,
प्रणाम ।

बहुत दिनसँ अपनेक कोनो पत्र नहि भेटल...

अहाँक पुत्र
परमानन्द

अभ्यास 2

(1)

सेवामे,
पोस्ट मास्टर
बड़ा पोस्ट आफिस, सहरसा ।
महोदय,

एहि पत्रक माध्यमसँ हम अपनेक ध्यान डाक-तार विभागक असावधानी दिस आकृष्ट करबऽ चाहैत छी । हम 21 जून 2007 कँ मनीआर्डर द्वारा 200/- टाकाक राशि अपन भाइ श्री भेषनाथ मलहोत्रा, वर्ग आठ, नवोदय स्कूल, राँची, झारखंडकँ पठौने छलहुँ । श्री भेषनाथकँ अपन स्कूलक फीस 05 जुलाइ 2007 धरि जमा करब आवश्यक छल । मुदा ई राशि ओकरा 18 जुलाइकँ भेटलैक । एहि लऽकऽ ओ समयपर अपन फीस जमा नहि कऽ सकल । एहि कारणेँ ओ विशेष परेशान भेल, संगहि 200 टाका आर देबऽ पड़लैक ।

अपनेसँ निवेदन अछि जे एहि विषयपर ध्यान दऽ बिलंबक कारणक जाँच कयल जाय, जाहिसँ भविष्यमे एहि प्रकारक घटनासँ किनको कठिनाइ नहि उठबऽ पड़नि ।

सधन्यवाद,

भवदीय,

16 अगस्त,2007

अमरनाथ मलहोत्रा
शंकर चौक, सहरसा

2)

सेवामे,

प्रबंधक

उत्तर प्रदेश पर्यटन विकास निगम

मसूरी

उत्तर प्रदेश

महोदय,

हम अपन परिवारक संग 14.05.2006 सँ 21.05.2006 धरि लेल मसूरी आबऽ चाहैत छी । हमरा संग हमर पत्नी सीता, पुत्र रोहित आ पुत्री रंजना सेहो जायत । कृपया उक्त अवधि लेल पर्यटन आवास केन्द्रमे हमरासभ लेल कोठलीक व्यवस्था कऽ देल जाय ।

सधन्यवाद,

13.4.2006

भवदीय

मितुल सरकार

कंकड़बाग, चित्रगुप्तनगर,

पटना, बिहार

अभ्यास 3

क्रम सं..............................(आवती) पृष्ठ सं. ....(पत्राचार)

श्री शेखर मेहता, अनुसंधान सहायक, अपन शैक्षणिक योग्यता बढ़यबा लेल पटना विश्वविद्यालयसँ पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिंदीमे एम.ए. परीक्षा देबाक अनुमति मंगलनि अछि । श्री मेहता एहिसँ पूर्व मैथिलीमे एम. ए. छथि । श्री मेहताक कहब छनि जे एहिसँ हुनक कार्यकुशलता बढ़तनि । अनुभाग अधीक्षक हुनक आवेदनपत्रकेँ आवश्यक कारबाइ आ आदेश लेल अवर सचिवकेँ पठौने छलाह । अवर सचिव श्री मेहताक आवेदनपत्रकेँ नीचाँ देल गेल शर्तपर स्वीकार कयलनि अछि ।

1) परीक्षाक तैयारीक कारणेँ अनुभागमे श्री मेहताक काजपर कोनो प्रतिकूल प्रभाव नहि पड़त ।

2) ई अनुमति लोकहितमे कोनहुँ समय बिनु कारणक उल्लेख कयने आपस लेल जा सकैत अछि ।

3) श्री मेहताकेँ एम.ए. हिंदीक परीक्षाक संबंधमे अनुमतिक प्रसंगमे प्रारूप अनुमोदन लेल प्रस्तुत अछि ।

रा. पा. श.
(सहायकक आद्यक्षर)
ति.

अनु. अधि.

संशोधित प्रारूप हस्ताक्षर लेल प्रस्तुत अछि ।

से. सि. अ.
(अनु. अधि. क आद्यक्षर)
ति.

श्री मेहताकेँ ई स्पष्ट कऽ देल जाय जे हुनका अप्रैलसँ पहिने कोनो हालतिमे छुट्टी नहि देल जा सकैछ, कारण मार्चमे वित्तवर्ष समाप्त होयबाक कारणेँ विभागमे कार्य बढ़ि जाइत अछि ।

अवर सचिव
क.ख.ग.

हस्ताक्षर
अवर सचिव
ति.............

अभ्यास 4

(1) औपचारिक (2) महोदय (3)उत्तम पुरुष (4) भवदीय (5) ऊपर

अभ्यास 5

क) सरकारी पत्र औपचारिक होइत अछि आ अर्धसरकारी अनौपचारिक ।

ख) दुनूक बाह्य रूपमे अंतर होइत अछि ।

1) सरकारी पत्रमे सभसँ ऊपर पृष्ठक बीचमे का. सं. आदि लिखल जाइत अछि जखन कि अर्धसरकारी पत्रमे अर्धसरकारी पत्रसंख्या आदि ऊपर पृष्ठक दाहिना कात लिखल जाइत अछि ।

2) सरकारी पत्रमे प्राप्तकर्त्ताक नाम, पदनाम आदि विषयसँ पूर्वहि लिखल जाइत अछि, मुदा अर्धसरकारी पत्रमे प्राप्तकर्त्ताक नाम आ पता 'स्वनिर्देशक' पश्चात नीचाँ कातमे लिखल जाइत अछि ।

3) सरकारी पत्रमे संबोधनक रूपमे 'महोदय' आ स्वनिर्देशक रूपमे 'भवदीय'क प्रयोग होइत अछि, मुदा अर्धसरकारी पत्रमे क्रमशः 'प्रिय....... जी' एवं 'अहाँक' 'अपनेक'क प्रयोग होइत अछि ।

4) अर्धसरकारी पत्रमे सरकारी पत्र जकाँ हस्ताक्षर करऽवला अधिकारी हस्ताक्षरक नीचाँमे पदनाम नहि लिखैछ । प्रेषकक पदनाम ऊपर वामा भाग लिखल जाइत अछि ।

5) अर्धसरकारी पत्रमे अधिकारीक प्रति धन्यवाद, आभार वा आदर प्रदर्शित करब आवश्यक होइत अछि, जखन कि सरकारी पत्रमे एकर आवश्यकता नहि होइत अछि ।

अभ्यास 6

(1) (क) अपनेक (ख) ऊपर (ग) सरकारी (घ) सरकारी

(2) (क) नहि (ख) नहि (ग) हँ

अभ्यास 7

सं. 1-16/93 स्था.
भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय

लोकनायक भवन
साहेब मार्केट
नई दिल्ली
11.04.93

कार्यालय ज्ञापन

विषय : कार्यालय अग्रिम ।

श्री एस. के. सक्सेना द्वारा तिथि 26.03.93 क आवेदनपत्रक प्रसंगमे सूचित कयल जाइत अछि जे पर्व अग्रिमक रूपमे हुनक 500/ टाकाक राशि स्वीकृति कऽ देल गेल अछि । राशि हुनका 50/- टाका (प्रतिमाहक हिसाबसँ) 10 (दस)किस्तमे चुकता करऽ पड़तनि ।

प्रतिलिपि प्रेषित

1) कार्यालय आदेश रजिस्टर,
2) वित्त अनुभाग,
3) प्रशासन अनुभाग,
4) श्री एस. के. सक्सेना ।

एस. चौहान
(प्रशासनिक अधिकारी)

अभ्यास 8

सं.-4-58/8

भारत सरकार
राजस्व विभाग
वित्त मंत्रालय

राजस्व भवन
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली
5.12.2006

कार्यालय आदेश

देखबामे आयल अछि जे कार्यालयक किछु कर्मचारी समयसँ कार्यालय नहि पहुँचैत छथि आ कार्यालयसँ कार्यकाल समाप्त होयबासँ पूर्वहि चल जाइत छथि । सभ कर्मचारीकेँ आदेश देल जाइत अछि जे ओ कार्यालय-अवधिक पालन करथि । से नहि करऽवला कर्मचारी लोकनिक विरुद्ध अनुशासनिक कारबाइ कयल जायत ।

शंकर स्वामी
निदेशक

प्रतिलिपि प्रेषित
कार्यालयक सभ कर्मचारी ।

अभ्यास 9

(देखू भाग -9.2)

अभ्यास 10

केन्द्रीय जल आयोग
वेस्ट ब्लॉक, सेक्टर-1 रामकृष्णपुरम्
नई दिल्ली
सं...

परिपत्र तिथि...................

विषय : मैथिली पोथी खरीद ।

कार्यालयक वार्षिक बजटमेसँ 1000 टाकाक राशि मैथिली पोथी किनबा लेल निर्धारित अछि । एहि राशिक उपयोग एहन पोथीसभपर कयल जाय जे कार्यालय कर्मचारी लेल उपयोगी होअय । अतएव कार्यालयक सभ कर्मचारी अपन आवश्यक एवं रुचिपूर्ण पोथीक सूची 16.12.2006 धरि पुस्तकाध्यक्षकेँ दऽ देथि, जाहिसँ ओकरा अंतिम सूचीमे शामिल कयल जा सकय ।

सेवामे,

अधिकारी एवं कर्मचारी गण

.... (विसन त्रिवेदी)

.... उपनिदेशक

इकाइ 10 संक्षेपण, भाव-पल्लवन एवं निबंध-लेखन

इकाइक रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

एहि इकाइमे संक्षेपण, भाव-पल्लवन तथा निबंध-लेखनक चर्चा कयल जायत। एहि इकाइक अध्ययनक पश्चात अहाँ निम्नलिखित विषयसभक जानकारी प्राप्त कऽ सकब :

- संक्षेपण तथा भाव-पल्लवनक महत्ताक विषयमे कहि सकब,
- संक्षेपण-प्रक्रिया अथवा विधिकेँ बुझि सकब,
- कोनो अनुच्छेद अथवा देल गेल अंशक संक्षेपण कऽ सकब,
- भाव-पल्लवनक प्रक्रिया बुझि सकब,
- कोनो वाक्य अथवा सूक्तिक भाव-पल्लवन कऽ सकब,
- निबंध-लेखनक विधिक परिचय प्राप्त कऽ सकब,
- निबंध लिखब सिखि सकब,
- कोनो विषयपर निबंध लिखि सकब।

10.1 प्रस्तावना

मैथिली आधार-पाठ्यक्रमक अन्तर्गत एखन धरि अहाँ मैथिली भाषासँ सम्बन्धित कतिपय विषयक अध्ययन कऽ चुकल छी। पाठ्यक्रमक एहि खंडमे अहाँ मैथिली भाषामे सरकारी पत्राचार, टिप्पण आ प्रारूपणक जानकारी प्राप्त कयलहुँ अछि आ ओहि सभपर लिखब सिखलहुँ अछि। एहि क्रममे, एहि इकाइमे अहाँ संक्षेपण, भाव-पल्लवन एवं निबंध-लेखनक विषयमे आवश्यक जनतब प्राप्त करब तथा एकरा लिखब सेहो सिखब।

10.2 संक्षेपण

'संक्षेपण' केर शाब्दिक अर्थ होइछ संक्षिप्त किंवा छोट करब । मैथिलीमे एहि शब्दक प्रयोग अंग्रेजीक 'प्रेसिज राइटिंग'क अर्थमे कयल जा रहल अछि । संक्षेपक हेतु संक्षेपीकरण, सार, सार-संक्षेप, भाव-संक्षेप आदि शब्द सेहो प्रयुक्त होइछ । कोनो पैघ गद्यांश, अवतरण वा विवरणकेँ साररूप अथवा संक्षेपमे प्रस्तुत करब 'संक्षेपण' कहबैत अछि । संक्षेपणमे कोनो देल गेल अंशकेँ एहि प्रकारेँ छोट कयल जाइछ जे ओकर सभ प्रमुख तथ्य, भाव अथवा विचार मूल अंशक लगभग एक-तेहाइ शब्दमे आबि जाइक । दोसर शब्दमे कहल जा सकैछ जे संक्षेपण मूल अंशक करीब एक-तेहाइ आकारक होइछ आ एहिमे मूल अंशक प्रमुख बात सार-रूपमे चल अबैत अछि ।

10.2.1 संक्षेपणक महत्त्व

भाषाक प्रयोगमे संक्षेपणक अत्यधिक महत्त्व अछि । आजुक व्यस्त जीवनमे तेँ एकर उपादेयता आरो बढ़ि गेल अछि । समयाभावक कारणेँ प्रत्येक मनुष्य अपन काजकेँ कमसँ कम समयमे करऽ चाहैत अछि । यथार्थतः कोनो कुशल वक्ता, सम्पादक, संवाददाता, लेखक, ओकील, सरकारी अधिकारीक काज एकर बिना संभव नहि अछि । व्यावहारिक दृष्टियेँ सभकेँ एकर प्रयोजन पड़ैछ । अहाँ अपन जीवनकेँ देखब तँ पायब जे अहाँक काज सेहो एकर बिना नहि चलैछ । उदाहरणस्वरूप अहाँ कोनो सिनेमा देखिकऽ घुरैत छी आ अहाँक मित्र ओकर कथा अहाँसँ बुझबा लेल उत्सुक छथि । अहाँ संक्षेपीकरण द्वारा तीन घंटाक कथा पन्द्रह-बीस मिनटमे कहि दैत छियनि । संक्षेपणसँ श्रम आ समयक बचत होइछ एवं आवश्यक बातकेँ कमसँ कम शब्दमे प्रकट कऽ देल जाइछ ।

10.2.2 संक्षेपणक गुण

अहाँ देखि चुकल छी जे जीवनक प्रत्येक क्षेत्रमे संक्षेपण उपयोगी अछि । कतेको बेर हमरा अपन भाव किंवा विचारकेँ संक्षेपमे प्रकट करबाक प्रयोजन बुझना जाइछ । हमरा लगैत अछि जे हम सार रूपमे अपन बात राखी । तखन हमरा अपन भाव अथवा विचारक अनावश्यक अंशकेँ हँटा देबऽ पड़ैत अछि आ मुख्य बातपर दृष्टि केन्द्रित करऽ पड़ैछ । ओहि मुख्य बातकेँ हम क्रमबद्ध रूपमे रखैत छी । ईहो बात हमरा मनमे रहैछ जे मुख्य बात किंवा मूल कथ्य पूर्णरूपेँ व्यक्त भऽ जाय– ओहिमेसँ कोनो महत्त्वपूर्ण बात छूटऽ नहि पाबय । हम अपन बातकेँ सरल एवं शुद्ध भाषामे स्पष्टताक संग प्रस्तुत करैत छी । एहि प्रकारेँ हम देखैत छी जे संक्षिप्तता, क्रमबद्धता, पूर्णता एवं भाषाक सरलता आ स्पष्टता संक्षेपणक मुख्य गुण थिक ।

10.2.3 संक्षेपणक विधि

संक्षेपणक प्रक्रिया किंवा विधिकेँ उदाहरणक माध्यमे बुझायब सहज होयत । तेँ आब आउ, एकरा किछु उदाहरण द्वारा बुझबाक प्रयास करी । अपन बात हम एक वाक्यसँ आरंभ करैत छी । मानि लियऽ जे अहाँक समक्ष ई वाक्य अछि– ''प्रवीण प्रतिदिन नियमित रूपेँ दू घंटा समय प्रातःकाल टहलबामे दैत छथि ।'' एहि वाक्यपर ध्यान देलासँ देखबामे आओत जे किछु अनावश्यक शब्दक प्रयोग एहि वाक्यमे भेल अछि आ एहि रूपक अनावश्यक शब्दकेँ हटाओल जा सकैत अछि । एहि शब्दकेँ हटौलो गेलापर लक्ष्य बाधित नहि होयत, अर्थ अस्पष्ट नहि रहत । एहि वाक्यमे प्रयुक्त शब्द 'समय', 'काल', 'नियमित रूपेँ'केँ हटाओल जा सकैत अछि । एहि शब्दसभकेँ हटौलोपर पंक्तिक अर्थ बाधित नहि होयतैक । एहि वाक्यमे 'प्रतिदिन' शब्द रहने 'नियमित रूपेँ'क कोनो प्रयोजन नहि अछि । तहिना 'प्रात' रहने 'समय' आ 'काल'क बोध भऽ जाइत अछि, तेँ एहू दुनू शब्दकेँ हटाओल जा सकैत अछि । 'समय'

'काल' एतऽ 'प्रात:'मे स्पष्ट भऽ जाइत छैक आ 'प्रतिदिन'मे 'नियमित रूपें'क, तें पुनरावृत्ति दोषसँ बचबाक हेतु ओतबे शब्दक प्रयोग करब अपेक्षित अछि जाहिसँ काज चलि जाय । शब्दकेँ हटौलापर संक्षेपणक रूप एहि प्रकारक भऽ जायत– ''प्रवीण प्रतिदिन दू घंटा प्रात:भ्रमणमे दैत छथि ।''

संक्षेपण करबाकाल अनावश्यक तथा पुनरुक्तिसूचक शब्द किंवा भावकेँ हटा देल जाइछ । एकहि भाव व्यक्त करऽवला दू गोट शब्दमेसँ एकहिकेँ राखब यथेष्ट होइछ ।

आउ, आब उपर्युक्त पंक्तिसँ किछु पैघ वाक्य दिस ध्यान दी आ ओकर संक्षेपण नियमानुसार करी । मानि लियऽ जे अहाँक समक्ष निम्न वाक्य अछि–

''ओह ! भगवानकेँ तकबा लेल कतऽ कतऽ ने गेलहुँ ! बदरीनाथ, केदारनाथ, वैद्यनाथ, काशी, मथुरा, वृन्दावन, कामाख्या सभठाम । जतेक स्थान ततेक तरहक विचार, अनेक रूप । अपनाकेँ स्थिर नहि कऽ सकलहुँ कोनो बिंदुपर । अन्तिम निष्कर्षपर पहुँचलहुँ जे भगवानक वास हृदय-मंदिरमे छनि, तेँ घरे जा हुनकर स्मरण करी, ताहीसँ फल प्राप्त होयत ।''

एहि अंशमे भगवानकेँ तकबा लेल ठाम-ठाम जायब मृगमरीचिका सदृश प्रतीत होइछ । एहिमे संक्षेपणक रूपमे कहल जा सकैछ– ''भगवानक वास हृदयेमे छनि, आन ठाम ताकब व्यर्थ, घरे जाकऽ स्मरण कयने फल प्राप्त होयत ।''

संक्षेपण करबाकाल कतेको बेर वाक्यक रूपकेँ बदलहु पड़ैत छैक– व्याकरणक दृष्टिएँ वाक्य-निर्माणमे परिवर्तनक प्रयोजन होइत छैक । पैघ-पैघ मिश्रित ओ संयुक्त वाक्यकेँ साधारण वाक्यमे परिवर्तित करब संक्षेपणक दृष्टिसँ उपयोगी होइछ ।

उदाहरणस्वरूप एहि वाक्यकेँ देखी– ''मनुष्यमे ओ सामर्थ्य छैक जे असंभवसँ असंभव कार्यकेँ संभव कऽ सकैछ ।'' एकरा साधारण वाक्यमे परिणत कयलापर एहि रूपेँ वाक्यक निर्माण भऽ सकैछ– ''मनुष्य कोनो काजकेँ अपन सामर्थ्यक बलपर संभव कऽ सकैछ ।''

किछु वाक्य उपवाक्य किंवा वाक्यखंडक योगसँ बनल रहैछ । संक्षेपण करैत काल एहि उपवाक्य अथवा वाक्यखंडकेँ छोड़ि वाक्यसभकेँ संक्षिप्त करऽ पड़ैत छैक । उदाहरण लेल ई वाक्य देखी– ''ई वैह साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था थिक जतऽ पछिला साल विद्यापतिपर्व हर्षोल्लासक संग मनाओल गेल छल ।'' एकरा एहू रूपमे लिखल जा सकैत अछि– ''एही साहित्यक-सांस्कृतिक संस्थामे परुकाँ विद्यापतिपर्व सोल्लास मनाओल गेल छल ।'' संक्षेपण करैत काल केवल मिश्रित एवं संयुक्त वाक्यहिकेँ नहि, कखनो कऽ छोट-छोट साधारण वाक्यकेँ सेहो बदलऽ पड़ैत छैक । कतेको साधारण वाक्यकेँ जोड़िकऽ एक वाक्य बना लेलासँ ओकर शब्द-संख्या कम भऽ जाइछ । मानि लियऽ जे अहाँक समक्ष ई अंश अछि– '' कवीश्वर चन्दा झा मैथिलीमे रामायणक रचना कयलनि । कतेको कारणेँ अपन जन्मस्थान पिंडारुचकेँ छोड़ि सासुर ठाढ़ीमे रहऽ लगलाह । हिनक रचनामे ठेठ शब्दक ठाठ भेटैछ आ मिथिलाक व्यवहार, संस्कृति, धर्म आदिक चर्चा भेटैछ ।''

एहि अंशकेँ एहू रूपमे लिखल जा सकैछ– ''मैथिली रामायणक प्रणेता, मैथिल संस्कृतिक पुरोधा कवीश्वर चन्दा झा अपन गाम पिंडारुचकेँ त्यागि सासुर ठाढ़ीमे रहऽ लगलाह ।'' संक्षेपणमे सदा अन्य पुरुषक प्रयोग होइछ– उत्तम अथवा मध्यम पुरुषक नहि । एकर अतिरिक्त संवादात्मक कथनक संक्षेपण करैत काल ओकरा परोक्ष कथनमे बदलऽ पड़ैछ । उदाहरणार्थ निम्नलिखित अंश द्रष्टव्य– ''चैतन्य महाप्रभु राधा-कृष्णक भक्तिमे निमग्न छलाह । अपनाकेँ हुनका समक्ष समर्पण-भाव रखैत कहने छलाह--हम तँ अज्ञानी छी, हमरा ने बुद्धि अछि, ने कोनो अवगति अछि, ने धर्मक कोनो ज्ञान, ने कर्मक कोनो ज्ञान । तेँ हे राधे ! हे कृष्ण ! हमरा सद्ज्ञान दियऽ ।''

एहि ठाम अहाँ देखैत छी जे उपर्युक्त अंश उत्तम पुरुषमे अछि । एहि अंशमे चैतन्य महाप्रभुक सद्विचार ओ अंहकारहीनताक अभिव्यंजना भेटैछ । एहि अंशक संक्षेपण अहाँ एहि प्रकारेँ कऽ सकैत छी– ''चैतन्य महाप्रभु अहंकारहीनताक संग राधा-कृष्णसँ धर्म-कर्म आ बुद्धि-विवेकक प्रज्ञा प्रदान करबाक भाव व्यक्त करैत छथि ।''

एहि उदाहरणमे अहाँ देखैत छी जे मूल अंशक शब्दकेँ कमसँ कम प्रयोग करैत अपन शब्दमे संक्षेपण करबाक प्रयास कयल गेल अछि । संक्षेपणकर्त्ताकेँ चाही जे ओ अपन शब्दमे संक्षेपण करय आ मूल अंशसँ मात्र ओही शब्दकेँ ग्रहण करय जकरा छोड़ब संभव नहि हो ।

एखन धरि अहाँ वाक्यक संक्षेपणक प्रक्रिया अथवा विधि सिखलहुँ अछि । एहि विधिक प्रयोग कऽ अहाँ कोनो अनुच्छेद वा पैराग्राफक संक्षेपण सेहो कऽ सकैत छी, परंच अनुच्छेदक संक्षेपणमे किछु आर बातकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक अछि, जकर चर्चा आगाँ कयल जायत । एखन अहाँ निम्नलिखित अनुच्छेदकेँ पढ़ू–

''राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहियो कहने छलाह जे अहिंसा सर्वश्रेष्ठ धर्म थिक । ककरो हृदय जितबा लेल शब्दरूपी अमृतवाणीक प्रयोग करू, नहि कि लाठी-डंटाक । केओ एक गालमे चाट मारय तँ ओकर आगाँ दोसरो गाल बढ़ा दियौक, स्वत: ओकरापर अहाँक विजय प्राप्त होयत आ ओकर हृदय-परिवर्तन भऽ जयतैक ।''

उपर्युक्त वाक्यमे महात्मा गांधीक अहिंसा-नीति स्पष्ट भेल अछि । एतऽ ध्यातव्य जे जखन एहि प्रकारक व्याख्यान कोनो महापुरुष दैत छथि तँ श्रोतालोकनिकेँ प्रभावित करबा लेल ओ सामान्य वार्तालापसँ भिन्न शब्दावलीक प्रयोग करैत छथि । अपन कथनकेँ प्रभावी बनयबा लेल कखनो ओ अंलकृत भाषाक प्रयोग करैत छथि तँ कखनो सरल भाषाक । एहन अंशक संक्षेपण करबा लेल ओकरा दु-तीन बेर पढ़ि लेबाक चाही । अहुना संक्षेपणक ई नियम अछि जे जाहि अंशक संक्षेपण करबाक हो, ओकरा दु-तीन बेर पढ़ि लेल जाय, जाहिसँ ओकर मुख्य विचार अथवा भाव बोधगम्य भऽ सकय । पढ़लाक बाद मूल कथ्यकेँ नीक जकाँ बुझि लेबाक चाही । संक्षेपण करैत काल मूल कथ्यपर दृष्टि केन्द्रित रहबाक चाही । आलंकारिक प्रयोग, उदाहरण एवं कम महत्त्वक विचारकेँ छोड़ि देब उचित थिक आ भाषा सरल होयबाक चाही । संक्षेपण करबा काल मुख्य कथ्यकेँ क्रमबद्ध रूपेँ लिखि लेब अथवा संक्षिप्त रूपरेखा बना लेब उपादेय होइछ । मोहाबिरा, कहबी अथवा किछु शब्दसमूहक स्थानपर ओकरहि सदृश अर्थवला कोनो एक शब्दक प्रयोग सेहो उपयोगी भऽ सकैछ ।

उपर्युक्त अंशक संक्षेपण सरल भाषामे एहि प्रकारेँ भऽ सकैछ– ''महात्मा गांधीक अनुसार अहिंसासँ पैघ धर्म कोनो नहि । अमृतवाणी हृदय जितबाक पैघ तरीका । एक गालमे चाट खाय दोसर गाल बढ़ौलापर शत्रुक हृदय-परिवर्तन ध्रुव ।''

आब अहाँ एहि निष्कर्षपर पहुँचैत छी जे संक्षेपणमे आलंकारिक शब्दावली एवं वाग्जालक स्थानपर तथ्यपरक शब्दावलीक प्रयोग कयल जाइत अछि ।

बोध प्रश्न 1

1) संक्षेपण ककरा कहल जाइछ ? बुझाकऽ लिखू ।

....

....

....

....

2) संक्षेपणक आशय चारि पंक्तिमे स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

3) संक्षेपणक कोनो दू लाभक उल्लेख करू ।

....

....

....

....

अभ्यास 1

1) निम्नलिखित वाक्यमे प्रयुक्त अनावश्यक शब्दकेँ रेखांकित करू :

विनय हरदम टल्ली दैत एमहर-ओमहर करैत रहैत अछि, मुदा परीक्षा समीप छैक तकर कोनो चिन्ता नहि ।

2) निम्नलिखित वाक्यक संक्षेपण करू :

मिथिला वैदिक कालहिसँ अपन संस्कृति आ सभ्यताकेँ लऽ विश्वविख्यात अछि । एहि ठामक व्यवहार, एहि ठामक कला, धर्म ओ विचारक तँ कथे कोन ? एकसँ एक ऋषि-महात्मा, एकसँ एक विद्वान ओ विदुषीक गौरव-गाथा सैह एहि ठामक प्रतीक-चिह्न थिक ।''

....

....

....

....

3) निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण करू:

समस्त प्राणीमे मानव सर्वश्रेष्ठ अछि । एकर कारण ई जे एकरामे विवेक छैक । चिन्तनक शक्ति छैक । धर्म-कर्मक मर्म बुझबाक सामर्थ्य छैक । मुदा, यदि मानव एहि मर्मकेँ नहि बुझैत अछि तँ मानवक शरीर धारण कइयोकऽ ई पशुवत अछि। ज्ञानक बिना मानवकेँ पशुक समान मानल गेल छैक । बुद्धि-विवेककेँ लऽ मनुष्यकेँ अन्यान्य जीव-जन्तुसँ पृथक आ सर्वश्रेष्ठ मानल गेल अछि ।

....

....

....

....

4) निम्नलिखित गद्यांशक संक्षेपण करीब एक-तेहाइ शब्दमे करू :

संसारचक्र परिचालक परब्रह्म परमेश्वरहिक कृपासँ सृष्टिक समस्त कार्य-व्यापार चलैत अछि । मनुष्यक वशमे तिल मात्र नहि छैक । केओ धनवान बलवान अथवा विद्वान अछि तँ तकर मूलमे वैह परब्रह्म छथि, आ हुनके प्रेरणासँ केओ एहि तरहक पद प्राप्त कऽ महिमा-मंडित होइत अछि, गरिमाकेँ प्राप्त करैत अछि । जे सत्कर्म करैत अछि तकरेपर ईश्वरक एहन कृपा । जे दुराचारी अछि से एहि पृथ्वीपर भारस्वरूप बुझल जाइछ ।

....

....

....

....

10.3 भाव-पल्लवन

अहाँ संक्षेपणक विषयमे जानि चुकल छी । अहाँ जनैत छी जे संक्षेपणमे कोनो विस्तृत अंशकेँ संक्षिप्त किंवा छोट कयल जाइछ । 'भाव-पल्लवन' संक्षेपणक ठीक विपरीत अछि । पल्लवन केर शाब्दिक अर्थ अछि विस्तार करब । अतएव भाव-पल्लवनक अर्थ अछि कोनो सूत्रवाक्य, उक्ति, कहबी, काव्यपंक्ति आदिमे गुप्त भावकेँ विस्तारपूर्वक उजागर करब । एहि शब्दक हेतु अंग्रेजीक 'एम्प्लीफिकेशन' 'एक्सपेंशन' आदि शब्द प्रयुक्त होइछ ।

10.3.1 भाव-पल्लवनक महत्त्व

बजबा-लिखबामे भाव-पल्लवनक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । सामान्यसँ सामान्य वाक्यहुमे एकर उपयोग करैत छी । मानि लियऽ जे अहाँ कहलहुँ– 'भैरव हँसला' । एतबे मात्र कहलासँ अहाँक बात स्पष्ट नहि होइछ । श्रोताक जिज्ञासा बनल रहि जाइछ जे आखिर भैरव किएक हँसलाह ? एहि औत्सुक्यकेँ शान्त करबा लेल अहाँकेँ उपरिलिखित वाक्यक विस्तार वा पल्लवन करऽ पड़ैत अछि आ अहाँ कहैत छिऐक 'अकस्मात तेहन खुशीक क्षण आबि गेलनि जे भैरवकेँ हँसी लागि गेलनि आ ओ हँसलाह ।' एहि प्रकारेँ अहाँ देखैत छी जे सामान्यसँ सामान्य वाक्यमे सेहो वस्तु अथवा भावक विस्तारक अपेक्षा रहैछ । कखनोकऽ अहाँ कथ्यकेँ अलंकृत अथवा नीक जकाँ प्रस्तुत करबा लेल वाक्यमे पल्लवनक आवश्यकताक अनुभव करैत छी । उदाहरणार्थ– यदि अहाँ कही जे 'ओ आयल' तँ अहाँकेँ संतोष नहि होयत । एहि वाक्यक पल्लवन करैत एकरा नीक जकाँ एना कहऽ चाहैबक– 'ओ पढ़बा लेल आयल' । एहि तरहेँ पल्लवनक मूलमे वस्तु किंवा भावक विस्तार आ ओकरा अधिक विकसित तथा अलंकृत करबाक प्रवृत्ति काज करैत अछि ।

हम इहो देखैत छी जे कम शब्द वा एक वाक्यमे कहल वा लिखल भाव एवं विचारकेँ प्रत्येक व्यक्ति सहजतासँ नहि बुझि पबैछ । हमरा समक्ष कखनोकऽ एहन संगठित आ अर्थगर्भित वाक्य आबि जाइछ जे जँ ओकर विस्तार नहि कयल जाय तँ ओ बुझबा योग्य नहि होयत । एहना स्थितिमे विचार अथवा भावक एक-एक गेँठकेँ फराक कऽ बुझाबऽ पड़ैछ । एहन सहस्रो सूक्ति अछि जकर अर्थविस्तार कयने बिना ओकर पूरा भाव दुरूहे रहि जायत । अध्यापक तँ कक्षामे अर्थ-विस्तारक माध्यमे विषयकेँ स्पष्ट करिते छथि, माय-बाप सेहो अपन बच्चाक प्रश्न अथवा जिज्ञासाक उत्तर देबा लेल एकर सहायता लैत छथि । हमरहुलोकनि एकर अपवाद नहि छी । जीवनमे कखनो-कखनो एहन स्थिति अवश्य अबैछ जखन ककरो वाक्यकेँ सुनि हम कहि उठैत छी– 'हम अहाँक कहबाक तात्पर्य बुझलहुँ नहि, कने स्पष्ट रूपसँ कहू ।'

एहि कथनसँ पल्लवनक उपयोगिता प्रकट होइछ । एहिसँ इहो स्पष्ट अछि जे भाव-पल्लवनमे व्याख्या-विवेचनक प्रयोजन होइछ ।

10.3.2 भाव-पल्लवनक विधि

भाव-पल्लवनक प्रक्रिया वा विधिकेँ उदाहरण द्वारा सहजतासँ बुझि सकैत छी । ऊपर किछु वाक्यक उदाहरण अहाँ देखि चुकल छी । ओहि उदाहरणमे अहाँ देखलहुँ अछि जे वस्तु अथवा भावक विस्तार तथा अलंकरण द्वारा ओहि वाक्यक किछु पल्लवन भऽ गेल छल । आब किछु आर उदाहरण देखी ।

मानि लियऽ जे अहाँकेँ 'जन्मभूमि आ मातृभाषा' शीर्षकक पल्लवन करबाक अछि । अहाँ एकरा विषयमे सोचू आ एहि विषयक विविध पक्षक विषयमे एक संक्षिप्त रूपरेखा तैयार कऽ लियऽ । अहाँ निश्चय करू जे कोन-कोन बिंदुक विस्तार कयल जा सकैत अछि । विचार कयलापर अहाँ ई संक्षिप्त रूपरेखा बना सकैत छी–

जन्मभूमिक अर्थ– जतऽ जन्म भेल हो, 'मातृभाषा'क अर्थ– ओ भाषा जे माइक कोरमे बैसि सर्वप्रथम सिखने होइ । एहि सम्बन्धमे विद्वानलोकनिक अवधारणा ।

पल्लवनक हेतु बहुत पैघ रूपरेखा बनयबाक प्रयोजन नहि अछि, कारण ई निबंध नहि थिक । ओना, जाहि विषयक पल्लवन कयल जाइछ ताहिपर निबंध सेहो लिखल जा सकैत अछि । पल्लवन निबंधक अपेक्षा संक्षिप्त होइछ । ई प्रायः एक-दू अनुच्छेदक होइछ । एहि हेतुएँ एहिमे चिन्तनक दू-तीन बिन्दु लऽ ओकर क्रमिक विकास कयल जाइछ । जेना 'जन्मभूमि आ मातृभाषा'क पल्लवन करैत काल ओकर अर्थक विषयमे जे विभिन्न विचार अहाँक मनमे उठय, ओकरा क्रमबद्ध रूपेँ लिखि लियऽ, पुनः किछु विद्वानक मतक उदाहरण प्रस्तुत करू आ अंतमे जन्मभूमि आ मातृभाषाक महत्त्वकेँ स्पष्ट करैत संभव हो तँ कोनो प्रसिद्ध रचनाकारक उक्तिसँ एकरा समाप्त करू ।

पल्लवन कोनो रचनाकारक उक्तिसँ सम्पन्न हो से कोनो आवश्यक नहि अछि, परंच पल्लवन करबा काल यदि अहाँ कोनो कविक उक्ति किंवा कोनो महान लेखक किंवा चिन्तकक उक्तिसँ ओकर समापन कऽ सकी तँ से विशेष श्रेयस्कर होयत ।

उपरिवर्णित निर्देशक आलोकमे अहाँ 'जन्मभूमि आ मातृभाषा'क पल्लवन एहि प्रकारेँ कऽ सकैत छी– ''जन्मभूमिक अर्थ होइछ जतऽ जन्म भेल हो । जन्मभूमिक प्रति स्नेह-अनुराग राखब हमरासभक पावन धर्म थिक । जन्मभूमिसँ पैघ कोनो भूमि नहि । कोनो व्यक्तिक व्यक्तित्व आ कृतित्वक परिचितिमे ओकर जन्मभूमिक विशेष भूमिका रहैत छैक । अपन जन्मस्थानक भाषा, माइक कोरक भाषा 'मातृभाषा' कहबैछ, जाहिमे बाबा, नाना सिखैत जीवनक पहिल पाठ लोक पढ़ैत अछि । जननी आ जन्मभूमिकेँ स्वर्गहुसँ श्रेष्ठ मानल गेल अछि । तहिना जननीक भाषाक माध्यमे लोक मनोभावकेँ नीक जकाँ ककरो समक्ष राखि सकैत अछि । एक प्रख्यात कविक निम्न पदकेँ एहि परिप्रेक्ष्यमे देखल जा सकैछ-

> रटि आर-ए-टी रैट, रैट माने पढ़ि चूहा,
> चूहा कोन पदार्थ थीक, मनमे ई ऊहा ।
> जहि भाषा-बलेँ बूझी चूहा थीक मुसरी,
> भऽ परभाषाऽभिज्ञ अहाँ तकरा जुनि बिसरी ॥

एहि उदाहरणसँ अहाँ बुझि सकैत छी जे पल्लवन करैत काल देल गेल शब्द, वाक्य, कहबी, सूक्ति आदिक मूल भावकेँ बुझब आवश्यक अछि । मूलभाव किंवा विचारकेँ बुझि लेलाक

बाद ओकर विभिन्न बिन्दुकेँ क्रमबद्ध रूपेँ लिखल जाइछ । प्रयोजन पड़लापर अपन कथनक पुष्टि उदाहरण, काव्यांश किंवा उद्धरणसँ कयल जाइछ । भाव-पल्लवनक अंत यदि महत्त्वपूर्ण उक्ति वा वाक्यांशसँ कयल जाय तँ ओ विशेष प्रभावोत्पादक होइछ ।

पल्लवन छोट-छोट सरल वाक्यमे होयबाक चाही, जाहिसँ भाव स्पष्ट भऽ जाय । एहिमे ने तँ अप्रासंगिक बात किंवा अनावश्यक विस्तारक गुंजाइश होइछ आ ने टीका-टिप्पणी वा आलोचनाक सैह । पल्लवन उत्तम अथवा मध्यम पुरुषमे नहि भऽ अन्यपुरुषमे होइछ, अर्थात् एहिमे ने 'हम' 'अहाँ' शैलीक प्रयोग होइछ आ ने संवाद-शैलीक ।

उदाहरणार्थ जेना एतऽ अहाँ 'जन्मभूमि आ मातृभाषा'क पल्लवन कयलहुँ अछि, ओहि प्रकारेँ कोनो सूक्ति, काव्यक पंक्ति, मोहबिरा आ लोकोक्ति आदिक पल्लवन सेहो अहाँ नीक जकाँ कऽ सकैत छी ।

बोध प्रश्न 2

1) पल्लवनक शाब्दिक अर्थ की अछि ? बुझाकऽ लिखू ।

....

....

....

....

....

2) भाव-पल्लवनक मूलमे काज कयनिहार प्रवृत्तिक संदर्भमे किछु कथन निम्नलिखित अछि । एहिमेसँ सही कथनक आगाँ (✓) चेन्ह लगाउ ।

I) भाव-पल्लवनक मूलमे संक्षेपक प्रवृत्ति कार्य करैछ ।

II) भाव-पल्लवनक मूलमे वस्तु अथवा भावक विस्तारक प्रवृत्ति काज करैछ ।

III) भाव-पल्लवनक मूलमे रोषक प्रवृत्ति रहैछ ।

IV) भाव-पल्लवनक मूलमे अलंकरणक प्रवृत्ति रहैछ ।

3) देल गेल शब्दमेसँ उपयुक्त शब्द-प्रयोगसँ रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

I) भाव-पल्लवन संक्षेपणक..... अछि । (विपरीत/ समानार्थी)

II) भाव-पल्लवन कोनो सूत्रवाक्य, उक्ति, सूक्ति, कहबी वा काव्य-पंक्तिमे गुप्त अर्थकेँ ....उजागर करैछ । (विस्तारपूर्वक/ संक्षेपमे)

अभ्यास 2

1) 'अनुशासन' विषयक पल्लवन लेल एक संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करू ।

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित रूपरेखाक आधारपर 'वैभव गेने रहत विवेक, तइसन पुरुष लाख मह एक'क भाव-पल्लवन करू ।

संसारमे एहन लोक बहुत कम होइछ जे धन-सम्पत्ति गेलो उत्तर धैर्य रखैत अछि । बेसी तँ एहने भेटैछ जे धनक शोकमे विक्षिप्त पर्यन्त भऽ जाइछ ।

....

....

....

....

....

3) वस्तु अथवा भावक विस्तार करैत 20-25 शब्दमे अपूर्ण वाक्यक पल्लवन करू :

I) रंग-अबीरक महापर्व फगुआ बीति गेल । आने वर्ष जेकाँ ई एहू वर्ष हर्ष-उल्लासक संग मनाओल गेल, आगाँ सेहो.....

II) इच्छा-शक्तिक दृढ़तासँ मनुष्य जीवनमे.....

III) आलस्य मनुष्यक सभसँ पैघ शत्रु थिक । जँ मनुष्य आलस्यक त्याग करय तँ... ......

IV) भगवानक वास कतऽ नहि छनि ? हृदय-मंदिरमे छनि । मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारा कतऽ नहि छनि ? यत्र-तत्र-सर्वत्र ओ विराजमान छथि । हँ, हुनका पयबा लेल पवित्र आत्मा चाही, शुद्ध मन चाही । – एहि अंशमे प्रयुक्त 'यत्र-तत्र-सर्वत्र'केँ पाँच पंक्तिमे पल्लवित करू ।

....

....

....

....

....

....

V) 'बारीक पटुआ तीत'क भाव-पल्लवन करू ।

....

....

....

....

....

....

10.4 निबंध-लेखन

एहि पाठ्यक्रमक द्वितीय खंडक सातम इकाइमे अहाँ निबन्ध-रचनाक विषयमे किछु जनतब प्राप्त कऽ चुकल छी । अहाँ संक्षेपण एवं पल्लवनक सेहो अभ्यास कऽ चुकल छी । आब अहाँ निबंध-लेखनक प्रक्रियासँ अवगत होयब एवं निबंध लिखबाक अभ्यास करब ।

10.4.1 निबंधक स्वरूप एवं प्रकार

निबंध शब्दक अर्थ थिक, जे नीक जकाँ वा मुख्य रूपेँ बान्हल हो । एहि तरहेँ निबंध कोनो एक विषयपर लिखित लघु आकारक सुगठित रचना होइछ । एहिमे क्रमबद्धता रहैछ एवं विषयवस्तुसँ सम्बन्धित विभिन्न बिंदुक विस्तार कयल जाइछ । विषयक पक्ष वा विपक्षमे चिन्तनक जे कोनो बिंदु भऽ सकैछ, ताहिपर परिष्कृत भाषामे निबंध-लेखक विचार करैत अछि । निबंध-लेखनमे लेखकक व्यक्तित्व सेहो कोनो-ने-कोनो रूपमे आबिए जाइत अछि । दोसर शब्दमे कहि सकैत छी जे निबंधमे लेखकक निजता झलकैत छैक ।

मूलतः निबंधक दू रूपकेँ मान्यता प्रदान कयल गेल अछि :

1) विषय-प्रधान वा विचारात्मक निबंध ।

2) भाव-प्रधान वा भावात्मक निबंध अथवा ललित निबंध ।

विषय-प्रधान निबंधमे विचारक प्रधानता होइछ तथा भाव-प्रधान निबंधमे भावक प्रधानता । एतऽ 'प्रधान' शब्द विचारणीय अछि । कोनो निबंधकार ने तँ खाली विचारक आधारपर निबंधक सर्जना करैछ आ ने केवल भावेक आधारपर । ओ विचार एवं भावकेँ एक संग लऽ आगाँ बढ़ैत अछि, परंच कखनो ओकर लेखनमे विचार मुख्य भऽ जाइत अछि तँ कखनो भाव । जखन निबंधमे चिन्तन अथवा विचारक मुख्यता रहैछ तँ ओकरा विचारात्मक निबंध कहल जाइछ । एहि प्रकारक निबंधमे क्रमबद्ध चिन्तनक द्वारा निबंधकार पाठक धरि अपन बात पहुँचबैत अछि । भावात्मक अथवा ललित निबंधमे हृदयक आवेग वा भावक प्राधानता होइछ । लेखक भाव-प्रवाहमे बहैत अछि आ पाठकक संग तादात्म्य स्थापित कऽ लैत अछि । एहि प्रकारक लेखनमे कतोक बेर विचारक क्रमबद्धताक सेहो चिन्ता नहि कयल जाइछ । निबंधकार अपन पूर्व ज्ञानक सदुपयोग करैत ठाम-ठाम अन्य प्रकारक जानकारी सेहो दैत जाइत अछि आ एहि संग नाना शास्त्रक उद्धरण सेहो । ओ भावनाक प्रवाहमे बहि जाइछ आ जे बात मस्तिष्कमे अबैछ तकरा कहने जाइत अछि । एहि प्रकारक निबंध सभ नहि लिखि सकैछ– कोनो कवि-हृदय सैह सफल होइछ । एकरा ललित निबंध सेहो कहल जाइछ ।

जतऽ धरि सामान्य कोटिक विचारात्मक निबंधक प्रश्न अछि, कोनो व्यक्ति अभ्यास द्वारा एहि कोटिक निबंधक प्रणयन कऽ सकैत अछि । एहि प्रकारक निबंधमे विशेष गंभीरताक प्रयोजन नहि पड़ैछ । विचारात्मक निबंधमे क्रमबद्धताकेँ ध्यानमे राखि केन्द्रबिन्दुक विस्तार कयल जाइछ । एहन निबंध-लेखनमे विषयसँ सम्बन्धित ग्रंथसभक अध्ययन सेहो उपयोगी होइछ ।

एतऽ हम अपनाकेँ विचारात्मक निबंधहि धरि सीमित राखब आ एहि प्रकारक निबंधक लेखन-प्रक्रियाक जनतब अहाँकेँ देब । अहाँ ओकरा लिखबाक अभ्यास करब ।

10.4.2 निबंध-लेखनक विधि

अहाँकेँ आब बुझबामे आबि गेल होयत जे प्रत्येक निबंधपर निबंध-लेखकक व्यक्तित्वक छाप रहैत छैक आ प्रत्येक लेखक अपना ढंगसँ निबंध लिखि सकैत अछि । एकरा नियमक परिधि मे पूर्णतः नहि बान्हल जा सकैछ । तथापि, अहाँक सुविधाक लेल निबंध-लेखन-विधिकेँ संक्षेपमे बुझाओल जा रहल अछि ।

निबंध कोनो विषयपर लिखल जा सकैत अछि । विषयक सीमा नहि अछि । निबंध-लेखनक हेतु आत्मविश्वास होयब परमावश्यक अछि । अहाँक मनमे ई दृढ़ विश्वास होयबाक चाही जे अहाँ स्वयं निबंध लिखबामे समर्थ छी । अहाँकेँ अपन योग्यता तथा विचार-शक्तिपर भरोस राखऽ पड़त, तखनहि अहाँ नीक निबंध लिखि सकब । अहाँ एहि जगतमे जे किछु देखैत छी किंवा अहाँक जीवनमे जे घटनासभ घटैत अछि, ताहिमेसँ कोनोपर अहाँ नीक निबंध लिखि सकैत छी ।

निबंध लिखब आरम्भ करबासँ पहिने ओकर एक संक्षिप्त प्रारूप बना लेब तँ ओहिसँ निबंध -लेखनमे सुविधा होयत । कोनो निबंधक तीन भाग होइछ– (1) भूमिका (2) मुख्य भाग अर्थात् केन्द्रीय कथ्य (3) उपसंहार ।

रूपरेखा (प्रारूप) बनयबा काल निबंधक प्रमुख भागपर पूर्ण ध्यान दी । विषयक पक्ष वा विपक्षमे जतबा विचारणीय बिन्दु भऽ सकैछ, ओकरा फराक-फराक लिखि लियऽ । लेखनक समय समस्त बिंदुपर बिनु शीर्षक देने प्रकाश देब तँ निबन्ध नीक भऽ जायत ।

तँ आउ, आब एक उदाहरण देखबैत छी, जकर माध्यमे अहाँ निबंध लिखबाक कला नीक जकाँ सिखि सकब । अहाँ पढ़बा लेल महाविद्यालय गेल होयब । ओतऽ पुस्तकक प्रयोजन भेल होयत । पुस्तकक हेतु पुस्तकालय रहैत छैक । यदि एही विषयपर अहाँकेँ निबंध लिखऽ कहल जाय तँ कोन-कोन बात लिखबैक ? एहि हेतु निम्न अंश देखी ।

छात्र-जीवनमे पुस्तकालयक अत्यधिक महत्त्व होइछ । पुस्तकालयक अर्थ होइत छैक जतऽ पुस्तकक भंडार हो । ज्ञान-विज्ञानक कोनो क्षेत्र हो, वाणिज्य-व्यवसाय हो, दर्शन वा साहित्य हो अथवा अन्यान्य कोनो शास्त्र, सभ विषयसँ सम्बद्ध पुस्तकक संग्रह पुस्तकालयमे क्रमबद्ध रूपेँ राखल रहैछ, जकर छात्र, शिक्षक वा अन्य अध्येता उपयोग करैत छथि आ एक-ने-एक दिन विद्वानक श्रेणीमे आबि जाइत छथि । पुस्तकालय अतीतक धरोहरि थिक, वर्तमानकेँ जाग्रत ओ भविष्यकेँ उज्वल बनयबाक सर्वश्रेष्ठ माध्यम थिक । पुस्तकालय व्यक्तिगत सेहो भऽ सकैछ आ संस्थागत सेहो । पुस्तकक माध्यमे प्रकृति, जीव-जन्तु, विज्ञानक आविष्कार, राष्ट्रीय एकता, सद्‌भावना, सहिष्णुता, धर्म-कर्म, संगीत आदि अनेको विषयक जानकारी प्राप्त कऽ सकैत छी । तँ पुस्तकालयक महत्त्व निर्विवाद अछि ।

पुस्तकालयक महत्त्व :

रूपरेखा

1) भूमिका

2) पुस्तकालयक महत्त्व

   I) ज्ञानवर्द्धनक दृष्टिएँ

   II) शिक्षा, संस्कृति, मर्यादा आ आत्मपरीक्षणक दृष्टिएँ

   III) व्यापारिक दृष्टिएँ

   IV) जीवनक विविध पक्षक दृष्टिएँ

3) पुस्तकालयक स्वरूप

4) उपसंहार

एहि रूपरेखासँ स्पष्ट अछि जे निबंधक मुख्य भाग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अछि । एहिमे केन्द्र-बिंदु अथवा कथ्यक अनेक दृष्टिसँ विस्तार कयल जाइछ । पल्लवनक उपयोग करैत अहाँ एहि चिन्तन-बिंदुक विस्तार सहजहिँ कऽ सकैत छी ।

सर्वप्रथम अहाँकेँ विषयक भूमिका लिखबाक अछि । भूमिका-लेखनक अनेक प्रकार भऽ सकैछ । निबंधक प्रारंभ आकर्षक रूपेँ होयबाक चाही, पाठक तखनहि निबंध पढ़बाक हेतु प्रेरित होयत ।

अहाँकेँ निबंधक भूमिका लिखैत काल पुस्तकालयक महत्त्वकेँ रेखांकित करब आवश्यक होयत । भूमिका प्रत्येक लेखक अपना ढंगेँ लिखि सकैत छथि । एतऽ भूमिकाक एक बानगी देल जा रहल अछि ।

पुस्तकालयक महत्त्व अदौसँ अछि । एकर परिकल्पना सर्वप्रथम जे कयने होयताह से धन्यवादक पात्र छथि । पुस्तकालय भूत, वर्तमान ओ भविष्य सभ कालमे अपन महत्त्व रखलक अछि आ राखत । ई एक एहन सरस्वतीक मंदिर होइछ जतऽ ज्ञानक विविध अंग-उपांग एकहि ठाम उपलब्ध भऽ जाइछ । पुस्तकालयमे रंग-विरंगक पोथी रहैछ, जकर अध्ययन-मनन कऽकऽ लोक ज्ञाता आ पण्डित बनि जाइत अछि।

एहि प्रकारेँ भूमिका मुख्य विषयसँ जुड़ैत अछि । एहन भूमिकाक कोनो अर्थ नहि होइछ जे अनावश्यक बातमे ओझराकऽ रहि जाय आ मुख्य विषयसँ सम्बद्ध नहि भऽ पाबय ।

भूमिकाक पश्चात निबंधक मुख्य भागकेँ लिखल जाइछ । जेना हम कहि चुकल छी, निबंधक एहि भागमे केन्द्रबिन्दुक विस्तार कयल जाइछ । विभिन्न चिन्तन-बिंदुपर, ओकर महत्त्वक अनुसार, एक अथवा दू अनुच्छेद लिखल जा सकैछ । ई आवश्यक होइछ जे एहि अनुच्छेदमे व्यक्त विचार तर्कसम्मत एवं स्वाभाविक हो तथा ओकर क्रमबद्ध विकास भेल हो । जेँ कि ई निबंधक प्रमुख हिस्सा थिक, अतएव विषयक विभिन्न पक्षक पल्लवनक आवश्यकता होइछ । महत्त्वक अनुसार जे बात पहिने अयबाक चाही, ओकरा पहिने लिखबाक चाही । निबंधक एहि हिस्सामे पक्षमे आवऽवला तर्क पहिने लिखबाक चाही । विपक्षी तर्कक चर्चा अंतमे करबाक चाही । पुनः ओकर खण्डन कऽ अपन तर्ककेँ पुष्ट करबाक चाही ।

आब, अहाँ जे निबंध लिखि रहल छी, तकर मध्य भागक एक-दू बिन्दुपर विचार करी । मानि लियऽ जे अहाँ 'उपदेश'क दृष्टिसँ अथवा 'ज्ञान'क दृष्टिसँ पुस्तकालयक महत्त्वकेँ रेखांकित करऽ चाहैत छी । एहि हेतु निम्न प्रकारेँ एहि बिंदुपर प्रकाश देल जा सकैछ–

पुस्तकालय ज्ञानक केन्द्र थिक । एतऽ ज्ञानक अक्षय भंडार भेटैछ । रंग-विरंगक विभिन्न विषयक पोथीसँ नाना प्रकारक उपदेश ग्रहण कयल जा सकैछ । एतऽ एकहि ठाम अनेक शास्त्रक पोथीक संग्रह रहैछ । ओ खाहे धर्म हो, दर्शन हो, साहित्य हो, विज्ञान हो, संगीत हो, चित्रकला हो, वाणिज्य हो अथवा आने कोनो क्षेत्र हो, विभिन्न रुचिक पाठकक सामग्री पुस्तकालयमे उपलब्ध रहैछ । कंओ उपन्यास पसिन्न करैछ, ककरो कथामे अभिरुचि रहैछ, ककरो नाटक नीक लगैछ, ककरो कविते पसिन्न पड़ैछ, ई सभ पुस्तकालयमे सरलतासँ भेटि जाइछ । एहि तरहेँ पुस्तकालय बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होइछ ।

अहाँ देखलहुँ जे कोन प्रकारेँ भूमिकासँ चिन्तनक अग्रिम बिंदुकेँ जोड़ि निबंधक विकास कयल गेल अछि । एहि प्रकारेँ चिन्तन-बिंदुकेँ जोड़ि ओकरा क्रमबद्ध रूपेँ लिखि अहाँ निबंधक मध्य किंवा मुख्य भागकेँ पूर्ण कऽ सकैत छी । ऊपर हम उपदेश आ ज्ञानक दृष्टिएँ पुस्तकालयक महत्त्वपर प्रकाश देलहुँ अछि आ अनुच्छेदक अंतमे एकर सारकेँ प्रस्तुत कयलहुँ अछि । आब अहाँ शेष विचार-बिंदुकेँ एहि प्रकारेँ पल्लवन करू जे ने तँ क्रमभंग हो आ ने चिन्तनक प्रवाहमे कोनो व्यवधाने आबय ।

निबंधक अंत आकर्षक ढंगसँ होयबाक चाही । उपसंहारक अनुच्छेद मुख्य विषयसँ हँटल नहि होयबाक चाही । ओकरा एहि प्रकारेँ सजयबाक चाही जे निबन्ध पूर्ण लागय । प्रत्येक निबंधकारक

शैली भिन्न-भिन्न होइछ । अतएव निबंधक समाप्तिक ढंग सेहो भिन्न-भिन्न भऽ सकैछ । किछु निबंधकार कोनो उदाहरणसँ निबंधक इतिश्री करब विशेष पसिन्न करैत छथि तँ किछु गोटे कोनो सुझाव-वाक्यसँ। कखनो-कखनो निबंधक अंत किछु प्रश्न-वाक्य आ ओकर संक्षिप्त उत्तरसँ सेहो कऽ देल जाइछ । अहाँ एहिमेसँ कोनो प्रकारेँ निबंधक उपसंहार कऽ सकैत छी । एतऽ एक नमूना देल जाइछ–

कोनो व्यक्तिक मानसिक आ बौद्धिक विकासक हेतु पोथीक अध्ययन आवश्यक अछि । आवश्यक सभ पोथी सभ लग रहब संभव नहि अछि । नहिएँ रहैछ । आवश्यक पोथी कोनो पुस्तकालयेसँ उपलब्ध भऽ सकैत अछि । व्यक्ति पुस्तकालयमे नियमित जाय ओकर सदुपयोग कऽ पंडित बनि सकैछ, ज्ञानक परिधिक विस्तार कऽ सकैछ, फलस्वरूप यशस्वी भऽ सकैछ, समाजमे प्रतिष्ठा अर्जित कऽ सकैछ ।

अहाँ देखि चुकल छी जे निबंध-लेखनमे अपन विचारकेँ क्रमिक विकसित करैत उपसंहार धरि पुहँचल जाइत अछि आ एही संग निबंध समाप्त भऽ जाइछ । निबंधक समाप्तिक पश्चात ओकरा एक बेर पुनः पढ़ि लेब आवश्यक होइछ । एहिसँ त्रुटिक परिमार्जन भऽ जाइछ ।

बोध प्रश्न-3

1) I) देल गेल शब्दमेसँ उपयुक्त शब्दक प्रयोग द्वारा रिक्त स्थानक पूर्ति करू :

II) निबंध कोनो विषयपर........... जा सकैत अछि । (लिखल/ नहि लिखल)

III) निबंधमे निबंधकार................. भाषामे अपन अभिव्यक्ति दैछ । (अमर्यादित/मर्यादित)

IV) निबंध-लेखकक शैली.............. होइत अछि । (एकहि/ अनेक)

2) निबंधक मुख्य प्रकार कोन-कोन अछि ?

....

....

....

....

....

अभ्यास-3

1) 'विज्ञानक चमत्कार' शीर्षक निबंधक रूपरेखा प्रस्तुत करू ।

....

....

....

....

....

....

....

2) रिक्त स्थानकेँ भरू-

मिथिलावासी वा मैथिलक हेतु मातृभाषा मैथिलीक अपन पृथक......... अछि। एकर स्वतंत्र अस्तित्व....... छैक । ई एक अति समृद्ध आ प्राचीन......... थिक ।

3) 'समाज सेवा' शीर्षक निबंधक किछु चिन्तन-बिंदुक उल्लेख करू । समाजसेवा-अर्थात् समाजक प्रति कल्याणक भाव । एहिसँ समाजक सम्यक विकास । अहाँ एहि चिन्तन-बिंदुकेँ पल्लवित करू ।

....

....

....

....

....

4) मानि लियऽ जे अहाँ 'अपन प्रिय कवि'पर एक निबंध लिखलहुँ अछि । भूमिका-लेखनक अतिरिक्त एकर केन्द्रबिंदुक विस्तार करैत अहाँ एहि विषयसँ सम्बद्ध तथ्यक चर्चा कयलहुँ अछि । उपसंहारक अंत लिखबाक काज शेष अछि । अहाँ करीब 50 शब्दमे उपसंहारक अंत प्रस्तुत करू ।

....

....

....

....

....

5) एहि विषयपर पाँच सय शब्दमे निबन्ध लिखू :

1) राष्ट्रीय एकता
2) राष्ट्रीय सेवायोजना
3) विज्ञानक चमत्कार
4) मातृभाषाक महत्त्व
5) अधिकार ओ कर्त्तव्य
6) अपन प्रिय लेखक

10.5 सारांश

- जीवनक सभ क्षेत्रमे संक्षेपणक महत्त्व अछि । संक्षिप्त, क्रमबद्धता, पूर्णता, भाषाक स्पष्टता ओ सरलता संक्षेपणक प्रमुख गुण थिक । संक्षेपणक मूल अंश करीब एक-तेहाइ आकारक होइत अछि । अहाँकेँ ई ज्ञान भऽ चुकल अछि जे संक्षेपण करबा काल अनावश्यक ओ पुनरावृत्त शब्द किंवा भावकेँ हँटा देल जाइछ आ एहिमे मूल कथ्यक रक्षा कयल जाइछ । आलंकारिक प्रयोग, उदाहरण, विवरणसँ बचल जाइछ । मूल हिस्साक

वाक्यमे सेहो परिवर्तनक प्रयोजन रहैछ । एहि बातकेँ ध्यानमे रखैत अहाँ संक्षेपण कऽ सकैत छी ।

- भाव-पल्लवन संक्षेपणक विपरीत होइछ । एकर मूलमे वस्तु किंवा भावक विस्तार इष्ट रहैछ । पल्लवन करबा लेल देल गेल विषयक एक संक्षिप्त रूपरेखा बना लेब उपयुक्त रहैछ । एहिमे चिन्तनक दू-तीन बिंदुक विकास कयल जाइछ । अपन कथनक सम्पुष्टि उदाहरण, उद्धरण एवं काव्यात्मक पंक्तिक माध्यमे करब श्रेयष्कर थिक । एहि प्रक्रियाकेँ ध्यानमे राखि अहाँ कोनो कथन, सूक्ति, काव्य-पंक्ति, लोकोक्तिक पल्लवन कऽ सकैत छी ।

- निबंध कोनो एक विषयपर लिखल गेल लघु आकारक सुगठित रचना थिक । एहिमे विषयसँ सम्बद्ध अनेकानेक बिंदुक क्रमबद्ध रूपेँ विस्तार कयल जाइछ । निबंध लिखबासँ पूर्व देल गेल विषयक एक संक्षिप्त रूपरेखा बना लेब उपयोगी रहैछ । निबंधक तीन भाग होइछ– (1) भूमिका (2) मुख्य भाग (3) उपसंहार ।

- मुख्य भागमे चिंतनक अनेक बिंदुक विकास कयल जाइछ । निबंध-लेखनमे ओना संक्षेपण सेहो एक सीमा धरि उपयोगी होइछ, परंच भाव-पल्लवनक एहिमे विशेष भूमिका रहैछ । यथार्थतः विभिन्न चिंतन-बिंदुक क्रमिक भाव-पल्लवन कऽ अहाँ देल गेल विषयपर निबंध लिखि सकैत छी ।

10.6 शब्दावली

आलंकारिक : अलंकारक अर्थ होइछ गहना । गहनासँ सुन्दरतामे वृद्धि होइत छैक । आलंकारिक भाषा ओ भेलैक जाहिसँ वाक्य आ ओकर अर्थमे शोभा बढ़ैक । चमत्कृत वाक्यकेँ आलंकारिक भाषा कहल जाइछ ।

क्रमबद्ध : क्रमिक, क्रमसँ, क्रमानुसार ।

उपादेय : उपयोगी, काजक ।

अप्रासंगिक : जकर कोनो प्रसंग वा औचित्य नहि हो ।

10.7 बोध प्रश्न/ अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) 'संक्षेपण'क शाब्दिक अर्थ थिक संक्षिप्त किंवा लघु रूपमे प्रस्तुत करब, छोट करब ।

2) 'संक्षेपण'मे देल गेल अंशकेँ एहि प्रकारेँ लघु कयल जाइछ जे ओकर समस्त प्रमुख तथ्य, भाव वा विचार मूल अंशक एक-तेहाइ शब्दमे आबि जाइछ ।

3) I) श्रम ओ समयक बचत होइछ ।

II) आवश्यक बातकेँ कमसँ कम शब्दमे प्रकट कयल जाइछ ।

बोध प्रश्न-2

1) 'पल्लवन'क शब्दिक अर्थ थिक विस्तारपूर्वक ।

2) II–✓ (4) IV– ✓

(1) विपरीतार्थक (2) विस्तारपूर्वक

(1) लघु (2) विस्तार (3) साधल (4) अपन

2) (I) विषय-प्रधान किंवा वैचारिक वा विचारात्मक निबंध ।

(II) भाव-प्रधान किंवा भावात्मक अथवा ललित निबंध ।

अभ्यास-1

1) रहन-सहन एवं व्यवहार'।

2) अधिकार पैघ आ कि कर्त्तव्य ?

3) की मनुष्य समाजक अंग ? पहिने व्यक्ति की समाज ?

4) कविता प्रभावकारी कोना होइछ ? एहि लेल आवश्यक कोन-कोन तत्त्व चाही ?

अभ्यास-2

1) राष्ट्रीय एकताक अर्थ, एकर महत्त्व, एहिसँ राष्ट्रीय ओ अंतरराष्ट्रीय प्रभावक संभावना । (निर्देश : अभ्यास-2 एवं 3क उत्तर अहाँ अपन भाषामे लिखी । एहि उत्तरकेँ निम्नलिखित नमूना उत्तरसँ यथावत मिलब आवश्यक नहि) ।

2) विज्ञान बहुत आगाँ बढ़ि चुकल अछि । एकर वरदान ओ अभिशाप दुनू रूपमे मूल्यांकन होइछ । पैघसँ पैघ चमत्कार विज्ञानक माध्यमे होइछ । मानव चन्द्रमापर पहुँचल । अन्तरिक्षमे गेल । विभिन्न ग्रह-उपग्रहक अन्वेषण नित्य भऽ रहल अछि । विभिन्न यान-निर्माणमे वैज्ञानिकलोकनि अहर्निश श्रम करैत रहैत छथि । टेलीविजन, मोबाइल अथवा नाना प्रकारक वाहन विज्ञानेक देन थिक । विद्युत् उत्पादनो एही विधिएँ होइछ, मुदा जखन एहिसँ खतरा उत्पन्न भऽ जाइछ तँ विज्ञान अभिशाप बनि जाइछ ।

3) I) बंसतोत्सव सम्पन्न होइछ आ चैतावरक राग लोक अलापऽ लगैछ । मुदा, दुनू मासक सांस्कृतिक, धार्मिक ओ व्यावहारिक दृष्टिएँ अपन-अपन महत्त्व छैक । कौलिक संस्कृति ओ क्षेत्रविशेषक अनुरूप एकर विविध रूप दृष्टिगत होइछ ।

II) 'पराधीन सपनहुँ सुख नाही' कहल गेल छैक । वस्तुतः यदि प्रतिष्ठापूर्वक जीवन-यापन करबाक अछि तँ कर्मपथपर आरूढ़ एहि जीवन-संग्राममे बढ़ैत चलू- सफलताक सोपाने नहि, अपितु लक्ष्य धरि पहुँचब आ सर्वत्र प्रतिष्ठाक पात्र बनब । पराधीन भऽकऽ जीवन जीयब कायरता थिक ।

III) यावत धरि अहाँ लग धन-सम्पत्ति अछि तावते धरि अहाँक मित्रो अहाँक संग रहताह । धन-सम्पत्ति चल गेलापर मित्र सेहो अहाँसँ ओहिना दूर भऽ जयताह, जेना रौदमे चलबा काल अपनहुँ देहक छाहरि दूर भऽ जाइत छैक ।

4) लोकक स्थिति मृगमरीचिका सदृश छैक । धन-सम्पत्ति लेल व्याकुल । आओर अधिक हो तकर चिन्तामे सदैव लागल । एकर कखनो अन्त नहि । संतोषक घाट नहायले नहि । परंच जे त्यागी, संतोषी आ अयाची अछि, सैह अमर होइछ ।

5) 'बाड़ीक पटुआ तीत' ई लोकोक्ति मैथिलीमे अछि । घरमे लोक कतबो पैघ भऽ जाइत अछि, मुदा घर-समाज ओकरा कोनो तेहन मोजर देबा लेल तैयार नहि रहैत छैक । ई कहबी बड़ प्रचलित अछि ।

अभ्यास-3

1) भूमिका

2) साहित्य समाजक दर्पण

   1) साहित्यकारपर समकालीन समाजक प्रभाव ।

   2) साहित्य युगक प्रतिनिधित्व करैछ ।

   3) साहित्यमे यथार्थक प्रतिपादन ।

   4) साहित्यक भूमिका : संदर्भ सामाजिक परिवर्तनक– उदाहरणक संग ।

   5) राष्ट्रीय एकताक परिप्रेक्ष्यमे साहित्यक प्रयोजन ।

   6) सामाजिक संदर्भमे साहित्यकारक दायित्व ।

3) उपसंहार

2) कोनो क्षेत्रक विकासक हेतु मातृभाषाक महत्त्व विशेष रहैत अछि । मातृभाषेमे चेतनाक पाठ पढ़ल जा सकैछ । माइक कोरक भाषाकेँ मूल्यमे नहि आँकल जा सकैछ । एकरा माला जकाँ फूलक रूपमे गाँथल जा सकैछ । मूलत: कहल जा सकैछ जे मातृभाषा कोनो व्यक्तिक बौद्धिक ओ मानसिक विकासक हेतु स्वस्थ ओ सर्वश्रेष्ठ माध्यम थिक ।

3) जीवनमे प्रतिष्ठा अर्जित करबाक हेतु चरित्र-निर्माणक पाठ पढ़ब आवश्यक अछि । यदि नैतिकताक सम्यक बोध होइक, मानवताक महत्त्व बुझबाक जिज्ञासा होइक तँ कोनो व्यक्ति जीवनक चरम लक्ष्य धरि पहुँचबामे समर्थ भऽ सकैछ । चरित्र-निर्माणक अर्थ बुझने ई संभव ।

4) अहाँ कोनो एक विषयक चयन करू । पहिने ओकर रूपरेखा तैयार करू आ तखन समस्त बिंदुक पल्लवन करू ।

इकाइ 11 अनुवाद

इकाइक रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

अहाँ आधार पाठ्यक्रमक तेसर खण्डक एगारहम इकाइक अध्ययन करऽ जा रहल छी। एहिसँ पूर्वक इकाइमे अहाँ संक्षेपण, भाव-पल्लवन आ निबन्ध-लेखनक अध्ययन कऽ लेने छी। ई इकाइ अनुवादसँ सम्बन्धित अछि। फलतः एहि इकाइक अध्ययनक पश्चाति अहाँ–

- कहि सकब जे अनुवाद की थिक,
- अनुवादक प्रक्रियाक वर्णन कऽ सकब,
- इहो कहि सकब जे अनुवाद करैत काल कोन-कोन समस्या अबैत छैक,
- आन-आन क्षेत्रमे भऽ रहल अनुवाद-कार्यक समस्या दिस संकेत कऽ सकब, आ
- अहाँ स्वयं एहि प्रकारक अनुवाद-कार्य कऽ सकब।

11.1 प्रस्तावना

अहाँ जाहि इकाइक अध्ययन करऽ जा रहल छी, ओकर प्रत्यक्ष सम्बन्ध अनुवादसँ अछि। आधार पाठ्यक्रमक एहि खण्डमे हम मैथिली भाषाक लेखनपर विशेष रूपेँ विचार कऽ रहल छी। एतऽ हम अहाँकेँ अनुवादक व्यावहारिक ज्ञानसँ परिचित करबैत छी। अनुवादक सम्बन्धो लेखनेसँ अछि, मुदा एहन लेखन ओहि लेखनसँ एहि अर्थमे भिन्न अछि जे ई एक

भाषाकेँ दोसर भाषामे परिवर्तित करबाक काज करैत अछि। एहि ठाम सभसँ पहिने ई बुझाओल जायत जे 'अनुवाद' की थिक ? तत्पश्चात अनुवादक कतिपय प्रक्रियापर विचार करब । तखन एहि क्रमक समस्या आ किछु शुद्धाशुद्धिक चर्च करब । कहबाक तात्पर्य जे एहि इकाइमे अनुवादक सैद्धान्तिक परिचयक संगहि एकर व्यावहारिक ज्ञानोसँ अवगत होयब ।

एहि क्रममे हम अनुवाद-कार्यमे अबैत कठिनता आ सामान्य शुद्धाशुद्धिक चर्च करब । एकरा सङहि एहिसँ संबंधित बानगी निर्दिष्ट करैत पथ-प्रदर्शन कयल जायत, फेर अभ्यास देल जायत । हँ, एकटा गप आरो जे अभ्यास करबाकाल अहाँ अपनाकेँ एकसर नहि बुझी, हम सङ रहब । कतिपय संकेतक माध्यमसँ हम बाटो देखबैत रहब । तत्पश्चात अहाँ स्वयं अभ्यासक बलेँ अनुवाद-कार्यमे पण्डित भऽ सकब । मुदा ई सभटा निर्भर करैत अछि अहाँक मेहनति आ लगनशीलतापर । अंतमे बोध-प्रश्नक समाधान कयल जायत । तखन अहाँ अपन उत्तरकेँ इकाइक अन्तमे देल गेल बानगी सङ मिलान करब, आ अपनहि अपन परीक्षण करब जे एखन धरि अहाँ कतेक सिखलहुँ अछि । आउ, आब देखी जे अनुवादक अर्थ की होइछ आ एहि प्रकरणकेँ कहल की जाइत अछि ?

11.2 'अनुवाद' शब्दक अर्थ ओ व्याख्या

अनुवाद काजमे हाथ लगयबासँ पहिने अनुवादक अर्थ जानि लेब आवश्यक अछि । एहिसँ ई स्पष्ट होयत जे अहाँकेँ अनुवाद लेल कोसभ करबाक अछि । संस्कृत शब्दकोशमे 'अनुवाद'केँ पुनरावृत्ति कहल गेल अछि, जकर अर्थ होइत अछि फेरसँ कहब । मुदा, पुनरावृत्ति एक भाषासँ दोसर भाषामे नहि होइछ । आइ अनुवादक जे अर्थ प्रचलित अछि से एक भाषाक मूल रचनाकेँ दोसर भाषामे राखब थिक । अंग्रेजी भाषामे अनुवादकेँ 'ट्रांसलेशन' कहल जाइछ । एतऽ अनुवाद अथवा ट्रांसलेशनकेँ सहज रूपमे एना परिभाषित कयल जा सकैछ– एक भाषामे प्रकट कयल गेल भाव एवं विचारकेँ यथावत दोसर भाषामे प्रस्तुत करबे अनुवाद थिक ।

उपर्युक्त परिभाषासँ एतबा स्पष्ट भऽ गेल जे अनुवाद प्रक्रियामे कहलेकेँ पुनः कहबापर जोर देल जाइत अछि । सूत्ररूपमे एकरा एना कहि सकैत छी– 'कहलेकेँ फेरसँ कहब' । एहिमे 'कहल' आ 'फेरसँ कहब'क महत्त्व एक रङ अछि । एकरा अन्तर्गत 'कहल'केँ पुनः 'कहल जाय' ई आवश्यक अछि । अर्थात् मूल लेखक जे लिखलनि, वैह अनुवादककेँ दोसर भाषामे कहबाक छनि । तेँ 'कहल' केँ बुझब आ बुझिकऽ प्रस्तुत करब अनुवादकक पहिल कर्त्तव्य होइत अछि । 'कहल'मे दुइ पक्ष महत्त्वपूर्ण होइछ । (1) विषय (2) भाषा । 'कथ्य'केँ नीक जकाँ बुझबा लेल अनुवादककेँ विषय आ भाषा दुनूक पर्याप्त ज्ञान होयबाक चाही, किएक तँ जखन अहाँ कहल गेल विषय आ विषयकेँ अनूदित करबाक रीतिकेँ गंभीरतासँ आत्मसात कऽ लेब, तखनहि अपन भाषामे तथ्यकेँ राखि सकैत छी । एहिसँ ई तँ स्पष्ट भऽ गेल जे मूल रचनाक भाव, विचार आ संवादकेँ बिनु घटौने-बढ़ौने ओहि प्रभावक अनुरूप कहब अनुवादकक कर्त्तव्य होइत अछि । ई अनुवादक पहिल आ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त थिक– शेष सभ सिद्धान्त एहीसँ सम्बन्धित अछि ।

अनुवादमे दुइ भिन्न भाषाक अस्तित्व होइत अछि–एक 'स्रोत भाषा' आ दोसर 'लक्ष्य भाषा' । 'स्रोत भाषा'सँ तात्पर्य ओहि मूल भाषासँ अछि जकर अनुवाद कयल जाइछ तथा जाहिमे अनुवाद होइत अछि ओ 'लक्ष्य भाषा' थिक । तेँ गृहीत विषयक संगहि स्रोत एवं लक्ष्य भाषाक स्वरूप ओ ओकर प्रकृतिक समुचित ज्ञान अनुवादक लेल आवश्यक अछि ।

1) अनुवादककरा कहब ? उत्तर बुझाकऽ लिखू ।

....

....

....

....

....

2) निम्न कथनमे कोन शुद्ध आ कोन अशुद्ध अछि ? शुद्ध कथनक सोझाँ (सही-✓)आ अशुद्ध कथनक सोझाँ (गलत-✗)चेन्ह लगाउ ।

क) जाहि भाषासँ अनुवाद होइछ ओकरा लक्ष्य भाषा कहल जाइछ । ( )

ख) जाहि भाषामे अनुवाद होइछ ओ स्रोत भाषा थिक । ( )

ग) अनुवादकक हेतु दुनू भाषाक ज्ञान अपेक्षित नहि । ( )

घ) अनुवाद लेल विषय आ मूल भाषाक ज्ञान अनिवार्य । ( )

3) निम्न विकल्पमेसँ ठीक विकल्प चुनि खाली स्थानकेँ भरू । 'कहलकेँ पुनः कहब... क अनिवार्य अंग थिक । (समाचार लेखन, अनुवाद, कविता, कथा)

4) स्रोत भाषा आ लक्ष्य भाषाक तात्पर्यकेँ स्पष्ट करू ।

....

....

....

....

....

11.3 अनुवाद-प्रक्रिया (1) : अर्थग्रहण

अनुवादक सरल आ सहज परिचय एखन अहाँ प्राप्त कयलहुँ । एहि क्रममे ईहो पढ़लहुँ जे मूल भाषा आ स्रोत भाषामे निहित विचारकेँ आत्मसात करब आवश्यक अछि । एकरा बिना अनुवाद संभव नहि होइछ । अनुवाद-प्रक्रियाकेँ बुझबासँ पूर्व ई बुझि लेबाक अछि जे जाहि भाषासँ अनुवाद कयल जायत ओ 'स्रोत भाषा' (हमर एहि पाठक संदर्भमे अंग्रेजी) आ जाहि भाषामे अनुवाद होयत ओ 'लक्ष्य भाषा' (एहि पाठक संदर्भमे मैथिली) कहल जाइत अछि ।

अनुवाद-प्रक्रियाक दुइ चरण होइछ– प्रथम 'अर्थग्रहण' अथवा मूल रचनाक अर्थ बुझब आ दोसर चरण होइत अछि 'संम्प्रेषण' अथवा आन गोटाकेँ अपन भाषामे बैह कहब जे मूलसँ अर्थग्रहण कयने छी । संक्षेपमे 'बूझब' आओर 'कहब' दुइ गोट चरण अछि । 'बूझब' प्रत्येक पाठकक लेल आवश्यक एहि लेल अछि जे जाधरि ओ बूझत नहि ता धरि अपन भाषामे कहबाक हेतु समर्थ नहि भऽ सकैछ । ओना, बुझबाक प्रयास सभ पाठक करैत अछि । बानगी लेल उपन्यास अथवा कथा पढ़ैत काल जँ बीच-बीचमे अहाँ एकाध शब्दकेँ नहियो बुझि पबैत

छी तँ ओहिसँ अहाँक आनन्दमे विशेष बाधा नहि पड़त । कारण, कथाक प्रवाह भंग नहि होइछ । एतऽ 'कथा' प्रमुख लक्ष्य थिक, ओतऽ एकाध शब्द महत्त्वहीन भऽ जाइछ । कथा-रसमे एकाध शब्दकेँ नहियो बुझलासँ ओतेक अन्तर नहि पड़ैत अछि । मुदा 'अनुवादक' कोनो शब्दकेँ छोड़ि आगाँ नहि बढ़ि सकैत छथि, कारण जेना हम अहाँकेँ कहलहुँ जे अनुवादक एहिमे किछुओ घटयबा-बढ़यबाक अधिकारसँ वंचित रहैछ ।

11.3.1 शब्दबोध

अर्थग्रहण लेल अहाँकेँ चाही जे पहिने सामग्रीकेँ खाहे ओ साहित्यिक हो अथवा असाहित्यिक-जकर अनुवाद होयबाक अछि, तकरा नीके-नाँ बेर-बेर पढ़ि ली । पढ़ैत-पढ़ैत अहाँकेँ ओहि रचनामे किछु एहनो शब्द भेटत जकर माने अहाँ नहि जनैत होइ । एहना स्थितिमे अर्थज्ञान लेल अहाँ लग एकटा नीक शब्दकोश होयबाक चाही, जकर मदतिसँ रचनाक भाव स्पष्ट भऽ जाय । तात्पर्य जे जा धरि सभ शब्दक अर्थकेँ नहि बुझि सकब, तावत धरि समग्र रचनाकेँ नहि जानि सकब ।

शब्दक अर्थ एके टा नहि होइछ, कतोक भऽ सकैछ, ताहिमे उपयुक्त अर्थ समग्र प्रसंगक संदर्भमे अहाँकेँ बुझऽ पड़त । बानगीक संग एतऽ किछु बातकेँ स्पष्ट करऽ चाहब । यथा-अंग्रेजीक May अत्यंत सरल शब्द थिक । एहि सरल शब्दक प्रयोग करैत दुइ गोट वाक्य अहाँक समक्ष अछि- एकटा मित्रक I may go to Lucknow tonight' आ दोसर एक अफसरक जे अपन मातहतकेँ डँटैत कहैत अछि-'You may go now' एहि दुनू वाक्यमे 'May'क प्रयोगकेँ नीक जकाँ जँ नहि बुझल जाय तँ अर्थ कदापि स्पष्ट नहि भऽ सकत । पहिल वाक्यमे May 'भरिसक' अथवा 'भऽ सकैछ'क भाव दैत अछि, जाहिमे अनिश्चितता अछि- 'भरिसक आइ हम लखनउ चल जाइ' जाहिमे 'नहि जयबाक मन' अथवा 'नहि जयबाक पलखति' निहित अछि ।

मुदा,अफसर 'You may go now' मे 'आब तोँ भागह' अथवा 'आब तोँ निकलह एतऽसँ' क भाव निहित अछि । एहिठाम अफसरक तामसो प्रकट होइत अछि ।

एकटा आओर बानगी- My father is under the treatment of Dr. Sharma;

His treatment of the subject is onesided ;

Their treatment of their guest is commendable.

स्पष्ट अछि, एहि तीनू वाक्यमे 'Treatment' शब्दक फराक-फराक अर्थ अछि आ जा धरि अहाँ प्रसंगानुरूप ई नहि ज्ञात कऽ लेब जे एकर फराक-फराक की अर्थ थिक, ताधरि पूरा वाक्यक अर्थ बुझबामे नहि आओत । एहन स्थितिमे अहाँ सफल अनुवाद नहि कऽ पायब ।

11.3.2 वाक्यबोध

शब्दकेँ प्रसंगानुकूल कोशक मदतिसँ अथवा बिनु कोशक नीक जकाँ बुझि लेलाक पश्चातहिँ 'वाक्य'केँ बुझबाक प्रयास करू । कारण, वाक्यहिसँ भाषा बनैछ । अर्थो, की तँ एक वाक्यमे अथवा एकसँ बेसी वाक्यमे स्पष्ट होइत अछि । तेँ शब्दानुरूप वाक्यादिमे अर्थक मौलिकताकेँ बुझबाक प्रयास वाक्यक संदर्भमे करबाक चाही । एहि आधारपर यावत अहाँ वाक्यमे प्रयुक्त शब्दसभक सार्थकताकेँ नहि बुझि लेब आ पूर्ण भेल वाक्य अपन सम्पूर्ण अर्थवत्ताक संग अहाँक बुझबामे नहि आओत ताधरि शब्दक फराक-फराक अर्थ कोशसँ जानि लेबे समस्याक समाधान नहि थिक । वाक्यमे ओहि शब्दार्थसभक सार्थकताकेँ बुझबो आवश्यक अछि । वाक्यमे शब्दक क्रमो महत्त्व रखैत अछि । कखनहुँ काल वाक्यकेँ कतोक बेर पढ़लापर अर्थ स्पष्ट होइछ । जँ वाक्यक अर्थ स्पष्ट नहि भेल तँ फराक-फराक शब्दक अर्थक ज्ञानोसँ कोनो

लाभ नहि होइत अछि । तेँ ध्यातव्य जे जँ अहाँ वाक्यक आशय नीक जकाँ नहि बुझि लैत छी तँ अनुवाद करब असम्भव अछि । शब्दक स्थानपर शब्दे राखि देलासँ अनुवाद नहि होइत अछि । जँ एहन होइत तँ सभक अनुवाद एके रङ भऽ जाइत आ सभकेओ 'अनुवादक' बनि जइतथि । सफल ओ सार्थक अनुवाद लेल स्रोत भाषा ओ लक्ष्य भाषा– दुनूक वाक्यक बनावटि आ ओकर प्रकृतिक समुचित ज्ञान अनुवादकक हेतु अनिवार्य होइत अछि । तखनहि दोष रहित अनुवाद संभव अछि ।

11.3.3 रचनाबोध

कोनो शब्दक स्पष्ट अर्थ जानब अथवा बुझब अनुवादमे अनिवार्य होइछ । मुदा शब्दसभक फराक-फराक अर्थक कोनो महत्त्व नहि होइत अछि । शब्दक अर्थ तँ वाक्य बनलाक पश्चातहिँ सार्थक होइछ । कारण, वाक्यक सभ शब्द एक संग मिलिए कऽ अर्थ दैत अछि । तेँ अहाँकेँ अंततः 'रचना'क अनुवाद करबाक अछि, शब्द वा वाक्यक नहि । अतः अनुवादककेँ अनूदित होबऽवला रचनाक पर्याप्त ज्ञान होयबाक चाही । एना नहि भेलासँ मूल लेखक जे किछु कहऽ चाहैत छथि, अनुवादक ओहिसँ भिन्न ओकर दोसर आशय बहार कऽ लेताह । विमर्शतः ग्रह कहल जा सकैछ जे अनुवादककेँ समग्र रचनाक आशयक ज्ञान होयबाक चाही आ ई तखनहि संभव भऽ सकैछ जखन ओ ओहि विषयक ज्ञाता होथि । एतावता विषयक समुचित ज्ञान रचनाक बोध लेल परमावश्यक अछि ।

एहि तरहेँ अनुवादक पहिल प्रक्रिया– अर्थग्रहणपर विचार करैत काल अहाँक सोझाँ तीन गोट तथ्य आयल–

1) शब्दक सम्यक ज्ञान,

2) शब्दसभक एहन प्रयोग जाहिसँ वाक्यक उचित अर्थ बहरा सकय, आ

3) रचना ओ विषयक ठीक-ठीक ज्ञान ।

जखन ई तीनू तत्त्व एक-दोसरसँ मिलैत अछि, तखन अनुवादक मूलभाषामे निहित विचारकेँ ठीक-ठीक बुझि पबैत अछि आ शुद्ध रूपमे अर्थ ग्रहण कऽ पबैत अछि ।

बोध प्रश्न 2

i) निम्नांकितमेसँ कोन पक्ष 'अर्थग्रहण' लेल अपेक्षित नहि अछि ? (अशुद्ध विकल्पक सोझाँ (✗) ई चेन्ह लगाउ)

  क) शब्दबोध

  ख) तर्कबोध

  ग) रचनाबोध

  घ) वाक्यबोध

ii) अनुवाद करबासँ पूर्व अनुवादकसँ कोन प्रकारक अपेक्षा राखल जा सकैछ ? चारि पाँतीमे उत्तर दियऽ ।

....

....

....

....

....

11.4 अनुवादक प्रक्रिया (2) : सम्प्रेषण

जेना हम पहिनहुँ स्पष्ट कयने रही जे 'सम्प्रेषण' अनुवादक दोसर महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया थिक । एकर प्रक्रियागत विशेषता थिक आन भाषाक कथ्यकें अपन भाषामे पुनरावृत्ति करब ।

कोनो साकांक्ष पाठक अथवा अनुवादक दुनू लेल मूल पाठकें गंभीरतासँ पढ़ब, बुझब आ ओकर सूक्ष्मसँ सूक्ष्म तथ्यकें आत्मसात करब आवश्यक अछि । पाठक तँ ओतबहि पढ़िकऽ संतुष्ट ओ निश्चिन्त भऽ जाइत अछि, मुदा अनुवादककें ओहि बातक पुनरावृत्ति करऽ पड़ैत छनि । जँ लऽकऽ अनुवादककें बुझल वा पढ़ल तथ्यकें अपना भाषामे कहबाक होइत छनि, एतऽ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे ओ मूल भाषामे कहल तथ्यकें कोन सीमा धरि बुझि सकलाह । वास्तवमे एहि दोसर चरण– संप्रेषणमे ई ज्ञात होइछ जे ओ पहिल चरणमे कोन सीमा धरि सफल वा असफल रहलाह । एतऽ जँ ओ कुशलताक परिचय देलनि तँ अपन पाठकक मनपर वैह आ ओहिना प्रभाव स्थापित करबामे सफल भऽ सकैत छथि, जेना मूल लेखकक कृति पाठककें आकर्षित कयने छल होयत । अत: ओ सभ तरहें 'समतुल्यता'क प्रयत्न करैत छथि । 'समतुल्यता'क अर्थ अछि– मूल भाषामे प्रयुक्त समान अर्थवला शब्दकें 'लक्ष्य भाषा'मे ताकब ।

11.4.1 शब्दक समतुल्यताक सिद्धान्त

'समतुल्यता' सभसँ पहिने शब्दक स्तरपर सिद्ध करऽ पड़ैत अछि । जेना कि अहाँ पढ़ने छी जे अंग्रेजी वाक्यक प्रत्येक शब्दकें बुझैत शब्दकोशक मदतिसँ ओकरा लेल 'प्रतिशब्द' अर्थात् एहने अर्थ ध्वनित होबऽवला अपन भाषाक शब्द ताकऽ पड़त । एहिमे दुइ प्रकारक अड़चन विशेष रूपें अबैत अछि– एक तँ ई जे जँ शब्दकोशक सम्पर्क करब तँ ओहिमे अहाँकें एक शब्दक कतोक पर्यायवाची भेटत । एहिमेसँ एक गोट समीचीन शब्दक निर्वाचने बुद्धिमानीक परिचायक थिक । ओना, एक शब्दक प्रसंगक अनुरूप फराक-फराक अर्थ भऽ सकैछ, मुदा एक प्रसंगमे जे ओकर विशिष्ट अर्थ होयत, ओहने अर्थ प्रदान करऽवला शब्दक चयन अहाँ करी– एहिमे सम्पूर्ण प्रसंगक संदर्भमे शब्दक आन्तरिक ज्ञान अपेक्षित अछि । ई सभ तँ भाषाक ज्ञान आ अभ्यासहिसँ संभव अछि । अहाँकें पूर्वमे एकटा बानगी देने रही– Treatment शब्दक । पहिल वाक्यमे एकर प्रतिशब्द (पर्यायवाची शब्द) 'चिकित्सा', दोसरमे 'प्रतिपादन' आ तेसरमे 'व्यवहार' होयत । एतऽ कोन शब्दक प्रयोग संदर्भक अनुकूल होयत– एकर ठीक-ठीक ज्ञान अनुवादकक हेतु परमावश्यक अछि ।

शब्दक अनुवादनमे एक गोट आओर कठिनता अबैछ । एकर एक कारण ई अछि जे एक भाषामे प्रयुक्त शब्दक सटीक पर्याय दोसर भाषामे नहि भेटैत अछि । एहन स्थितिमे ई आवश्यक अछि जे हम समान अर्थक शब्दमेसँ प्रसंगक अनुरूप सभसँ बेसी सटीक शब्दक चयन करी, अन्यथा वाक्यक समुचित अर्थ व्यक्त नहि भऽ सकत । बानगीक लेल अंग्रेजीक तीन गोट शब्द द्रष्टव्य थिक– Church, Cathedral, Chapel– एकरा लेल 'गिरजाघर' 'महामंदिर' आ ' प्रार्थनागृह' शब्द उपलब्ध अछि । एतऽ महामंदिर आओर प्रार्थनागृह कहलासँ Cathedral एवं Chapel क बोध नहि भऽ सकैछ । 'कैथीड्रल' मूल गिरजाघर कहबैत अछि, विशप जकर मुख्य होइत छथि । विशपक अधीन आन-आन गिरजाघर अबैछ । चेपल एक गोट छोट सन प्रार्थनागृह होइत अछि, जे मूल गिरजाघर अथवा कैथीड्रलक अन्तर्गत स्थित होइत अछि । स्कूल, अस्पताल आदिमे सेहो 'चेपल' भऽ सकैछ, जतऽ लोक व्यक्तिगत रूपसँ प्रार्थना कऽ सकय । एकर एकेटा समाधान अछि जे उचित शब्द (ठीक अर्थकें बोध करऽवला शब्द) नहि उपलब्ध होयबाक स्थितिमे ओहि शब्दसँ सम्यक अर्थकें निर्दिष्ट करऽवला शब्दक प्रयोग कयल जाय । एकटा विकल्प आर अछि जे 'अथवा'क प्रयोग करैत वाक्यकें अभिप्रायसंगत

बनाओल जा सकैछ, जेना Cathedral अथवा महामंदिर, Chapel अथवा प्रार्थनागृह । लक्ष्य भाषामे कतिपय शब्द रहितो अनुवादककेँ सतर्कता आ क्षमताक संग ओहिमेसँ एकटाक चयन करऽ पड़ैत छनि । एकहि शब्दक कतोक अर्थ होइछ अथवा भिन्न-भिन्न प्रसंगमे ओकर भिन्न-भिन्न अर्थ होइत अछि । मानि लियऽ जेना एक गोट वाक्य अछि : The killings of innocent people in Panjab must be condemned'

शब्दकोशमे 'Innocent' शब्द 'निर्दोष, निष्पाप, निरपराध, निष्कपट, अबोध, निरीह, सोझ, अहानिकारक' आदि समानार्थक शब्दक उल्लेख अछि आओर 'Condemned' क 'निंदा करब, ग्रहण करब, दोषी बनायब, अपराधित करब, दण्डाज्ञा देब, दण्ड देब, अहदी कहब, निराकरण करब, कब्जा कऽ लेब, रोग असाध्यक संकेत देब, आदि अछि । आब उपर्युक्त वाक्यमे दुनू शब्द लेल कोन अर्थ सभसँ बेसी सटीक बैसत वा समुचित होयत, ई अहाँ अपन ज्ञानक अनुरूप निर्णय करब । एही लेल कहल जाइत अछि जे विलक्षण अनुवादक अधलाहो शब्दकोशक सदुपयोग कऽ लैत अछि आ अधलाह अनुवादक नीको शब्दकोशक दुरुपयोग कऽ बैसैत अछि । फलतः अनुवादक अर्थक अनर्थ कऽ दैत अछि । जँ अहाँ एहन अनुवाद करी– 'सोझ लोकक हत्यादिकेँ कब्जा कऽ लेबाक चाही' अथवा 'निष्कपट लोकक हत्याक निराकरण होयबाक चाही' तँ एकर कोनो अर्थ नहि बहरायत– अर्थक अनर्थो भऽ सकैत अछि । एहि वाक्यमे 'Innocent' लेल 'निरपराध' शब्दक प्रयोग करऽ पड़त आओर 'Condemned' क लेल निन्दा अथवा भर्त्सनाक, तखनहि वाक्य अपन अभीष्टक अर्थ देत । 'पंजाबमे निरपराध लोकक हत्याक निन्दा कयल जयबाक चाही' ।

अतः ध्यान रखबाक चाही जे उपलब्ध समानार्थकमेसँ जे सभसँ उपयुक्त अर्थ-क्षमता द्योतित करय, ओहने शब्दकेँ अनुवाद लेल चयन करबाक चाही ।

11.4.2 श्लिष्ट शब्द

श्लिष्टक अर्थ थिक 'सटल' । अर्थात् श्लिष्ट शब्दक माने भेल 'ओहन शब्द जाहिमे एकसँ बेसी अर्थ सटल रहैछ' । कतहु-कतहु लेखक एक शब्दक प्रयोग एक संग एकसँ बेसी अर्थमे करैत छथि तँ एहन स्थितिमे अनुवादकक हेतु अनुवादन कार्य दुरूह भऽ जाइछ । उदाहरण– If he drinks too much he will pay for it later' एतऽ 'Pay' शब्दक अर्थ 'भुगतान करब' अथवा 'कष्ट भोगब' अभीष्ट अछि । एहिठाम अनुवाद कालमे अनुवादककेँ साकांक्ष रहबाक चाही जाहिसँ प्रयुक्त भेल श्लिष्ट शब्दक ठीक-ठीक अर्थ अभिव्यंजित भऽ सकय । मुदा, एहन पर्याय आनहु भाषामे उपलब्ध भऽ सकत से संभव नहियोँ भऽ सकैछ । तखन अनुवादककेँ व्याख्याक मदति लैत एकसँ बेसी शब्दक माध्यमे वक्ताक भावकेँ स्पष्ट करऽ पड़ैत छनि । मुदा एहि प्रक्रियासँ बचले रहब नीक थिक । तथापि, व्याख्या अथवा स्पष्टीकरणक बेगर्त्ता पड़बे करय तँ एकरा लेल टिप्पणीक मदति लेब बेसी उपयुक्त होयत ।

एहि 'शब्द-समानार्थकताक सिद्धान्तकेँ हम 'शब्द-प्रतिशब्द'क सिद्धान्तो कहि सकैत छी ।

11.4.3 वाक्यक समानार्थकताक सिद्धान्त

अंग्रेजीक कोनो रचनामे प्रयुक्त शब्दकेँ अनुवादक कतेक नीक जकाँ बुझि सकल छथि आ ओहि शब्द सभकेँ अपन भाषामे समानार्थक चयन कोना कयलनि अछि, ओकर सटीक प्रयोगक बानगी अनूदित वाक्येसँ होइछ । अनुवादकक क्षमता तँ अनुवाद कयल गेल अंशक सार्थकते व्यक्त करैत अछि । एतबे नहि, ओ जाहि वाक्यकेँ बनौलनि ओ व्याकरणक दृष्टिसँ अनुकूल हो आ ओहिमे मूल अंग्रेजी शब्दक अनुकूल समानार्थकक चयन कयल गेल हो । ईहो आवश्यक अछि जे वाक्यक वैह प्रभाव पड़य जे मूल भाषाक पड़ैत अछि । फलतः पूरा वाक्यक अर्थक सम्प्रेषण लेल अनुवादककेँ कखनहुँ चयन कयल गेल शब्दमे परिवर्तनक

बेगर्त्ता पड़ि सकैत छनि, कखनहुँ ओहिमे जोड़बा वा घटयबाक प्रयोजन पड़ि सकैत छनि, कखनहुँ काल तँ कतोक वाक्यकेँ एके वाक्यमे उतारऽ पड़ि सकैत छनि। एहिमे अनूदित वाक्यक जे महत्त्व अछि ताहिसँ बेसी अनुवादकक निष्ठा ओहिमे निहित अर्थ वा मन्तव्यमे होइत अछि । एहि सम्बन्धमे हम 'वाक्यबोध' (11.3.2)क अन्तर्गत संक्षिप्त संकेत देने छी, मुदा एतऽ किछु विस्तारमे जयबाक प्रयोजन अछि ।

स्मरणीय थिक जे दुइ भाषाक वाक्य-रचना एक रङ नहि होइछ । ओहिमे शब्दसभक क्रम समान नहि होइत अछि । तँ अशुद्ध वाक्य-प्रयोगसँ बचबा लेल मूल भाषाक शब्दक्रमक आँखि मूनि अनुसरण करब उचित नहि थिक । एहि लेल प्रयास ई करबाक चाही जे वाक्यक अर्थकेँ बुझल जाय आ ओकरा छोट-छोट वाक्यमे अभिव्यक्त कयल जाय । एहिसँ वाक्य सुगठित बनत । नमहर वाक्यमे अर्थ छिड़िअयबाक डर रहैत अछि । तँ छिड़िआयल वाक्य प्रभावहीन तँ होयबे करत, सङहि अशुद्ध सेहो होयत । असलमे सभसँ पैघ बात तँ ई होइत अछि जे अहाँक वाक्यमे अपन भाषाक वाक्य-रचनाक प्रकृतिक सेहो रक्षा हो आ अर्थो पूर्णरूपेण स्पष्ट होइत रहय । एहि प्रकारेँ लक्ष्य भाषाक सहजता बनल रहत । सहजताक यैह सिद्धान्त अनुवादक-लेल प्रकाश-स्तम्भ होइछ ।

किछु बानगी :

अंग्रेजीक सोझ-साझ एक गोट वाक्य अछि जाहिमे तीन गोट शब्द प्रयुक्त भेल अछि– 'God is love'। जँ एकर अनुवाद 'ईश्वर प्रेम थिक' करी तँ दुइ गोट बातपर ध्यान देबाक होयत– 'थिक'क जे स्थान मूल वाक्यमे अछि, अनुवादमे नहि । दोसर 'ईश्वर प्रेम थिक' वाक्य स्वयंमे अदहा-छिदहा आ असंगत लगैत अछि । एहिमे अपन भाषाक सहज प्रकृति खण्डित भऽ गेल अछि, से लगैत अछि । तेँ एकर वाक्य-निर्माणमे जाधरि अपना दिससँ किछु जोड़ब नहि ताधरि वाक्य ओहिना उटपटांग लगैत रहत । अतएव विकल्प रूपमे 'प्रेम ईश्वरेक पर्याय थिक' अथवा 'ईश्वर प्रेम-रूप थिकाह' कहल जा सकैछ । उपर्युक्त वाक्यमे किछु-ने-किछु जोड़ल गेल अछि, से सहजहि अहाँ देखि सकैत छी ।

एकटा आरो बानगी देखल जा सकैछ : The existence of quorum is a must for a formal meeting' एहि वाक्यक– 'औपचारिक बैसाड़ लेल कोरमक अस्तित्व आवश्यक होइत अछि' । एक तँ एतऽ 'कोरमक अस्तित्व'मे असंगति अछि, जे अपन भाषाक प्रयोगक संदर्भमे प्रकृतिगत मेल नहि खाइत अछि । दोसर is क अपन भाषामे दुनू प्रकारक अनुवाद भेटैत अछि– 'अछि' वा 'थिक' आ 'होइत अछि'। अहाँकेँ ध्यान रखबाक अछि जे कतऽ कोन अनुवाद वांछित होयत । एकरा एना अनुवाद कयल जयबाक चाही– 'औपचारिक बैसाड़ लेल कोरम आवश्यक होइत अछि ।' एतऽ अपन भाषाक प्रकृतिक ध्यान राखऽ पड़त । अंग्रेजीक एहि वाक्य 'It was pleasent surprise to me' क रहरहाँ एना अनुवाद कऽ देल जाइछ : 'एहिमे हमरा सुखद आश्चर्य भेल' । मुदा ई अनुवाद ने तँ सटीक लगैत अछि आ ने एहिमे अनुवादक विशेषता ओ गठन अछि । तेँ एकर अनुवाद जँ एहि प्रकारेँ कयल जाय– 'एहिसँ हमरा आश्चर्यो भेल आ हर्षो' तँ नीक लागत । अनुवादमे वाक्य-रचनाक परिवर्तनक बानगी देखु–

'I shall go with you to the meeting if you come in time' सनक वाक्यक अनुवाद लोक एना करैछ– 'हम अहाँक सङे बैसकमे जायब, जँ अहाँ समयपर अयलहुँ ।' मुदा ई वाक्य-रचना अपन भाषाक प्रकृतिसँ मेल नहि खाइत अछि । एकर अनुवाद एना होयबाक चाही: 'अहाँ समयपर अयलहुँ तँ हम बैसकमे चलब ।' वाक्यमे शब्दक क्रम बदलि गेल अछि आ 'जायब' क स्थानपर 'चलब' क्रियाक प्रयोग जानि-बुझिकऽ कयल गेल अछि, कारण 'सङ जायब' मे लगैत अछि जेना अहाँ कोनो तेसर व्यक्तिक सङे गप कऽ रहल छी, जकरा सङे अहाँकेँ जयबाक अछि, ओकरहिसँ गप करबामे 'संङ चलब' प्रयोग उचित अछि ।

कखनहुँ काल लक्ष्य भाषाक प्रकृतिक ध्यान नहि राखि मूल भाषा, अर्थात् स्रोत भाषाक प्रकृतिक अनसरण कयलासँ आ वाक्यमे शब्दकेँ उचित स्थानपर नहि रखलासँ अनर्थो भऽ सकैत अछि । एकबेर रेडियोसँ एकटा सूचना प्रसारित भेलैक । भरिसक ई सन् 1950-51 ई0 क घटना थिक । पं. जवाहर लाल नेहरू तखन प्रधानमंत्री रहथि । देशक विभाजनक तुरंते सरकार अनेक समस्यासँ ग्रस्त छल । एक समस्या ओहि स्त्रीगणक छल, जकरा दुनू दिस बलात् भगाकऽ अपरहरण कयल जा रहल छलैक ।

एक साँझ संसदमे ओहि समस्याक संदर्भमे प्रधानमंत्री भाषण देलनि आ ओहि वक्तव्यपर कोनो सदस्य बयान दऽ रहल छलाह– 'Referring to Prime Minister Shri Jawahar Lal Nehru's statment regarding kidnapped women, Shri---said "---' एकर अनुवाद समाचारपत्रमे जे प्रकाशित भेल से एना छल–

''प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा भगाओल गेल स्त्रीगणक सम्बन्धमे देल गेल वक्तव्यक दृष्टान्त दैत श्री.... कहलनि...'' देखू एतऽ वाक्यमे केहन अनर्थ भेल अछि ! एहि वाक्यमे जँ थोड़-बहुत परिवर्तन करैत एना कहल जाय 'भगाओल गेल स्त्रीगणक सम्बन्धमे प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरूक वक्तव्यक प्रसंग...।' तँ वाक्य सार्थक भऽ जाइत अछि । अतः वाक्यमे शब्दक समुचित 'स्थापन'क विशेष स्थान होइछ आ ओहिसँ वाक्यमे अभिव्यक्ति-क्षमता अबैत अछि । एकरा अभावमे अर्थक अनर्थ भऽ सकैत अछि ।

11.4.4 रचनाक समानार्थकताक सिद्धान्त

अहाँ पढ़ि गेल छी जे शब्द, शब्दक क्रम, वाक्य ओ वाक्यक योजना, सभ रचनाक अनिवार्य अंग होइत अछि । वास्तवमे 'शब्द' लेल 'प्रतिशब्द'केँ ताकब आ 'वाक्य' लेल 'प्रतिवाक्य' निर्माणक प्रयत्न, 'रचना'क स्थानपर 'प्रतिरचना'क निर्माण लेल होइत अछि । कतऽ घटाओल-बढ़ाओल जाय, कतऽ कोशगत अर्थसँ भिन्न अर्थ लगाओल जाय, कतऽ शब्दक क्रममे परिवर्तन कयल जाय, कतऽ एक वाक्यकेँ तोड़ि एकसँ अधिक वाक्यक निर्माण कयल जाय आ कतऽ एकसँ बेसी वाक्यकेँ एक वाक्यमे गठित कयल जाय– ई सभ युक्ति अनायासे नहि अबैछ । एकरा लेल अनवरत श्रम आ अभ्यासक बेगरता होइत अछि ।

अनुवाद केहन भेल अछि– ई देखबा लेल अहाँकेँ चाही जे अंग्रेजीक मूल रचना अथवा अवतरणकेँ एक कात राखि पाठकक रूपमे ओकरा स्वतंत्र रचना वा अवतरण मानि पढ़ी । जँ ओहिमे भाषा आ भावधाराक प्रवाह अवरुद्ध नहि लागय तँ मानि लेबाक चाही जे अहाँ लक्ष्यभाषाक सहजताक रक्षा कऽ पौलहुँ अछि । अनुवाद एक कला थिक आ ओकर सफलता एहीमे निहित अछि जे ओ अनुवाद भैयोकऽ अनुवाद नहि लागय । पाठककेँ ई अनुभव नहि होइक जे रचना मूलतः कोन भाषामे अछि । दोसर शब्दमे, अनुवाद जँ अपना पयरपर ठाढ़ भऽ सकय तँ तकरा सफल मानबाक चाही ।

बोध प्रश्न 3

1) 'शब्दक समतुल्यताक सिद्धान्त'सँ अहाँ की बुझैत छी ? पाँच पाँतीमे उत्तर दियऽ ।

....

....

....

....

....

II) निम्नलिखित विकल्पमेसँ रिक्त स्थानकेँ भरू-

शब्दक प्रयोग करैत काल... क ध्यान रखबाक चाही । (क्लिष्टता, सहजता, प्रसंग, उच्चारण)

III) नीचाँमे अंग्रेजी भाषाक अनुवाद लेल एक पंक्ति अछि, जकरा बुझाओलो गेल अछि । अहाँ बिनु पछिला अभ्यास देखने उचित अनुवाद करू आ उत्तर कोष्ठकमे लिखू ।

The Killing of innocent peopole in Panjab must be condemned.

क) पंजाबमे निष्कपट लोकक हत्याक निराकरण होयबाक चाही ।

ख) पंजाबमे सोझ लोकक हत्याकेँ जब्त कऽ लेबाक चाही ।

ग) पंजाबमे निरपराध लोकक हत्याक निन्दा कयल जयबाक चाही ।

घ) पंजाबमे निष्पाप लोकक हत्याक निराकरण करबाक चाही । ( )

IV) एतऽ नीचाँमे अंग्रेजीक एकटा वाक्यकेँ देखू । एहि वाक्यक किछु अनुवादो देल गेल अछि । एहि अनुवादमेसँ सभसँ सटीक ओ उचित अनुवादक चयन करू ।

I shall go with you to the meeting if you come in time.

क) हम अहाँक सङे बैसकमे जायब जँ अहाँ समयपर आबि गेलहुँ ।

ख) अहाँ समयपर आबि गेलहुँ तँ हम अहाँ सङ बैसकमे चलब ।

ग) जँ अहाँ समयपर आयल रहितहुँ तँ हमहूँ अहाँक सङ बैसकमे चलितहुँ ।

घ) जँ अहाँ समयसँ नहि अयलहुँ तँ हम बैसकमे नहि जायब । ( )

11.5 अनुवाद करबाक व्यावहारिक ज्ञान

एखन धरि अहाँ अनुवादक सैद्धान्तिक बिन्दु आ विभिन्न समस्याक जनतब प्राप्त कयलहुँ अछि । सिद्धान्त कोनो काजकेँ आरंभ करबा लेल नितांत आवश्यक अछि । ओना, कहल जाइछ जे सैद्धान्तिक ज्ञानक सार्थकता तखनहि संभव अछि जखन ओकरा व्यवहारमे आनल जाय । एतऽ अहाँ अनुवाद करब सिखैत छी । जाधरि अहाँ स्वयं अनुवादक समस्यासँ जुड़ब नहि, ताधरि अहाँ अनुवाद सिखि सकब, से कठिन । अनुवाद कलाक ज्ञान प्राप्त करबाक हेतु जे प्रक्रिया एतऽ अपनाओल जा रहल अछि, ओ एहि प्रकारक अछि— पहिने एक गोट अंग्रेजीक उदाहरण देल जायत आ ओकर शुद्ध अशुद्ध अनुवाद अहाँक सोझाँ राखल जायत । अशुद्ध कतऽ अछि से अहाँकेँ कहि देल जायत । फेर अहाँकेँ एक गोट अभ्यास देल जायत । एतऽ अहाँ अनुवाद करू आ इकाइक अंतमे अभ्यासक उत्तरसँ मिलाउ । एहि प्रकारेँ अहाँ अनुवाद करबाक प्रक्रिया बुझि जायब । अहाँकेँ अनुवाद सिखबासँ पहिने हम ई मानिकऽ चलैत छी जे अहाँ अंग्रेजी पढ़िकऽ बुझि सकैत छी आ अपन भाषा अथवा आन भाषाक (जाहिमे अनुवाद करबाक अछि) नीक ज्ञान रखैत छी । जँ एना नहि अछि तँ अंग्रेजीसँ अपन वा आन भाषामे अनुवाद नहि कयल जा सकैछ ।

11.5.1 भाषाक प्रकृतिजन्य ज्ञान

अनुवाद करबा काल अनूदित भाषाक प्रकृतिक रक्षा अनुवादकक प्रथम दायित्व होइत अछि । एतऽ अंग्रेजी भाषाक दूइ गोट वाक्य उद्धृत अछि–

i) I wonder if this is true.

ii) I have two sons.

उपर्युक्त कथनक अनुवाद जँ मैथिली भाषाक प्रकृतिकेँ ध्यानमे राखि नहि कयल जाय तँ वाक्य एहन होयत–

i) हमरा आश्चर्य होयत जँ ई सत्य अछि ।

ii) हमरा लग दू पुत्र अछि ।

'If' लगाकऽ अंग्रेजीमे जे वाक्य बनैत अछि, ओकरा मैथिलीमे परिवर्तित करबा काल साकांक्ष रहबाक चाही । अनुवादककेँ एहि कालमे 'लक्ष्य भाषा'क प्रकृति (एतऽ मैथिली)क ध्यान राखब अनिवार्य अछि । जेना ऊपर देल गेल पहिल अंग्रेजी वाक्यक अनुवाद एहि प्रकारक होयत– 'हमरा एकर सत्यतामे संदेह अछि ।'

अंग्रेजीक दोसर उदाहरणमे 'have' लगाकऽ वाक्य बनाओल गेल अछि । एहि have क अनुवाद कतोक प्रकारेँ कयल जा सकैछ । जेना I have a pen हमरा लग एक गोट कलम अछि : I have to go हमरा जयबाक अछि, I have left my old job-हम अपन पुरना नौकरी छोड़ि देलहुँ, I have accepted this theory हम एहि सिद्धान्तकेँ स्वीकार कयलहुँ । ऊपरमे 'have'क जे उदाहरण देल गेल– I have two sons;एकर अनुवाद होयत– 'हमरा दूटा पुत्र छथि ।' ई अनुवाद भाषाक प्रकृतिक अनुकूल अछि ।

अभ्यास 1

आब किछु एही प्रकारक अंग्रेजीक वाक्य प्रस्तुत अछि । एकर अनुवाद अपन भाषामे करू –

क) I doubt if he will come.

ख) We wonder if he accept this.

ग) I doubt if Ram will be going.

घ) I am not sure if you can do this.

ङ) I do not think if this is a good book.

अभ्यास 2

आउ, आब have लागल किछु वाक्यक अनुवाद करी–

क) I have three doughters.

ख) I have lost my pen.

ग) I have no idea.

घ) I have passed B.A. Examination.

ङ) I have a headache.

च) I have fever.

छ) I have a pen.

ज) I have pain in my neck.

11.5.2 शब्दक उचित प्रयोग

अनुवाद करैत काल शब्दक समुचित प्रयोग आ प्रसंगक अनुवादपर विशेष रूपसँ ध्यान देबाक चाही । कारण, शब्दकोशमे एकहि शब्दक कतोक अर्थ होयबाक प्रमाण अछि । ई अहाँक भाषा-ज्ञान, विवेक ओ ज्ञानपर निर्भर अछि जे अहाँ शब्दक कोन अर्थक चयन करैत छी । जँ प्रसंग अहाँकेँ बुझबामे आबि गेल अछि तँ शुद्ध ओ उचित शब्दार्थक चयन अहाँ करबे करब । एतऽ एक गोट उदाहरणक माध्यमे ई तथ्य स्पष्ट भऽ सकैत अछि । एक शब्द अछि– 'Operation' । एहि शब्दक प्रयोग दू टा वाक्यमे कयल जा रहल अछि । एतऽ देखबाक ई अछि जे प्रसंग ओ संदर्भक अनुरूप शब्दक अर्थ कोना बदलि जाइत अछि–

i) The operation done by Doctor is successful.

ii) The police operation in that area was a failure.

अनुवादः

I) डॉक्टरकेँ 'शल्य-क्रिया'मे सफलता भेटलनि ।

II) एहि क्षेत्रमे पुलिसक 'कारवाइ' असफल रहल ।

एहि दुनू उदाहरणमे 'Operation' क अनुवाद फराक-फराक कयल गेल अछि । एकर एकमात्र कारण अछि जे संदर्भक अनुरूप शब्दक अर्थमे परिवर्तन आबि गेल अछि । अर्थात् डॉक्टरक संदर्भमे 'कारवाइ' पुलिसक संदर्भमे 'शल्य-क्रिया'क प्रयोग कयल जाय तँ कोनो अर्थ नहि बहरायत । अतः शब्दक अर्थ प्रसंगानुरूपेँ लगयबाक चाही आ प्रसंगक अनुरूपहि एकर प्रयोग करबाक चाही ।

आब अहाँ एही प्रकारक वाक्यक अनुवाद करू । अहाँक मदति लेल 'शब्द'क भिन्न-भिन्न अर्थ देल जा रहल अछि–

अभ्यास 3

क) Treatment'[1] of patient by doctor was not satisfactory.

ख) Treatment'[1] of subject by scholar was not satisfactory.

ग) Interest[2] rate of bank is very high[3]

घ) He has no interest[2] in sports.

ङ) His main aim[4] is to be an I.A.S. Officer.

च) His aim[4] was not accurate[5] so he could not win the gold medal in shooting.

1) Treatment– व्यवहार, प्रतिपादन, विवेचन, चिकित्सा, उपचार, इलाज ।
2) Interset– अधिकार, लाभ, स्वार्थ, रुचि, सूद, व्याज ।
3) High– उँच, बेसी ।
4) Aim– लक्ष्य, निशाना लगायब ।
5) Accurate– ठीक, अचूक ।

11.5.3 वाक्य-रचना

अनुवादमे वाक्य-रचनाक विशेष महत्त्व अछि । तेँ एहि लेल उचित शब्दक चयन आ लक्ष्य भाषाक प्रकृतिक अनुसरण उचित रीतिएँ करब आवश्यक अछि । मुदा, जँ वाक्य-रचना सरल नहि अछि तँ अनुवादक लक्ष्य पूर्ण नहि भऽ सकैछ । अहाँ पढ़ि चुकल छी जे 'स्रोत भाषा'क तथ्य 'लक्ष्य भाषा'मे यथावत प्रस्तुत करब अनुवादकक लक्ष्य थिक । जँ अनुवादकक वाक्य-रचना सरल ओ बुझबा योग्य नहि हो तँ 'स्रोत भाषा'क तथ्य 'लक्ष्य भाषा'मे स्पष्ट नहि भऽ सकैछ ।

ओझरायल वाक्यक सभसँ पैघ कारण नमहर वाक्यक निर्माण होइछ । अतः अनुवाद करबा काल छोट-छोट सरल वाक्य बनाओल जयबाक चाही । जँ स्रोत भाषा (अंग्रेजी)क वाक्य नमहर अछि तँ अहाँ ओहि वाक्यकेँ भिन्न-भिन्न इकाइमे वा खण्डमे विभाजित करू । अहाँ एहन-एहन छोट वाक्य बनाउ जे स्रोत भाषामे कहल तथ्य यथावत लक्ष्य भाषामे आबय । एकटा बानगी द्रष्टव्य–

" The company required large amounts of money to wage wars both in India and on the high seas and to maintain naval forces and armies and ferts and trading posts in India."

अनुवाद

''कंपनीकेँ भारत आओर बीच समुद्रमे युद्ध करबा लेल तथा अपन जल ओ स्थल सेना एवं भारतमे अपन किलासभ तथा व्यापारिक चौकीक रक्षा करबा लेल, बहुत राशिक बेगरता छल ।'' आब एही अनुवादकेँ छोट-छोट वाक्यमे तोड़िकऽ देखू– ''कंपनीकेँ भारतीय भूमिपर स्थित अपन किला आ व्यापारिक चौकी सभक रक्षा करबाक छल । अपन जल ओ थलसेनाकेँ सेहो व्यवस्थित करबाक छल । भारतक भीतर आ बीच समुद्रमे अपन हितक रक्षार्थ युद्ध करबाक छल । एहि लेल ओकरा बहुत बेसी राशिक प्रयोजन छलैक ।''

अहाँकेँ दुनू अनुवादक अध्ययन करैत काल ई अनुभव होयत जे छोट-छोट वाक्यमे कयल गेल अनुवाद सरल आ स्पष्ट बुझऽवला अपन भाषाक प्रकृतिक अनुकूल अछि । अनुवादक क्रममे जँ अहाँ वाक्य बनयबा लेल किछु शब्द अपना दिससँ जोड़ैत छी तँ ताहिसँ कोनो क्षति नहि, बशर्ते ओ स्रोत भाषामे कहल तथ्यमे ने परिवर्तन आनय अथवा ने अर्थमे कोनो व्यवधान बनय ।

अहाँकेँ एकटा अभ्यास देल जा रहल अछि, जकरा छोट-छोट वाक्यमे तोड़ि कऽ अनुवाद करू । अपन अनवादकेँ इकाइक अंतमे देल गेल बानगीक उत्तरसँ मिलान करू ।

क) Both the objectives- the monopoly[1] of trade and control over financial resources were rapidly[2] fulfilled, and beyond the imagination[3] of Directers of the East India Company when Bangal and South India rapidly came under the company's political control during the 1750s and 1760s

ख) The East India Company now aquired direct control[4] over the state revenues of the conquered areas and was in a positian to grab[5] the accumulated wealth[7] of the local rulers, noble Zamindars.

कठिन शब्दक अर्थः

1) Monopoly- एकाधिकार

2) Rapidly- शीघ्रतापूर्वक

3) Beyond the imaginatian- कल्पनातीत

4) Acquired direct control- प्रत्यक्ष अधिकार प्राप्त भऽ गेल छल ।

5) State revenues- राजस्व

6) Grab- छीनब

7) Accumulated wealth-एकत्र धन

11.5.4 अनुवादमे विभिन्न क्षेत्रक योगदान

एखन धरि अहाँ अनुवादक सामान्य समस्यासँ परिचित भऽ ओकर निदानक प्रयास कयलहुँ अछि । ई अनुवादक आधारभूत आवश्यक तत्त्व थिक । आब अहाँक परिचय विभिन्न क्षेत्रमे होइत अनुवादसँ कराओल जायत । विभिन्न क्षेत्रक तात्पर्य थिक विज्ञान, मानविकी, समाज विज्ञान, सरकारी कार्यालयसभमे होइत अनुवाद । एकर अतिरिक्त साहित्यिक अनुवाद आ स्वतंत्र अनुवाद(समाचारपत्र लेल अनवुाद)क सेहो हम परिचय करब । फराक-फराक क्षेत्रमे होइत अनुवादक प्रशिक्षण एहि इकाइक उद्देश्य नहि अछि । मुदा एकर चर्च एतऽ एहि दुआरेँ कयल जा रहल अछि जाहिसँ अहाँ एहि प्रकारक अनुवादक सामान्य बाधा-व्यवधानसँ परिचित भऽ सकी ।

विज्ञान ओ समाज विज्ञान

एहि प्रकारक अनुवादमे 'पारिभाषिक शब्दावली'केँ लऽकऽ समस्या उत्पन्न होइत अछि । पारिभाषिक शब्द एहन शब्दकेँ कहल जाइत अछि जे सामान्य व्यवहारक भाषाक शब्द नहि भऽ ज्ञानक विभिन्न क्षेत्र (जेना, रसायनशास्त्र, भौतिकी, वनस्पतिविज्ञान, समाजशास्त्र आदि)क होइछ तथा विशिष्ट ज्ञान, विज्ञान वा शास्त्रमे जकर अर्थसीमा निश्चित रहैछ । अनुवादमे पारिभाषिक शब्दक प्रयोग करैत काल एतबा ध्यान रहय जे अन्तरराष्ट्रीय शब्दावलीक प्रयोग यथावत कयल जाय । अन्तरराष्ट्रीय शब्दावलीक किछु बानगी– ग्राम, मीटर, एम्पियर, वोल्ट, वाट, कैलरी, लीटर, सल्फर, विटामिन, फॉरेनहाइट, ग्लूकोज आदि । ओना, अपन भाषामे अन्तरराष्ट्रीय शब्दसभक विकल्प ताकि लेल गेल अछि आ एहि क्रमक अनुसंधान आरंभो अछि । तथापि विकल्पक अछैतो एहन शब्दसभक प्रयोग जँ यथावत कयल जाय तँ कोनो आपत्ति नहि । ओना, विज्ञान संबंधी अनुवाद करैत काल एकर विशेष ध्यान राखल जयबाक चाही ।

एहि प्रकारेँ पारिभाषिक शब्दावलीक ज्ञान समाज विज्ञानक क्षेत्रमे सेहो अपेक्षित अछि । विज्ञानक अपेक्षा एहिमे संस्कृतनिष्ठ भारतीय भाषा (जे अपन भाषा मैथिलीमे सेहो प्रयुक्त होइछ)क पारिभाषिक शब्द बेसी प्रचलित अछि । जेना-Totalitarian Political System क लेल 'सर्वाधिकारवादी राज्य-व्यवस्था' । किछु अंग्रेजी शब्दकेँ सेहो पचयबाक प्रयास चलि रहल अछि, जेना– ब्रितानी, आँग्ल, त्रासदी, तकनीक, अकादमी आदि । एहि तरहेँ पारिभाषिक शब्दक मामिलामे तेसर मार्ग अपनाओल जयबाक चाही–

1) अन्तरराष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावलीक प्रयोग ।

2) मैथिलीमे पारिभाषिक शब्दक निर्माण तथा ओकर प्रचलनमे प्रोत्साहन ।

3) अन्तरराष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावलीक मैथिलीकरण ।

विज्ञान आ समाज विज्ञानसँ संबंधित अनुवाद आधारभूत नियमादिकेँ ध्यानमे राखि कयल जा सकैत अछि । मुदा एहि लेल अहाँकेँ विषय एवं ओहिसँ सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दक ज्ञान हो ।

साहित्यिक अनुवाद

कोनो भाषाक साहित्यकेँ आन भाषामे अनुवाद करबाक लूरि कला थिक । कला एहि लेल जे ओ अनुवाद अनुवादकसँ कल्पनाशक्ति आ सर्जनात्मक क्षमताक अपेक्षा रखैछ । एहिमे भावानुवादकेँ प्रश्रय देल जाइत अछि । अनुवादक मूल लेखकक भाव, विचार आ भाषाकेँ एहि प्रकारेँ प्रस्तुत करैछ जाहिसँ मूल रचनाक प्रवाह एवं प्रभाव अनुवादमे बनल रहय आ अनुवाद कृत्रिम नहि लगैक । एकरा लेल दुनू भाषाक ज्ञान होयब आवश्यक थिक । एकरा अतिरिक्त मूल रचनाक प्रकृति ओ प्रस्तुतिक सेहो अनुभव एवं ज्ञान अनुवादककेँ होयबाक चाही । अनुवाद करबाकाल अनुवादक मूल साहित्यिक कृतिमे प्रयुक्त लोकोक्ति ओ कहबी आदिकेँ अपन भाषामे प्रयुक्त करैछ अथवा ओकर स्थानपर लक्ष्य भाषाक लोकोक्ति ओ कहबीक एहि प्रकारेँ उपयोग करैछ जे ओ अनूदित भाषामे संदर्भयुक्त लागय । एक गोट बानगी द्रष्टव्य–

Once upon a time in the jangles of Himachal there was a motorious dacoit. Once the dacoit went to a distant big villege where he was not known and visited the house of a rich trader. The trader was celebrating the marriage of his only son with all pomp and show. He invited a large number of persons. A number of well known cooks had been engaged and the kitchen was set up behind the cowshed.

अनुवाद :

एक समयक गप थिक । हिमाचलक जंगलमे एक गोट खुंखार डकैत रहैत छल । एक बेर ओ डकैत दूरस्थ एक गोट पैघ गाममे गेल । ओतऽ ओ एक धनीक व्यवसायीक ओतऽ पहुँचल । ओ व्यवसायी खूब धूमधामसँ अपन एकमात्र पुत्रक विवाह कऽ रहल छल । ओ बहुत रास लोककेँ आमंत्रित कयने छल । जानल-मानल भनसियाकेँ बजाओल गेल छल आ गोहालीक पाछाँ भनसाघर बनाओल गेल छल ।

एहि अनुवादमे अहाँ अनुभव करब जे स्रोत भाषा (अंग्रेजी)क लक्ष्य भाषा (मैथिली)मे भावानुवाद कयल गेल अछि । अंग्रेजीक लोकोक्ति अछि Pomp and show, मैथिलीमे एकर समानान्तर शब्दक चयन कयल गेल अछि 'धूमधाम' ।

एहि तरहेँ Cooks had been engaged क अनुवाद 'भोजन बनौनिहारकेँ बजौने छल' कयल गेल अछि । जँ अहाँ engaged क अर्थ शब्दकोशमे ताकब तँ ओकर कतोक अर्थ देखब । जेना– प्रतिज्ञा करब, वचन देब, सगाइ, राखब, काजमे लगायब आदि । एहि अर्थमे 'काजमे लगायब'क उपयोग कयल जा सकैत छल, जेना 'जानल-मानल भानस कयनिहारकेँ काजमे लगाओल गेल छल' अनुवाद नीक नहि होइत । तेँ एकर भावानुवाद कयल गेल अछि– 'जानल-मानल भनसियाकेँ बजाओल गेल छल'जे मैथिलीक प्रकृति ओ प्रस्तुतिक संदर्भक अनुकूल अछि ।

मूल भाषा वा स्रोत भाषामे लेखक जे कहऽ चाहैत छथि, अनुवादक लक्ष्य भाषहुमे वैह कहैत छथि । एहिमे ओ लक्ष्य भाषाक प्रकृतिक ध्यान रखैत छथि । वस्तुतः भावानुवाद साहित्यिक अनुवादक प्राण थिक । एकरा अभावमे एहि प्रकारक अनुवाद निर्जीव भऽ जाइछ ।

अभ्यास 5

मैथिलीमे अनुवाद करू–

There was a foolish man. He was once going to his father-in-law's place. He had been directed to say 'Yes' and 'No' and was told that he should not utter any other word.

The mother-in-law on seeing him said. 'Are you all right ?'

The fool said- 'yes'

She asked-'Is my daughter well ?'

The fool said- 'No'

Is she suffering from fever ? The mother-in-law asked.

'Yes' said the fool.

'Is she not well now ?' asked the mother-in-law.

'No'- said the tool.

'Is she dead'- She asked.

' Yes'- said the fool.

स्वतंत्र अनुवाद

एहि प्रकारक अनुवाद सरल होइछ । अनुवाद कयनिहार मूल भाषामे कहल कथ्यकेँ अपना रुचिएँ प्रस्तुत कऽ सकैत छथि । मुदा एना नहि हो जे अपना रुचिएँ वा ढंगेँ कहबाक क्रममे कोनो दोसर बात कहि देल जाय, जाहिसँ मूल भाषाक कथनक अर्थ उनटि जाय । एहि संदर्भमे पं जवाहरलाल नेहरूक पूर्बमे उद्धृत व्याख्यानकेँ पुनः प्रस्तुत करैत कहऽ चाहैत छी जे वक्तव्यक प्रस्तुतिक कोना अर्थक अनर्थ भऽ गेल ।

Refering to Prime Minister Shri Jawahar Lal Nehru's statement regarding kid-napped women, Shri..... said क अनुवाद समाचारपत्रमे आयल– ''प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा भगाओल गेल स्त्रीगणक संबंधमे देल वक्तव्यक उल्लेख करैत श्री.... कहलनि....।'' एहन अशुद्ध ओ विस्फोटक अनुवाद क्षम्य नहि थिक ।

स्वतंत्र अनुवादक ई अर्थ नहि जे एहिमे अनुवाद मूलसँ फराक होइछ । एकर एतबे टा तात्पर्य अछि जे अनुवादक मूल भाषाक कथनक शब्दशः अनुसरण नहि करैछ, अपितु अपन लोकक्ति ओ शब्दक प्रयोग करैत अनुवाद करैत अछि ।

बानगी :

General Zia- Ul- Haq has ruled out formation of a civilian government in Paki-stan in the near future.

जनरल जिया-उल-हक निकट भविष्यमे पाकिस्तानमे लोकतांत्रिक सरकारक गठनकेँ अस्वीकार कऽ देलनि ।

एहि अनुवादपर ध्यान देलासँ ज्ञात होइछ जे अनुवादक अत्यंत स्वतंत्रतापूर्वक अनुवाद कयलनि अछि । Ruled out लेल 'अस्वीकार कऽ देलनि' क प्रयोग कयल अछि । Civilian

Government लेल 'लोकतांत्रिक सरकार'क प्रयोग कयल अछि । एही संदर्भमे एक प्रयास अहूँ करू--

अभ्यास : 6

India has urgued[1] the United States[2] to ' reconsider'[3] and grant Palestine Liberation Organization (PLO)[4] Chief Yasser Yrafat a visa to enable him to attend the UN General Assembly[5] Debate on Palestine.

कठिन शब्दक अर्थ:

1. अनुरोध/ आग्रह 2. संयुक्त राज्य अमेरिका 3. पुनर्विचार

4. फिलस्तीन मुक्ति संगठन 5. संयुक्त राष्ट्रक आमसभा ।

....

....

....

....

....

....

11.6 सारांश

- हम ई मानिकऽ चलैत छी जे अहाँ एहि इकाइकेँ ध्यानपूर्वक अध्ययन कयने होयब । अत: अहाँकेँ अनुवादक विविध पक्षक ज्ञान निश्चित भेल होयत ।

  आब अहाँ एहि तथ्यक व्याख्या कऽ सकैत छी जे अनुवाद एक गोट एहन प्रक्रिया थिक, जाहिमे एक भाषाक कथन दोसर भाषामे कहल जाइत अछि, मुदा एहिमे मात्र भाषाक परिवर्तन होइत अछि । विचार आ भाव यथावत राखल जाइत अछि ।

  अनुवाद करबा काल अनुवादक दुइ प्रक्रियाक सङे चलैछ । ई थिक– 'अर्थग्रहण' आ 'सम्प्रेषण' । अर्थग्रहणमे स्रोत भाषामे कहल कथनकेँ बुझबाक प्रयत्न कयल जाइछ । 'अर्थग्रहण' करैत काल शब्दगत, वाक्यगत ओ रचनागत विशेषताक ध्यान राखल जाइछ । अहाँ आब 'अर्थग्रहण' करैत मुख्य समस्यासभकेँ चिन्हि सकैत छी आ ओकरा व्यवहारमे अनबा काल ध्यानमे राखि सकैत छी । 'सम्प्रेषण' अनुवादक दोसर ओ अंतिम प्रक्रिया थिक । एहूमे अनुवादककेँ लक्ष्य भाषाक शब्दावली आ वाक्यरचनाकेँ ध्यानमे राखऽ पड़ैत छैक । एहि इकाइकेँ पढ़लाक उपरान्त अहाँ 'सम्प्रेषण'क समस्यासँ परिचित भऽ गेल छी । अनुवादक क्रममे अहाँ एहि ज्ञानक उपयोग कऽ सकैत छी ।

- सभसँ पैघ बात ई अछि जे हम अनुवादक हेतु अहाँक सुविधा लेल एक सूत्र मात्र देने छी । एकरा माध्यमे अहाँ अपन तत्परता ओ मेहनतिसँ अनुवाद-कार्य नीक जकाँ सम्पन्न कऽ सकैत छी । अनुवादक सैद्धान्तिक ज्ञानप्राप्तिक अतिरिक्त अहाँ अनुवाद 'करब' सिखलहुँ, अर्थात् अनुवादक व्यावहारिक ज्ञानहुसँ परिचित भेलहुँ । अत: अहाँकेँ एहि इकाइक माध्यमसँ अनुवादक एक समग्र विधिक सङहि एक गोट निश्चित दृष्टियो प्राप्त भऽ गेल अछि, जकरा मदतिसँ अहाँ सफल अनुवाद कऽ सकैत छी ।

11.7 बोध प्रश्न/अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न 1

i) एक भाषामे व्यक्त भाव ओ विचारकेँ दोसर भाषामे यथावत उपस्थित करब अनुवाद थिक ।

ii) क) (गलत), ख (सही), ग (गलत), घ (सही)

iii) अनुवाद

iv) जाहि मूल भाषासँ अनुवाद कयल जाइछ, ओकरा स्रोत भाषा आ जाहिमे अनूदित होइछ ओकरा लक्ष्य भाषा कहल जाइत अछि ।

बोध प्रश्न-2

i) (ख)

ii) अनुवादकार्य लेल अनुवादकसँ ई अपेक्षा रहैत अछि जे ओ मूल भाषा अथवा स्रोत भाषामे निहित विचारकेँ ठीक-ठीक ग्रहण करथि ।

बोध प्रश्न-3

1) एक शब्दक स्थानपर ओहि अर्थक अथवा ओहिसँ निकटस्थ अर्थक दोसर शब्द राखब 'शब्दक समतुल्यताक सिद्धान्त' कहबैत अछि । अनुवाद करैत काल अनुवादक स्रोत भाषामे प्रयुक्त शब्दक स्थानपर लक्ष्य भाषामे ओहि अर्थकेँ द्योतित कयनिहार दोसर शब्द रखैत अछि ।

1) **प्रसंग**

11) **देखू** 11.4.1

111)**देखू** 11.4.3

अभ्यासक उत्तर

अभ्यास-1

क) हमरा हुनक अयबामे संदेह अछि ।

ख) हमरा संदेह अछि जे ओ एकरा स्वीकार करत ।

ग) हमरा रामक अयबामे संदेह अछि ।

घ) हमरा संदेह अछि जे अहाँ ई काज कऽ सकैत छी ।

ङ) ई पोथी नीक अछि, तकर हमरा संदेह अछि ।

अभ्यास-2

क) हमरा तीन टा बेटी अछि ।

ख) हम अपन लेखनी भोतिया देलहुँ ।

ग) हमरा किछु नहि बुझल अछि ।

घ) हम बी. ए.क परीक्षामे उत्तीर्ण भेलहुँ ।

ङ) हमरा माथमे दर्द अछि । (हमर माथ दुखाइत अछि)

च) हमरा ज्वर अछि ।

छ) हमरा दर्द अछि ।

ज) हमर गर्दनि दुखाइत अछि ।

अभ्यास-3

क) डाक्टर कारनीक/रोगीक संतोषजनक चिकित्सा नहि कयलनि ।

ख) विद्वान संतोषजनक रीतिएँ प्रतिपादन नहि कयलनि ।

ग) बैंकक 'सूद-दर' बेसी अछि ।

घ) क्रीड़ामे रुचि नहि अछि ।

ङ) आइ.ए.एस. अधिकारी बनब ओकर मुख्य लक्ष्य अछि ।

च) ओकर निशान ठीक नहि छल, अतः ओ लक्ष्यबेधमे स्वर्णपदक नहि प्राप्त कऽ सकल ।

अभ्यास-4

क) व्यापारिक एकाधिकार आ वित्तीय संसाधनपर अधिकार– दूनू उद्देश्यक यथाशीघ्र पूर्ति भेल । एतऽ धरि जे 1750-69 क बीच बंगाल आ दक्षिण भारत पराजित भऽ कंपनीक राजनीतिक अधिकारमे आबि गेल । ईस्ट इंडिया कंपनीक निदेशकलोकनि एकर कल्पनो तक नहि कयने छल ।

ख) आब कम्पनीकेँ एहि अधिकृत क्षेत्रसँ राजस्व उगाही करबाक प्रत्यक्ष अधिकार प्राप्त भऽ गेल छलैक । ओ स्थानीय शासक, समान्त ओ जमीन्दारलोकनि लग एकत्रित धनकेँ हड़पबामे समर्थ भऽ गेल रहय ।

अभ्यास-5

एकबेर एक गोट मूर्ख सासुर जा रहल छल । ओकरा बुझाओल गेल छलैक जे ओ पुछल गेल सभ प्रश्नक उत्तर 'हँ' आ 'नहि'मे देअय । एकरा अतिरिक्त एको शब्द नहि बाजय ।

सासु ओकरा देखितहि पुछलनि– 'ई प्रसन्न छथि ?'

मूर्ख उत्तर देलक– 'हँ' ।

ओ फेर पुछलनि– 'हमर बेटी कुशल अछि ?'

मूर्ख बाजल– 'नहि'!

की ओकरा ज्वर छैक ? –सासु पुछलनि ।

'हँ' मूर्ख उत्तर देलक ।

'की ओ एखनहुँ स्वस्थ नहि अछि ?' –सासु पुछलनि ।

' नहि' –मूर्ख बाजल ।

'की ओ मरि गेलि ?' ओ पुछलनि ।

' हँ' –मूर्ख कहलक ।

ई सुनितहि ओकर सासु भोकारि पाड़ि कानऽ लागलि ।

अभ्यास-6

भारत संयुक्त राज्य अमेरिकासँ अनुरोध कयलक अछि जे ओ फिलीस्तीन मुक्ति संगठनक नेता यासर अराफातकेँ 'वीसा' नहि देबाक निर्णयपर पुनर्विचार करय, जाहिसँ ओ संयुक्त राष्ट्रक आमसभामे फिलीस्तीनपर संभावित बहसमे सम्मिलित भऽ सकथि ।

इकाइ 12 संवाद शैली

इकाइक रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

आधार पाठ्यक्रमक एहिसँ पाछाँक इकाइमे अहाँ अनुवादक विषयमे जनतब प्राप्त कयलहुँ । अनुवाद ककरा कही ? अनुवाद कोना करी ? ताहिसँ अवगत भेलहुँ । एहि इकाइक उद्देश्य अछि अहाँकेँ मैथिली भाषामे संवाद, अर्थात् गप-सपक प्रकृतिसँ परिचय करायब, संगहि संवाद कोना लिखल जाय, से बुझयबाक प्रयास करब । एकरा पढ़ि आ बुझि लेलाक बाद अहाँ :

- लिखित भाषा आ मौखिक भाषाक अंतरकेँ जानि सकब,
- मैथिली भाषाक वाक्यक विशेषताकेँ बेकछा सकब,
- मैथिली भाषामे वार्तालाप लिखि सकब,
- वार्तालापक बहुतो विशेषताकेँ बुझा सकब ।

12.1 प्रस्तावना

तेसर खण्डक एगारहम इकाइमे अहाँ मैथिलीमे आ मैथिलीसँ अनुवाद करबाक विधिकेँ सिखलहुँ अछि । एहि इकाइमे हम अहाँकेँ मुख्यरूपेँ संवादक विशेषताकेँ बुझायब आ संवाद-लेखन सिखायब । अहाँ जनिते होयब जे भाषाक प्रयोग सामान्यतया दू रूपमे होइत अछि– लिखित एवं मौखिक । इहो जानल होयत जे भाषाक जन्म मौखिक रूपसँ भेल । लिखित रूपमे भाषाक प्रयोग चिट्ठीपत्री आदिक रूपमे भेल, मुदा व्यवस्थित तँ बहुत बादमे भेल । एतऽ हमर सम्बन्ध भाषाक मौखिक रूपसँ अछि । एतऽ हम मौखिक गप-सपमे प्रयुक्त भाषाक चर्चा करब ।

एक अथवा एकसँ अधिक लोकक बीच अपनामे कयल जायवला बातकेँ गपसप अथवा संवाद कहल जाइत अछि । गपसप वा संवादक भाषा आ पुस्तकी भाषामे बहुत अन्तर होइत अछि । लिखित भाषाक व्यवस्थित रूप होइछ । ओ व्याकरणिक दृष्टिएँ शुद्ध होइत अछि,

किन्तु संवादक भाषामे बन्धन ओतेक जटिल नहि रहैत अछि । गपक क्रममे अहाँ देखैत होयब जे एहिमे सहजता रहैत अछि एवं आनो भाषा जेना अंग्रेजी, हिन्दी आ उर्दूक शब्द मिझरायल रहैत अछि । एतऽ ई जानि लेबाक थिक जे एहि तरहेँ आन भाषाक शब्दक प्रयोगकेँ 'कोडमिक्सिंग' नामे जानल जाइत अछि । गप करबाक क्रममे जखन कखनो कोनो दोसर भाषाक शब्द अथवा वाक्यक अपन भाषाक संग संवाद-क्रममे मिलाकऽ प्रयोग होइत अछि तँ ओकरा 'कोडमिक्सिंग' कहल जाइत अछि ।

12.2 वाक्य तथा वार्तालापक विशेषता

आब अहाँ गपसप वा संवादक विषयमे जानि गेल होयब । आपसी गपसपकेँ संवाद कहैत छी, से बुझि गेल होयब । आब ई देखब जे संवादक भाषामे वाक्य-प्रयोग कोना कयल जाइत अछि ?

12.2.1 वाक्य

भाषामे वाक्यक प्रयोग एक निश्चित अर्थमे होइत अछि । एक वाक्यमे आयल शब्दसभकेँ मिलौलासँ एक निश्चित अर्थ स्पष्ट होइत अछि । जेना देखू– 'मुनचुन भोरे उठि स्नान कयलनि ।'

एहि वाक्यसँ मुनचुनक क्रिया-कलापक सूचना भेटैत अछि ।

वाक्य बनैत अछि शब्दसँ । शब्दसभक अपन-अपन अर्थ वाक्यकेँ पूर्ण अर्थ प्रदान करैत अछि । मुदा शब्द समूहक ढेरी लगा देलासँ, आठ-दस-बारह शब्दकेँ एकट्ठा कऽ देलासँ ने वाक्य बनत आ ने वाक्यक सार्थकता सिद्ध भऽ सकत । जेना– कटहर चाक श्याम साँझ परात उघारी । एहि छौ शब्दसँ कोनो सुनिश्चित अर्थ ध्वनित नहि होइत अछि । एकर अभिप्राय ई जे वाक्यक प्रयोगमे आबऽवला शब्द एक वा कोनो खास क्रममे एक-दोसरसँ जोड़ल होयबाक चाही, जाहिसँ ओकर पूर्ण अर्थ स्पष्ट रूपेँ बहराइत होअय । कारण, शब्द थिक वाक्यक कड़ी जकरा वाक्यांश कहल जाइत अछि । कोनो वाक्यमे अर्थ स्पष्ट करबा लेल वाक्यमे कर्त्ताक होयब आवश्यक अछि तथा ओकर क्रिया-व्यापारक उल्लेख होयब सेहो आवश्यक । एकरा कर्त्ता आ क्रियाक वाक्यांश कहल जाइछ । एक वाक्यमे कमसँ कम दू वाक्यांश रहैत अछि । पैघ वाक्यमे दूसँ बेसियो रहि सकैत अछि । वाक्यक गठन लेल निम्न ग्राफकेँ देखू–



ऊपर चर्चा कयल गेल अछि जे एक वाक्यमे दूसँ अधिको वाक्यांश भऽ सकैत अछि । वाक्यांशक संख्या भिन्न-भिन्न प्रकारक वाक्य लेल फराक-फराक होयत । आब हम मैथिलीक किछु प्रमुख वाक्य आ ओकर प्रकारक परिचय देब, जाहिमे अनिवार्य वाक्यांशक उल्लेख भेल अछि ।

I) अकर्मक वाक्य : मनोज सुतलाह ।

मनोज	सुतलाह ।
कर्त्ता	क्रिया

II) सकर्मक वाक्य : श्याम पढ़ि रहल अछि ।

श्याम	पढ़ि	रहल	अछि ।
कर्त्ता	कर्म	क्रिया	

III) गंतव्यसूचक वाक्य : माला कार्यालय गेलीह ।

माला	कार्यालय	गेलीह ।
कर्त्ता	गंतव्य	क्रिया

IV) द्विकर्मक वाक्य :

हम	ओकरा	रोटी	देलिऐक ।
कर्त्ता	प्राप्तकर्त्ता	कर्म	क्रिया

V) पूरक वाक्य :

हमरा	ज्वर	अछि ।
कर्त्ता	पूरक	क्रिया

VI) कर्मपूरक वाक्य :

हम	तोरा	शिक्षक	बनौलहुँ ।
कर्त्ता	कर्म	कर्मपूरक	क्रिया

ईसभ भेल प्रमुख वाक्यक प्रकार । एहन बहुतो अन्य वाक्य अछि जकरा व्याकरणक पोथीमे देखि सकैत छी ।

ऊपर देल गेल वाक्यमे प्रयुक्त वाक्यांश एहि वाक्य लेल अनिवार्य घटक अछि । साधारणतया आन-आन सूचना लेल कतेको ऐच्छिक वाक्यांशक सेहो प्रयोग कयल जाइत अछि । आगाँ हम किछु ऐच्छिक वाक्यांशक उल्लेख कऽ रहल छी :

ऐच्छिक वाक्यांश

- स्थान वाचक — घरमे, खिड़कीपर, टाटपर ।
- समय वाचक — बेरूपहर, ठीक तीन बजे ।
- करण वाचक — कुरहरिसँ ।
- प्रयोजन वाचक — रमणजी लेल ।

एहिना ऐच्छिक वाक्यांश विभिन्न प्रकारक भऽ सकैत अछि जे सामान्य वाक्यरचनामे अतिरिक्त अर्थ लेल जोड़ल जाइत अछि । एके वाक्यमे दू प्रकारक अर्थ भऽ सकैत अछि, जे पूर्ण अर्थ दैत भेटत ।

वाक्यक्रम

प्रत्येक वाक्यक एक सहज क्रम होइत अछि । ऊपर हम छौ टा वाक्यक भिन्न-भिन्न प्रकारक चर्चा कयलहुँ अछि जकर सामान्य क्रम वैह अछि । ऐच्छिक वाक्यक जहाँधरि प्रश्न अछि– मैथिली साहित्यक संदर्भमे किछु स्वतंत्रता सेहो अछि । पदक्रममे हम क्रियासँ पूर्व एहि वाक्यांशकेँ बदलैत क्रममे राखि सकैत छी । उदाहरणार्थ निम्न वाक्य देखू ।

I) काल्हि साँझमे हम मैथिली नाटक देखलहुँ ।

II) हम काल्हुक साँझमे मैथिली नाटक देखलहुँ ।

III) काल्हिए हम साँझमे मैथिली नाटक देखलहुँ ।

एहि तरहेँ हम देखैत छी जे सामान्य रूपमे अनिवार्य घटकक क्रम एक रहैत अछि आ ऐच्छिक घटक एकरा संगे स्वतंत्र क्रममे अबैत अछि ।

एक वाक्यांशमे एक अथवा एकसँ अधिक शब्द होइत अछि । यथा– 'हम देखलहुँ' एहिमे कर्त्ता आ क्रिया तँ अछि, तथापि वाक्यांशक विस्तार लेल अतिरिक्त शब्द जोड़बाक प्रयोजन भेल अछि ।

वाक्यांश किछु व्याकरणिक सूचना सेहो दैत अछि । जेना– क्रिया-वाक्यांशमे कर्त्ता, कतहु-कतहु कर्त्ताक लिंग, वचन आ क्रियाव्यापारक सम्बंधमे ओकर बल, भाव (Mood) आदिक सूचना दैत अछि ।

बोध प्रश्न-1

निम्नलिखित प्रश्नक संक्षिप्त उत्तर दियऽ ।

I) लिखित भाषा आ मौखिक भाषाक अन्तर लिखू ।

....

....

....

II) लिखित आ मौखिक भाषामे कोन भाषा प्राचीन अछि ?

....

....

....

III) वाक्य आ वाक्यांशमे की अन्तर अछि ?

....

....

....

अभ्यास-1

निम्न ऐच्छिक वाक्यांशकेँ चिह्नित करैत खाली स्थानपर लिखू जे ई ऐच्छिक वाक्यांशक कोन प्रकार थिक–

I) देवालपर विद्यापतिक फोटो टाङल अछि । ( )

II) साँझिमे हमसभ टहलऽ जाइत छी । ( )

III) सम्पर्क क्रान्ति ठीक साढ़े आठ बजे खुजैत अछि । ( )

IV) ई पोथी हम बहिन लेल लेलहुँ अछि । ( )

अभ्यास-2

निम्नलिखित वाक्यकेँ रेखांकित करैत ई कहू जे ई कोन रूपक वाक्यक प्रकार अछि ?
उदाहरणार्थः

हम	रघुवरकेँ	आम	देलहुँ । (द्विकर्मक वाक्य) ।
कर्त्ता	प्राप्तकर्त्ता	कर्म	क्रिया

1) खेतमे बकरी घास चरि रहल अछि ।

2) धीयापूता पयरे पाठशाला गेल ।

3) विमल अपन बेटाकेँ दस टाका टिकट आनऽ लेल देलक ।

4) ओकरा दस दिनसँ कालाजार बोखार छै ।

5) बौआ दूध पीबिकऽ सुति रहल ।

12.2.2 वाक्यमे पदक्रम

सामान्य पदक्रमक चर्च हम ऊपरक वाक्यमे कऽ चुकलहुँ अछि । गपसप-वार्तालापक भाषामे आवश्यकताक अनुसार परिवर्तनो कयल जा सकैत अछि । जेना–

सामान्य पदक्रम– हे, लियऽ अपन बकियौता ।

परिवर्तित पदक्रम– अपन बकियौता लियऽ ।

एहि परिवर्तनक कारण ई अछि जे हम परिवर्तित क्रममे क्रियाकेँ आगाँ अनैत छी । अनैत छी एहि कारणेँ जे महत्त्वपूर्ण सूचनाकेँ प्रमुखता दैत छी । एहना स्थितिमे क्रियाकेँ वाक्यक प्रारम्भमे लऽ अनैत छी । क्रियाकेँ जाहि वाक्यमे प्रमुखता देल जाइछ, एहन प्रक्रियाकेँ 'अग्रप्रस्तुति' कहल जाइत अछि ।

उदाहरण :

जँ अहाँ घर तकैत छी आ बहुत प्रयत्नोक बाद घर नहि भेटि रहल होअय, एहन स्थितिमे जँ भेटि जाय तँ अहाँ ककरो कहि सकैत छी– 'भेटि गेल घर ।' एतऽ भेटि गेलापर बल अछि, दोसर घर भेटि जयबाक सूचना अछि । एहन नव सूचनाकेँ पहिने प्रस्तुत करब 'अग्रप्रस्तुति' कहाओत ।

सामान्य वार्तालापक क्रममे व्यक्ति वाक्यक्रममे बेसी काल पूरा वाक्य नहि बजैत अछि । कखनो कऽ उत्तर देबामे एकेटा शब्दसँ काज चला लैत अछि । जेना–

क) अहाँ रामूकेँ कतेक टाका देलियनि ?

ख) पाँच ।

(ख) मे एके शब्दक उच्चारणसँ अपेक्षित नव सूचना भेटि जाइत अछि । एहिना, कखनो काल कहऽवला व्यक्ति अपन कथ्य वाक्यकेँ पूर्ण नहि कऽ श्रोताकेँ स्वयं बुझि जयबाक हेतु छोड़ि दैत अछि । जेना–

'कालिह जँ हमर बाटी नहि दऽ गेलेँ तँ .....'

'हम चलि तँ देब मुदा .....'

कखनो काल वक्ता वाक्य पूरा नहि कऽ आधेपर रोकि दैत अछि । श्रोता ओहि कथनकेँ अपना दिससँ पूरा करैत अछि । एकर कारण अछि जे वक्ताक कथनकेँ श्रोता बुझि जाइत अछि, अथवा वक्ताक भावकेँ बुझि ओ अपना दिससँ कथनक पुष्टि कऽ वाक्यकेँ पूरा करैत अछि । कखनोकऽ वक्ताक कथनक भाव नहि बुझि ओहिसँ भिन्न शब्द जोड़ि वाक्यमे सामंजस्य नहि होबऽ दैत अछि । एहना स्थितिमे वाक्यमे विभेद स्पष्ट कऽ दैत अछि । जेना देखू–

क) जँ अहाँसभ तीन बजे नहि अयलहुँ तँ.....

ख) 'हमसभ चलि जाइत रहब ' यैह कहऽ चाहि रहल छी ने !

12.2.3 अनुदान

अनुतानसँ तात्पर्य अछि 'बजबाक ढंग'सँ । एके वाक्य विभिन्न अनुतानमे बाजल जाइत अछि, मुदा ओकर अर्थ परिवर्तित होइत जाइत अछि । उदाहरण लेल देखि सकैत छी–

ओ नहि रहलाह । (सामान्य सूचक)

ओ नहि रहलाह ? (प्रश्न सूचक)

ओ नहि रहलाह ! (विस्मय सूचक)

वाक्य एके रहितो एतऽ तीन अनुतानक बोध करबैत अछि-(I)पूर्ण विराम (II) प्रश्नसूचक आ (III) विस्मयादिबोधक । एतऽ ई बुझब आवश्यक जे विस्मयादिबोधकसँ आश्चर्य नहि, अपितु शोक, प्रशंसा, व्यंग्य आदि अर्थ सेहो बहराइत अछि ।

भाषामे अनुतानक महत्त्व

सामान्य रूपेँ गपक क्रममे हम अनेक प्रकारक मनोभावकेँ अनुतानसँ कुशलतापूर्वक व्यक्त करैत छी । सामान्य गपक क्रममे हम सूचनात्मक संदर्भमे अपन विविध मनोभावकेँ दोसराक समक्ष रखैत छी । ई मनोभाव दोसर व्यक्तिक कथनक संदर्भमे बेसी सार्थक भऽ जाइत अछि । अभिप्राय ई जे दोसर व्यक्तिक कथनसँ अहाँ सहमत छी की नाराज, अथवा देखाबटी सहमत छी, से स्पष्ट भऽ जाइत अछि । एहि तरहेँ कहल गेल वक्तव्यसँ परतारब, पटिआयब, चेतायब, धमकायब, क्षमा माङब, खरखाही लूटब, अपन दीनता देखायब वा अधिकार जमायब आदि कतेको तरहक अर्थ अनुतानसँ स्पष्ट होइत अछि । मुदा, प्रश्न अछि जे की एक वाक्यमे एतेक मनोभावकेँ स्पष्ट कयल जा सकैत अछि ? सूचना आ प्रश्नक अतिरिक्त हमरा लग एकेटा अनुतान अछि । ई एतेक तरहक भावकेँ एक संग लऽकऽ कोना चलैत अछि, तकरा जानि लेब अहाँ लेल रोचक आ उपयोगी होयत ।

मनोभावकेँ व्यक्त करबा लेल हम अनुतानक संग स्वर (आवाज) उच्च करब, शब्दपर बल देब, (व्याकरणमे जकरा बलाघात कहल जाइछ), मुखाकृतिक भाव तथा आन-आन आँगिक चेष्टासँ काज लैत छी । जखन तमसाकऽ बजैत छी तँ स्वर तेज कऽ लैत छी, मुदा जँ किछु याचना करक होइत अछि तँ स्वर मद्धिम कऽ लैत छी । तहिना, जँ अवाच्य बजैत छी तँ ओहि शब्दपर जोर दैत छी आ ऊँच स्वरेँ बजैत छी । जँ मित्रक संग परिहासमे बजैत छी तँ उच्चारण नमहर कऽ अनुतान कनेक ऊपर करैत छी । एहि समस्त सहयोगी गुण, कार्य-कलाप सभसँ हम अपन बहुतो मनोभावकेँ प्रकट करैत छी । श्रोता एहि गुणसँ परिचित रहैत अछि आ ओकरे अनुरूप ओ गपक क्रमकेँ आगाँ बढ़बैत अछि । अधिक काल ओहो एहि मनोभावपर टिपबासँ बाज नहि अबैत अछि । जेना देखू–

श्रोता– 'तेवर किएक देखबैत छी ? एना जोरसँ बजलासँ हम अहाँसँ डेरायवला नहि छी ।'

एहि कथनसँ वक्ताक मनोभावकेँ श्रोता जनैत अछि, मुदा ओ अपन अधिकार जमयबाक चेष्टा करैत अछि ।

12.2.4 सम्प्रेषणक उद्देश्य

सामान्य वार्त्ताक क्रममे व्यक्तिक कथनक उद्देश्यकेँ हम चिन्हि गेल छी आ ओकर अनुसारे हम गपक क्रमकेँ आगाँ बढ़बैत छी ।

जखन पिता पुत्रसँ कहैत छथि जे दस बाजि गेल, तँ एकर अर्थ भेल पुत्रके विद्यालय विदा भऽ जयबाक चाही, अभिप्राय अछि जे एहि आशयकेँ बुझऽवला ओही अनुसारेँ कार्य करैत अछि, अथवा ओही संदर्भमे प्रत्युत्तर दैत अछि ।

एहि तरहेँ कोनो वक्तव्यक प्रतिवक्तव्यमे अर्थ झाँपल रहैत अछि । आगाँ जे प्रश्न अछि ताहिमे संभावित झाँपल अर्थकेँ चिन्हू–

क) सभटा रसगुल्ला की भऽ गेलैक ?

ख) एखने गोपाल एहि ठाम छलय । (भऽ सकैए जे कतहु वैह ने रसगुल्ला खा गेल होअय ।)

ग) हँ हँ, हमहीं खा गेलहुँ ! (अर्थात् हमरापर संदेह करब बेकार थिक ।)

12.2.5 वाक्यसँ ऊपरक स्तर

व्याकरणमे सामान्यतः वाक्यक संरचना धरिक विश्लेषण कयल जाइत अछि । मुदा, भाषा वास्तविक रूपेँ वाक्ये धरि सीमित नहि रहैत अछि । हम अपन विचारकेँ क्रमानुसार एकसँ अधिक वाक्य द्वारा व्यक्त करैत छी । एहि क्रममे एक वाक्यक सम्बन्ध दोसर वाक्यसँ रहैत अछि, जकरा मुदा, यद्यपि, किन्तु, आ, तथा आदि शब्दक संयोजकसँ जोड़ैत छी । जँ कदाचित प्रयुक्त संयोजक सही नहि भेल तँ असल तात्पर्य बुझबामे नहि आओत । जेना– ' बरखा भऽ रहल छलैक, मुदा हम नहि जा सकैत छलहुँ ।'

एहि प्रकारक वाक्यमे संयोजक शब्दक सही ढंगे उपयोग नहि कयल गेल अछि । परिणाम अछि जे वास्तविक अर्थकेँ बाधित करैत अछि । एहि वाक्यक सही रूप एना होयत–

'बरखा भऽ रहल छलैक, तेँ हम नहि जा सकैत छलहुँ ।'

एहि प्रकारक वाक्यकेँ 'प्रोक्ति' कहल जाइत अछि । अभिप्राय ई जे सामान्य गपसपक रूपमे एक-दोसर कथनक सम्बंधकेँ हम प्रोक्तिक रूपमे राखि सकैत छी । 'प्रोक्ति' शब्द अहाँकेँ जतेक कठिन लागि सकैत अछि, ततेक कठिन अछि नहि । एकरा अहाँ एना बुझू । जँ अहाँ रेडियोपर निबंध लिखलहुँ अछि तँ ओहि निबंधक पूरा पाठ प्रोक्ति थिक । ओहि निबंधक सभ बात, जेना रेडियोक काज, उपयोगिता आदि ओहीसँ सम्बन्धित रहत । तहिना, कविता, कथा अथवा उपन्यास सभटा मानू एक प्रोक्तिए (discourse) थिक । एहन पाठक संरचना आ विश्लेषणमे वाक्यक क्रमबद्धता, संयोजन आदि तत्त्वकेँ देखल जा सकैत अछि ।

बोध प्रश्न-2

निम्नलिखित प्रश्नक संक्षिप्त उत्तर दियऽ ।

1) सामान्य गपसपक भाषामे वाक्यक सामान्य पदक्रममे की परिवर्तन होइत अछि ?

....

....

....

2) अनुतानसँ अहाँ की बुझैत छी ? अनुतान परिवर्तन कयलासँ वाक्यमे की परिवर्तन होइत अछि ?

....

....

....

....

....

3) गपसप करैत काल हम अपन मनोभाव व्यक्त करबा लेल भाषामे अनुतानक अतिरिक्त कोन-कोन क्रियाक प्रयोग करैत छी ?

....

....

....

....

....

4) प्रोक्ति ककरा कहब ?

....

....

....

....

....

विरामचिह्न

भाषाक पूर्ण ज्ञान आ सटीक प्रयोग लेल विरामचिह्नक बड़ बेसी महत्त्व अछि । विरामचिह्न नहि रहलासँ भाषाकेँ बुझब कठिन होइत अछि । एतऽ हम किछु महत्त्वपूर्ण विरामचिह्नक सम्बंध मे उल्लेख कऽ रहल छी ।

क) अल्पविराम (Comma): अल्पविरामक अर्थ होइछ किछु कालक लेल विराम । अल्पविराम लेल कौमा लगाओल जाइत अछि । अल्पविरामक प्रयोग निम्न अवस्थामे कयल जाइत अछि :

1) जखन कखनो एके शब्द-भेद तीन अथवा अधिक शब्द वाक्यमे एक संग प्रयोग होअय । यथा– 'श्याम, सोहन, दिनेश्वर, दिनकर आ सुरेश बाबाधाम गेल ।'

2) जखन अनेक शब्दयुग्मक वाक्यमे प्रयोग होअय तँ अन्तकेँ छोड़ि ओहिसँ पूर्व धरिक शब्दयुग्मक संग ।

जेना– 'हानि-लाभ, सुख-दुख, जय-पराजय ई सभ जीवनक संगे रहैत अछि ।'

3) एहिना संबोधनक बाद । जेना– राजु, कनेक एमहर आउ तँ !

4) कोनो उक्तिक पश्चात 'कि' अथवा 'जे' क स्थानपर । जेना– अध्यापक कहलनि, कसिकऽ परिश्रम करू ।

5) जँ वाक्यक बीचमे पद्यांश अथवा वाक्यखण्ड आबय तँ ओकर दुनू कात अल्पविरामक प्रयोग होइत अछि । जेना– बात, चाहे जेहन होअय, बेसी चिंतित नहि होयबाक चाही ।

एतबे नहि, जखन उद्देश्य नमहर होअय आ दू शब्दमे कहबाक होअय तँ 'आओर' क लोप होयबाक स्थितिमे अल्पविरामक प्रयोग होइत अछि । जेना– अहाँ आम खायब, हम आँठी फेकब ।

ख) अर्धविराम (Semi colon) : अल्पविरामक अपेक्षा जतऽ ओहिसँ अधिक रूकब अपेक्षित होअय ओतऽ अर्धविराम (;) क प्रयोग होइत अछि । यथा–

'एहि न्योक स्तर कोना उच्च होयत ; विद्यार्थी कोना पठन-पाठनमे प्रवृत्त होयत, ओकरामे नैतिकताक विकास कोना कयल जाय ?'

ग) उपविराम (Colon) : अर्धविरामक अपेक्षा जतऽ बेसी रूकब-ठहरब आवश्यक होअय आ संगहि वाक्यक समाप्ति अपेक्षित नहि होअय ओतऽ उपविराम (:)क प्रयोग होइत अछि । एकर प्रयोग पोथी, निबंध, कथा आदिक शीर्षकमे कयल जाइत अछि । जेना– महाकाव्य : अध्ययन-अनुशीलन,

मिथिला : भारतक मुकुट ।

घ) पूर्णविराम (Full stop) जतऽ वाक्यक मनोभाव पूर्ण भऽ जाय ओतऽ पूर्णविरामक प्रयोग होइत अछि । पूर्णविराम लेल आइ-काल्हि (.) क प्रयोग सेहो होबऽ लागल अछि । कहल जा सकैत अछि जे मैथिली भाषाक प्रकृतिमे एहन प्रयोग अनुकूल नहि अछि ।

ङ) प्रश्नवाचक (Interrogation): प्रश्नवाचक वाक्यक अन्तमे होइत अछि । जेना– श्याम चल गेला की ?

च) विस्मयादिबोधक (Exclamation): आनन्द, उत्साह, आश्चर्य, घृणा सदृश भावकेँ व्यक्त करबा लेल विस्मयादिबोधक (!) चिह्नक प्रयोग कयल जाइत अछि । जेना– अरे तोँ ! वाह ! छिः छिः !

छ) संयोजक चिह्न (Hyphen) दू विपरीतार्थक शब्दक बीच, जेना– (उँच-नीच), सहचर शब्दक बीच, जेना (खायब-पीब), प्रतिबिम्बित शब्द आ सार्थक शब्दक बीच, जेना (अनाप-सनाप), द्वंद्व समासक दुनू भेद आ पदक बीच, जेना (मोहन-रमण) जखन संज्ञाक पुनरुक्ति होअय, जेना (गामे-गाम) आदि स्थानसभमे संयोजक चिह्नक (-) प्रयोग होइत अछि ।

अभ्यास 3

एतऽ किछु वाक्य लिखल अछि, जाहिमे सभ विरामचिह्न हँटल अछि । अहाँ विरामचिह्न लगाकऽ एहि वाक्यकेँ पूरा करू ।

क) की यौ दिवाकरजी की हालचाल

ख) जेहन बाढ़ि एहि बेर आयल तेहन कहियो ने आयल

ग) ओतऽ कहियो काल पाथरो खसै छै

घ) एह कतेक नीक शब्दकोश अछि

ङ) वंसत अबिते फूलसभ फुलाय लगैत अछि भमरा फूलक पराग चुसि मस्त भऽ गुनगुनाय लगैत अछि मनुष्य वंसतक संगमे फौदाय लगैत अछि

च) मिथिला एक सांस्कृतिक भूमि थिक

छ) राधा-विरह महाकाव्य अध्ययन विश्लेषण

ज) रे ओ काज करैत काल खेनाइ पिनाइ सभटा बिसरि जाइत अछि

12.3 वार्तालापक मूल पाठ

अहाँकेँ आब हम 'यात्राक तैयारी' विषयक वार्तालाप प्रस्तुत कऽ रहल छी । एहिमे अहाँकेँ देखबाक अछि जे गपसपक क्रममे (वार्तालापक) कोन तरहक भाषाक प्रयोग होइत अछि तथा लिखित भाषाक रूप संवादक भाषासँ कोना भिन्न होइत अछि ?

(मल्लिकजी भोजनपर बैसल छथि । भोजनो करैत छथि आ परिवारक आन सदस्यसँ गपो कऽ रहल छथि ।)

मल्लिकजी : सुनै छी, अगिला मासमे हमरा बीस दिनक छुट्टी अछि । सोचै छी जे कतहु यात्रापर जाइ ।

पत्नी : छुट्टी हैत ! पहिले-पहिले एहन बात सुनलहुँ अछि । छोटू, मनीषा बेर-बेर तंग करैत छल । यौ, जनकपुरधामक परिक्रमा बड़ महत्त्वपूर्ण होइत छै । बहुतो एकर प्रशंसा सनैत आयल छी । अहाँ सन कमौआ के पलखतिए ने ! चलू एहि छुट्टीमे ।

छोटू : जनकपुर ? जनकपुर कोन दर्शनीय स्थल भेलै ! चलबेक होअय तँ चलू रामेश्वरम ।

मनीषा : पप्पा ! चलबेक होअय तँ काठमाण्डू चलू, नहि तँ जयपुर चलू । कहाँदन बड़ सुन्दर शहर छै ।

छोटू : पप्पा ! ई छौंड़ी एहिना किछु कहि देलक अछि ! धार्मिक दृष्टिएँ सभसँ नीक रामेश्वरम ।

पत्नी : भेलै ! बाप पहिने तैयार हेथुन तखन ने !

मल्लिकजी : एतेक घोंघाउज करबाक कोन काज ? छोटू, अहाँ दामोदर बाबूसँ पता लगा आउ, कोन-कोन स्थान दर्शनीय अछि आ ओकर 'रूट' की-कोना छै ?

(छोटू दामोदर बाबूसँ भेट करैत छथि)

दामोदर : की हौ छोटू, कोनो काज की ?

छोटू : काका ! पप्पाकेँ छुट्टी छनि । हमरासभक विचार अछि जे एहि छुट्टीमे कतौ घुमल जाय । कोनो दर्शनीय स्थान दऽ कहू ?

दामोदर : देखह, देखबा लेल तँ शिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग, पशुपतिनाथ, कामाख्या आदि बहुतो दर्शनीय स्थान छै । मुदा तोँ जाय कतऽ चाहैत छह ?

छोटू : हमरा तँ रामेश्वरम जयबाक उत्कट अभिलाषा अछि, मुदा 'रूट'कोना की छै, से बुझबाक अछि ।

दामोदर : ठीक छै । हे, सभ स्थानक नक्शा आ 'रूटचार्ट' हम दैत छियौ, लेने जो, सपरिवार एकरा देखिकऽ जतऽ चाहै जा सकैत छैँ ।

(छोटे नक्शा आ रूटचार्ट लऽकऽ अबैत अछि)

मनीषा : माँ, माँ, भैया आबि गेला । अबै, पहिने नक्शा देखब जरूरी छौ ।

पत्नी : (दुनू बच्चासँ) अहाँ दुनू पहिने मुँह बन्द करू । पप्पा जे करता सैह हेतै ने !

मल्लिकजी : अयँ यै ! छोटू आ मनीषाक रिजल्ट तँ एखन नै भेलैए ! जँ एक पन्द्रहियामे रिजल्ट भऽ गेलै तखने घुमबाक आनन्द लेब कि ने !

पत्नी : हमहुँ सैह ने कहै छी ! अहाँकेँ काजक पाछू किछु मोन रहैए ! फेर एडमिशनक बात ?

मनीषा : जहाँ कतौ जयबाक प्रोग्राम बनत तँ कोनो-ने-कोनो विकट पाहुन पहुँचिए जयता ।

छोटू : नै पप्पा ! एहि बेर नहि मानब । चाहे जतऽ चली, जयबे करब ।

म. पत्नी : पप्पाकेँ 'टेन्शन' नहि दहुन ।

मनीषा : माँ, पप्पा बड़का लोक छथिन, माने ग्रेटमैन ।

मल्लिकजी : दिमाग नै खराप करू, माँ जतऽ डिसाइड करती ओतहि जैब । जाउ, हुनके कप्पार खाउ गऽ।

म. पत्नी : पप्पा हुलका देलखुन, आब हमर कप्पार खाइत रहै तोँ दुनू !

मल्लिकजी : छोटू, तोँ पहिने परीक्षाक रिजल्ट निकलऽ दहक, तखन गेनाइ हेतै । मन हरखित तँ बाबी गीत ।

मनीषा आ छोटू दुनू : ठीक छै पप्पा ! रिजल्ट नीक हेबे करतै ।

12.4 वार्तालापपर चर्च-वर्च

ऊपर अहाँ वार्तालापक मूल पाठ पढ़लहुँ । आब हम वार्तालापक विश्लेषण प्रस्तुत कऽ रहल छी । देखने होयब जे वार्तालापक संवादमे कतहु-कतहु अंग्रेजी शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि । कतहु-कतहु शब्दक उच्चारण बदलल अछि । कतहु बातमे अनुतान आ बलाघातक प्रयोग कयल गेल अछि । एहि सभ बातकेँ भिन्न-भिन्न शीर्षकमे देखबाक प्रयास करैत छी ।

अनुतान : विभिन्न तरहक मनोभावकेँ व्यक्त करबा लेल अनुतानक प्रयोग कयल जाइछ । एहि वार्तालापमे निम्नलिखित कथनकेँ देखू :

1) छुट्टी हैत ! पहिले-पहिले एहन बात सुनलहुँ अछि ! (आश्चर्य)

2) जनकपुर ? जनकपुर कोन दर्शनीय स्थल भेलै ? (असहमति)

3) पप्पा ! चलबेक होअय तँ काठमाण्डू चलू, जयपुर चलू । (अनुरोध)

4) भेलै ! बाप पहिने तैयार हेथुन तखन ने ? एतेक घोंघाउज करबाक कोन काज ! (खौँझ)

5) पप्पा हुलका देलखुन, आब हमर कप्पार खाइत रहैँ । (खौँझ)

ऊपरक वाक्यमे अहाँ देखू जे कोना विभिन्न मनोभावकेँ अनुतानक द्वारा प्रकट कयल गेल अछि । अनुतानकेँ 'लहजा' कहि सकैत छी ।

पहिल वाक्यमे आश्चर्यक संगहि मोनक प्रसन्नताक आभास सेहो अछि । एकरे जँ अहाँ लहजा बदलिकऽ कही जे 'नीक बात कहलहुँ अछि' तँ वाक्यक आशयमे अन्तर आबि जायत ।

कखनो काल अनुतान बदललासँ वाक्यक पदक्रममे सेहो परिवर्तन भऽ जाइत छैक । अभिप्राय ई जे अनुतान बदलबामे किछु शब्द वाक्यमेसँ छुटि जाइत अछि आ किछु जोड़ल जाइत अछि । अन्य वाक्यकेँ देखू जे अनुतान द्वारा कोना आश्चर्य, अनुरोध, असहमति आ खौँझ सदृश मनोभावकेँ व्यक्त कयल गेल अछि । बजबाक ढंगमे उतार-चढ़ावसँ शब्दकेँ उच्चस्वर आ मद्धिम बाजिकऽ अपन मनोभावकेँ व्यक्त कयल जाइत अछि ।

बलाघात : वार्तालापमे बलाघातक बड़ महत्त्व होइत अछि । गपक क्रममे हम-अहाँ वाक्यमे अथवा शब्दोमे सभ ठाम बल नहि दैत छी । किछु विशेष शब्दपर बल दैत छी । एकर कारण अछि जे हम जाहि शब्दपर बल दैत छी तकरा द्वारा हम नव सूचना दैत छी । उदाहरण लेल वार्तालापक निम्न संवाद देखू–

छोटू : पप्पा, रामेश्वरम चलू ने ! हम पढ़ने छी जे रामेश्वरम तीर्थस्थलमे सभसँ महत्त्वपूर्ण स्थान अछि ।

मनीषा :ई कोन महत्त्वपूर्ण स्थान भेलै ? एतेक पैघ यात्रा करब ताहिसँ नीक जे काठमाण्डू चलू । एखुनक समयक लेल सभसँ नीक स्थान ।

उपर्युक्त संवादमे 'सभसँ महत्त्वपूर्ण स्थान' मे बल देल गेल अछि । तहिना, 'ई कोन महत्त्वपूर्ण स्थान भेलै' ताहिपर बल पड़ैत अछि ।

एहि तरहेँ वार्तालापमे नव सूचना अथवा कखनोकऽ कोनो विशेष बातक महत्त्व देबा लेल शब्दपर आ वाक्यपर बल देल जाइत अछि ।

अभ्यास-4

निम्नांकित वाक्यमे अनुतानसँ कोन तरहक मनोभाव व्यक्त होइत अछि ?

1) छोटू, ओ स्वतः चल जायत । ( )
2) वाह ! खूब कइलहुँ अहाँ !. ( )
3) माँ, प्रदर्शनी देखऽ चलू ने ! ( )
4) तोँही सभटा चॉकलेट खा गेलही ! ( )
5) तोँ सभटा चॉकलेट खा गेलही । ( )
6) तोँ सभटा चॉकलेट खा गेलही ? ( )

अभ्यास-5

निम्नलिखित मनोभावकेँ व्यक्त करऽलेल एक-एक वाक्य बनाउ । उत्तर लिखबासँ पहिने अभ्यास-4 केँ ध्यानपूर्वक पढ़ि लेलासँ उत्तर लिखबामे सुविधा होयत ।

1) (आश्चर्य) ....

2) (आश्चर्य आ प्रसन्नता) ....

3) (सामान्य सूचना)...................................

4) (क्रोध)...

5) (अनुरोध)...

कोडमिक्सिंग :

मूलपाठमे देल गेल वार्तालापकेँ अहाँ पढ़ि चुकलहुँ अछि । अहाँ पढ़ने होयब जे वाक्यमे ठाम-ठाम अंग्रेजी शब्दक प्रयोग कयल गेल अछि । जखन कखनो वार्तालापक क्रममे वाक्यक बीचमे कोनो अंग्रेजी शब्दक प्रयोग कयल जाय तँ ओकरा 'कोडमिक्सिंग' कहल जाइत अछि । वक्ता एहेन साकांक्ष नहि रहि पबैत अछि जे ओ वाक्यमे अंग्रेजी शब्दक प्रयोग नहि करय । एहन प्रयोग ओ जानिबुझिकऽ नहि करैत अछि । एहि 'कोडमिक्सिंग'क कारण की थिक ? एकर पहिल आ प्रमुख कारण अछि संप्रेषण अर्थात् अपन बातकेँ दोसर लग पहुँचायब । एकरा सम्बन्धमे ने कोनो नियम अछि आ ने बनाओल जा सकैत अछि । तँ 'कोडमिक्सिंग'क आर कोनो कारण भऽ सकैत अछि, से बात नहि अछि । ई वक्ताक प्रवृत्तिगत होइत अछि । कखनो काल वक्ता अपन भावकेँ व्यक्त करबाक क्रममे कोनो एहन बात, जकर अपन भाषामे मूलशब्द तत्क्षण नहि सुझि पबैत छनि, तखन कोडमिक्सिंगक प्रयोग कऽ अपन भावकेँ व्यक्त करैत छथि । मुदा, एहन प्रयोग करब किछु गोटेक प्रवृत्तियो होइत छनि ।

हमर सम्बन्ध एतऽ मूलपाठमे मैथिली भाषामे अंग्रेजी शब्द वा वाक्यक प्रयोगसँ अछि । एहन देखैत होयब जे पढ़ल-लिखल मैथिलीभाषी वार्तालापक क्रममे एकाध अंग्रेजी शब्दक प्रयोग करिते छथि ।

एकर कारण भऽ सकैत अछि जे–

1) मैथिली भाषामे बहुतरास अंग्रेजी शब्दकेँ स्वीकारि लेल गेल अछि । जेना– रेल, स्टेशन, पेन, गिलास, टेम्पो, मोटर, कार, टी.बी., हैलो आदि ।

2) अंग्रेजी भाषाकेँ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरपर सम्पर्क भाषाक रूपमे उपलब्ध होयब । उत्तर भारतीय मिथिलावासी सहित दक्षिण भारतक राज्यमे ओकरे भाषा अथवा अंग्रेजी भाषामे अहाँ अपन विचार व्यक्त कऽ सकैत छी । अंग्रेजी भाषाक प्रभाव-विस्तारक कारणे एना होइत अछि ।

3) तेसर कारण अछि अंग्रेजी भाषाक माध्यमे शिक्षा-दीक्षा, मातृभाषाक माध्यमे नहि । वार्तालापमे कोडमिक्सिंगक प्रयोग होयबाक नहि चाही । कारण, कोडमिक्सिंगक सम्बंधमे कोनो भाषानीति निर्धारित नहि अछि । हमरा विचारेँ कोनो भाषामे संवाद अथवा वार्तालाप करब, बाजब आ लिखब सिखबाक होअय तँ निश्चित रूपेँ, जहाँ धरि संभव भऽ सकय, कोडमिक्सिंग नहि करबाक चाही । निम्न वाक्यसभकेँ देखू–

- हम परुकाँ साल कालेजक टूरमे नहि जा सकलहुँ ।
- सर ! हम एक सप्ताहक लीभमे जाय चाहैत छी ।
- अहाँ कोनो नीक प्लेस सजेस्ट ने करू !
- आइ एम इंटरेस्टेड इन दर्जिलिंग ।
- अहाँ ओतऽ पहाड़क सौन्दर्यकेँ देखि सकैत छी ।
- बट यू शुड हैव एटलिस्ट टेन डेज ।
- की अहाँ अपना परिवारसँ विचार लऽ लेलहुँ अछि ?
- यस, इट इज गुड आइडिया ।
- छोटूक रिजल्ट तँ नहि निकलनि अछि ।

उपर्युक्त अंशमे अंग्रेजी शब्दक प्रयोग कतहु पूरा वाक्यमे भेल अछि तँ कतहु मैथिली भाषाक वाक्यमे भेल अछि । अहाँ मैथिली भाषाक वाक्यमे अंग्रेजी शब्दकेँ हटाइयोकऽ वाक्य

पूर्ण कऽ सकैत छी । मुदा, आबक एहन स्थिति बनि गेल अछि जे बहुतरास आन भाषाक शब्द गपसपक भाषामे पचि गेल अछि ।

अभ्यास-6

मानि लियऽ जे सोहन, मोहन, मुरारी आ अहाँ अन्तरंग मित्र छी । चारू मित्र शिवरात्रिक अवसरपर कुशेश्वरस्थान जयबाक कार्यक्रम बना रहल छी । अहाँ दुनूक बीच जे संवाद होइत अछि से हम लिखि बीच-बीचमे किछु संवादकेँ छोड़ि रहल छी, जे अहाँकेँ लिखबाक अछि ।

सोहन: की हौ ! चलै छह ने ?

मोहन:

मुरारी: शिवरात्रिमे बाबा कुशेश्वरक दर्शन करऽ ?

मोहन:

सोहन: नहि जेबऽ तँ गाममे मटरगस्ती करैत रहऽ ।

सोहन:

मुरारी: हमहुँ तँ घरक काजे आयल छलहुँ ।

सोहन: के बिना काजक अछि ? घरक काज तँ हेबे करतै, मुदा मोहन तँ नाकपर माछियो ने बैसऽ दैत छौ ।

मोहन:

मुरारी: चलै ने भाइ, सभ कियो रहब तँ मजा आबि जेतै ।

मोहन: मुदा

सोहन: एकटा करै । संगे तोरा घरपर चलै छी, काकाजीसँ कहबा दैत छियौ ।

मोहन:

मुरारी: आब कोन बहन्ना छौ ?

मोहन:

सोहन: टका-पाइक कोन सोच ? हम छी ने । तोहर सभ खर्च हमरा ऊपर ।

मुरारी: भेलौ ने ! अबे तैयार भऽकऽ । तीन बजे बस खुजैत छै ।

क्षेत्रीय विशेषता

अहाँ जनैत होयब जे मिथिलांचलक सभ क्षेत्रमे मैथिली बाजल जाइत अछि । मुदा, कहि सकैत छी जे प्रत्येक पाँच कोस (8 कि. मी.)पर सम्पूर्ण मिथिलांचलमे गपसप आ लोकव्यवहारमे किछु-ने-किछु अंतर रहैत अछि । एहिमे गप करबाक शैली आ गपक टोनमे बहुतरास अंतर रहैत अछि । एहिमे किछु क्षेत्रीय मूल मैथिली शब्द आ किछु दोसर भाषाक शब्द मिझरायल रहैत अछि । मानक मैथिली शब्दक प्रयोगमे थोड़ेक अंतर सेहो कतहु-कतहु देखैत होयब । स्थानीयताक प्रभाव सेहो भाषापर रहैत अछि । तेँ देखब जे गंगासँ उत्तरक मैथिली, समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़ियाक मैथिलीमे आ दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, किसनगंज, पूर्णियाक मैथिलीमे बेसी ठाम अन्तर भेटत । संवादशैलीक पाठमे, कथा आ कवितामे एहि तरहक मैथिलीक प्रयोग देखि सकैत छी । तेँ कतहु 'जाइत छह की' तँ कतहु 'जाइ छहोँ की ?' बाजल जाइत अछि ।

मैथिली भाषाशैलीमे अन्य भाषाक शब्दशैलीक प्रयोग

मैथिली बजबा अथवा लिखबा काल किछु लेखक अथवा वाचक तत्सम शब्दक प्रयोग करैत छथि । किछु एहनो होइत छथि जे एकर अतिरिक्त किछु शब्द उर्दूक, हिन्दीक वा आने भाषाक प्रयोग करैत छथि । कोनो आन भाषाक शब्दशैलीक प्रयोगसँ आजुक वैश्वीकरणक युगमे बचल नहि जा सकैत अछि । संस्कृत भाषाक शैली तँ मिथिला-मैथिलीक संस्कृति-सभ्यतामे पचल अछि, किन्तु एकर अतिरिक्त जतऽ धरि बनि सकय, अन्य भाषाक शब्दक प्रयोगसँ परहेज करबाक चाही । मैथिली भाषामे शब्दक बड़का भंडार अछि । आन भाषाक जे प्रचलित रूप स्वीकार कऽ लेल गेल अछि, से छोड़ि अपन शब्दक प्रयोग कयल जयबाक चाही । किछु एहनो शब्द अछि जे एके रूपमे विभिन्न भाषामे स्वीकार कऽ लेल गेल अछि । यथा–

उर्दू	हिन्दी	मैथिली
मजबूरी	विवशता	विवशता
जिन्दगी	जीवन	जिनगी, जीवन
सही	ठीक	ठीक
कोशिश	प्रयास	प्रयास, अभ्यास
ख्वाब	स्वप्न	सपना

जे पाठ अहाँ पढ़लहुँ ओकर शैली देखलासँ बुझायत जे एहिमे मिलल-जुलल रूप अछि ।

अभ्यास-7

निम्नलिखित किछु उर्दू शैलीमे संवाद देल जा रहल अछि । अहाँकेँ एहि संवादकेँ मैथिली शैलीमे बदलिकऽ लिखबाक अछि ।

उर्दू शैली–

क) कैसा मिजाज है आपका ?

ख) जमाने के बाद आपसे मुलाकात हुई है ।

ग) इनकी तारीफ ?

घ) आप कहाँ से तशरीफ लाये हैं ?

ङ) यूँही मिजाज की सनक समझिये ।

12.5 सारांश

सम्पूर्ण इकाइक पाठ पढ़लासँ अहाँकेँ बुझबामे आबि गेल होयत जे संवाद अथवा वार्तालापक भाषा लिखित भाषासँ भिन्न होइत अछि । लिखित भाषा व्याकरणक नियमसँ बान्हल, ओकर पालन करैत चलैत अछि, मुदा वार्तालाप वा संवादक भाषामे लोच, कोडमिक्सिंग, स्थानीय शब्दक प्रभाव, वार्तालापक स्तर, निम्न अथवा टूटल-फूटल शब्दक प्रयोग, ककरो मुँहक बातकेँ छीनि लेब आदि मौखिक भाषाक विशेषतासभ अछि । मौखिक भाषाक व्याकरण सीमोक उल्लंघन करैत चलैत अछि । बहुत रास एहनो शब्दक प्रयोग संवादमे कयल जाइत अछि जे लिखित भाषामे त्याज थिक । अभिप्राय ई जे हम सभ तरहक बात भाषेटाक माध्यमसँ सम्प्रेषित नहि करैत छी, अपितु भाषेतर तत्त्व सेहो हमर सम्प्रेषणक हिस्सा बनि जाइत अछि । जेना– आंगिक क्रिया, संदर्भ, प्रसंग-प्रतीक आदि ।

आशा अछि जे अहाँ मैथिलीमे संवाद लिखबाक सफल प्रयास कऽ पायब । संवाद-लेखन एक महत्त्वपूर्ण कला थिक । बिना लेखन-अभ्यासक शिक्षाक कोनो क्षेत्रमे सफल होयब सम्भव नहि अछि ।

12.6 बोध प्रश्न/अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) मौखिक भाषामे व्याकरणक बन्धन नहि रहैत अछि । एहिमे खसल शब्दक प्रयोग, संवादमे लोच तथा कोडमिक्सिंगक प्रयोग कयल जाइत अछि । एतबे नहि, एहिमे अपन बातकेँ रखबा लेल आन भाषाक शब्द स्वतः व्यवहारमे चल अबैत अछि । मुदा, लिखित भाषा व्याकरणिक एवं व्यवस्थित भाषा होइत अछि । ओकर एक-एक शब्दक एक निश्चित अर्थ होइत अछि जे ओहि भाषामे निहित रहैत अछि ।

2) मौखिक रूप ।

3) वाक्य सार्थक शब्दक एक एहन समूहकेँ कहल जाइत अछि, जकर स्पष्ट रूपेँ कोनो आशय स्पष्ट होइत हो । वाक्यांश बिना क्रियाक दू अथवा दूसँ बेसी समूहकेँ कहल जाइत अछि ।

बोध प्रश्न-2

1) गपसपक भाषामे वाक्यक सामान्य पदक्रममे क्रियाक परिवर्तन होइत रहैत अछि । जेँ कि सूचनाक प्रमुखता देब अभिप्रेत रहैत अछि, तेँ पदक्रममे कौखन क्रिया आगाँ आबि जाइत अछि ।

2) बजबाक ढंग (शैली)केँ अनुतान कहल जाइत अछि । अनुतानकेँ बदलियो गेलासँ वाक्यमे कोनो परिवर्तन नहि होइछ, किन्तु ओकर आशय आ अर्थमे परिवर्तन भऽ जाइत अछि ।

3) गप करैत काल (वार्तालापमे) अपन मनोभाव व्यक्त करबा लेल अनुतानक अतिरिक्त शब्दपर बल, स्वर ऊँच करब, आकृतिक संगहि आंगिक क्रियाक प्रयोग कयल जाइत अछि ।

4) वाक्यक स्तरसँ ऊपरक पाठकेँ प्रोक्ति कहल जाइत अछि ।

अभ्यास-3

क) की यौ दिवाकरजी ! की हालचाल ?

ख) जेहन बाढ़ि एहि बेर आयल, तेहन कहियो ने आयल ।

ग) ओतऽ कहियो काल पाथरो खसै छै ।

घ) एह ! कतेक नीक शब्दकोश अछि !

ङ) वसंत अबिते फूलसभ फुलाय लगैत अछि, भमरा फूलक पराग चुसि मस्त भऽ गुनगुनाय लगैत अछि, मनुष्य वसंतक संगमे फौदाय लगैत अछि ।

च) मिथिला एक सांस्कृतिक भूमि थिक ।

छ) राधा-विरह महाकाव्य : अध्ययन-विश्लेषण ।

ज) रे ! ओ काज करैत काल खेनाइ-पिनाइ सभटा बिसरि जाइत अछि ।

अभ्यास-4

1) खौँझ एवं आग्रह ।

2) आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता ।

3) आग्रह ।

4) विस्मय ।

5) सूचना ।

6) प्रश्न ।

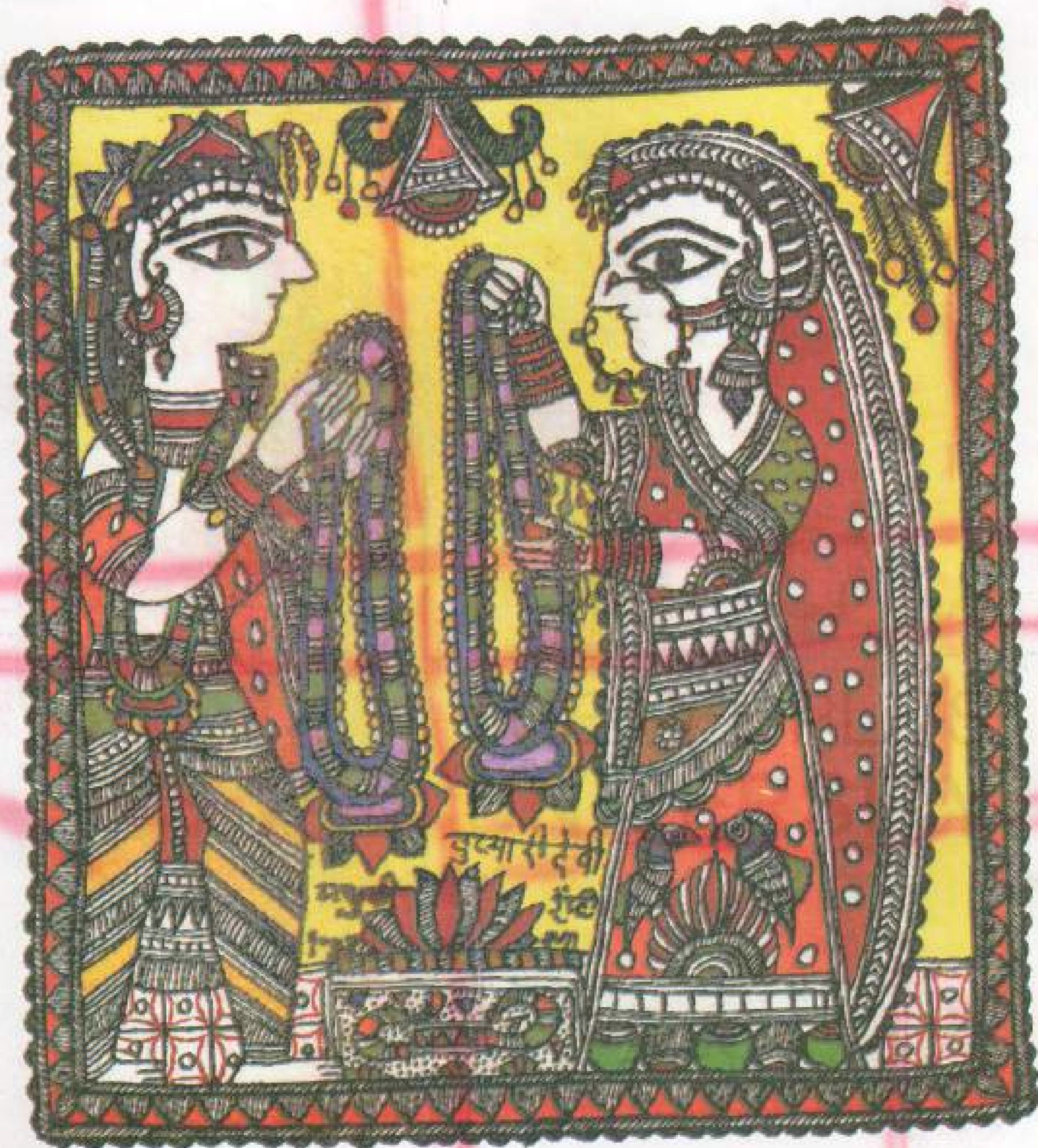


इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001

मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम



विविधा

4

"शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्तमान विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।"

— इन्दिरा गांधी

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

– Indira Gandhi

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BMAF-001

मैथिलीमे आधार पाठ्यक्रम

खंड

4

विविधा

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

डॉ. भीमनाथ झा
पूर्व प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. नीता झा
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. नवीन चन्द्र मिश्र
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

डॉ. देवेन्द्र झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, बी.आर.ए. बिहार वि.वि.
मुजफ्फरपुर

डॉ. चन्द्रनन्दन झा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली
विभाग, जे.एन. कॉलेज, मधुबनी

प्रो. अजीत कुमार वर्मा
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा

संकाय सदस्य

प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

डॉ. स्मिता चतुर्वेदी
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

इकाइ लेखक

डॉ. देवेन्द्र झा (इकाइ 13)
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
बी.आर.ए. बिहार वि.वि., मुजफ्फरपुर

डॉ. महेन्द्र झा (इकाइ 14)
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग,
पी.जी. सेन्टर, सहरसा

डॉ. अशोक कुमार मेहता (इकाइ 15)
मैथिली विभागाध्यक्ष,
सी.एम. साइंस कॉलेज, दरभंगा

डॉ. रमण झा (इकाइ 16)
प्राचार्य, मैथिली विभाग,
ल.ना.मि.वि., दरभंगा

पाठ्यक्रम संपादक
डॉ. भीमनाथ झा

पाठ्यक्रम संयोजन

एकेडमिक संयोजक
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
हिन्दी विभाग,
मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू मैदान गढ़ी,
नई दिल्ली-110068

प्रबन्ध संयोजक
डॉ. ए. एन. त्रिपाठी
डॉ. एस. एस. सिंह
क्षेत्रीय निदेशक,
इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र,
दरभंगा

सामग्री निर्माण

श्री सी. एन. पाण्डेय
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)

जनवरी, 2012

ISBN-978-81-266-5783-4

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए इसके मैदानगढ़ी, नई दिल्ली 110068 स्थित कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. रीतारानी पालीवाल, निदेशक, मानविकी विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली

मुद्रक : राज प्रिंटर्स, ए-9, सेक्टर बी-2, ट्रोनिका सिटी औद्योगिक क्षेत्र, लोनी, गाजियाबाद (उ.प्र.)-201102

खण्ड 4 क परिचय : विविधा

ई चारिम आ अन्तिम खण्ड थिक । एहि खण्डमे सेहो चारि इकाइ अछि । ई चारू चारि प्रकृतिक अछि, तेँ एकर नाम विविधा राखल गेल अछि ।

इकाइ 13मे भाषण-शैलीक अध्ययन कयल गेल अछि । एहिमे डॉ. अमरनाथ झाक एक भाषण वाचनक हेतु देल गेल अछि, जे ओ आखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक अधिवेशनमे अध्यक्ष पदसँ देने रहथि । साहित्यिक भाषणमे कोन-कोन तत्त्व होयबाक चाही, भाषणकर्ता कोनो विषयपर विशेष जोर देबा लेल कोन विधि अपनाबैत छथि, अपन भाषणकेँ कोना प्रभावी बनबैत छथि, ताहि सभ विषयकेँ उदाहरण-सहित बुझाओल गेल अछि । एहि भाषणक अध्ययन-विश्लेषणसँ मैथिली भाषामे कुशलता एवं भाषणकलामे निपुणता पाओल जा सकैत अछि ।

इकाइ 14मे ललित कलाक अन्तर्गत स्थापत्यकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला आ काव्यकलाक परिचयक माध्यमे भाषा-कौशलक ज्ञानकेँ परिष्कृत करयबाक प्रयास कयल गेल अछि ।

इकाइ 15मे पत्रकारिताक सामान्य परिचय देल गेल अछि । प्रिंट मीडियाक दिनानुदिन बढ़ैत प्रभावक कारणेँ मैथिलीक माध्यमसँ ओहू क्षेत्रमे प्रवेशक ज्ञान रहब आवश्यक छैक । एहि हेतु समाचारक परिभाषा, समाचार लेखन आ सम्पादन, समाचारपत्रक भाषा, सम्पादकीय लेखनक महत्व आ लेखन-विधि सिखाओल गेल अछि । किछु उदाहरण द्वारा विषयकेँ विशेष स्पष्ट करबाक प्रयास कयल गेल अछि।

इकाइ 16 विज्ञानक भाषासँ सम्बद्ध अछि । एहि इकाइमे पेट्रोलियमक निर्माण, शोधन एवं ऊर्जाक स्रोतक रूपमे ओकर उपयोगिताक प्रसंग उद्धरण देल गेल अछि तथा पारिभाषिक शब्दक व्याख्या कयल गेल अछि ।

एहि चारू इकाइमे यथास्थान बोध प्रश्न एवं अभ्यास देल गेल अछि, जकरा हल कऽ लेला उत्तर अहाँकेँ एक दिस विषयपर पकड़ भऽ जायत तँ दोसर दिस भाषाक कौशलक विकास सेहो होयत ।

एहि पाठ्यक्रमक उद्देश्य ई रहल अछि जे एकर माध्यमसँ अहाँ मैथिली भाषा एवं साहित्यक विभिन्न पक्षक सोदाहरण अध्ययन कऽ ली, जाहिसँ आगाँ ऐच्छिक पाठ्यक्रमक अध्ययनमे अहाँकेँ ई ठोस आधारक काज कऽ सकय ।

एहि पाठ्यक्रमक विषयमे अहाँक सुझावक हम स्वागत करब, जाहिसँ एकर रूप आगाँ आर निखरि सकैक ।

इकाइ 13 भाषण शैली

इकाइक रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

एहि इकाइकेँ पढ़लाक बाद अहाँ

- मिथिलाक भाषा-साहित्यपर केन्द्रित भाषणक अध्ययन द्वारा एहि विषयकेँ स्वयं अपन शब्दमे व्यक्त कऽ सकब,
- विषयसँ संबंधित शब्दावलीक उचित प्रयोग कऽ सकब,
- भाषणक शैलीगत विशेषता कहि सकब,
- भाषणक भाषा एवं लिखित भाषाक अंतर चीन्हि सकब,
- संबोधन कारक की होइछ, से जानि ओकर सही प्रयोग कऽ सकब ।

13.1 प्रस्तावना

ई चारिम खण्डक पहिल इकाइ थिक । पछिला खण्डमे अहाँ व्यावहारिक मैथिलीक अन्तर्गत सरकारी पत्राचार, टिप्पण आ प्रारूपणक विधि सिखलहुँ; निबन्ध-लेखनक ज्ञान प्राप्त कयलहुँ, अनुवादक महत्त्व बुझलहुँ आ अनुवाद कोना कयल जाइछ, से जनलहुँ तथा संवाद-शैलीसँ अवगत भेलहुँ । एहि सभक अभ्याससँ अहाँक क्षमता अवश्य बढ़त ।

एहि इकाइमे अहाँ भाषण-कलाक सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करब । एतऽ मैथिली साहित्य परिषदक आठम अधिवेशनक अध्यक्ष डॉ० अमरनाथ झाक अभिभाषण पढ़ब, जाहिमे मैथिली साहित्यक अतीतक अवलोकन, वर्त्तमानक समीक्षा एवं भविष्यक हेतु दिशा-निर्देश कयल गेल अछि । ई भाषण एहि लेल महत्त्वपूर्ण अछि जे जहिया ई देल गेल छल तहिया साहित्यक कोनो इतिहास ओना भऽकऽ उपलब्ध नहि छलैक आ ने कोनो आलोचना सैह छलैक ।

जें ई पाठ 'भाषण' छलैक तें ओ ओही रूपमे देल जा रहल अछि, जाहिसँ अहाँ भाषणक प्रवाहमे ओकर पूर्णता जानि सकी । एहि भाषणसँ अहाँ भाषणक शैलीगत विशेषता आ ओहिसँ संबंधित व्याकरण विषयक विलक्षण प्रयोगक अध्ययन सेहो कऽ सकब ।

संगहि अहाँ संबोधन कारकक नियम जानब आ ओकर प्रयोग करब सेहो सीखि लेब ।

13.2 वाचन

सज्जनवृन्द ! अहाँलोकनि जनितहिं छी,

1) मातृभाषामे भक्ति ककरा नहि होइत छैक ? जन्महिसँ जे बोली माइक मुहें सुनबाक सौभाग्य होइत छैक, जाहि बोलीक स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक, जाहिमे अपन हृद्गत भावक स्वतः उद्गार होइत छैक, तकर परित्याग केयो कोना कय सकैत अछि ? मैथिलीक सेवा करबामे, मैथिलीक उन्नतिक इच्छा करबामे, मैथिलीक प्रचारक उद्योग करबामे कोनो प्रकारक यदि उदासीनता हमरालोकनि देखाबी तँ लज्जाक विषय थिक ।

2) बन्धुगण ! हम ई स्पष्ट कय देबय चाहैत छी जे हमर ई इच्छा नहिं जे मैथिली हिन्दीक स्थान लिअय । हिन्दीकें हम राष्ट्रभाषा मानैत छी, हिन्दीक हम यथासाध्य सेवा करब, हिन्दीक समस्त देशमे प्रचार हो, तकर हम उपाय करब । परन्तु हमरा इहो कहैत संकोच नहिं जे हिन्दी हमर मातृभाषा नहिं थिक । हिन्दी हमर मातृभाषाक स्थान नहिं लय सकैत अछि । हिन्दीक व्यवहार हम नेनासभमे, स्त्रीवर्गमे, अपन घरक कार्यमे नहि कय सकैत छी । राष्ट्रभाषा प्रचारक अर्थ ई नहिं जे प्रान्तीय भाषासभक हानि हो अथवा ओकर लोप हो ।

3) एतबा अवश्य जे संस्कृतसँ मैथिली आओर हिन्दीक सम्बन्ध अछि । इहो सत्य जे हिन्दीक प्रचारक्षेत्र अधिक विस्तृत अछि । इहो हम सहर्ष स्वीकार करैत छी जे हिन्दी हमर राष्ट्रभाषा थिक, परन्तु हमर ओ मातृभाषा नहिं थिक ।

4) ई हमर मातृभाषा थीक । एकर व्याकरण, एकर रचनाशैली, एकर लिपि हिन्दीसँ भिन्न अछि । तथापि हिन्दिअहुक अनुशीलन हमरालोकनि दत्तचित्त भऽ करी, से सर्वथा उचित ।

5) मिथिलामे हिन्दीक विरोध कहियो नहि छल । अनेक मैथिल हिन्दीमे काव्यरचना कयने छथि । बड़ सुन्दर पद्य मैथिल कवि रचित प्रकाशित भऽ चुकल अछि । किछु अमुद्रितो अछि । थोड़ेक मैथिल रचित हिन्दी काव्यक उदाहरण एहिठाम उपस्थित करैत छी–

I) कुंडल मंडित है श्रुति मंडल कीर तनूरुह से तनु सुन्दर
आनन कमल विलासिनि चुम्बित, नवल नितम्बिनि से मदमन्तर

– लोचन

II) हरिबिनु या ब्रज की गति कैसी ।
भूषण वसन भरी सुन्दर तनु होत जीव बिनु जैसी ॥ – हर्षनाथ

III) साजनि, विषम विरह जैहें
सावन मासमे पुरिहें आशा प्रीतम पासमे ऐहें ॥ – चन्द्रकवि

6) मैथिल कवि हिन्दीमे नाना प्रकारक छन्दक व्यवहार कयने छथि जकर आबक कवि नामोसँ परिचित नहि– परन्तु ईसभ अथवा आओरो लेखक हिन्दीकें देशव्यापी राष्ट्रभाषा मानि हिन्दीमे रचना कयलनि, अपन मातृभाषा मानि नहि । मातृभाषाक स्थान तँ सदा मैथिलिएकें छल ओ अछि ।

7) मैथिलीमे केवल हिन्दुए रचना कयने होथि से नहि । लोचन कविक 'रागतरंगिणी' मे अनेक मुसलमान कविक पद्य भेटैत अछि, जाहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे समस्त मिथिला प्रान्तमे सकल जनसाधारण हिन्दू की मुसलमान मैथिलीकेँ साहित्यिक भाषाक रूपमे व्यवहार करैत छल ओ करैत अछि, सभ तरहक काव्य एहि भाषामे करैत छल । मुसलमान-मैथिल एहि भाषामे 'मर्सिया'क रचना कयने छथि–

"जाही वन धाहे अम्मा सिकियो नै डोलै रे, हाय हाय ।
ताही वन हंशा छइ लड़इ रे हाय हाय ।'

'शिया-सम्प्रदाय' मुहर्रममे 'मर्सिया' गाबि कर्बलाक दुर्घटनाक स्मृति जागृत रखैत अछि ।

8) प्रत्येक साहित्यिक भाषामे पद्यक अतिरिक्त गद्य-ग्रन्थहुक रहब आवश्यक । भारतक बहुत कम प्रचलित भाषामे ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'सँ प्राचीन अथवा विलक्षण गद्य-ग्रन्थ उपलब्ध अछि । मैथिलीमे छौ सय वर्ष पूर्व एहन सुन्दर ग्रन्थक रचना भेल जकर साम्य आधुनिक गद्य कठिने कय सकैत अछि । एकर शैली तँ ठाम-ठाम बाणक 'कादम्बरी'क शैलीक तुलना कय सकैत अछि । एहन सुन्दर गद्य कोनो प्रचलित भाषामे भेटब कठिन । एतेक प्राचीन समयसँ आओर कोनो प्रचलित भाषा ताहि रूपमे संरक्षित नहि अछि –ई विशेषता मैथिलीए टामे अछि ।

9) जे साहित्य उत्तर भारतक कोनो आओर साहित्यसँ काव्यमे, नाटकमे, गद्यमे न्यून नहि तकर ह्रास हो, क्षति हो– से हमरा कखन सह्य भऽ सकैत अछि ? जाहि भाषाकेँ हम अपन माइक मुँहेँ सुनलहुँ आओर जन्महिँसँ सिखलहुँ, तकरा हम बिसरि जाइ अथवा भाषान्तरक स्नेहक कारणेँ तिरस्कार करी, से कोना सम्भव ?

10) मैथिलीक उन्नति आओर साहित्यक वृद्धि तहिखन हयत जखन ई स्कूल, पाठशाला इत्यादिमे पाठ्यविषय भऽ जायत आओर शिक्षित मैथिल समुदाय मातृभाषामे ग्रन्थ-रचना करत । मैथिली पत्र-पत्रिकाक ग्राहकक संख्यामे वृद्धि हयत । उदासीनतासँ काज नहि चलत । प्रत्येक विषयपर प्रत्येक श्रेणीक उपयोगक हेतु पाठ्यपुस्तकक रचना होमक चाही । विज्ञान, भूगोल, इतिहास, गणित सभ विषयपर जखन पुस्तक तैआर भऽ जायत तखन ओकरा स्वीकार करबामे केओ आपत्ति नहिँ करत ।

11) जनतासँ सहायताक आशा अधिक नहिँ, परन्तु एखनहुँ देशमे मैथिल एहन बहुत छथि जे द्रव्यक दान दय अपन साहित्यानुराग तथा देशाभिमानक परिचय दय सकैत छथि । तेँ पुस्तक प्रकाशनार्थ कोषक आयोजन हो । यदि तीन-चारि प्रयत्नशील विद्वान ई कार्य अपना ऊपर लेथि तँ बहुत शीघ्र उत्तम साहित्य भंडार प्रस्तुत भऽ सकैत अछि ।

12) हम अपना भाषा आओर साहित्यसँ अनुराग करी से सर्वथा उचित । अपन पूर्वजक कृतिकेँ सुरक्षित राखी सेहो उचित । ओकरा प्रति गौरव स्वाभाविक । परन्तु हमर आओरो कर्त्तव्य अछि । केवल भाषाक रक्षा कर्त्तव्य नहिँ, एकर उन्नति, सर्वसाधारणमे एकर शुद्धरूपेँ प्रचार हो– सेहो हमर कर्त्तव्य थीक । काज कयनिहारक संख्या तँ सभ संस्थामे थोड़े होइत छैक, परन्तु आवश्यकता अछि तत्परताक, उत्साहक, अनन्त परिश्रमक । आवश्यकता अछि मुद्रणार्थ धनक, सफलतार्थ ग्राहकक, प्रान्तीय शिक्षा विभागसँ सहयोगक, विश्वविद्यालयक कृपादृष्टिक । आवश्यकता अछि जनकतनयाक अनुकम्पाक ।

13) हम किछु आवश्यक कार्यक विवरण दय ओकर साधनक वर्णन करब । सर्वप्रथम मैथिली-कोषक सम्पादन हयब आवश्यक । एहि लेल पाँच विद्वानक समिति नियुक्त हो

जे एकर भार अपना ऊपर लेथि । मैथिली साहित्यसँ शुद्ध मैथिली शब्दक आओर संस्कृतसँ अपभ्रष्ट मैथिली रूपमे व्यवहृत शब्दक संग्रह करक चाही। एकर अतिरिक्त बहुत शब्द एहन अछि जे बनियाँ, लोहार, सोनार, कुम्हार, चमार, डोम, कमार, खेतिहर, पजिआड़, पुरोहित, नटुआ, बजनिआँ, धोबि, नापित-इत्यादि अपन-अपन व्यवसाय-विशेषमे व्यवहार करैत छथि- तकरो संग्रह आवश्यक । खीसा-कहानिओक संग्रह करबाक चाही । मैथिलीक एकटा विशद व्याकरणक आवश्यकता अछि । मिथिलाक गामक नामक उत्पत्तिक अन्वेषण एवं ओकर प्राचीन इतिहास प्रामाणिक रूपमे लिखयबाक चाही । ग्राम्यगीतक सुन्दर संग्रह होबाक चाही, कारण सिनेमाक गीत, गजल, कव्वाली इत्यादि जनप्रिय भेल जाइत अछि आओर हमर चिर संचित साहित्यिक धन लुप्तप्राय भेल जाइत अछि । कोबर, समदाउनि, गौरीक गीत, गोसाउनिक गीत, जे हम बाल्यावस्थामे वयोवृद्धा कुटुम्बिनीक मुहेँ सुनैत छलहुँ, से आबक स्त्रीगण बिसरल जाइत छथि- ओकर संग्रह होयबाक चाही । काव्यकलाक दृष्टिसँ एहि गीतसभमे चमत्कार हो वा नहि, समाजक, जन-स्थितिक, दैनिक जीवनक प्रतिबिम्ब तँ एहिमे अवश्य भेटत । एहिमे एक अपूर्व मौलिकता, सरलता, स्वाभाविकता भेटत । एहिमे जनसाधारणक विलाप, करुणोद्रेक, आह्लाद भेटत, एहिमे भेटत हृदयक उद्‌गार, चित्तक नैराश्य, सन्तानक ममता ।

14) मैथिलीप्रेमी समाजसेवी मित्रगण ! छोट-छोट केन्द्र स्थापित कय दू-तीन व्यक्ति भिन्न-भिन्न स्थानमे जा ओहि ठामक परिस्थितिसँ परिचित भऽ जाथि आ प्राचीन पुस्तक-संग्रहक संरक्षण, नवीन पुस्तकालय-वाचनालयक स्थापना, व्याख्यानमालाक आयोजन, साहित्यिक यात्राक प्रबन्ध, विद्यापति एवं अन्य प्रमुख साहित्य-निर्माताक जन्मस्थानपर वार्षिक उत्सवक प्रबन्ध कयल जाय ।

15) भाषा समिति, देश-दर्शन समिति, पशु-पक्षी समिति, वृक्ष-वनस्पति समिति, जन-विज्ञान समिति, संस्कृति समिति स्थापित होयबाक चाही, जाहिसँ मिथिलावासी अपन देशक सभ विषयक ज्ञानोपार्जन कय सकथि । भाषा समिति द्वारा वैज्ञानिक अन्वेषण, कोषक निर्माण होबाक चाही । देश-दर्शन समितिक उद्देश्य ई हो जे मिथिलाक भौगोलिक वर्णन तैआर हो एवं प्रत्येक नगरी, नदी, तीर्थस्थान, ऐतिहासिक स्थानक प्राचीन कालसँ आइ तकक वर्णन तैआर हो । जन-विज्ञान समिति सभ जातिक अध्ययन करथि । यदि व्यवस्थित रूपेँ किछु दिन तक एहि प्रकारक कार्य हो तँ हम अपन साहित्य आओर संस्कृतिसँ परिचित भऽ मिथिलाक यथार्थ गौरवक वृद्धि कय सकब ।

16) यदि केओ निष्पक्ष रूपसँ एहि साहित्यक अवलोकन करय तँ ई ज्ञात करत जे एतय सदैव साहित्यक सृजन भेल अछि । साहित्यक पारम्परिक इतिहास वर्त्तमान अछि । एतबा रहितहुँ कोनो भाषा-साहित्य तखनहि सर्वाङ्गपूर्ण भऽ सकैत अछि जखन ओहि भाषाक एक स्वतन्त्र अपन लिपि रहैक । मैथिलिओकेँ अपन स्वतंत्र लिपि छैक तिरहुता । तिरहुता लिखबामे जे सुगमता, समयक अल्पता आदि गुण छैक से प्रत्यक्षे अछि । एहि प्रकारक प्राचीन, सर्वाङ्गपूर्ण लिखबामे सुकर, देखबामे सुन्दर, मैथिली साहित्यक प्रधान अङ्ग मैथिली लिपिक अस्तित्वक रक्षा करब एवं जनतामे एकर प्रचार बढ़ायब परम कर्त्तव्य थीक । मैथिली भाषाक उन्नतिक हेतु मैथिली लिपिक व्यवहार अत्यन्त आवश्यक अछि ।

17) जेना देश-देश भ्रमण कऽ, नाना रम्य स्थानसँ मुग्ध भऽ, विविध भाषाक सौन्दर्यसँ प्रभावित भऽ, भिन्न-भिन्न रसक आस्वादन कऽ, अन्य साहित्यक सुधापान कऽ, प्रत्येक व्यक्ति अपन अन्तिम समय अपन मातृभूमियेमे व्यतीत करय चाहैत अछि, तहिना शेक्सपिअरक परिचय कऽ, गालिबक अध्ययन कऽ, सूर ओ बिहारीक वात्सल्य ओ

शृंगारमय कवितासँ आप्यायित भऽ, बंकिम एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुरक ग्रन्थरत्नक अवलोकन कऽ, हम आब इएह चाहैत छी जे विद्यापति तथा गोविन्ददासक स्वर सुनैत, मातृभाषाक राग अलापैत मैथिलीकें अपन हृदय अर्पित करी ।

अपने सबहिक हम बहुत समय लेल । अपनेलोकनिकें धैर्यपूर्वक सुनबाक हेतु बहुत धन्यवाद ।

बोध प्रश्न

1) वाक्यक अंतमे कोष्ठकमे देल गेल कोनो एक सही शब्दसँ रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू ।

i) मातृभाषामे .... ककरा नहि होइत छैक ?
[शक्ति, भक्ति, विरक्ति]

ii) हिन्दीकें हम .... मानैत छी ।
[मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा]

iii) मुसलमान-मैथिल एहि भाषामे .... रचना कयने छथि ।
[सोहरक, समदाउनक, मर्सियाक]

iv) पुस्तक प्रकाशनार्थ .... आयोजन हो ।
[कोषक, सभाक, पर्वक]

v) मैथिलिओकें अपन स्वतंत्र लिपि छैक ....।
[देवनागरी, तिरहुता, रोमन]

2) निम्नलिखित वाक्य कथ्यक दृष्टिसँ सही अछि अथवा गलत ?

i) मैथिलीक प्रचारक उद्योग करबामे कोनो प्रकारक यदि उदासीनता हमरा लोकनि देखाबी तँ लज्जाक विषय नहि ।
( ) सही ( ) गलत

ii) हिन्दीक व्यवहार हम नेनासभमे, स्त्रीवर्गमे, अपन घरक कार्यमे नहि कय सकैत छी ।
( ) सही ( ) गलत

iii) मैथिलीक लिपि हिन्दीसँ भिन्न नहि अछि ।
( ) सही ( ) गलत

iv) प्रत्येक साहित्यिक भाषामे पद्यक अतिरिक्त गद्य-ग्रन्थहुक रहब आवश्यक ।
( ) सही ( ) गलत

v) हम अपना भाषा आओर साहित्यसँ अनुराग करी से सर्वथा उचित ।
( ) सही ( ) गलत

3) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर मात्र तीन-चारि पाँतीमे दियऽ ।

i) मातृभाषाक महत्त्व देखाउ ।

....

....

....

....

ii) ग्राम्यगीतक अर्थ बुझाउ ।

....

....

....

....

....

iii) देश-दर्शन समितिक उद्देश्य की होअय ?

....

....

....

....

....

iv) डॉ० अमरनाथ झा अपन भाषणक अंतमे अपन हृदय ककरा अर्पित करऽ चाहैत छलाह ?

....

....

....

....

....

v) मिथिलावासी अपन देशक सभ विषयक ज्ञानोपार्जन करबाक हेतु की करथि ?

....

....

....

....

4) एतऽ किछु शब्द-समूह देल गेल अछि । प्रत्येक समूहमे एक शब्द एहन अछि जे ओहि शब्द-समूहसँ मेल नहि खाइत अछि । ओहि शब्दक उल्लेख करू ।

i) मर्मस्पर्शी, चित्ताकर्षक, हृदयस्पर्शी, अनाकर्षक ( )

ii) प्रचार, व्यापार, पसार, प्रसार ( )

iii) नेनासभमे, शिशुवर्गमे, स्त्रीवर्गमे, बालकवृन्दमे ( )

iv) वृद्धि, अवनति, उन्नति, विकास ( )

v) उत्सव, उमंग, उल्लास, उद्भट ( )

5) निम्नलिखित कारिकामे क, ख, ग खंडमे उचित शब्द लिखू ।



6) निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्ति करू ।

i) ज्योतिरीश्वरक गद्यग्रन्थ .... अछि ।

ii) हिन्दी हमर .... थिक ।

iii) लोचन कविक रचना .... अछि ।

iv) मातृभाषा हमरालोकनिक .... अछि ।

v) राष्ट्रभाषा प्रचारक अर्थ ई नहिं जे ....हानि हो ।

13.3 भाषाक शैलीगत विशेषता

एहि इकाइमे डॉ० अमरनाथ झाक भाषण देल गेल अछि । एहि भाषणकेँ पढ़बाक क्रममे अहाँ ई अनुभव कयने होयब जे लिखबाक भाषा एवं बोलचाल अथवा भाषणक भाषामे अन्तर होइत छैक । भाषण पहिनेसँ लिखल नहि अछि तेँ वक्ताकेँ बजैत काल वाक्यक रचना सेहो करऽ पड़ैत छैक । तेँ भाषणमे लिखित गद्य जेकाँ पैघ, मिश्र एवं कठिन वाक्य नहि होइछ, अपितु छोट-छोट वाक्य होइछ, जे कतिपय उपवाक्यक संग मिलिकऽ बनैत अछि । वक्ता अपन विचारकेँ स्पष्ट करबाक हेतु, कोनो बिन्दुपर बल देबाक हेतु आ लोककेँ प्रभावित करबाक हेतु कखनो एके शब्द अथवा वाक्यकेँ कतेको रूपमे दोहरबैत अछि, अथवा ओ अपन सम्पूर्ण मंतव्यकेँ एहन छोट-छोट उपवाक्यमे बाँटिकऽ बजैत अछि, जाहिसँ विषयपर अधिक बल पड़ैक । बजनिहार श्रोताकेँ अपन बातमे सम्मिलित करबाक हेतु ओकरा प्रत्यक्ष रूपेँ संबोधित करैत अछि, श्रोताक भिन्न-भिन्न श्रेणीक फराक-फराक चर्चा करैत अछि, ओकरा सोझे आग्रह कऽ आकृष्ट करैत अछि । एतऽ हम किछु उदाहरण एवं अभ्यासक द्वारा भाषणक शैलीगत विशेषताकेँ बुझयबाक प्रयास करब ।

13.3.1 पुनरावृत्ति

भाषणमे अपन बातकेँ स्पष्ट करबाक हेतु आ ओहिपर बल देबाक हेतु वक्ता पुनरावृत्ति करैत अछि । उदाहरणार्थ– एहि इकाइमे देल गेल भाषणक निम्नलिखित अंशकेँ देखू :

क) जन्महिसँ जे बोली माइक मुहेँ सुनबाक सौभाग्य होइत छैक, जाहि बोलीक स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक, जाहिमे अपन हृदगत भावक स्वतः उद्‌गार होइत छैक .... ।

उक्त वाक्यक रेखाँकित वाक्यांशमे 'जे बोली', 'जाहि बोलीक' एवं 'जाहिमे' कथनक पुनरावृत्ति अछि, जे अपन बातकेँ स्पष्ट करबाक हेतु प्रयुक्त भेल अछि, संगहि एहिमे बातपर सेहो बल देल गेल अछि ।

ख) मैथिलीक सेवा करबामे, मैथिलीक उन्नतिक इच्छा करबामे, मैथिलीक प्रचारक उद्योग करबामे कोनो प्रकारक यदि उदासीनता हमरालोकनि देखाबी तँ लज्जाक विषय थीक ।

उपर्युक्त वाक्यमे रेखांकित शब्दक पुनरावृत्ति अपन बातपर बल देबाक हेतु अछि ।

ग) भाषणमे पुनरावृत्ति लेल वक्ता एकहि-शब्दक कतिपय पर्यायवाचीक प्रयोग सेहो करैत अछि जाहिसँ ओकर बातपर बल पड़ैक ।

"मैथिलीक उन्नति आओर साहित्यक वृद्धि तखिखन हयत जखन ई स्कूल, पाठशाला इत्यादिमे पाठ्यविषय भऽ जायत ।"

एहि वाक्यमे स्कूल आओर पाठशाला पर्यायवाची शब्दक प्रयोग बल देबाक हेतु कयल गेल अछि ।

एहि प्रकारेँ पुनरावृत्तिक हेतु वक्ता शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्यकेँ दोहरबैत अछि अथवा बातकेँ विस्तार करैत अछि, पर्यायवाची शब्दावली (स्कूल, पाठशाला)क प्रयोग करैत अछि ।

अभ्यास

1) निम्नलिखित वाक्यमे देखाउ जे कतऽ पुनरावृत्ति भेल अछि ?

i) हिन्दीकेँ हम राष्ट्रभाषा मानैत छी, हिन्दीक हम यथासाध्य सेवा करब, हिन्दीक समस्त देशमे प्रचार हो, तकर हम उपाय करब ।

....

....

....

ii) मैथिलीक सेवा करबामे, मैथिलीक उन्नतिक इच्छा करबामे, मैथिलीक प्रचारक उद्योग करबामे कोनो प्रकारक उदासीनता उचित नहि ।

....

....

....

iii) जे काव्यमे, नाटकमे, गद्यमे न्यून नहि, तकर ह्रास हो, क्षति हो– से हमरा कखन सह्य भऽ सकैत अछि ?

....

....

....

iv) आवश्यकता अछि तत्परताक, उत्साहक, अनन्त परिश्रमक । आवश्यकता अछि मुद्रणार्थ धनक, सफलतार्थ ग्राहकक । आवश्यकता अछि जनकतनयाक अनुकम्पाक ।

....

....

....

2) निम्नलिखित वाक्यमे जे पुनरावृत्ति भेल अछि, तकर की कारण ? (कथ्यक स्पष्टता, बातपर बल देबाक हेतु अथवा आग्रह) ।

i) हम अपना भाषा आओर साहित्यसँ अनुराग करी से सर्वथा उचित । अपन पूर्वजक कृतिकेँ सुरक्षित राखी सेहो उचित । ओकरा प्रति गौरव स्वाभाविक । [ ]

ii) प्रत्येक विषयपर प्रत्येक श्रेणीक उपयोगक हेतु पाठ्यपुस्तकक रचना होमक चाही । विज्ञान, भूगोल, इतिहास, गणित सभ विषयपर जखन पुस्तक तैयार भऽ जायत तखन ओकरा के उपेक्षा करत ? [ ]

iii) सर्वप्रथम मैथिलीकोषक सम्पादन हयब आवश्यक । एहि लेल पँच विद्वानक समिति नियुक्त हो जे एकर भार अपना ऊपर लेथि । [ ]

13.3.2 वाक्यक्रम

भाषणक भाषा लिखित भाषा सन बान्हल नहि होइत छैक, कारण भाषणक भाषामे वक्ता अपन बातकेँ कहैत क्रम दैत छैक, तेँ स्वाभाविक थिक जे ई भाषा किछु अव्यवस्थित होइत छैक । एहिमे शब्द आ पदक क्रम सेहो लिखित भाषासँ भिन्न होइत छैक ।

उदाहरण : "मैथिलिओकेँ अपन स्वतंत्र लिपि छैक तिरहुता ।"

एहि ठाम लिखित भाषामे इहो भऽ सकैत छैक– "मैथिलिओकेँ अपन स्वतंत्र लिपि तिरहुता छैक ।" एतऽ वाक्यक्रममे परिवर्त्तन भेलैक, मुदा अपन कथ्यपर बल देबाक हेतु एहन प्रयोग कयल जाइत छैक ।

उदाहरण : "मातृभाषाक राग अलापैत मैथिलीकेँ अपन हृदय अर्पित करी ।"

एहि ठाम सेहो लिखित भाषामे क्रम बदलि सकैत छैक– "मैथिलीकेँ अपन हृदय मातृभाषाक राग अलापैत अर्पित करी ।" मुदा भाषणक वाक्यमे वक्ताक अपन शैलीक अनुसार वाक्यक क्रम रहैत छैक ।

अभ्यास :

3) निम्नलिखित वाक्यकेँ सही क्रममे राखू ।

i) ककरा नहि मातृभाषामे भक्ति होइत छैक ?

....

....

....

ii) मैथिली हिन्दीक स्थान लिअय से हमर इच्छा नहि ।

....

....

....

iii) तत्परताक, उत्साहक, अनन्त परिश्रमक आवश्यकता अछि ।

....

....

iv) बहुत शीघ्र उत्तम साहित्यभंडार प्रस्तुत भऽ सकैत अछि यदि तीन-चारि प्रयत्नशील विद्वान ई कार्य अपना ऊपर लेथि ।

....

....

v) जखन भाषाक एक स्वतंत्र अपन लिपि रहतैक तखनहि कोनो भाषा-साहित्य सर्वाङ्गपूर्ण भऽ सकैत अछि ।

....

....

13.3.3 उपवाक्य

भाषणमे वाक्य-रचना एहि प्रकारेँ कयल जाइत अछि, जाहिसँ कथ्य स्पष्ट होइत चल जाय आ अपन बातपर बल सेहो अधिक पड़य । एहि लेल वक्ता उपवाक्यक अधिक उपयोग करैत अछि । जेना अहाँ जनैत छी जे वाक्य तँ कहल जाइत छैक एहन शब्दसमूहकेँ, जे विचार सम्पूर्ण रूपमे प्रकट करा देअय । जेना 'मिथिलामे हिन्दीक विरोध कहियो नहि छल' ई वाक्य अछि । एहिमे शब्दक एहन समूह छैक जे पूरा विचार प्रकट कऽ देने छैक, मुदा जखन पूरा विचारकेँ प्रकट करबाक हेतु एकसँ अधिक वाक्यक आवश्यकता होइक आ ओसभ एके दीर्घ वाक्यक अन्तर्गत रहैक, तखन ओहि प्रत्येक वाक्यकेँ उपवाक्य कहल जाइछ । उदाहरणार्थ–

"मैथिल कवि हिन्दीमे नाना प्रकारक छन्दक व्यवहार कयने छथि, जकर आबक कवि नामोसँ परिचित नहि" एहि वाक्यमे दू उपवाक्य अछि– पहिल अछि "मैथिल कवि हिन्दीमे नाना प्रकारक छन्दक व्यवहार कयने छथि ।" दोसर अछि "जकर आबक कवि नामोसँ परिचित नहि ।"

एतऽ ई ध्यान रखबाक आवश्यकता छैक जे यद्यपि भाषणक भाषा आ लिखबाक भाषा दुनूमे उपवाक्यक प्रयोग बेशी होइत छैक, जे हम डॉ० अमरनाथ झाक उपर्युक्त भाषणमे देखि सकैत छी ।

भाषणमे ई उपवाक्य सम्पूर्ण वाक्य-रचनामे पसरल रहैत छैक । यदि हम एकरा लिखबाक भाषामे परिवर्त्तित कऽ दिऐक तँ स्वाभाविक थिक जे भाषणमे प्रयुक्त वाक्य-रचनाक तुलनामे लिखित वाक्य छोट आ बेशी सुगठित होयतैक ।

उदाहरण :

भाषणक वाक्य– "हिन्दीकेँ हम राष्ट्रभाषा मानैत छी, हिन्दीक हम यथासाध्य सेवा करब, हिन्दीक समस्त देशमे प्रचार हो, तकर हम उपाय करब ।" (20 शब्द)

लिखित वाक्य–

"हिन्दीकेँ हम राष्ट्रभाषा मानैत यथासम्भव सेवा कऽ समस्त देशमे प्रचारक उपाय करब ।" (12 शब्द)

उदाहरण :

भाषणक वाक्य– "शेक्सपिअरक परिचय कऽ, गालिबक अध्ययन कऽ, सूर ओ बिहारीक वात्सल्य ओ शृंगारमय कवितासँ आप्यायित भऽ, बंकिम एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुरक ग्रन्थरत्नक

अवलोकन कऽ हम आब इएह चाहैत छी जे विद्यापति तथा गोविन्ददासक स्वर सुनैत मातृभाषाक राग अंलापैत मैथिलीकेँ अपन हृदय अर्पित करी । (41 शब्द)

लिखित वाक्य :–

शेक्सपिअर, गालिब, सूर-बिहारी, बंकिम-रवीन्द्रनाथ ठाकुरक अध्ययन कऽ हम आब विद्यापति-गोविन्ददासक स्वर सुनैत मैथिलीकेँ अपन हृदय अर्पित करी । (20 शब्द)

अभ्यास

4) निम्नलिखित वाक्यकेँ लिखबाक भाषामे परिवर्तित करू–

I) जन्महिसँ जे बोली माइक मुँहेँ सुनबाक सौभाग्य होइत छैक, जाहि बोलीक स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक, जाहिमे अपन हृदयक भावक स्वतः उद्‌गार होइत छैक, तकर परित्याग केयो कोना कय सकैत अछि ?

....

....

....

....

....

II) एहिमे एक अपूर्व मौलिकता, सरलता, स्वाभाविकता भेटत । एहिमे जनसाधारणक विलाप, करुणोद्रेक, आह्लाद भेटत, एहिमे भेटत हृदयक उद्‌गार, चित्तक नैराश्य, सन्तानक ममता ।

....

....

....

....

....

III) देश-देश भ्रमण कऽ, नाना रम्य स्थानसँ मुग्ध भऽ, विविध भाषाक सौन्दर्यसँ प्रभावित भऽ, भिन्न-भिन्न रसक आस्वादन कऽ, अन्य साहित्यक सुधापान कऽ प्रत्येक व्यक्ति अपन अन्तिम समय अपन मातृभूमियेमे व्यतीत करऽ चाहैत अछि ।

....

....

....

....

....

....

13.3.4 संबोधित करब

भाषणमे वक्ता अपन श्रोताकेँ सोझे संबोधित करैत अछि, तेँ ओकर भाषा संबोधनक भाषा होइत छैक। उदाहरणार्थ– प्रारम्भक वाक्य एहि प्रकारक रहैत छैक– 'सज्जनवृन्द, अहाँलोकनि जनितहिँ छी', 'बन्धुगण', 'अपने लोकनिकेँ' इत्यादि। वक्ता कतेको बेर अपन श्रोताकेँ भिन्न-भिन्न वर्गमे विभक्त कऽ ओहि वर्गसँ सम्बन्धित विषयपर अधिक बल देबाक प्रयास करैत अछि। ई हमरालोकनि उपर्युक्त भाषणमे देखि सकैत छी। उदाहरण लेल समाजक प्रबुद्ध वर्गकेँ संबोधित करैत डा० अमरनाथ झा अपन विचार एहि प्रकारेँ रखैत छथि– "मैथिलीप्रेमी, समाजसेवी मित्रगण ! छोट-छोट केन्द्र स्थापित कय दू-तीन व्यक्ति भिन्न-भिन्न स्थानमे जा ओहि ठामक परिस्थितिसँ परिचित भऽ जाथि आ प्राचीन पुस्तक-संग्रहक संरक्षण, नवीन पुस्तकालय-वाचनालयक स्थापना, व्याख्यानमालाक आयोजन, साहित्यिक यात्राक प्रबंध, विद्यापति एवं अन्य प्रमुख साहित्य-निर्माताक जन्मस्थानपर वार्षिक उत्सवक प्रबन्ध कयल जाय।"

लिखित गद्यमे हम एहन संबोधनक प्रयोग नहि कऽ सकैत छी। भाषण करबाक समय एहि प्रकारक संबोधनसँ श्रोताक संग आत्मीयताक सम्बन्ध बनैत छैक आ ओहि घनिष्ठतामे वक्तव्य बेशी प्रभावोत्पादक भऽ जाइत छैक।

13.4 संबोधन कारक

हमरा कखनो ककरो कोनो काज लेल सोर पाड़ऽ पड़ैत अछि। औ बौआ ! हे बच्चा ! हौ भैया ! रौ सुनैत नहि छेँ ? आदि आदि। व्याकरणमे एही प्रकारक बजयबाक हेतु, ध्यान आकृष्ट करबाक हेतु प्रयुक्त शब्दकेँ संबोधन कारक कहल जाइछ। संबोधन कारकक रचनाकेँ हम एहि प्रकारेँ देखि सकैत छी।

	एकवचन	बहुवचन
पुलिंग	बच्चा	बच्चालोकनि
	भैया	भैयालोकनि, भैयासभ
स्त्रीलिंग	बच्ची	बच्चीलोकनि
	भौजी	भौजीसभ

एतऽ अहाँ मैथिलीमे सामान्य रूपसँ प्रयुक्त होबऽबला संबोधनक उदाहरण देखलहुँ। संस्कृत भाषामे संबोधन कारकक किछु अन्य प्रकार सेहो भेटैत अछि, जे बोलचालक भाषामे प्रचलित नहि छैक। हम एहि ठाम मूल शब्दक संग संबोधन कारकक किछु उदाहरण दऽ रहल छी।

मूल शब्द	सम्बोधन
देवी	देवि !
सीता	सीते !
प्रभु	प्रभो !

5) निम्नलिखित शब्दक दुनू वचनमे संबोधन कारकक रूप लिखू ।

मूल शब्द	एकवचन	बहुवचन
सज्जन		
ऋषि		
सभासद		
हम		

13.5 सारांश

एहि इकाइमे अहाँलोकनि डॉ० अमरनाथझाक भाषणक अध्ययन कयलहुँ अछि । एकर अतिरिक्त भाषण-शैलीक विशेषतापर ध्यान देलहुँ अछि । एतऽ इहो देखाओल गेल जे भाषणक भाषा एवं लिखित भाषामे की अंतर होइत छैक एवं संबोधन कारकक प्रयोग कोना कयल जाइत अछि । तेँ एहि इकाइकेँ पढ़लाक बाद अहाँ आब–

- मातृभाषाक महत्त्व जानि गेलहुँ ।
- राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषाक अन्तर बुझि गेलहुँ ।
- मैथिलीक उन्नति करबाक हेतु कोन उपाय करबाक चाही, ताहिपर ध्यान लऽ गेलहुँ ।
- मातृभाषामे साहित्यक प्रचार कोना होयत, एकर विकास कोना होयतैक, से जानि गेलहुँ ।
- भाषण शैलीक की विशेषता होइत छैक, से बुझि गेलहुँ ।
- भाषणक भाषा आ लिखित भाषामे की अन्तर होइत छैक, से देखि लेलहुँ ।
- संबोधन कारकसँ परिचित भऽ ओकर समुचित प्रयोग कऽ सकैत छी ।

13.6 शब्दावली

मर्मस्पर्शी : हृदयकेँ स्पर्श करऽवला ।
हृद्गत : हृदयमे रहनिहार ।
रचनाशैली : लिखबाक (रचना करबाक) पद्धति ।
दत्तचित्त : ध्यानपूर्वक ।
अमुद्रित : अप्रकाशित ।
मर्सिया : मुसलमान भाइ झरनी लऽकऽ दाहाक संग शोकगीत गबैत छथि, तकरे मर्सिया कहल जाइत अछि ।
साम्य : समानता ।
सह्य : सहबा योग्य ।
मुद्रणार्थ : प्रकाशित करबाक हेतु ।
जनकतनया : जानकी ।
नापित : हजाम, नौआ ।
ग्राम्यगीत : गाममे प्रचलित लोकगीत ।
सृजन : रचना ।
मुग्ध : आनन्दित ।

13.7 अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न :

1) I) भक्ति II) राष्ट्रभाषा III) मर्सियाक IV) कोषक V) तिरहुता

2) I) गलत II) सही III) गलत IV) सही V) सही

3) I) मातृभाषा जन्महिसँ माइक मुँहेँ सुनल जाइछ, एकर स्वर आजन्म मर्मस्पर्शी होइत छैक । हृदयक भावक स्वतः उद्‌गार एहिसँ होइत छैक ।

II) कोबर, समदाउनि, गौरीक गीत, गोसाउनिक गीत आदि ग्राम्यगीत थिक जे गाम-घरमे वयोवृद्धा कुटुम्बिनीक मुहेँ सुनल जाइछ । एहिमे मौलिकता, सरलता एवं स्वाभाविकता रहैत छैक ।

III) देश-दर्शन समितिक उद्देश्य ई हो जे मिथिलाक भौगोलिक वर्णन तैयार करय एवं प्रत्येक नगरी, नदी, तीर्थस्थान, ऐतिहासिक स्थानक प्राचीनकालसँ आइ तकक वर्णन तैयार हो ।

IV) डॉ० अमरनाथ झा अपन अन्तिम समय मातृभूमिमे व्यतीत कऽ विद्यापति तथा गोविन्ददासक स्वर सुनैत मातृभाषाक राग अलापैत मैथिलीकेँ अपन हृदय अर्पित करऽ चाहैत छलाह ।

V) मिथिलावासी भाषा समिति, देश-दर्शन समिति, पशु-पक्षी समिति, वृक्ष-वनस्पति समिति, जन-विज्ञान समिति, संस्कृति समिति स्थापित कऽ अपन देशक सभ विषयक ज्ञानोपार्जन कऽ सकैत छथि ।

4) I) अनाकर्षक II) व्यापार III) स्त्रीवर्गमे
IV) अवनति V) उद्‌भट

5) (क) लेखन (ख) सम्पादक (ग) पाठक

6) I) वर्णरत्नाकर II) राष्ट्रभाषा III) रागतरंगिणी
IV) मैथिली V) प्रान्तीय भाषासभक

अभ्यास

1) I) हिन्दीकेँ, हिन्दीक, हिन्दीक

II) मैथिलीक, मैथिलीक, मैथिलीक

III) ह्रास हो, क्षति हो

IV) आवश्यकता अछि, आवश्यकता अछि, आवश्यकता अछि ।

2) I) कथ्यक स्पष्टता II) बातपर बल III) आग्रह

3) I) मातृभाषामे भक्ति ककरा नहि होइत छैक ?

II) हमर ई इच्छा नहि जे मैथिली हिन्दीक स्थान लिअय ।

III) आवश्यकता अछि तत्परताक, उत्साहक, अनन्त परिश्रमक ।

IV) यदि तीन-चारि प्रयत्नशील विद्वान ई कार्य अपना ऊपर लेथि तँ बहुत शीघ्र उत्तम साहित्य-भंडार प्रस्तुत भऽ सकैत अछि ।

V) कोनो भाषा-साहित्य तखनहि सर्वाङ्गपूर्ण भऽ सकैत अछि, जखन ओहि भाषाक एक स्वतंत्र अपन लिपि रहैक ।

4) I) जन्महिसँ जे बोली माइक मुँहेँ सुनबाक सौभाग्य प्राप्त कयल आ जे आजन्म मर्मस्पर्शी रहैत हृद्गत भावनाक उद्गार करैछ, तकरा केओ कोना त्यागत ? (22 शब्द)

II) एहिमे मौलिकता, स्वाभाविकता, सरलताक संगहि हर्ष-विषादक विलक्षण उद्गार भेटत । (9)

III) प्रत्येक व्यक्ति देशाटन कऽ विविध प्रकारक भाषा-साहित्यक रसास्वादन ओ प्रकृतिक दर्शन कऽ अन्तिम समयमे अपन मातृभूमिएमे रहऽ चाहैत अछि । (21 शब्द)

5)

एकवचन	बहुवचन
सज्जन	सज्जनवृन्द
ऋषि	ऋषिगण
हम	हमसभ
सभासद	सभासदलोकनि

13.8 अनुकार्य

डॉ० अमरनाथझाक भाषणक पारा 15 एवं 16 केँ ध्यानसँ पढ़ू एवं ओहि आधारपर निबन्ध लिखू । ओहिमे देल गेल सभ विचारकेँ सुरक्षित राखब आवश्यक अछि ।

इकाइ 14 मानविकी (ललित कला) क भाषा ओ विशेषण

इकाइक रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

एहि इकाइमे हम मानविकीक एक गोट महत्त्वपूर्ण अंग ललित कलापर पाठ प्रस्तुत कऽ रहल छी । कला विषयक पाठ पढ़यबाक मुख्य उद्देश्य एहि विषयसँ सम्बन्धित भाषा, पारिभाषिक शब्दावली एवं रचनाक प्रयोगसँ परिचित करायब अछि। एहि इकाइक अध्ययनक पश्चाति अहाँ :

- मानविकीक भाषा, विशेषत: ललित कलामे प्रयुक्त भाषाक विशिष्टताकेँ चिन्हि सकब तथा भारतीय ललित कलाक विकासोकेँ कहि सकब,
- पाठमे प्रयुक्त विशेषणसभक संदर्भमे विशेषणक अर्थ ओ महत्त्वक विषयकेँ कहि सकब तथा एकर समीचीन प्रयोग कऽ सकब,
- विशेषण शब्दावलीकेँ संज्ञामे बदलि सकब,
- विशेषणक समुचित प्रयोग कऽ सकब,
- दू वा ओहिसँ बेसी वस्तुक तुलनायोग्य वाक्यकेँ ठीक ढंगेँ लिखि सकब,
- वाक्यरचनाक अन्तर्गत मुख्य वाक्यांश आ पूरक वाक्यांशक मादे बुझि सकब तथा वाक्यसभमे लिंग, वचन, कारक आदिक उचित प्रयोग कऽ सकब ।

14.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाइ भारतीय ललित कलासँ सम्बन्धित अछि । अहाँ एहिसँ पूर्वक इकाइमे भाषण-शैलीक विषयमे पढ़ने छी । एहि पाठमे हम अहाँकेँ भारतीय ललित कलाक संक्षिप्त परिचय देब ।

भारतक विभिन्न कला हमर संस्कृतिक वैभवशाली थाती (धरोहरि) थिक । भारतीय कला संकायमे ओहि सभ जाति ओ वर्गक योगदानक प्रतिबिम्ब अछि जे कालक्रमे भारत आबि एतुक्का जनजीवनक संग मिलिजुलि गेल । संस्कृतिए जकाँ भारतीय कला सेहो एहि सभक आपसी अवदानक परिणाम थिक ।

एहि इकाइमे हम मुख्यरूपेण स्थापत्य, मूर्ति, चित्र एवं संगीत कलापर ध्यान देलहुँ अछि । पाठक सङ जे बोधप्रश्न देल गेल अछि, ओहिसँ अहाँकेँ पाठकेँ बुझबामे मदति भेटत । अहाँ देखब जे विशेषणक प्रयोग एहि पाठमे बेसी भेल अछि । एहि लेल व्याकरणिक विवेचनमे हम विशेषणक किछु पक्ष आ भेदपर चर्चा कयने छी । एहिसँ अहाँकेँ विशेषणक ठीक-ठीक प्रयोग करबामे मदति भेटत । एही ढंगेँ 'वाक्य-रचना'मे हम एहन वाक्यसभक रचनापर विचार कयने छी, जाहिमे पूरक वाक्यांशक लिंग, वचन ओ कारकक त्रुटि भऽ जाइत अछि । हम एहन-एहन वाक्य सभक रचनाक नियम आदिपर संक्षेपमे विचार कयलहुँ अछि, एहिसँ अहाँकेँ एहि प्रकारक त्रुटिसभकेँ सुधारबामे मदति भेटत ।

14.2 भारतक ललिता कला

कला की थिक ?

1) हमरालोकनिमे प्राय: सभकेँ निश्चय किछु एहन प्रवृत्ति होइत अछि, जाहिमे विशेष प्रकारक आनन्दक अनुभूति होइछ । ककरहु चलचित्र देखबाक सख तँ ककरहु संगीत सुनबाक आ ककरहु क्रिकेटक कमेन्ट्री सुनबाक । कहबाक तात्पर्य ई जे हम किछु एहनो काजमे रुचि लैत छी, जाहिसँ हमर भौतिक आवश्यकताक पूर्ति तँ नहि होइत अछि, किन्तु जे हमरा मानसिक आ आत्मिक आनन्द दैत अछि । एतबा तँ अवश्य जे हमरालोकनि भिन्न-भिन्न कारबारक आ फराक-फराक रुचिक लोक भऽ सकैत छी । मुदा सत्य तँ ईह थिक जे बौद्धिक आ सांस्कृतिक कार्यवृत्तिसँ सम्बन्ध राखि हम अपन जीवनकेँ उत्तरोत्तर समृद्ध ओ सार्थक बनबऽ चाहैत छी । एकटा गप आर– जहिना भोजनसँ शरीर पोषण तत्त्व प्राप्त करैछ, तहिना कलासँ मन ओ बुद्धि पोषित होइत अछि । तेँ मनुष्य जखन भौतिक जीवनसँ ऊपर उठि मानसिक आ आत्मिक उन्नति लेल प्रयास करैछ तँ ताहिसँ जीवनकेँ सम्पूर्णता ओ सार्थकता अवश्य भेटैत अछि ।

2) हमरा जखन कोनो काज करबाक मन होइत अछि तँ तखनहि हमर ध्यान दुइ दिस जाइत अछि । एक तँ ई जे जाहि बेगरताक वेगसँ हम ओ काज कऽ रहल छी, से निश्चितरूपेण बेगरताक अनुकूल पूर्ण हो । एकरा हम काजक भौतिक पक्ष कहि सकैत छी । जेना हमरा एकटा मचान बनयबाक अछि, तँ हम ओकर बनाबटि आ उपयोगक सभ सुविधापर ध्यान राखब । एहिमे मचानक मजगूती, सुतबामे सुविधा आ मचानक निर्माणमे गज्जर बाँसक उपयोगसँ परहेजपर ध्यान देब । मुदा, जखन हम कोनो काज करैत छी तो विचार करऽ लागी जे ओ काज नीक जकाँ सम्पन्न हो, काज करबामे आनन्द आबय, ओ काज आनहुकेँ आकर्षक ओ आनन्ददायक हो, तँ हम एकरा सौन्दर्य पक्ष कहबैक । जेना मचानक हेतु सुरेबगर खुट्टा, बत्ती आ लाल-पीयर रंगक डोरीक बन्हन दी तँ ओ सुन्दर एवं आकर्षक जे लागओ, मचानक उपयोगितामे कोनो अन्तर नहि पड़त । तैयो, एहिसँ आत्मिक आनन्द तँ भेटबे करत ।

3) एखन धरि जे किछु कहल गेल अछि, ओहिसँ अहाँ एतबा तँ निश्चित रूपेँ बुझि सकैत छी जे 'कला' की थिक । अपन विशेष अर्थमे लोक द्वारा कुशलता एवं दक्षतापूर्वक कयल गेल कार्य 'कला' कहल जायत । मुदा, लोक अपन भौतिक उपयोगसँ प्रेरित भऽ जे कार्य करैत अछि ओ उपयोगी कलाक अन्तर्गत अबैत अछि आ जे काज सुन्दरताक

हेतु करैत अछि ओ 'ललित कला'क अन्तर्गत अबैत अछि। फलतः सौन्दर्यात्मक उद्देश्यक माने अछि जे हमर मन-आत्माकेँ आनन्द देअय।

4) एतऽ हम खाली ललित कलाक चर्चा करब। ललित कला कतेक अछि से अहाँ जनैत छी। अहाँ ताजमहलकेँ देखने होयब, देखने जँ नहियोँ होयब तँ ओकर वास्तुकलाकारिताक प्रशंसा अवश्य सुनने होयब। राजपूत, मुगल आ मिथिला चित्रशैलीकेँ सेहो देखने होयब, भीमसेन जोशी वा रामचतुर मल्लिकक गायन सुनने होयब, विद्यापतिक गीत आ चन्दा झाक रामायण बचने होयब, हरिमोहनझाक 'कन्यादान' वा लिली रेक 'मरीचिका' पढ़ने होयब तथा अनेकानेक हिन्दी ओ मैथिली नाटक देखने होयब। ई सभटा ललित कला थिक। एहि ललित कलाकेँ हम पाँच वर्गमे विभाजित कऽ सकैत छी– स्थापत्य (गृहनिर्माण), मूर्ति, चित्र, संगीत आ काव्य।

14.2.1 ललित कलाक भिन्न-भिन्न स्वरूप

5) जीवनक एक महत्त्वपूर्ण अंग आ बेगरता थिक आवास। ई हमर छोट सन संसार थिक, जतऽ हम जनमैत आ बढ़ैत छी, आ जतऽ हमर सुख-दुखसँ भरल जीवनक कतोक क्षण बितैत अछि। यैह कारण थिक जे मनुष्य अपना लेल सुख-सुविधासँ परिपूर्ण आवासे टा नहि, अपितु भव्यता आ सुन्दरता सेहो देखऽ चाहैत अछि। एहि लेल प्रयोजनीय होइत अछि वास्तुकला ओ स्थापत्यक अनुरूप घर बनायब। तेँ ई 'कला' थिक। एहि कलाकेँ साकार करवा लेल वास्तुकारक विशेष मददिसँ लोक एहि इच्छाकेँ पूर्ण करैत अछि, जे स्थापत्य कलाक अभिव्यक्ति होइत अछि। भवन, महल, दुर्ग, पूजाघर (मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरिजाघर आदि), स्तम्भसभक निर्माणमे सेहो ई कला मूर्त होइत अछि।

6) मंदिरमे स्थापित मूर्ति, जाहिमे भक्तगण ईश्वरक साक्षात रूपक दर्शन करैछ, मूर्तिकलाक उत्कृष्टताकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। मूर्तिकलामे जतऽ शारीरिक सौष्ठवक कलात्मक निर्माण होइत अछि, ओहीठाम मूर्तिक मुखमंडलपर विभिन्न भाव ओ मुद्राकेँ जीवन्त करब ओकर महत्त्वपूर्ण अंग थिक। स्थापत्य कलामे पाथरपर छेनी-हथौड़ीक बारीक चोटसँ सुन्दर आकृति बनाओल जाइत अछि। मूर्ति सेहो पाथरकेँ तरासिकऽ बनैत अछि, मुदा धातु, काठ आ माटिसँ सेहो मूर्तिक रचना होइत रहल अछि। ध्यातव्य जे पाथर अथवा काठक मुरूत तरासल जाइत अछि आ धातुक मुरूत गढ़ल जाइत अछि। स्थापत्य आ मूर्तिकलामेसँ स्थापत्य बेसी स्थूल कला थिक।

7) भवन आ मूर्तिक निर्माण नाम, चाकर आ ऊँच नापमे होइत अछि, तेँ एकरा 'त्रिआयामी' कला कहल जाइछ। चित्रकला, 'द्विआयामी' होइत अछि, किएक तँ चित्रादिक निर्माण नाम-चाकर होइत अछि। चित्रकार कागत, कपड़ा अथवा भीत (देबाल)पर रंग-रेखासँ चित्र बनबैत अछि। स्थापत्य आ मूर्तिकलाक अपेक्षा चित्रकला जीवनक बहुआयामी अंकन कऽ सकैछ। एहि सभ कलामे चित्रकला सभसँ बेसी सूक्ष्म थिक।

8) जँ अहाँ स्थापत्य, मूर्ति आ चित्रकलापर ध्यान देने होइ, तँ ओतऽ अहाँकेँ किछु समान विशेषतापर नजरि पड़ल होयत। जेना ई तीनू कला 'दिक्' पर आधारित अछि, कारण एहि सभकेँ हम दिक् (Space) मे ग्रहण करैत छी। जतऽ धरि भौतिक उपादानक प्रश्न अछि, से एहि तीनू कलामे, जेना स्थापत्यमे पाथर, मुरूतमे पाथर, माँटि, धातु अथवा काठ आदि सरंजामक बेगरता होइत अछि। संगीत आ काव्यकलामे भौतिक उपादानक बेगरता नहि होइछ। दोसर प्रकारक भिन्नता ई होइत अछि जे संगीत एवं काव्यकला काल-आधारित थिक, अर्थात् एहि कलाक आस्वादन हम कालक प्रवाहमे करैत छी। तेसर प्रकारक भिन्नता स्थूलताक अछि। स्थापत्य, मूर्ति आ चित्रकलामे कलाकार लोकनिक भाव ओ विचारादिक अभिव्यक्ति स्थूल रूपमे होइछ, जखन कि संगीत एवं

काव्यमे सूक्ष्म रूपमे । संगीतमे कलाक आधार स्वर आ लय थिक, जकरा कालाकार गायन अथवा वादन द्वारा प्रकट करैछ । संगीतमे भावादिक आरोह-अवरोहक सूक्ष्मताकेँ व्यक्त कयल जा सकैत अछि । तेँ, संगीत काव्यसँ बेसी भावप्रधान होइत अछि ।

9) काव्य आ साहित्य सभसँ फराक ढंगक कला थिक । एहिमे भाषाकेँ कला-रचनाक उपकरणक रूपमे प्रयुक्त कयल जाइत अछि । साहित्य सभसँ सूक्ष्म कला थिक, कारण एकरा माध्यमे हम अपन भाव आ विचारक जटिलता आ सूक्ष्मताकेँ सहजहि प्रस्तुत कऽ सकैत छी । काव्यमे कतोक विधा अबैत अछि, जेना कथा, उपन्यास, नाटक, कविता आदि । नाटक एहि दृष्टिसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि, किएक तँ रंगमंचपर नाटकक प्रस्तुतिमे आन-आन कलाक सेहो समावेश भऽ जाइत अछि । नृत्यक संबंध नाटक आ संगीत दुनूसँ अछि । फलत: एकरा दुनू कलामे सम्मिलित कयल जा सकैछ ।

10) अहाँक मनमे स्वाभाविक रूपेँ ई प्रश्न उठल होयत जे 'फिल्म' कला थिक ? आ फोटोग्राफी ? निश्चित रूपेण ई दुनू कला थिक । फिल्मकेँ नाट्यकला आ फोटोग्राफीकेँ चित्रकलाक विकास कहल जाइत अछि । वस्तुत: आधुनिक तकनीक एहि दुनू कलाकेँ संभव बनौलक अछि ।

बोध प्रश्न

1) नीचाँ किछु शब्द आ ओकर व्याख्या देल गेल अछि । एकरा सभकेँ उचित क्रममे राखू ।

1) मनुष्यक द्वारा कुशलतासँ कयल गेल काज	क) ललित कला
2) भौतिक उपयोगसँ प्रेरित भऽ कयल गेल काज	ख) संगीतकला
3) सौन्दर्यक उद्देश्यसँ प्रेरित भऽ कयल गेल काज	ग) उपयोगी कला
4) नाम, चाकर आ उँचाइमे निर्मित कला	घ) चित्रकला
5) काल आधारित कला	ङ) वास्तुकला

2) नीचाँ देल गेल ललित कलासभकेँ विभाजित करू ।

कलाक नाम	काल आधारित	दिक् आधारित	त्रिआयामी	द्विआयामी	दृश्यकला	श्रव्यकला
	क	ख	ग	घ	ङ	च
स्थापत्य						
चित्रकला						
मूर्तिकला						
संगीतकला						
काव्य						
नाटक						
फिल्म						
फोटोग्राफी						

11) एतेक बुझलाक बाद अहाँक मनमे कदाचित ई जिज्ञासा उत्पन्न होयब स्वाभाविक अछि जे भारतमे एहि कलासभक विकास कहिया आ कोना भेल ? तँ आउ, अहाँकेँ एकर थोड़-बहुत परिचय दऽ दी । भारतमे ललित कलाक इतिहास ओतबे पुरान अछि जतेक भारतक इतिहास । अहाँकेँ बुझल होयत जे भारतक सभ्यताक आरंभ हड़प्पा सभ्यतासँ मानल गेल अछि । ई सभ्यता पाँच हजार वर्षसँ बेसी पुरान अछि । एकर अवशेषकेँ देखलासँ ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे भारतमे ललित कलाक विकास हड़प्पोसँ पुरान अछि, किएक तँ ई सभ्यता खूब विकसित सभ्यता छल । आउ, पाँचोटा ललित कलासँ अहाँकेँ परिचय करबैत छी ।

14.2.2 स्थापत्य कला

12) अहाँ इतिहासक पोथीमे मोहनजोदरो आ कालीबंगामे भेल उत्खननसँ भेटल अवशेषक छायाचित्र देखने होयब । एहि चित्रावलीकेँ देखि अहाँ स्थापत्यक भव्यता ओ दिव्यताक सहजहि अनुमान कऽ सकैत छी । ओहि समयक नगर योजनाबद्ध ढंगसँ बनल होइत छल । घर दुमहला होइत रहय । घरमे सूतऽ-बैसक कोठली, स्नानघरक सङहि छतपर जयबा लेल सीढ़ी बनैत छल । नगरसँ फराक पाकल पजेबाक खूब नमहर-चौड़गर पोखरि बनाओल जाइत छल । ओकरा चारू दिस वस्त्र फेरबा लेल बरंडा आ कोठलीक व्यवस्था छल । ऋग्वेदक ऋचोसभमे दुर्ग आ पुरक चर्च अछि । एहिसँ स्पष्ट अछि जे तत्कालीन युगमे किला, महल आ सुन्दर घर पैघ होइत छल आ ओकर निर्माण नगरीय जीवनक बेगरताक अनुकूल कयल जाइत छल ।

13) हड़प्पा सभ्यताक पछाति जे स्थापत्यक उत्कृष्ट बानगी भेटैछ, ओहिमे मंदिर, स्तंभ, स्तूप, मकबरा, महजिद आदि मुख्य अछि । भारतीय स्थापत्य कलाक आकर्षक रूप मंदिरसभक निर्माणमे व्यक्त भेल अछि । अहाँ मदुरैक मीनाक्षी मंदिर, कोणार्कक सूर्य मंदिर, माउन्टआबूक जैन मंदिर आदि कतेक प्राचीन ओ दिव्य मंदिरकेँ देखने होयब । मुदा ई सभ मंदिर एकहि शैलीक नहि अछि । भारतमे मंदिर-निर्माणक तीन गोट शैली अछि– नागर, द्रविड़ आ वेसर शैली । नागर शैलीक मंदिर उत्तर भारतमे, द्रविड़क दक्षिण भारतमे आ वेसर शैलीक मध्य भारतमे भेटैत अछि । 'वेसर' वस्तुतः नागर आ द्रविड़क मिलल-जुलल रूप थिक ।

14) नागर शैलीमे किछु सामान्य विशेषताक सङ-सङ स्थानीयताक प्रभाव सेहो स्पष्ट झलकैत अछि । एहि शैलीक मंदिर प्रायः 900 ई०सँ 1300 ई०क बीच बनल अछि । हिमाचल प्रदेशक काङड़ा, कुल्लू, चंबा, मण्डी आदिक मंदिर एहि दृष्टिसँ अत्यंत रमणीय अछि । विशेषतः बैजनाथ मंदिर (नवम शती) एहि दृष्टिएँ अवलोकनीय ओ दर्शनीय अछि । राजस्थानमे माउंटआबूक जैन मंदिर (दिलवाड़ा मंदिर) अपन सूक्ष्म चित्रांकन लेल प्रसिद्ध अछि । एहि मंदिरसभक छत बहुमूल्य संगमरमरसँ बनल अछि । ओकरासभक देबाल, छत आ स्तंभ आदिपर कयल गेल कलात्मक चित्रांकन अपन सौन्दर्यक सूक्ष्मतासँ देखनिहारकेँ अभिभूत कऽ लैत अछि । उड़ीसाक मंदिरमे सर्वश्रेष्ठ अछि कोणार्कक सूर्य मंदिर । भारतक सभसँ सुन्दर मनोरम आ दिव्य मंदिरमे एकर गणना होइत अछि । एकर निर्माण-काल थिक तेरहम शताब्दी । मध्य प्रदेशक खजुराहो मंदिर सेहो अपन भव्यता, शिल्प-कौशल आ कायिक दिव्यतामे एकसरे अछि ।

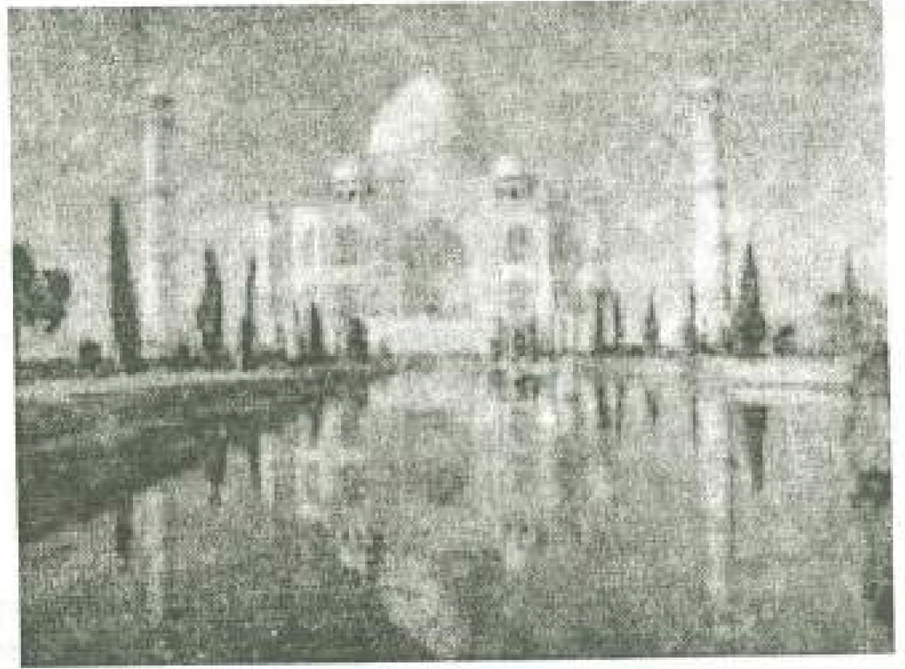
15) द्रविड़ शैली नागरसँ फराक ढंगक अछि । एहि शैलीक मंदिरमे आङनक मुख्य द्वार, जकरा गोपुरम कहल जाइछ, एतेक ऊँच होइत अछि जे ओ प्रधान मंदिरक शिखरकेँ कतोक बेर झाँपि दैत अछि । मुदा तंजौर, गंगैकोंड़पुरम आ कांजीवरमक मंदिर एते ऊँच आ गोपुरमक अनुकूलाकृतिक अछि जे दुनूक सम्बन्ध वास्तुक रमणीयतामे वृद्धिए करैत अछि, घटबैत नहि अछि ।

16) द्रविड़ शैलीक आरंभ ईशाक सातम शताब्दीमे भेल । एकर आरंभ पल्लव राजालोकनिक मदतिसँ भेल, जे कांजीवरममे (कांजी) एहि शैलीक महत्त्वपूर्ण मन्दिर बनौलनि । तंजौरक चोल राजालोकनिक सेहो मंदिर निर्माणमे स्तुत्य प्रयास रहल । तंजौरक विशाल वृहदीश्वर आ सुब्रह्मण्यम मंदिर स्थापत्यक दृष्टिसँ असाधारण अछि । द्रविड़ शैलीक मंदिरसभक अंतिम शृंखला सोलहम शताब्दीक अछि । ई मंदिर विशाल आ भव्य अछि । रामेश्वरम, मदुरै, तेन्नेवेलीक मंदिर एहि दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि । मदुरइक विख्यात मीनाक्षी मंदिर स्थानीय राजा तिरुमल नायक (1623-59) बनबौलनि । एकर गोपुरो अति भव्य अछि । एहन-एहन मंदिरमे असाधारण ढंगक नाम आ झाँपल बरंडा होइत अछि । रामेश्वरमक बरंडा तँ 4000 फीट नाम आ एहिमे अत्यंत सुन्दर अनेक मूर्ति अछि ।

17) अहाँ सारनाथ आ साँचीक बौद्ध स्तूप देखने होयब । सारनाथक धर्मराजिका स्तूप बहुत नामी अछि । स्तूप वस्तुत: एक प्रकारक समाधि स्थल होइछ, जतऽ मृतकक अस्थि राखल जाइत अछि । भारतक सभसँ पुरान स्तूप सामान्यत: माँटि वा पाथरक ठठल भीड़ (टिल्हा) जकाँ होइछ जे देखबामे अर्द्धवर्तुलाकार, ऊँच आ सक्कत लगैत अछि । सारनाथ आ साँचीक स्तूपमे भगवान बुद्धक अस्थि राखल अछि । सारनाथ, भरहुत आ साँचीक स्तूप अशोककालीन अछि ।

18) मुसलमानक आगमनक सङ्गहि हम स्थापत्य कलाक नवयुगमे प्रवेश करैत छी । आगराक ताजमहल, लाल किला, फतेहपुर सीकरी आ ओकर ऊँच दरबाजा, दिल्लीक कुतुबमीनार, हुमायूँक मकबरा, जामा महजिद आदि किछु प्रसिद्ध भवनसभ अछि, जे मुसलमान राजा द्वारा बनबाओल गेल । अहाँ एहिमे किछुओकेँ देखने छी ? एहिमे ताजमहलक सौन्दर्य आ ओकर भव्यताकेँ बिसरल नहि जा सकैछ । मुसलमान राजालोकनि अपन अभिरुचिक अनुकूल स्थापत्य कलाकेँ नव शैली देलनि । हुनकासभ द्वारा बनबाओल भवनादिमे हिन्दू आ मुसलमानक सम्मिलित मेहनति आ प्रतिभा खर्च भेल अछि । विश्वमे अपन तरहक एकसर मीनार (स्तम्भ)– कुतुबमीनारक निर्माणमे हिन्दू वास्तुकारक योगदान रहल अछि । जौनपुरक प्रसिद्ध अताला महजिद, अकबर द्वारा बनबाओल आगराक किला आ फतेहपुर सीकरीक कतोक भवनपर मुगलकालसँ पूर्व भारतीय स्थापत्य शैलीक प्रभाव देखल जा सकैत अछि । दिल्लीमे हुमायूँक मकबरा, जे ताजमहलक बनावटिक सूक्ष्मताक आभास दैछ, अकबर एहि मकबराकेँ इरानी शैलीमे बनबौने रहथि । औरंगजेबकेँ छोड़ि प्राय: सभ मुसलमान राजा कलाक उत्थानमे गंभीर रुचि देखौलनि । मुदा, एहिमे शाहजहाँक योगदान अविस्मरणीय अछि । ओ दिल्लीक लालकिला सहित कतोक भव्य भवन बनबौलनि, मुदा मुगल सभसँ सुंदर आ सौम्य ताजमहलक निर्माण करबाय भारतीय स्थापत्य कलाकेँ शिखरपर पहुँचा देलनि । ताजमहल तँ अपन अनुपम आ विलक्षण सौन्दर्यक कारणेँ विश्वक आठ आश्चर्यमेसँ एक मानल जाइत अछि । शाहजहाँ अपन प्रिय पत्नी आरजूमंद बानू बेगम (मुमताज महल)क स्मृतिमे एकरा बनबौने छलाह । आगरामे यमुनाक कछेरपर उज्जर संगमरमरसँ बनल ई मकबरा अपन शालीनता आ

भव्यतामे अद्वितीय अछि । एहन सुन्दर निर्माणक कल्पनो नहि कयल जा सकैछ । ताजमहलक शिल्पमे स्थापत्यक परिपूर्णता देखल जाइत अछि ।



14.2.3 मूर्तिकला

19) अहाँलोकनि टाकापर तीन मुँहवला सिंहक अंकन देखने होयब, जकर नीचाँ एक चक्रो अछि । यैह चक्र हमर झंडापर सेहो अछि । अहाँकेँ बुझल होयत जे ई हमर राष्ट्रक निसानी थिक । ई निसान सारनाथ (वाराणसी)सँ भेटल अशोकक एक स्तंभक शीर्षसँ लेल गेल अछि । ई स्तंभ-शीर्ष अपन सुन्दरतामे अनुपम अछि । सिंहक शालीनता, प्रकृति-विरुद्ध शान्त मुद्रा अशोकक राजनीतिक अनुरूप छल, जे शांति ओ अहिंसाक सिद्धान्तपर निर्भर छल । ई स्तंभ-शीर्ष मूर्तिकलाक प्रतीकात्मकताक नीक बानगी छल । अहाँ अनैत होयब जे मूर्ति आदि ईश्वरीय प्रतीकक रूपमे, बहुत पहिनहिसँ पूजल जाइत रहल अछि, एहि लेल अव्यक्त ईश्वरकेँ व्यक्त करबाक हेतु मूर्ति-निर्माण भारतमे प्राचीन कालसँ होइत रहल अछि । मूर्ति-स्थापनाक उद्देश्य अतीतक स्मृतिकेँ जीवित राखब सेहो अछि । एहि तरहेँ मूर्ति-निर्माणक पाछाँ लौकिक एवं धार्मिक दुनू उद्देश्य अछि ।

20) स्थापत्य कला जकाँ भारतमे मूर्तिकलाक आरंभ हड़प्पे सभ्यतासँ मानल जा सकैत अछि । स्थापत्य ओ मूर्ति दुनू कलामे हड़प्पाक बादक अवशेष प्राय: मौर्यकाल (325-188 ई०पू०) अथवा ओहिसँ किछु पूर्वक भेटैत अछि । मूर्तिकलोमे यदाकदा परिवर्त्तन होइत रहल अछि आ नव-नव शैली अस्तित्वमे अबैत रहल अछि । मौर्यकालक मूर्तिकलामे यथार्थक आकर्षक सौन्दर्य अपूर्व अछि । अशोककालीन मूर्तिकला ओही युगक अछि । मौर्यकालक पश्चाति शुंग (150-73 ई०पू०) आ शक-कुषाण काल (ई०पू० पहिल शती-300 ई० धरि)मे मूर्तिकलाक विकास भेल । शुंगकला ओतेक यथार्थपरक नहि अछि । एहि दुनू कालखण्डमे मूर्ति लेल पाथर आ माँटिक उपयोग भेल । कुषाण कालक मथुरामे भेटल यक्षणीक मूर्ति विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि, जाहिमे सामाजिक जीवनक आनन्द आ उल्लासकेँ प्रत्यक्ष रूपसँ देखल जा सकैत अछि ।

21) बुद्धक समाधिस्थ मूर्तिसभ मूर्तिकलाक अमूल्य सम्पत्ति थिक । गंधार प्रदेश (अफगानिस्तान)मे ग्रीक कलासर्जक अपन शैलीसँ जाहि भारतीय विषय, अभिप्राय, प्रतीकसभक कलात्मक

रूपायन कयलनि, तकरा गंधार शैलीक नामसँ जानल जाइछ । कुषाणकालहिमे एहि शैलीक विकास भेल । एहि शैलीक मूर्तिसभ बौद्ध स्थल सभसँ उपलब्ध भेल अछि । बुद्धक मूर्ति गुप्तकालो (275-500)मे निर्मित भेल । एहिमे सारनाथक धर्मचक्र प्रवर्त्तन मुद्रामे बैसल बुद्धमूर्ति शिल्पकला ओ सौन्दर्य-प्रभावमे अद्वितीय अछि । वस्तुत: मूर्तिकलाक विकासमे बौद्ध धर्मक योगदान उल्लेखनीय अछि ।



22) हिन्दू धर्ममे मूर्तिपूजा वैष्णव भक्तिक मुख्य आधार रहल अछि । ईश्वरक साकार रूपक आराधना लेल मूर्तियहिकेँ ईश्वर मानि हुनक पूजा-अर्चना वैष्णव भक्तिक मुख्य अंग अछि । ईश्वरक विभिन्न अवतार तथा आन देवी-देवताक मूर्ति-निर्माण बहुत पहिनहिसँ होइत रहल अछि । दोसर-तेसर शताब्दीक पश्चातहिसँ हिन्दू धर्मक पौराणिक देवी-देवता आदिक मूर्ति भेटऽ लागल अछि । शिव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी आदिक मूर्ति एहि दृष्टिसँ अति दर्शनीय अछि । सातम शताब्दीक पश्चातक अधिकांश मूर्तिसभ मंदिरमूर्ति थिक । एहिमे मंदिरमे स्थापित अथवा शिखरपर लिखल मूर्ति विशेष उल्लेखनीय अछि । एहि युगमे कोणार्क, खजुराहो आ एलोराक मंदिरपर अलंकरणक रूपमे लिखल गेल मूर्तिक सुन्दरता देखिते बनैत अछि । कोणार्क आ खजुराहोक यौन-अंकन कलाक दृष्टिएँ अत्यंत उत्कृष्ट अछि ।

23) एगारहम-बारहम शतीक पश्चात औना उत्तर भारतमे मूर्तिकलाक विकास अवरुद्ध भऽ गेल छल, मुदा दक्षिणमे ई विकासमाने छल । शुद्ध अलंकरणक दृष्टिसँ बारहम शतीक चालुक्य आ होयसल मंदिरक मूर्ति अप्रतिम अछि । धातु (विशेषत: ताम आ पित्तरि)क कतोक मूर्ति कर्णाटकमे बारहम आ अठारहम शतीक मध्य निर्मित भेल । एहि दृष्टिएँ नटराज (नृत्य करैत शिव)क मूर्ति अत्यंत सुन्दर आ आकर्षक अछि । भारतीय मूर्तिकलाक विकासमे आधुनिक युगक योगदान महत्त्वपूर्ण अछि । यद्यपि आइ कलापर पाश्चात्य शैलीक प्रभाव बेसी बुझि पड़ैत अछि ।

बोध प्रश्न

3) I) नीचाँ देल वाक्यमे स्थापत्य कलाक विशेषताक उल्लेख अछि, एहिमेसँ एक गोट विशेषता कला लेल नहि अछि । से कोन थिक ?

क) स्थापत्य त्रिआयामी कला थिक ।

ख) स्थापत्य लेल भौतिक उपादानक बेगरता होइछ ।

ग) स्थापत्यक माध्यमसँ कलाकारक विचारसभक सूक्ष्म अभिव्यक्ति होइत अछि ।

घ) स्थापत्य स्थूल कला थिक । ( )

II) निम्नांकित वाक्यमे संगीत कलाक विशेषताक उल्लेख अछि । एहिमे एक गोट विशेषता संगीतपर नहि लगैत अछि, बुझाउ ।

क) संगीत काल आधारित कला थिक ।

ख) संगीत द्विआयामी कला थिक ।

ग) संगीतक माध्यमे कलाकारक भावसभक अभिव्यक्ति होइत अछि ।

घ) संगीतमे कलाक आधार स्वर आ लय अछि । ( )

4) निम्न प्रश्नक उत्तर दियऽ ।

I) मंदिरक शैलीसभक नाम लिखू ।

....

....

....

(II) मुगलकालक स्थापत्य कलाक कोनो तीन बानगीक नाम लिखू ।

....

....

....

III) गंधार शैली ककरा कहल जाइत छैक ?

....

....

....

14.2.4 चित्रकला

24) रंग ओ रेखासँ बनल चित्र मानवक भावनाकेँ व्यक्त करबाक माध्यम रहल अछि । मिर्जापुर आ मध्यप्रदेशमे गुफाक भित्तिपर बनल रेखाचित्र पाषाण युगक थिक । ई चित्र ओहि आदिमानवक भाव-चेतनाकेँ व्यक्त करैछ, जे भय, पूजा आ उल्लासमे चित्र बनौलक । अहाँ कलासँ युक्त संग्रहालयमे कतोक प्रकारक चित्रकेँ देखने होयब, जाहिपर मोगल कालक शैली, राजपूत शैली, कांगड़ा कलम, पर्वतीय (पहाड़ी) कलम आदि पढ़ने होयब । वस्तुतः भारतमे चित्रकलाक कतिपय शैलीक विकास भेल, जकरा हम छौ भागमे विभाजित कऽ सकैत छी–

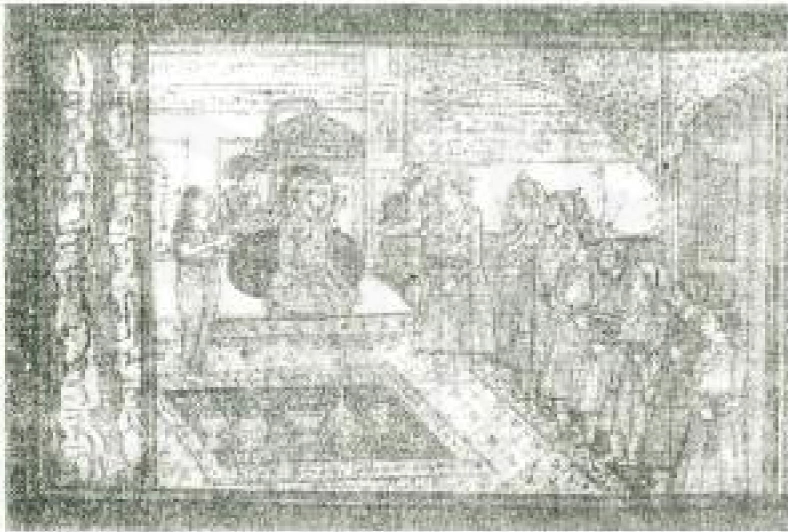
1. अजन्ता शैली 2. गुजरात शैली
3. मोगल शैली 4. राजपूत शैली
5. दकनी शैली 6. आधुनिक शैली

25) अजन्ता शैलीक चित्र भित्तिचित्र थिक आ एहि चित्रक अंकन गुफासभक देबालपर देखल जा सकैछ । ई चित्र ईसासँ सय वर्षसँ लऽकऽ ईशाक पश्चात सातम शती धरिक अछि । अधिकांश चित्र मेटा गेल अछि वा मलिन भऽ गेल अछि । मुदा, जे बचल अछि ओ अद्‌भुत अछि । एहि चित्रसभमे बुद्धक जीवन आ जातक कथाक विविध घटनादिकेँ चित्रित कयल गेल अछि । अलंकरणयुक्त चित्रसभमे अजन्ताक कलाकारलोकनि अपूर्व

कौशलकेँ प्रदर्शित कयलनि अछि । फूल, पक्षी, पशु, गंधर्व, देव सभ सुन्दर ओ जीवंत रूपमे चित्रित कयल गेल अछि । एहिमे अद्‌भुत कोमलता आ सजीवता अछि ।

26) गुजरात शैलीक दोसर नाम जैन शैली थिक, किएक तँ एहि शैलीमे अधिकांशतः जैन कल्पसूत्रेक ग्रन्थ-चित्रण कयल गेल अछि । एहन शैलीक चित्र बेसी पन्द्रहम शतीक अछि । एही शैलीसँ लघुचित्र शैली (मिनिएचर) सेहो बहरायल अछि । एकर विषय धार्मिके नहि, लौकिको अछि ।

27) मोगलकालीन शैली भारतीय चित्रकलाक संसारमे अपन फराक स्थान निर्धारित कयने अछि । ई शैली फारस (ईरान) आ भारतक संयुक्त प्रयासक परिणाम थिक । मोगल शैलीक आरंभ हुमायूँ (16म शती)क कालमे भेल । एहि कलाक प्रोत्साहनमे अकबरक योगदान कम महत्त्वपूर्ण नहि अछि । किछुकेँ छोड़ि प्रायः सभ मोगल चित्र कागतपर बनल अछि । आरंभक मोगल चित्रणमे ग्रन्थचित्रण बेसी भेल । महाभारत, रामायणक फारसी अनुवाद, अकबरनामा, रसिकप्रिया आदिपर बनाओल चित्र उल्लेखनीय अछि । एहि प्रकारेँ साहित्य आ चित्रकलाक सुखद संयोग स्थापित भेल । मोगल शैलीमे लिपिकारितोक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि । मोगल शैली प्रधानतः प्रतिकृति चित्रण थिक । एहिमे व्यक्ति-चित्रणक मुख्यता अछि । मोगल शैलीक प्रभाव भारतीय चित्रकलापर प्रायः अढ़ाइ सय वर्ष धरि रहल । एहि मध्य कतोक हजार नयनाभिराम चित्र बनल ।



मुगल सम्राट

28) राजपूत शैलीक विकास राजस्थान, बुन्देलखण्ड आ हिमालय-पंजाबक राजपरिवारमे भेल । एहि शैलीक चित्र सोलहम शतीक अंत एवं उनैसम शतीक मध्य बनल । राजपूत शैली मूल रूपसँ देशी अछि, मुदा ओहिपर मोगल शैलीक प्रभाव सेहो देखबामे अबैछ । रङक प्रयोग, भूमिक प्रस्तुति आ विषयक चयनमे एहि शैलीक चित्र देशी परम्पराक प्रयोग करैत अछि । स्थान-विशेषक कारणेँ ओकर कतिपय उपशैलियो बनि गेल, जकरा कलम कहल जाइछ । चंबा पहाड़ी, जम्मू, कांगड़ा, बशोली आदि । ई शैली मध्यकालीन काव्यक प्रत्येक प्रवृत्तिकेँ चित्रित करैत अछि । एकर चित्र भारतीय महाकाव्य, पुराण, संगीतशास्त्रकेँ बिनु जनने नहि बुझल जा सकैछ । ओहिमे कला, संगीत आ साहित्यक अद्‌भुत संयोग अछि । रागमालाक चित्र एहि दृष्टिसँ अपूर्व अछि ।

29) दकनी शैली मोगल शैलीसँ प्रभावित प्रान्तीय शैली थिक । इहो प्रतिकृति-प्रधान अछि आ मुख्यतः बीजपुर एवं हैदराबादमे एकर विकास भेल । आधुनिक चित्रकलाशैलीपर

मुख्यत: योरोपीय कलाक प्रभाव अछि, मुदा अवनीन्द्र नाथ ठाकुरक प्रयत्नसँ अजन्ता आ मोगल शैलीकेँ पुनः विकसित करबाक काज कयल गेल । भारतीय कलाकेँ भारतीय जनजीवन ओ कलासँ जोड़ि प्रस्तुत कयनिहारमे अवनीन्द्र नाथ ठाकुरक संगहि नन्दलाल बसु, अमृता शेरगिल, रामकिंकर आदिक नाम प्रमुख अछि ।

14.2.5 संगीत कला

30) गीत-संगीत ककरा रुचिकर नहि लगैछ ? मुदा, रुचि-भिन्नताक दुआरेँ किछु गोटे शास्त्रीय संगीतक आनन्द लैछ तँ किछु गोटे सुगम संगीतमे रमि जाइछ । किछु एहनो लोक छथि जे मनोरंजक सिनेमाक संगीत सुनि झूमि उठैत छथि । गाम-घरक लोक मगन भऽकऽ लोकगीत गबैत छथि । कहबाक तात्पर्य जे कोनहुँ विशेष अवसर हो, बिनु संगीतक ओकर कल्पनो निरर्थक लगैछ । भारतमे तँ संगीत ओतबे पुरान अछि जतेक वेद । वेदक ऋचा पहिनो गाओले जाइत छल आ आबो गाओल जाइत अछि । वस्तुत: सामवेदक रचना तँ एही दृष्टिएँ भेल अछि । ई० शतीक प्रारंभमे भरत नाट्यशास्त्रमे संगीतक विशद व्याख्या प्रस्तुत कयलनि । कालिदास अपन विलक्षण रचना मालविकाग्निमित्र नाटकमे संगीत आ अभिनयपर विस्तृत विचार प्रस्तुत कयलनि । एहिसँ फरिच्छ भऽ गेल जे भारतीय शास्त्रीय संगीतक आरंभ बहुत पूर्वहि भेल छल ।

31) भारतीय संगीत एक व्यवस्थित शास्त्र थिक, जे सर्वत्र सर्वमान्य अछि । राग, स्वर, ताल, वाद्य, भाव ओ अर्थ संगीतक ई मुख्य अंग मानल गेल अछि । रागक विकासमे मुसलमान संगीतकारक विशेष योगदान रहल अछि । तराना, कौल नक्श, गुल आदि अमीर खुसरो प्रचलित कयने छलाह । टप्पा आदि कतोक लोकशैलीकेँ विकसित कऽ ओकरा शास्त्रीय रूप देबाक महत्त्वपूर्ण कार्य सेहो मुसलमाने गायकलोकनि कयलनि । आइयो ध्रुपद, ठुमरी, खयालक गायनमे आगाँ मुसलमाने गायकसभ छथि ।

32) वाद्ययंत्र गीत आ नृत्य दुनूक सहचर थिक । भारतमे कतिपय वाद्यक प्रचलन रहल अछि । संभवत: बँसुली प्राचीनतम वाद्य थिक । नगाड़ा, तुरही (तूर्य), शंख, घंटा, डमरू सेहो प्राचीने वाद्य थिक । वीणा, सरोद, तंबूरा, सारंगी, पखाबज, शहनाइ आदि आन परम्परागत वाद्य थिक । सितार तँ अमीर खुसरो बनौने रहथि ।

33) भारतीय संगीतक दुइ प्रकार रहल अछि– शास्त्रीय ओ लोकसंगीत । लोकसंगीत अपन-अपन क्षेत्रक संगीत-संस्कारक अनुरूप विकसित होइत रहल अछि। शास्त्रीय संगीतक दुइ गोट शैली विकसित भेल– हिन्दुस्तानी आ कर्णाटक । हिन्दुस्तानी उत्तर भारत आ कर्णाटक दक्षिण भारतमे विकसित भेल परम्परा थिक । एहि दुनूमे मौलिक रूपेँ कोनो अन्तर नहि अछि । अन्तर एतबे अछि जे उत्तरमे आन ठामसँ अयनिहार जाति अपन योगदानसँ संगीतक रूप ओ अलंकरणमे किछु परिवर्त्तन कयलनि, मुदा दक्षिणक संगीत ओहनाक ओहने रहल । मुसलमान लोकनिक आगमनसँ भारतीय आ फारसी-अरबी संगीतक संगम भेल आ परिणामस्वरूप कतिपय नव-नव रागक निर्माण भेल । एहिसँ हिन्दुस्तानी संगीत नवीन रूपमे निखार पौलक ।

34) नृत्य ओ संगीतक संबंध प्राचीन अछि । ऋग्वेदमे नृत्यक कतोक उल्लेख भेटैत अछि । शुंगकालीन मूर्तिकलामे नृत्यरत नर्त्तकीक कतिपय रूपक अंकन भेल अछि । संगीते जकाँ नृत्यक सेहो दुइ गोट परम्परा अछि– लोक आ शास्त्रीय । शास्त्रीय परम्पराक दुइ रूप अछि– उत्तर भारतीय आ दक्षिण भारतीय । उत्तर भारतीय नृत्यमे प्रमुख अछि– 'कत्थक' । कत्थकोक विकास मुसलमानी शासकलोकनिक समयमे भेल । कहल जाइत अछि जे अवधक नवाब वाजिद अली शाह कत्थकमे विशेषज्ञ रहथि । कत्थकमे भावक

अभिव्यक्ति बेसी होइछ । दक्षिणक नृत्यसभमे भरतनाट्यमक महत्त्व अछि । मुद्रा आ अंगसभक संचालनमे अनन्त भाव व्यक्त कयल जाइछ । भरतनाट्यमक अतिरिक्त दोसर प्रधान नृत्य केरलक 'कथकली' अछि । वस्तुतः ई एक प्रकारक नृत्य-नाटक थिक, जाहिमे कथाक नृत्यात्मक अभिव्यक्ति होइछ । आंध्र प्रदेशक कुचीपुड़ी, ओडिशाक ओडिसी, मणिपुरक मणिपुरी आदि नृत्यक लोकप्रिय शास्त्रीय शैली थिक । आधुनिक युगमे एहि सभ नृत्य शैलीकें संरक्षित ओ विकसित करबाक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न भेल अछि ।

14.2.6 काव्य कला

35) एहि इकाइमे हम काव्यक चर्च विस्तारसँ नहि करब, किएक तँ साहित्यक अध्ययन अहाँ विस्तारसँ कैए चुकल छी । एतऽ खाली भारतीय साहित्यक प्राचीनता ओ विविधताकें संक्षेपमे बुझयबाक प्रयास करब । भारतीय साहित्यक सभसँ प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेदक कतिपय ऋचा साहित्यिक उत्कृष्टताकें प्रकट करैत अछि । ऋग्वेदक ऋचा सभमे तत्कालीन जन केर जीवनक दुख-दर्द, उत्साह, उल्लास आ आकांक्षा आदि अत्यंत भावप्रवणताक संग आ कल्पनाशील रूपमे व्यक्त भेल अछि । ऋग्वेद संस्कृतमे लिखल भारतक सभसँ प्राचीन ग्रन्थ थिक । आदिकवि वाल्मीकिक रामायण आ व्यासक महाभारत संस्कृतक अमर महाकाव्यक थिक । कालिदास, भवभूति, भास, अश्वघोष आदि किछु प्रमुख संस्कृत रचनाकार छथि, जे महान काव्यग्रन्थ सहित नाटकक रचना कयलनि । संस्कृतक अतिरिक्त प्राकृत, पालि, अपभ्रंश आदि भाषामे सेहो महान ओ विशिष्ट साहित्यक रचना भेल अछि । एहि भाषासभमे मुख्यतः बौद्ध आ जैन धर्मसँ प्रेरित साहित्य रचल गेल । अपभ्रंशक कतोक शैलीसँ आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक जन्म भेल । एहिमे मैथिली, बंगला, उड़िया, असमिया, हिन्दी, उर्दू, मराठी, गुजराती, पंजाबी, कश्मीरी आदि प्रमुख अछि । मैथिलीक साहित्य तँ एक हजार वर्षसँ बेसी पुरान अछि । दक्षिणक चारि भाषा– तमिल, तेलगू, मलयालम आ कन्नड़क साहित्य सेहो महत्त्वपूर्ण अछि । तमिल साहित्य तँ तीन हजार वर्ष पुरान अछि । भारतक सभ आधुनिक भाषासभमे कतोक महत्त्वपूर्ण ओ विलक्षण साहित्यक रचना भेल अछि आ एखनहुँ भऽ रहल अछि ।

36) प्राचीन साहित्य मुख्यतः काव्य आ नाटक-रूपमे प्रणीत भेल । भारतमे नाट्यकलाक विकास बहुत पुरान अछि । भरत द्वारा लिखल नाट्यशास्त्रक पहिनहुँ चर्चा भेल अछि । एहि सभक अतिरिक्त कतोक आचार्य नाट्यक विभिन्न अंग-उपांगपर विस्तारसँ विमर्श कयने छथि । भारतीय काव्यशास्त्रक प्रमुख रससिद्धान्त नाट्यकलाक विकासहिसँ अस्तित्वमे आयल । भारतीय परम्परामे भरतक वैह स्थान अछि जे पाश्चात्यमे अरस्तूक रहल छनि । भारतमे रंगमंचक अद्‌भुत विकास भेल । नाट्यशास्त्रमे रंगमंच, रंगशाला आ अभिनयक पक्षपर विस्तारसँ विचार कयल गेल अछि ।

37) एहि प्रकारें भारतीय कलाक परम्परा अत्यंत समृद्ध रहल अछि । ललित कलाक सभ क्षेत्रमे भारतीय जन विलक्षण प्रतिभाक परिचय देलनि अछि । सभसँ महत्त्वपूर्ण तथ्य तँ ई रहल अछि जे भारतीय भूभागमे आबि बसनिहार विदेशीलोकनिक योगदानसँ भारतीय कलाकें नवजीवन भेटैत रहल अछि । भारतीय कलाक जे स्वरूप हमरा सोझाँ प्रकट अछि ओ एहि सभ लोकक सामूहिक सहयोगक सुखद परिणाम थिक । एहिमे यूनानी, शक, कुषाण, मुसलमान आदि वर्गसमूह मुख्य अछि ।

बोध प्रश्न

5) निम्नलिखित बानगी कोन कलासँ सम्बन्धित अछि, स्पष्ट करू ।

I) गंधार शैली	[ ]	II) राजपूत शैली	[ ]
III) कथकली	[ ]	IV) पखावज	[ ]
V) ध्रुपद	[ ]	VI) पहाड़ी कलम	[ ]

6) I) नीचाँमे टीपल नाम कोनो विशेष कलाक प्रतिनिधित्व करैछ, मुदा एक गोट नाम ओहि कलाक प्रतिनिधित्व नहि करैत अछि, से कोन थिक ?

क) कुचीपुड़ी

ख) कथकली

ग) ठुमरी

घ) ओडिसी [ ]

II) नीचाँ टीपल नाम कोनो कलाक विभिन्न शैलीक प्रतिनिधित्व करैत अछि, मुदा एक गोट नाम ओकर प्रतिनिधित्व नहि करैछ, से कोन थिक ?

क) अजन्ता

ख) मोगल

ग) राजपूत

घ) कर्णाटक [ ]

7) I) स्थापत्य आ मूर्तिकलाक कोनो दुइ समरूप लिखू ।

....

....

....

II) चित्रकलाक विभिन्न शैलीक नाम लिखू ।

....

....

....

III) शास्त्रीय संगीतक दुइ प्रमुख शैलीक नामक उल्लेख करैत अन्तरकेँ स्पष्ट करू ।

....

....

....

IV) संगीत आ काव्यकलाक दुइ समान विशेषताक उल्लेख करू ।

....

....

14.3 व्याकरणिक विवेचन

14.3.1 विशेषण

अहाँलोकनि पाठकेँ ध्यानपूर्वक अध्ययन कयने होयब । एहि पाठमे हम एहन वाक्यक प्रयोग कयने छी, जाहिमे वर्ण्यवस्तुक विशेषताक उल्लेख भेल अछि । बानगी लेल स्थापत्यक आन उदाहरणक उत्कृष्टता दिस संकेत करबाक हेतु कहल गेल अछि 'ताजमहलक **अनुपम** सौन्दर्य' । एतऽ **अनुपम** ताजमहलक सौन्दर्यक विशेषण थिक ।

एही प्रकारक किछु दोसर वाक्य देखी :

क) शाहजहाँक योगदान **अविस्मरणीय** अछि ।

ख) हिमाचल प्रदेशक मंदिर **रमणीय** अछि ।

ग) माउन्टआबूक जैन मन्दिर सूक्ष्म रेखांकन लेल **विख्यात** अछि ।

आब अहाँ बुझि गेल होयब जे विशेषण शब्द कोन-कोन होइत अछि । वाक्यमे जे **शब्द संज्ञा** अथवा सर्वनामक विशेषता प्रकट करैछ ओ विशेषण कहबैत अछि ।

एहन वाक्यकेँ हम निम्नलिखित रूपमे राखि सकैत छी ।

क) शाहजहाँक अविस्मरणीय योगदान

....

ख) हिमाचल प्रदेशक रमणीय मंदिर

....

ग) सूक्ष्म रेखांकन लेल विख्यात जैन मंदिर

....

उपर्युक्त तीनू वाक्यमे विशेषण विशेष्य (संज्ञा)क रूपमे प्रयुक्त भेल अछि । विशेष्यक अर्थ थिक, जकर विशेषता कहल जाय । एहि लेल जतऽ विशेषण विशेष्य शब्दसँ पूर्व प्रयुक्त हो, ओकरा विशेष्य विशेषण कहल जाइछ । विशेष्य समान्यतः संज्ञे शब्द होइत अछि । 'विशेष्य विशेषण'केँ 'पूरक विशेष्य'मे आ 'पूरक विशेषण'केँ 'विशेष्य विशेषण'मे परिवर्तित कऽ सकैत छी ।

अभ्यास :

1) नीचाँ उद्धृत वाक्यमे प्रयुक्त पूरक विशेषणकेँ विशेष्य विशेषणमे परिवर्तित करू।

I) बानगी : भारत देश धर्मनिरपेक्ष अछि ।
भारत धर्मनिरपेक्ष देश अछि ।

II) रामचरितमानस नामक काव्य लोकप्रिय अछि ।

... ...

III) आगरा स्थित ताजमहल भव्य अछि ।

... ...

IV) ओहि धारक पानि अशुद्ध अछि ।

... ...

(V) ओ व्यक्ति महान छथि ।

... ...

2) निम्नांकित वाक्यमे प्रयुक्त विशेष्य विशेषणकें पूरक विशेषणमे परिवर्तित करू ।

I) ओ केहन स्वस्थ नेना अछि ।

... ...

II) 'कन्यादान' हरिमोहनझाक सर्वश्रेष्ठ उपन्यास अछि ।

... ...

III) मूर्तिकलाक विकासमे बौद्ध धर्मक उल्लेखनीय योगदान अछि ।

... ...

IV) मौर्यकालीन मूर्तिमे अद्‌भुत सौन्दर्य अछि ।

... ...

विशेषणकें संज्ञामे परिवर्तित करब

विशेषणकें संज्ञामे बदलियोकऽ हम वाक्य बना सकैत छी । जेना 'कन्यादान एक लोकप्रिय उपन्यास'कें हम 'कन्यादान नामक उपन्यासक लोकप्रियता' वाक्यमे बदलि सकैत छी । एतऽ लोकप्रियता संज्ञा थिक । 'रमणीय मन्दिर' कें 'मन्दिरक रमणीयता'मे परिवर्तित कऽ सकैत छी ।

अभ्यास

3) निम्नलिखित वाक्यमे प्रयुक्त विशेषणादिकें संज्ञामे परिवर्तित करू :

I) ओ **केहन** स्वस्थ नेना अछि । ( )

II) भारत देश **धर्मनिरपेक्ष** अछि । ( )

III) ओ रोगसँ **दुर्बल** भऽ गेल अछि । ( )

प्रविशेषण

एहि पाठमे अहाँ ध्यान देने होयब जे जतऽ विशेषणक प्रयोग कयल गेल अछि, ओतऽ कतोक बेर अत्यंत, बेसी, बहुत, अति शब्दसभक प्रयोग विशेषणसँ पूर्वहि भेल अछि । यथा 'अत्यंत सुन्दर मूर्ति' 'विशेष उल्लेखनीय' आदि पदक प्रयोग। अर्थात् विशेषणकें आर विशिष्ट रूपमे प्रकट करबाक लेल 'अत्यंत', 'विशेष', 'बहुत' आदि शब्दसभक प्रयोग कयल जाइत अछि । एकरहि प्रविशेषण कहल जाइत अछि ।

एतऽ नीचाँमे किछु प्रविशेषण देल अछि । एकर वाक्यमे प्रयोग करू–

अति, अत्यंत, विशेष, बेसी, बहुत ।

विशेषण आ तुलना

अहाँ पाठमे निम्न वाक्यसभकें पढ़ने होयब :

1) संगीत काव्यसँ बेसी भावप्रधान होइछ ।

2) स्थापत्य आ मूर्तिकलामे स्थापत्य अत्यंत स्थूल कला अछि ।

3) संस्कृत भारतक सभसँ प्राचीन भाषा थिक ।

4) एहि तीनूमे चित्रकला सभसँ अधिक सूक्ष्म कला अछि ।

उपर्युक्त चारू वाक्यमे विभिन्न वस्तुक विशेषता कहल गेल अछि, मुदा आन वस्तुक तुलनामे । पहिल दुइ वाक्यमे दुइ वस्तुक परस्पर तुलना कयल गेल अछि, जखन कि शेष दुनू वाक्यमे दुइसँ बेसी वस्तुक तुलना कयल गेल अछि ।

दुइ वस्तु/ व्यक्तिमे तुलना : जतऽ दुइ वस्तु अथवा व्यक्तिक विशेषताकेँ तुलनात्मक रूपमे प्रस्तुत कयल जायत, ओतऽ वाक्य रचना निम्नवत होयत–

I) राम गोपालसँ पैघ अछि ।

II) राम आ गोपालमे राम पैघ अछि ।

पहिलुक वाक्यमे तुलना लेल 'सँ' आ दोसर वाक्यमे 'मे'क प्रयोग अछि । दुनू वाक्य-रचनासँ एकर कारण अहाँ बुझि गेल होयब ।

दुइसँ बेसी वस्तु/व्यक्तिक तुलना : जतऽ दुइसँ बेसी वस्तु अथवा व्यक्तिक विशेषताकेँ तुलनात्मक रूपमे प्रस्तुत कयल जायत तँ ओतऽ वाक्य-रचना निम्नवत होयत ।

I) राम अपन वर्गमे सभसँ पैघ अछि ।

II) भारतमे जतेक भाषा बाजल जाइत अछि, ताहिमे हिन्दी सभसँ बेसी बाजल जाइछ ।

अहाँ एतऽ देखब जे एहि प्रकारक वाक्यमे ओना तुलना दुइसँ बेसी वस्तुक कयल गेल अछि आ ओहिमेसँ कोनो एककेँ सभसँ बेसी अथवा कम विशेषतायुक्त मानल गेल अछि, एहि लेल एहन वाक्यमे 'सभसँ'क प्रयोग होयत ।

अभ्यास

4) निम्न वाक्यमे दुइ वस्तु अथवा व्यक्तिक तुलना कयल गेल अछि । अहाँ एहि वाक्यकेँ भिन्न रूपमे लिखू ।

उदाहरण :

I) राम श्यामसँ पैघ अछि ।

राम आ श्याममे राम पैघ अछि ।

II) 'द्विरागमन'सँ 'कन्यादान' बेसी लोकप्रिय अछि ।

... ...

III) संगीत काव्यसँ बेसी भावप्रधान अछि ।

... ...

IV) स्थापत्य आ मूर्तिकलामे स्थापत्य बेसी स्थूल कला थिक ।

... ...

V) गोपाल विनोदसँ बेसी चपल अछि ।

... ...

14.3.2 वाक्य-रचना

वाक्य-रचनामे चारि वस्तुक ध्यान राखब आवश्यक अछि :

I) क्रम

II) संगति

III) अभ्यास

IV) लाघव

क्रम :

1) सामान्य नियम ई अछि जे वाक्यमे पहिने 'कर्त्ता' तत्पश्चात 'क्रिया' रहैछ एवं एहि दुनूक विस्तार अपन-अपना बोधक शब्दसँ पहिने अबैछ । यथा– 'कारी गाय घरक लक्ष्मी होइछ' ।

2) कर्म कारकसँ क्रियाकेँ पहिने राखल जाइछ । यथा– हम पुस्तक पढ़ैत छी । गोविन्द आम खाइत छथि । तहिना, अकर्मक क्रियाक पूरक ओहिसँ पहिने राखल जाइछ । जेना– नेना घरमे सूतल अछि । ओ निन्नसँ जागि उठल ।

3) द्विकर्मक क्रियमे गौण कर्म पहिने अबैछ, पश्चात मुख्य कर्म । यथा– राम सुग्रीवकेँ राजा बनौलनि । शिक्षक छात्रकेँ रेखागणित पढ़ौलनि ।

4) कर्म कारककेँ अन्यान्य सभ कारकक अपेक्षा क्रियाक सन्निकट रहब आवश्यक छैक । आनो कारकमे विस्तारक क्रमसँ आगाँ-पाछाँ राखब आवश्यक अछि । वस्तुक अपेक्षा वस्तु रखबाक पात्र पैघ होइछ । लोकसँ घर एवं घरसँ गाम पैघ होइछ । तेँ सभसँ जे विस्तृत हो तकरा पहिने एवंक्रमे ताहिसँ छोटकेँ रखबाक चाही । यथा– हम एहि गाममे कोनो नीको लोकक घरसँ एहि कार्यक हेतु एको कँचा चेहरी नहि लऽ सकलहुँ ।

5) सम्बोधन कारक सभसँ पहिने राखल जाइछ । जेना– हे महात्मा ! दुख दूर करू ।

6) सामान्यत: सम्बन्धकेँ सम्बन्धीक पूर्व, विशेषणकेँ विशेष्यक पहिने, क्रियाविशेषणकेँ क्रियाक पहिने तथा पूर्वकालिक क्रियाकेँ समापिका क्रियाक पहिने राखब उचित । जेना– रामक कारी गाय चरिकऽ सुखपूर्वक बैसल छनि ।

7) कोनो वस्तुकेँ प्रधानता देबाक हेतु एहि नियममे विपर्ययो होइछ । यथा– खर्च होइछ हमर आ आँखि लगैछ अहाँकेँ ! करै छी हम आ भारी लगैए अहाँकेँ !

कवितहुमे बहुधा एहि नियमक विपर्यय होइछ–

देशमे जे नीक छल से लेल कौरव जाय ।
शेष जंगल पाँच भाइक हेतु देल बेराय ।।

संगति :

वाक्यमे भिन्न-भिन्न पदक लिंग, वचन ओ कारक सभक पारस्परिक सम्बन्ध वा अनुकूलताकेँ संगति कहल जाइछ । एहि प्रकारक सम्बन्ध वा अनुकूलता वाक्यक संज्ञा ओ क्रियामे, संज्ञा ओ सर्वनाममे एवं विशेष्य ओ विशेषणमे होइछ । एकर अतिरिक्त किछु आनो शब्द एहन अछि जाहिमे परस्पर नित्य सम्बन्ध होइछ, तेँ संगतिमे एहि चारू सम्बन्धक विचार कयल जायत ।

संज्ञा ओ क्रियाक संगति :

मैथिली क्रियाक रूपान्तर लिंग वा वचनक भेदेँ नहि होइछ, अपितु उद्येश्य ओ विधेयमे व्यवहृत सर्वनाम, संज्ञा तथा ओकर आदरादि भेदक क्रमे होइछ । बहुत थोड़ ठाम लिंगक अनुसार किछु रूपान्तर होइछ । तेँ कोनो वर्गक सर्वनाम जे उद्देश्य वा विधेयमे आबय, तदनुकूले क्रिया रखबाक चाही ।

क्रियाक वर्गभेदसँ ई बुझबामे भाङठ नहि होयबाक चाही जे मैथिली क्रियाक ई विशेषता भारतवर्षक आन कोनहुँ आधुनिक भाषामे नहि छैक । हिन्दीमे वचन एवं लिंगक भेद अछि,

मुदा मैथिलीमे दुनू वचन ओ लिंगमे समाने रूप होइछ । यथा– 'हम सुतैत छी', 'हमसभ सुतैत छी' (स्त्री वा पुरुष) । मुदा आन पुरुषक कोनो रीतिएँ सम्पर्क भेनहि क्रियाक रूप बदलि जाइछ, यथा-हम तोहरा सङ चलैत छियहु, हुनका सङ चलैत छियनि, आदि रूपान्तरण भऽ जायत ।

संज्ञा आ सर्वनामक संगति :

संज्ञाक लिंग, वचन, पुरुष आ आदरादि भाव सर्वनाममे रहैछ । यथा–

श्यामलाल गाम गेल छथि, ओ चारि दिन नहि औताह ।

बुधना गाम गेल अछि, ओ चारि दिन नहि आओत ।

बालिकालोकनि पढ़ऽ गेलि अछि, ओसभ चारि बजे घुरति ।

स्त्रीगण गंगास्नान गेलि छथि, ओलोकनि आइ औतीह ।

विशेष्य ओ विशेषणक संगति :

विशेष्य ओ विशेषणमे मात्र ओही ठाम संगति होइछ जतऽ विशेषणमे लिंग विकार होइछ । एहन स्थानमे पुरुषवाची विशेष्यक हेतु पुलिंग विशेषण ओ स्त्रीवाची विशेष्यक हेतु स्त्रीलिंग विशेषण अबैछ । आन ठाम सभक हेतु एक रङ अबैछ, संगतिक कोनो प्रयोजन नहि । यथा–

ई स्त्री बड़ तमसाहि, किन्तु ई पुरुष बड़ तमसाह अछि ।

पीयर धोती, पीयर वस्त्र आदि होइछ । हिन्दी जकाँ 'पीली धोती', 'पीला कपड़ा' वा 'नीले कपड़े' आदि रूप नहि होइछ ।

नित्य सम्बन्धी शब्दक संगति :

किछु सर्वनाम, क्रियाविशेषण ओ अव्यय शब्द परस्पर नित्य सम्बन्धी अछि । एकक व्यवहार भेलासँ दोसरोक अपेक्षा अनिवार्य भऽ जाइछ । तेहना स्थानमे ओकर व्यवहार नहि भेलासँ अथवा ओकर बदला आनक व्यवहार भेलासँ अशुद्धि वा त्रुटि होइछ । एहन शब्दसभ अछि–

जँ ......तँ, यद्यपि ....तथापि, तैयो, तँ ....मुदा, किन्तु वा परंच आदि । जे-से, जखन-तखन, जँ -तँ , जेहन-तेहन, जतेक-ततेक आदि ।

जँ वर्षा हो तँ धान होयत ।

यद्यपि हम अपनहि गेलहुँ, तथापि ओ किछु नहि सुनलनि ।

यद्यपि एतेक भेलनि, तैयो लोभ बढ़ले जाइ छनि ।

राम तँ आयल, मुदा श्याम नहि आयल ।

जे एहन पापी अछि, से दण्डित किएक ने हो ?

जखन पृथ्विए डोलऽ लगलीह, तखन के स्थिर रहत ?

लाघव

थोड़सँ थोड़ शब्दमे बेसीसँ बेसी भाव प्रकट कऽ सकी, तकरे 'लाघव' कह जाइछ । मुदा लाघवक अर्थ ई नहि थिकैक जे अर्थ बिगड़ि जाय । बहुधा जोर देबाक हेतु ओ ध्यान आकृष्ट करबाक हेतु लाघवक बदला वाक्य विस्तृतो भऽ सकैछ, जे कोनो तरहेँ दोषावह नहि थिक ।

अभ्यास

अभ्यास दुइ प्रकारक अछि– साधारण ओ सामयिक । दिनराति जाहि अभ्यासक व्यवहार होइछ ओ साधारण अभ्यास थिक । यथा– सीताराम, गौरीशंकर, राधाकृष्ण आदि । एहिमे कोनो प्रकारक परिवर्त्तन अव्यावहारिक थिक ।

सामयिक अभ्यास ओ थिक जाहिमे समय-समयपर लोकोक्ति आदिक व्यवहार होइछ । एहि सभसँ विरुद्ध भेने वाक्य कर्णकटु भऽ जाइछ ।

अभ्यास :

क) वाक्य-रचनामे कोन-कोन चारि वस्तुक ध्यान रखबाक अछि ?

....

....

....

....

ख) साधारण ओ सामयिक अभ्यास की थिक ?

....

....

....

....

ग) 'संगति' ककरा कहल जाइछ ?

....

....

....

....

घ) संज्ञा ओ सर्वनामक संगतिक एक-एक गोट उदाहरण दियऽ ।

....

....

....

....

ङ) 'यद्यपि हम अपनहि गेलहुँ तथापि ओ किछु नहि सुनलनि'– कोन संगतिक वाक्य थिक ?

....

....

....

....

....

14.4 सारांश

- मानविकीक भाषाप्रयोग सिखबाक सङहि अहाँ भारतीय ललित कलाक विकासक परिचयो प्राप्त कयलहुँ । एहिसँ अहाँ भारतीय ललित कलासभक विकास स्वयं अपना भाषामे बुझा सकैत छी ।
- एहि पाठमे विशेषणादिक अधिकाधिक प्रयोग भेल अछि । एहि लेल व्याकरणिक विवेचनमे 'विशेषण'क अध्ययन द्वारा समुचित संदर्भक प्रयोग अहाँ सिखने छी । आब अहाँ स्वयं विशेषणक उचित रीतियेँ प्रयोग कऽ सकैत छी ।
- विशेषण शब्दकेँ संज्ञा शब्दमे परिवर्त्तनो करब सिखलहुँ । अहाँ स्वयं विशेषणकेँ संज्ञामे परिवर्तित कऽ सकैत छी । अहाँ प्रविशेषणक सेहो ठीक-ठीक प्रयोग कऽ सकैत छी ।
- दू अथवा ताहिसँ अधिक वस्तुक तुलनात्मक वाक्यकेँ उचित रूपमे लिखब सेहो सिखलहुँ ।
- वाक्य-रचनाक अन्तर्गत एकर क्रम, संगति, लाघव एवं अभ्यासक संगहि वाक्यमे लिंग, वचन आदिक प्रयोग सेहो अहाँ पढ़लहुँ । आब अहाँ एहि आधारपर स्वयं वाक्य-रचना कऽ सकैत छी ।

14.5 सहायक पोथी

मैथिली व्याकरण एवं रचना : योगेश्वर झा : भारती भवन, पटना ।

14.6 बोध प्रश्न/ अभ्यासक उत्तर

बोध प्रश्न

1) (I) घ (II) ग (III) क (IV) ङ (V) ख

2) चित्रकला – ख, घ, ङ
   मूर्तिकला – ख, ग, ङ
   संगीतकला – क, च
   काव्य – क, च
   नृत्य – क, ख, ङ, च
   नाट्य – क, ख, ङ, च
   फिल्म – क, ख, घ, ङ, च
   फोटोग्राफी – ख, घ, ङ

3) (I) ग (II) ख

4) I) द्रविड़ शैली, नागर शैली एवं वासर शैली
   II) आगराक ताजमहल
   दिल्लीक लालकिला
   दिल्लीक जामा महजिद

III) गंधार प्रदेशमे ग्रीक कलाकार अपन शैलीसँ जाहि भारतीय विषयसभक अभिप्राय, प्रतीकक कलात्मक रूपायन कयलनि ओ गंधार शैलीक नामसँ जानल जाइत अछि ।

5) I) मूर्त्तिकला II) चित्रकलां III) नृत्य
IV) संगीत V) संगीत V) चित्रकला

6) I) ग II) घ

7) I) क) स्थापत्य आ मूर्तिकला दुनू दिक् आधारित कला थिक ।
ख) दुनू कला त्रिआयामी थिक ।

II) चित्रकलाक शैली: 1. अजन्ता 2. गुजरात 3. मोगल
4. राजपूत 5. दकनी 6. आधुनिक

III) हिन्दुस्तानी ओ कर्णाटक दुनू शैली मूलतः एके थिक । अंतर एतबे अछि जे उत्तरमे बाहरसँ अयनिहार जाति अपन योगसँ संगीतक रूपमे आ अलंकरणक रूपमे किछु परिवर्त्तन कऽ देलक ।

IV) क) दुनू श्रव्यकला थिक ।
ख) दुनूमे भावक सूक्ष्म अभिव्यक्ति भऽ सकैछ ।

अभ्यास :

1) I) रामचरितमानस लोकप्रिय काव्य थिक ।
II) भव्य ताजमहल आगरामे स्थित अछि ।
III) ओहि घारमे दूषित जल अछि ।
IV) ओ महान व्यक्ति छथि ।

2) I) **ओ बालक केहन स्वस्थ अछि !**
II) हरिमोहन झाक उपन्यास 'कन्यादान' सर्वश्रेष्ठ अछि ।
III) मूर्तिकलाक विकासमे बौद्ध धर्मक योगदान उल्लेखनीय अछि ।
IV) मौर्यकालक मूर्तिमे सौन्दर्य अद्‌भुत अछि ।

3) I) स्वास्थ्य (II) धर्मनिरपेक्षता (III) दुर्बलता

4) I) 'कन्यादान' ओ 'द्विरागमन'मे 'कन्यादान' बेसी लोकप्रिय अछि ।
II) संगीत आ काव्यमे संगीत बेसी भावप्रधान अछि ।
III) मूर्तिकलासँ स्थापत्यकला बेसी स्थूल अछि ।
IV) गोपाल विनोदसँ बेसी चपल अछि ।

इकाइ 15 समाचार लेखन आ सम्पादकीय

इकाइक रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

एहि इकाइमे समाचार आ सम्पादकीय लेखनक महत्त्व आ विधिसँ परिचय प्राप्त करब । एहि इकाइक अध्ययनक उपरान्त अहाँ :

- समाचार आ सम्पादकीयक विषयमे जानकारी दऽ सकब,
- समाचार संकलन कोना कयल जाइछ, एकर वर्णन कऽ सकब,
- समाचार लेखन कऽ सकब,
- समाचार सम्पादन कऽ सकब,
- सम्पादकीय लेखनक मुख्य विशेषता बुझा सकब,
- समाचार आ सम्पादकीयमे प्रयुक्त भाषाक विषयमे जानकारी पाबि सकब ।

15.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाइमे समाचार लेखन आ सम्पादकीयक विषयमे बुझाओल जायत । विभिन्न समाचार माध्यमसँ प्रेषित विभिन्न समाचार आ सम्पादकीयक विषयमे व्यावहारिक जानकारी देल जायत । अहाँ प्रतिदिन विविध प्रकारक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेल आ आनो विषयक समाचार देखैत-सुनैत आ पढ़ैत छी । विभिन्न नगर-महानगरसँ लऽकऽ सुदूर गामघर धरि कतऽ की-कोना भऽ रहल अछि, कोन सिनेमाघरमे कोन फिल्म चलि रहल अछि, मुम्बइ स्टॉक एक्सचेंज कतेक ऊँचाइ धरि पहुँचल वा कतेक नीचाँ खसल, कोनो चुनावमे के कतेक मतसँ आगाँ अछि, ई सभ जानकारी हमरालोकनिकेँ घरे बैसल भेटि जाइत अछि । से होइत अछि समाचारपत्र अथवा अन्य समाचार-माध्यमसँ । आखिर ई सभ सूचना हमरालोकनि

धरि पहुँचैत कोना अछि ? घटनाकें समाचारक स्वरूप कोना प्रदान कयल जाइत अछि ? एहि सभ तथ्यक जानकारी अहाँकें आगाँ देल जायत । एकर विश्लेषणसँ अहाँ बुझि सकब जे समाचार आ सम्पादकीय लेखन की थिक आ कोना होइत अछि ? पत्रकारिता असलमे की थिकैक, से अहाँ जानि सकब ।

15.2 समाचारक परिभाषा एवं स्त्रोत

देश-विदेशमे घटित घटनावली अथवा गतिविधि; जकर सार्वजनिक महत्त्व होइत अछि, समाचारक श्रेणीमे अबैत अछि । विभिन्न माध्यमसँ प्राप्त समाचारसँ संवेदित भऽ लोक व्यक्तिगत आ सामूहिक रूपसँ आवश्यकतानुरूप क्रियाशील सेहो होइत अछि । ई समाचार हमरालोकनिकें मुख्यत: रेडियो, टेलीविजन, समाचारपत्र, पत्रिका अथवा इंटरनेटसँ प्राप्त होइत अछि । प्रत्येक संवेदनशील प्राणी कोनो-ने-कोनो माध्यमक उपयोग लेल उत्कंठित रहैत अछि । उक्त सभ माध्यममे समाचारपत्रक स्थान सर्वोपरि अछि । रेडियो अथवा टेलीविजनपर समाचारक संक्षिप्त जानकारी, सेहो सीमित अवधि लेल, देल जाइत अछि । तें एहिमे स्थायित्वक अभाव रहैत अछि, जखन कि ओही समाचारक विस्तृत विवरण समाचारपत्रसँ प्राप्त भऽ जाइत अछि । समाचारपत्रसँ बहुत रास स्थायी जानकारी सेहो भेटैत अछि । समाचारक सैद्धांतिक पक्षपर विचार करबासँ पूर्व एकटा समाचार प्रस्तुत कऽ रहल छी, जाहिसँ समाचारक मादे बुझबामे आसानी होयत ।

मिथिलांचलक खेल समारोह

मिथिलांचलक केन्द्रस्थली मधुबनीमे 19 दिसम्बरसँ 22 दिसम्बर धरि बिहार प्रदेशक 62म ओपेन एथलेटिक चैम्पियनशिप शांतिपूर्ण ढंगसँ सम्पन्न भेल, जाहिमे 28 जिलाक टीम आ 10 अन्य टीम यथा टेल्को, टिस्को, सी.सी.एल. टीमक 1100 खेलाड़ी भाग लेलनि; जाहिमे करीब चारि सय महिला खेलाड़ी सेहो सम्मिलित छलीह । प्रतियोगितामे 28 प्रकारक खेलक आयोजन छल, जाहिमे 3 सय मीटरसँ 10 हजार मीटरक दौड़, जेवलीन थ्रो, सोटपुटा डिस्कस थ्रो, हैमर थ्रो, हाइ जम्प, लौंग जम्प, पौल भोल्ट, डुरंडल रेस सहित अनेक खेलकें सम्मिलित कयल गेल छल । सभसँ बेसी खेलाड़ी राँची जिलासँ आयल छलाह आ हुनक संख्या करीब 90 छल ।

समस्त आयोजन मधुबनीक स्टेडियममे भेल । मधुबनी स्टेडियममे खेलक एहन आयोजनक प्रथम अवसर छल । उत्तर बिहारक सभसँ पैघ एहि स्टेडियममे 35 हजार दर्शककें बैसबाक व्यवस्था अछि । मधुबनी स्टेडियमक आधारशिला 4 मार्च 84 कें तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रशेखर सिंह रखने छलाह आ 26 मार्च 88 कें एकर उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री बिन्देश्वरी दुबे कयने छलाह । 38 लाख रुपैयाक लागतसँ बनल एहि स्टेडियमकें एहि मौकापर अत्यन्त आकर्षक रूपसँ सजाओल गेल छल । प्रदेशक विभिन्न जिलाक खेलाड़ीक सभ्यता, संस्कृतिक अपूर्व संगम मधुबनी नगरमे चर्चाक विषय रहल । वस्तुत: मिथिलांचलमे एकर आयोजनकें एकटा उपलब्धि मानल जा रहल अछि, जकर श्रेय पंडौलक विधायक श्री कुमुदरंजन झाकें देल जाइत छनि ।

सुप्रसिद्ध क्रिकेट खेलाड़ी श्रीकीर्ति झा आजादक उपस्थिति आयोजनक एक प्रमुख आकर्षण रहल । श्री आजाद खेलजगतमे व्याप्त माफियाक सफाया करबाक आ खेलाड़ीकें बेसीसँ बेसी सुविधा अन्य प्रदेश जकाँ प्रदान करबाक जोरदार अपील कयलनि । ओ जनौलनि जे बिहारक मात्र 5-6 खेलाड़ी राष्ट्रीय स्तरपर पहुँचि सकलाह अछि । जँ उचित सुविधा हो तँ एहिमे अप्रत्याशित वृद्धि होयत ।

प्रसिद्ध खेलाड़ी श्री बुधवा उड़ाँवक उपस्थिति सेहो आयोजनक महत्त्वकें बढ़ा देलक ।

चैम्पियनशिपक उद्घाटन करैत बिहारक मुख्यमंत्री श्री भागवत झा 'आजाद' खेलक विकास लेल अनेक महत्त्वपूर्ण घोषणा कयलनि । प्रत्येक जिलामे स्टेडियम निर्माण-योजनाक ओ विशेष उल्लेख कयलनि । राँचीमे स्टोटर्फ, पटनामे इन्डोर स्टेडियम एवं स्वीमिंग पुल निर्माणक घोषणा कयलनि । संगहि पटनामे अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचक आयोजन लेल पूर्ण सहायताक वचन देलनि । खेलक महत्त्वपर प्रकाश दैत ओ एकरा शिक्षाक अभिन्न अंग जनौलनि । ग्रामीण क्षेत्रमे खेलक विकास लेल खेल मंत्रालयपर ओ बल देलनि आ खेलनीतिपर प्रकाश देलनि । मार्चपास्टमे सभसँ आगाँ बिहार पुलिस टीम आ सभसँ पाछाँ मधुबनी जिलाक खेलाड़ी चलि रहल छलाह । झंडोत्तोलनक बाद पुलिस जबान 62 बन्दूकक सलामी देलनि आ मुख्यमंत्री बैलून ओ पड़बा उड़ाकऽ सफल आयोजनक कामना कयलनि । एहिसँ पूर्व मिथिला ज्योति प्रज्ज्वलित कयल गेल । एकरा प्रज्ज्वलित कयलनि प्रसिद्ध धावक सुधीर कुमार ।

– डॉ० बीरेन्द्र झा

पूर्वहुमे उल्लेख कयल गेल अछि जे समाचार वा खबरि कतोक प्रकारक होइत अछि, जेना– राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आ खेल प्रभृति । प्रत्येक व्यक्तिक अभिरुचि फराक-फराक होइछ । जँ अहाँक रुचि खेल जगतसँ अछि तँ तत्कालीन विभिन्न समाचारपत्रक अतिरिक्त मिथिला-मिहिरक जनवरी 1989 क अंकमे प्रकाशित उक्त खबरिक महत्त्वकेँ बुझि गेल होयब । जीवनमे खेलक बड़ पैघ महत्त्व छैक । खेल जगतमे प्रगति ओहि क्षेत्रक विकासक सूचक होइछ । मुदा, राष्ट्रस्तरपर बिहार आ राज्यस्तरपर मिथिलांचल खेलक क्षेत्रमे सर्वथा उपेक्षित रहल अछि । एहना स्थितिमे मधुबनीमे बिहार प्रदेशक 62म ओपेन एथलेटिक चैम्पियनशिपक आयोजन होयब ऐतिहासिक घटना मानल जायत । पूरा खबरिकेँ पढ़लासँ ई तथ्य सेहो सोझाँ अबैत अछि जे एहिमे खेल मात्रसँ सम्बन्धित बात नहि अछि, अपितु मधुबनी स्टेडियमक स्थापनाक इतिहास, बिहारक किछु चर्चित खेलाड़ीक उल्लेख तथा राज्य सरकारक अग्रिम खेल-नीतिक चर्चा सेहो भेल अछि । ई सभ सूचना समाचारक संपूर्ण चित्र उपस्थित करैत अछि । जँ एतबे खबरि रहैत जे 'मधुबनीमे 62म ओपेन एथलेटिक चैम्पियनशिप सम्पन्न' तँ ओ समाचारपत्रक दृष्टिएँ अपूर्ण खबरि होइत । रेडियो वा टेलीविजन लेल एतबा खबरि पूर्ण भऽ सकैछ, मुदा समाचारपत्रमे प्रकाशित खबरि एहने विस्तारक अपेक्षा रखैछ ।

15.2.1 समाचारसँ प्राप्त जानकारी

प्रत्येक समाचारसँ कोनो-ने-कोनो जानकारी अवश्य भेटैत अछि आ तखने समाचार पूर्ण मानल जाइत अछि । एकर जाँच करबाक विधि निम्नलिखित अछि–

I) कोन गतिविधि वा घटना भेल ?

II) ओहि गतिविधिमे की भेल ?

III) गतिविधि कतऽ भेल ?

IV) गतिविधि वा घटना कहिया भेल ?

V) गतिविधि वा घटना किए भेल ?

आब उपर्युक्त बातकेँ उद्धृत समाचारक आधार बनाकऽ जाँचल जा सकैछ ।

I) कोन गतिविधि वा घटना भेल ?

उत्तर– बिहार प्रदेशक 62म ओपेन एथलेटिक चैम्पियनशिप आयोजित भेल ।

II) ओहि गतिविधिमे की भेल ?

उत्तर– प्रतियोगितामे 28 प्रकारक खेलक आयोजन भेल ।

III) गतिविधि कहिया भेल ?

उत्तर– 19 दिसम्बर सँ 22 दिसम्बर 1989 धरि भेल ।

IV) गतिविधि कतऽ भेल ?

उत्तर– मधुबनीमे भेल ।

V) गतिविधि किए भेल ?

उत्तर– एहि संबंधमे पूर्वमे चर्चा भेल अछि । राज्यस्तरीय निरंतर आयोजनक ई 62म कड़ी छल । एहि प्रकारेँ उपर्युक्त समाचार हमर कतोक जिज्ञासाकेँ शान्त करैत अछि । आब प्रश्न उठैत अछि जे समाचारपत्रकेँ ई खबरि भेटैत कोना अछि ? अर्थात् समाचार-प्राप्तिक स्रोत की होइत अछि ?

15.2.2 समाचारक स्रोत

प्रत्येक समाचारपत्रकेँ समाचार प्राप्त करबाक मुख्यत: तीनटा स्रोत होइत अछि ।

I) समाचारपत्रक संवाददाता,

II) सरकारी विज्ञप्ति,

III) समाचार एजेंसी ।

I) समाचारपत्रक संवाददाता

उपर्युक्त खेल समाचारक अंतमे एक व्यक्तिक नामक उल्लेख भेल अछि । ओ भेलाह समाचारपत्रक संवाददाता । समाचार प्राप्त करबाक स्रोतमे संवाददाता एक महत्त्वपूर्ण माध्यम थिक । प्रत्येक पत्रक अपन संवाददाता होइत अछि, जे विभिन्न स्थानपर स्वयं जाकऽ विभिन्न प्रकारक सूचना एकत्रित करैत अछि आ ओकरा समाचारक स्वरूप प्रदान कऽ पत्र धरि पहुँचबैत अछि । एहन स्रोत लेल ओ 'एक संवाददाता', 'निज संवाददाता', 'सम्बन्धित पत्रक नामक उल्लेख करैत संवाददाता' आदि शब्दक प्रयोग करैत छथि । कतोक ठाम संवाददाताक नामक उल्लेख सेहो (जे एहि समाचारमे अछि) रहैत अछि ।

II) सरकारी विज्ञप्ति

समाचारक एकटा महत्त्वपूर्ण स्रोत सरकारी विज्ञप्ति होइछ । सरकार अथवा विभिन्न प्रकारक सरकारी आ गैरसरकारी संस्थान आवश्यकतानुसार समय-समयपर विज्ञप्ति जारी करैत अछि । समाचारपत्रक कार्यालय ओकरा समाचारक स्वरूप प्रदान कऽ प्रकाशित करैत अछि ।

III) समाचार एजेंसी

राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर विभिन्न प्रकारक समाचार एजेंसी कार्यरत अछि, जाहिसँ समाचारपत्रकेँ समाचार प्राप्त होइत अछि । समाचारपत्र एजेंसीसभसँ प्राप्त सूचनाकेँ ग्रहण कऽ सार्वजनिक महत्त्वक समाचार प्रकाशित करैत अछि ।

भारतमे मुख्यत: दूटा समाचार एजेंसी कार्यरत अछि– यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया तथा प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया । यूनाइटेड न्यूज ऑफ इण्डिया 'यूनीवार्ता' एवं प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया 'भाषा'क नामसँ विभिन्न भारतीय भाषामे संवाद समिति संचालित करैत अछि ।

अन्तरराष्ट्रीय स्तरपर सेहो कतोक संवाद एजेंसी द्वारा समाचार प्रेषणक काज होइत अछि । एहिमे प्रमुख अछि– ताश(रूस), सिंधुआ (जापान), रायटर (इंगलैंड), ए.एफ.पी. (अमेरिका) ।

समाचार एजेंसीक संवाददाता विभिन्न समाचारकेँ एकत्र करैत अछि । एहि समाचारकेँ ओ टेलीप्रिंटर, टेलीग्राम, टेलीफोन अथवा मोबाइल द्वारा मुख्य कार्यालयकेँ प्रेषित करैत अछि । एहि ठाम समाचारक संपादन होइछ आ तकर बाद एहि समाचारकेँ टेलीप्रिंटर द्वारा विभिन्न समाचारपत्रकेँ पठा देल जाइत अछि । आब तँ सभ काज कम्प्यूटरे द्वारा संचालित होइत अछि ।

बोध प्रश्न

अहाँ उपर्युक्त अंशक अध्ययन कयलहुँ । आब निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ मिलान करू ।

1) मधुबनीमे खेलक कोन प्रतियोगिता आयोजित छल ?

   I) 62म ओपेन एथेलेटिक चैम्पियनशिप,

   II) 62म राज्य स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता,

   III) 62म अन्तर्विश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिता,

   IV) उपर्युक्तमे सँ कोनो नहि ।   उ० (   )

2) प्रतियोगिताक उद्घाटक के छलाह ?

   I) चन्द्रशेखर सिंह

   II) विन्देश्वरी दूबे

   III) कीर्ति झा आजाद

   IV) भागवत झा आजाद   उ० (   )

3) निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर एक-एक पाँतीमे दियऽ ।

   क) यूनीवार्ता की थिक ?

   ....

   ख) 'निज संवाददाता द्वारा'– समाचारमे एहि कथनक की अभिप्राय ?

   ....

   ग) 'मधुबनीमे 19 दिसम्बरसँ 22 दिसम्बर धरि बिहार प्रदेशक 62म ओपेन एथलेटिक चैम्पियनशिप शांतिपूर्ण ढंगसँ सम्पन्न भेल ।' एहि वाक्यसँ समाचारक कोन पक्ष उजागर होइत अछि ?

   ....

4) समाचार संकलनक विभिन्न स्रोतक नामोल्लेख करू ।

   ....

   ....

   ....

5) समाचार एजेंसीक कार्यप्रणालीकेँ संक्षेपमे लिखू ।

   ....

   ....

   ....

   ....

6) समाचारमे कोन पाँचटा महत्त्वपूर्ण बिन्दु होयब आवश्यक अछि ?

क) ....

ख) ....

ग) ....

घ) ....

ङ) ....

अभ्यास 1

1) 20 जून 1982क मिथिला मिहिरमे प्रकाशित एकटा संक्षिप्त समाचार देल जा रहल अछि । अहाँकेँ एहि समाचारकेँ पाँचो आधारपर जाँचिकऽ निर्धारित करबाक अछि जे की ई सम्पूर्ण समाचार थिक ?

राजनारायण गिरफ्तार

चंढीगढ़, गत 17 जूनकेँ डेमोक्रेटिक सोसलिस्ट पार्टीक नेता राजनारायणकेँ गिरफ्तार कऽ लेल गेलनि । ओ हरियाणामे भजनलालक सरकारकेँ बर्खास्त करबा लेल अनशन कऽ रहल छलाह ।

....

....

....

15.3 समाचार लेखन आ सम्पादन तथा सम्पादकीय लेखन

समाचारक मुख्य ध्येय होइछ सम्बन्धित सूचनाकेँ पाठक धरि संप्रेषित करब । परंच, कोनो समाचार सूचना सभक संकलने टा नहि होइछ, अपितु समाचारपत्र प्राप्त सूचनाक परिधिकेँ विस्तार कऽ पूर्वसँ उपलब्ध तथ्यक संग सम्बद्धता स्थापित कऽ प्रस्तुत करैत अछि । अर्थात् विभिन्न स्रोतसँ प्राप्त सूचनासभकेँ समाचारक स्वरूप प्रदान करब समाचार लेखन थिक आ वैह सम्पादन थिक । जँ कोनो सूचना समाचारहिक रूपमे प्राप्त होइत अछि तँ समाचारपत्रक नीति, पाठकक अभिरुचिकेँ दृष्टिमे राखि ओकर संपादन कयल जाइछ । समाचार लेखनमे बहुत रास सावधानीक आवश्यकता होइछ । समाचार लिखबासँ पूर्व समाचार लेखक अर्थात् पत्रकारकेँ एहि बातक अवश्य ध्यान रखबाक चाही जे ओहि समाचारसँ समाजपर नकारात्मक प्रभाव नहि पड़ैक । ओकर दृष्टिकोण सदैव समाज आ राष्ट्रक हित रहबाक चाही । जँ कोनो समाचारसँ धार्मिक, साम्प्रदायिक, क्षेत्रीय, जातीय आ भाषायी विद्वेष पसरैत अछि तँ ई सर्वथा अनुचित एवं निन्दनीय मानल जायत । समाचार लेखनसँ पूर्व एहि आधारभूत बातक अवश्य ध्यान राखल जयबाक चाही ।

आब एहि बिन्दुपर विचार करब जे समाचार लेखन कोना कयल जाइत अछि ।

15.3.1 समाचार लेखनक आरंभ

कोनो समाचारक मुख्यतया तीन भाग होइत अछि–

1) शीर्षक

2) आमुख

3) मुख्य कलेवर

यद्यपि कोनो समाचारमे पाठकक नजरि सर्वप्रथम शीर्षकेपर पड़ैत अछि, मुदा एकर निर्धारण समाचार लेखनक बाद होइत अछि । आमुख आ मुख्य कलेवर एकर महत्त्वपूर्ण हिस्सा मानल जाइछ । तेँ शीर्षकक चर्चा बादमे कयल जायत ।

आमुख वा इंट्रो

प्रत्येक समाचारक आरंभमे तीन-चारि पाँतीमे ओहि समाचारक सार उद्धृत कयल जाइत अछि, जाहिमे ओहि समाचारक मुख्य विषयक उल्लेख होइत अछि । उदहारण लेल 'खेल समारोह'वला समाचारक प्रथम अनुच्छेद द्रष्टव्य थिक–

> **मिथिलांचलक केन्द्रस्थलीमे मधुबनीमे 19 दिसम्बरसँ 22 दिसम्बर धरि बिहार प्रदेशक 62म ओपेन एथलेटिक चैम्पियनशिप शांतिपूर्ण ढंगसँ सम्पन्न भेल, जाहिमे 28 जिलाक टीम आ 10 अन्य टीम यथा टेल्को, टिस्को, सी.सी.एल. टीमक 1100 खेलाड़ी भाग लेलनि, जाहिमे करीब चारि सय महिला खेलाड़ी सेहो छलीह ।**

उपर्युक्त अनुच्छेदमे ओहि पाँचो बिन्दु (कोन, की, कहिया, कतऽ आ किएक)क जवाब भेटि जाइत अछि । समाचारक एहि अंशकेँ आमुख वा इंट्रो अथवा लीड कहल जाइत अछि । शेष समाचार एहि आमुखक विस्तार होइत अछि । समाचार लेखनमे आमुखक महत्त्व सर्वोपरि अछि । समाचारक ई अंश संक्षेपमे संपूर्ण सूचना प्रदान कऽ दैत अछि । समयाभाव अथवा कोनो कारणेँ पाठक सम्पूर्ण समाचार नहियोँ पढ़ि खाली आमुखे पढ़ि सम्पूर्ण समाचारक तत्त्वकेँ बुझि सकैत अछि । जँ आमुख आकर्षक लगतैक तँ सम्पूर्ण समाचार पढ़बा लेल बाध्य भऽ सकैछ ।

आमुख लिखैत काल एहि बातक ध्यान रखबाक चाही जे ओहिमे समाचारक पाँचो आधारभूत तत्त्व भेटि जाइक । आब हम किछु देल गेल तथ्यक आधारपर आमुख लिखबाक प्रयास करब ।

तथ्य : I) दरभंगामे विधानसभा चुनाव सम्पन्न भेल ।

II) चुनावी हिंसामे 10 गोटे मारल गेल ।

III) सभटा हत्या चुनावक अंतिम चरण 20 अक्टूबरकेँ भेल ।

IV) विभिन्न थानामे कुल 1500 चुनावी मामिला दर्ज भेल ।

V) एहिमे 250 केँ अवैध मतदान करैत पकड़ल गेल ।

आब एकरा एहि पाँच आधार (कोन, की, कहिया, कतऽ, किएक) पर जाँच करू ।

कोन घटना – विधान सभा चुनाव ।

की भेल – चुनावी हिंसामे 10 गोटेक हत्या आ 1500 लोकपर चुनावी मामिला दर्ज भेल ।

कहिया भेल – 20 अक्टूबरकेँ ।

कतऽ भेल – दरभंगामे ।

किएक भेल – चुनावी हिंसाक कारणेँ ।

देल गेल तथ्यक आधारपर ऊपरक पाँचो बातकेँ ध्यानमे राखि अहाँ आमुख तैयार कऽ सकैत छी ।

दरभंगा, 20 अक्टूबर (संवाद एजेंसीक नाम), आइ चुनावक अंतिम चरणमे 10 लोकक जान गेल । कुल 1500 चुनावी मामिला थानामे दर्ज भेल ।

एकर बाद तत्सम्बन्धी उपलब्ध तथ्यक आधारपर समाचारकेँ विस्तार देल जा सकैछ ।

15.3.2 मुख्य कलेवर

आमुखक बाद विस्तारपूर्वक लिखल जायवला हिस्सा समाचारक मुख्य कलेवर कहबैत अछि । एहिमे ओ सभ सूचना देल जाइछ जे कोनो समाचारपत्र अपन पाठक धरि प्रेषित करऽ चाहैत अछि । मुदा, समाचारमे सभ सूचनाक समावेश भऽ जायब ने संभव अछि ने आवश्यके । संवाददाता द्वारा एकत्र अथवा संवाद एजेंसीसँ प्राप्त समाचारमे प्रयोजनसँ बेसियो सूचना रहि सकैत अछि । इहो संभव थिक जे प्राप्त सूचनामे तारतम्यक अभाव रहय । किछु सूचना अपूर्ण, अनावश्यको भऽ सकैछ । एहि लेल समाचार लेखनसँ पूर्व किछु बातक ध्यान राखब जरूरी अछि–

I) समाचार लेखन आरंभ करबासँ पूर्व उपलब्ध तथ्यक सत्यताक जाँच अवश्य कऽ ली । जँ कोनो संवाद एजेंसीसँ समाचार प्राप्त कयल गेल अछि तँ ओकर नामोल्लेख कऽ देब आवश्यक थिक ।

II) महत्त्वहीन सूचना आ तथ्यसभकेँ समाचार लेखनसँ पूर्वहि छाँटि दी ।

III) समाचार लेखनमे क्रमबद्धता रहबाक चाही, जाहिसँ स्थिति पूर्णतया स्पष्ट भऽ जाय ।

IV) समाचारक मूल बिन्दुकेँ आमुखक रूपमे उद्धृत कऽ ओहिसँ सम्बद्ध शीर्षकक निर्माण करी ।

V) प्रत्येक समाचारपत्रक अपन दृष्टिकोण होइत अछि । ओहि निजताकेँ कायम रखैत निष्पक्षताक संग समाचार लेखन करबाक चाही ।

VI) समाचारक भाषा सरल आ सहज रहय, जाहिसँ सामान्य व्यक्ति सेहो बुझि सकय ।

आब 'ऐजेंसी' द्वारा प्राप्त सूचनाक आधारपर समाचार लेखनक प्रयास करबाक अछि ।

03 अप्रैलकेँ पटनासँ विभिन्न संवाद एजेंसी निम्नलिखित समाचार प्रेषित कयलक–

I) सहरसा जिलाक सोनबरसा गाममे काल्हि राति भयंकर अग्निकांड भेलैक । मलाह जातिक लगभग 200 घरक बस्ती सुड्डाह भऽ गेलैक । एहिमे अपार सम्पत्तिक अतिरिक्त जान-मालक पर्याप्त हानिक सूचना अछि । प्राप्त जानकारीक अनुसार महेश मुखियाक दस वर्षीय पुत्र सुरेश गंभीर रूपसँ झरकि गेल आ अस्पताल जाइत काल बाटहिमे दम तोड़ि देलक । रेखा (5 वर्ष), सुजाता (14 वर्ष), राहुल (8 वर्ष) निपत्ता अछि । लगभग एक दर्जन पशुकेँ झरकिकऽ मरबाक सेहो खबरि अछि । घटनाक कारणक पता नहि चलि सकल अछि ।

II) आइ भोरमे समस्तीपुर रेलवे कॉलनीमे गैस सिलेंडरक विस्फोटमे रेलकर्मी विश्वनाथ पंडितक पत्नी रेखा (30) गंभीर रूपसँ झरकि गेलीह । रेलवे अस्पतालमे प्राथमिक उपचारक बाद नीक इलाजक हेतु पटना रेफर कऽ देल गेलनि । समयपर फायर ब्रिगेड पहुँचि जयबाक कारणेँ रेलवे क्वार्टर भीषण अग्निकांडसँ बचि गेल ।

III) मुजफ्फरपुर शहरक आमबागमे आइ अपराह्न 4 बजे बिजलीक शार्ट सर्किटसँ टायरक माल गोदाममे आगि लागि गेलैक । तेज पछबा हवाक कारणेँ दमकल गाड़ी पहुँचबा धरि

अगल-बगलक दसटा दोकान सुड्डाह भऽ गेल । कोनो व्यक्तिक हताहत होयबाक सूचना नहि अछि । एहि अग्निकांडमे भेल नोकसानक आकलन कयल जा रहल अछि ।

IV) पछिला चौबीस घंटामे उत्तर बिहारक आरो तीन ठामसँ अगिलग्गीक सूचना अछि । विस्तृत ब्योराक प्रतीक्षा कयल जा रहल अछि ।

आब उक्त सभ सूचनाक आधारपर समाचारपत्र लेल समाचार बनयबाक अछि । समस्त सूचना 3 अप्रैलकेँ प्राप्त भेल । सभ घटनाक सम्बन्ध अग्निकांडसँ अछि । सभटा समाचार पटनासँ प्राप्त भेल अछि । आब क्रमबद्धताक संग समाचार लेखन प्रारंभ करब । एहि लेल सर्वप्रथम लिखब :

पटना, 3 अप्रैल (समाचार स्रोतक नाम) ।

एकर बाद आमुख लिखबाक अछि । उपर्युक्त समस्त सूचनामे महत्त्वपूर्ण घटना अछि अग्निकांड । एहिमे एक व्यक्तिक मृत्यु, तीन निपत्ता, एक गंभीर रूपसँ घायल तथा एक दर्जन पशुकेँ झरकिकऽ मरबाक सूचना अछि । अपार सम्पत्तिक नोकसान सेहो भेल अछि । जँ एहि सभ बातकेँ एकत्रित कऽ आमुख लिखल जाय तँ ओ अत्यंत महत्त्वपूर्ण होयत ।

आमुख : उत्तर बिहारमे पछिला चौबीस घंटामे भयंकर अग्निकांडमे एक व्यक्तिक मृत्यु, तीन निपत्ता आ एक गंभीर रूपसँ घायल भेल । आब समाचारक मुख्य कलेवरक निर्माण करबाक अछि । एजेंसीसँ प्राप्त चारिटा समाचार अछि । चारूटाक सम्बन्ध अग्निकांडसँ अछि । एहिमे पहिल दुनू घटना बेसी त्रासदपूर्ण अछि, तेँ कलेवरमे एहि दुनूक उल्लेख प्रमुखताक संग कयल जा सकैत अछि । तेसर घटनाक चर्चा सेहो कऽ सकैत छी, मुदा चारिमक वर्णन आवश्यक नहि । कारण, चारिम घटनाक सूचना अपूर्ण अछि । तेँ जगह रहलापर ओकर उपयोग कयल जा सकैछ । आब सभ सूचनाकेँ क्रमबद्धताक संग सहज आ सरल भाषामे प्रस्तुत करी, जे अगिला दिन समाचारपत्रमे प्रकाशित होयत ।

समाचार :

पटना 3 अप्रैल (एजेंसी), उत्तर बिहारमे पछिला चौबीस घंटामे भयंकर अग्निकांडमे एक व्यक्तिक मृत्यु, तीन निपत्ता एक गंभीर रूपसँ घायल भेल।

सहरसा जिलाक सोनबरसा गाममे काल्हि राति भीषण अग्निकांड भेल । एहिमे 10 वर्षीय महेशक मृत्यु भऽ गेलैक आ रेखा (5 वर्ष), सुजाता (14 वर्ष) एवं राहुल (8 वर्ष) निपत्ता अछि । दर्जन भरि पशु सेहो झरकिकऽ मरि गेल ।

समस्तीपुरक रेलवे कॉलनीमे गैस सिलेंडरक विस्फोटसँ रेलकर्मी विश्वनाथ पंडितक पत्नी रेखा (30) गंभीर रूपसँ घायल भऽ गेलीह । मुजफ्फरपुर शहरक आमबाग क्षेत्रमे टायर गोदाम सहित दसटा दोकान जरिकऽ सुड्डाह भऽ गेल ।

उत्तर बिहारक आनो तीन ठाम अगिलग्गीक सूचना अछि ।

15.3.3 शीर्षक

समाचारक शीर्षक समाचार लेखनक महत्त्वपूर्ण अंग थिक । जँ आमुख लिखि लेल जाइत अछि तँ शीर्षकक निर्माणमे आसानी होइत अछि । शीर्षकक चयनकाल निम्नलिखित बातकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक अछि–

I) शीर्षक एहन हो जे समाचारक केन्द्रीय भावकेँ अभिव्यक्त करय ।

II) शीर्षकसँ सम्पूर्ण समाचार पढ़बाक उत्सुकता जाग्रत होअय ।

III) शीर्षकमे कहल बात समाचार द्वारा पुष्ट होअय ।

IV) शीर्षक छोट, परंच अर्थकेँ स्पष्टताक संग व्यक्त करय ।

ऊपर हम जाहि समाचारकेँ बनौलहुँ अछि, आब ओकर शीर्षक आसानीसँ देल जा सकैत अछि ।

उत्तर बिहारमे भीषण अग्निकांड

अथवा

अग्निकांडमे एकक मृत्यु, तीन निपत्ता

अथवा

आन कोनो शीर्षक सेहो देल जा सकैत अछि ।

15.3.4 समाचारक संपादन

समाचार लेखन आ समाचार संपादन एक-दोसरासँ जुड़ल प्रक्रिया थिक । ई दुनू काज संग-संग सेहो होइछ आ फराक-फराक सेहो । प्रकाशनसँ पूर्व संपादकीय प्रभाग द्वारा समाचारकेँ संपादित कयल जाइत अछि । उदाहरण द्वारा एकरा नीक जकाँ बुझल जा सकैत अछि । एकहि प्रकारक समाचार संपादकीय प्रभागकेँ अपन संवाददाता आ संवाद एजेंसी दुनूक माध्यमे प्राप्त भेल । समाचार ट्रेन डकैतीसँ सम्बद्ध अछि । घटनाक उल्लेख एकटा स्रोतमे एहि रूपेँ कयल गेल– आइ राति कोसी एक्सप्रेसमे मानसी-धमाड़ा स्टेशनक बीच भयंकर लूटपाट भेल । करीब पचीसक संख्यामे डकैत लगभग आधा घंटा धरि ए.सी.डिब्बा सहित चारिटा डिब्बाक यात्रीसँ मोबाइल, घड़ी, टाका आ जेबर लुटैत रहल आ एहि समय गाड़ीमे तैनात पुलिस पतनुकान लेने रहल । कतोक यात्रीकेँ छूरा मारि घायल सेहो कऽ देल गेल ।

एहि घटनाक समाचार एजेंसी द्वारा निम्न रूपेँ प्राप्त भेल–

पटनासँ सहरसा जा रहल कोसी एक्सप्रेसमे विगत राति भयंकर लूटपाट भेल। एहि घटनामे करीब पाँच व्यक्ति घायल अछि । प्राप्त सूचनाक अनुसार रातिक 9.30 बजे गाड़ी मानसीसँ खुजल । अनुमान अछि जे एहि ठाम किछु डकैत गाड़ीमे सवार भऽ गेल । धमाड़ा स्टेशनसँ पूर्वहि निर्जन स्थानपर ओसभ जींजिर खिचि गाड़ीकेँ रोकलक । पहिनेसँ प्रतीक्षारत करीब बीसक संख्यामे डकैत गाड़ीमे चढ़ल आ आधा घंटा धरि चारि डिब्बाक यात्रीक संग लूटिपाटि करैत रहल । डकैतक मुख्य निशाना मोबाइल, घड़ी, टाका आ गहना रहल । प्रतिरोध कयनिहार यात्रीकेँ छूरा मारिकऽ घायल कऽ देल गेल । गम्भीर रूपसँ घायल एक यात्रीकेँ सहरसा सदर अस्पतालमे भर्ती कराओल गेल अछि । सहरसा एस.पी.क अनुसार लुटिहाराकेँ शीघ्र पकड़ि लेल जायत ।

आब दुनू समाचारक तुलना करू । अहाँ देखब जे दुनू समाचारमे किछु तथ्यक समानता अछि, मुदा किछु भिन्नता सेहो अछि । पहिल समाचारमे किछु तथ्यकेँ छोड़ि देल गेल अछि तँ दोसरमे सेहो किछु तथ्यक अभाव अछि ।

आब अहाँकेँ उक्त दुनू समाचारकेँ संपादित कऽ समाचार बनबऽ पड़त । संपादकीय दायित्वक निर्वहन करैत तथ्यपरक समाचार बनाओल जा सकैत अछि । समाचारक संपादन करैत किछु बातक ध्यान राखब आवश्यक अछि । यथा–

I) समाचारक संपादनमे तथ्यक रक्षा कयल जयबाक चाही ।

II) समाचारकेँ संक्षिप्त रूपमे प्रस्तुत करबाक चाही ।

III) अनावश्यक, दुराग्रही आ समाजविरोधी बातकेँ छाँटि देबाक चाही ।

IV) भाषाकेँ संतुलित आ आकर्षक बनयबाक चाही ।

V) समाचारक उचित शीर्षक देब सेहो संपादकीय कार्य थिक ।

संपादित समाचार

कोसी एक्सप्रेसमे भयंकर लूटि

23 अप्रैल, 'अ' (निज संवाददाता/एजेंसी) ।

कोसी एक्सप्रेसमे विगत राति भीषण डकैतीमे पाँच यात्री घायल भेल आ एकक स्थिति चिन्ताजनक अछि । पटनासँ सहरसा जा रहल कोसी एक्सप्रेसमे मानसी-धमाड़ा स्टेशनक बीच भयंकर लूटिपाटि भेल । लुटिहाराक संख्या करीब पचीस छल जे मुख्यतः लोकक मोबाइल, घड़ी, टाका आ गहनाकेँ निशाना बनौलक । लगभग आधा घंटा चलल एहि लूटिकांडमे पाँच यात्री घायल सेहो भेल, जाहिमे गंभीर रूपसँ घायल एक व्यक्तिक इलाज सदर अस्पताल सहरसामे चलि रहल अछि । एहि घटनाक अवधिमे गाड़ीमे तैनात पुलिस गायब रहल । सहरसाक एस.पी. गाड़ीमे तैनात पुलिसकेँ निलंबित करैत कहलनि जे लुटिहाराकेँ शीघ्रहि पकड़ि लेल जायत ।

संपादकीय दायित्व

समाचार संपादनक अतिरिक्त कोनो मूलभूत समस्या अथवा ज्वलंत मुद्दापर संपादकीय दृष्टिकोणक अभिव्यक्ति सेहो संपादकीय दायित्वक अन्तर्गत अबैत अछि । समाचारपत्रमे एहि विशेष किन्तु नियमित कॉलमकेँ संपादकीय लेखन कहल जाइछ । 'मिथिला मिहिर'क 28 अगस्त 1983क अंकमे प्रकाशित संपादकीयक किछु अंश प्रस्तुत अछि । विगत शताब्दीक नवम दशकमे श्रीलंकामे हिंसा चरमपर छल । एकर प्रभाव भारत-श्रीलंकाक आपसी संबंधपर सेहो पड़ल छल । एकरे केन्द्रमे राखि ई संपादकीय लिखल गेल अछि–

> **"श्रीलंकाक नरसंहार सम्प्रति एक प्रबल समस्या बनि गेल छल । मानवताक रक्षाकेँ देखैत विश्वक सभ मानवतावादी राष्ट्र एकरा अधलाह मानैत आयल अछि आ श्रीलंकाक सरकारकेँ एकर उत्तरदायी बुझैत आयल अछि । सभसँ निकटवर्ती पड़ोसी राष्ट्र भारतक हेतु दोसरो दायित्व एकर संग रहल अछि; कारण संहार होबऽवला लोक भारतीय मूलक तमिलभाषी अल्पसंख्यक थिक । श्रीलंकामे तीन लाख लोक तमिलभाषी अछि जाहिमे हजारो लोकक वध सेना आ पुलिस द्वारा कयल गेल अछि । हत्या नृशंसतापूर्वक घरमे पैसि-पैसि, जहलक भीतर बंदी पर्यन्तकेँ कयल गेल अछि । भारतीय बैंक आ कार्यालयक भवनसभकेँ उड़ा देल गेल । किछु दिन पूर्वसँ तँ एहन स्थिति भऽ गेल छल जे तमिलभाषी भारतीय मूलक लोक आतंकित, असुरक्षित भऽ गेल आ अपनाकेँ असहाय बुझऽ लागल ।"**

संपादकीय आलेखक एकटा शीर्षक सेहो देल जाइत अछि । एकर देल गेल अछि–

'श्रीलंका आ भारतक संबंध' ।

बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अंतमे देल उत्तरसँ मिलान कऽ लियऽ ।

7) समाचारक मुख्य तीनू अंगक नाम लिखू ।

....

....

8) आमुख आ मुख्य कलेवरमे की अन्तर अछि ? अति संक्षेपमे लिखू ।

....

....

9) समाचार लेखन आ संपादनसँ सम्बन्धित निम्नलिखित तथ्यमेसँ किछु सही अछि किछु गलत । सही/गलतक क्रमश: हँ/नहि मे उत्तर दियऽ ।

I) समाचारक लेखन निष्पक्ष नहि होयबाक चाही । ( )

II) समाचारमे तथ्यक रक्षा कयल जयबाक चाही । ( )

III) केन्द्रीय मुद्दाकेँ समाचारक अंतमे देबाक चाही । ( )

IV) समाचारक भाषा सरल आ बोधगम्य रहबाक चाही । ( )

V) केवल सरकारी सूचनापर भरोस करबाक चाही । ( )

अभ्यास 2

निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दियऽ आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ मिलाउ ।

2) निम्नांकित तथ्यक आधारपर संक्षेपमे एकटा काल्पनिक समाचार लिखू ।

दरभंगाक ग्रामीण क्षेत्रमे बाढ़िक पानि पसरि गेल अछि । जिला प्रशासन प्रभावित लोककेँ सुरक्षित स्थानपर पहुँचौलक अछि । जान-मालक व्यापक नोकसानक खबरि अछि । नेपाल द्वारा तीन लाख क्यूसेक पानि कोसी नदीमे छोड़बाक आशंका अछि ।

....

....

....

....

....

....

3) दिनांक 13.14 एवं 15 दिसम्बरकेँ चुनाव प्रणालीमे सुधारकेँ लऽकऽ विभिन्न समाचार प्रकाशित भेल । एहि ठाम 13 आ 14 दिसम्बरकेँ प्रकाशित समाचार देल जा रहल अछि आ चौदहिक समाचारपत्रसँ प्राप्त सूचना सेहो प्रस्तुत अछि । एहि आधारपर 15 दिसम्बरकेँ प्रकाशित होबऽवला समाचार बनाउ । समाचारक प्रत्येक अंग यथा– शीर्षक, आमुख, मुख्य कलेवर लिखू ।

13 दिसम्बर, सरकार चुनाव प्रणालीमे व्यापक सुधार करबा लेल एक-दू दिनमे संसदमे विधेयक पेश करऽवला अछि । एहि विधेयकमे मताधिकारक वयस 21सँ घटाकऽ 18 करबाक प्रस्ताव अछि । चुनावमे इलेक्ट्रानिक मशीनक उपयोग सहित कतोक आनो सुधारक प्रस्ताव कयल गेल अछि ।

14 दिसम्बर, आइ लोकसभामे कानून मंत्री श्री० शंकरानंद चुनाव प्रणालीमे व्यापक सुधारसँ सम्बन्धित दूटा विधेयक पेश कयलनि । पहिल विधेयक मताधिकारक उमेर 21 वर्षसँ घटाकऽ 18 वर्ष करबाक सम्बन्धमे अछि । ई विधेयक सँविधानमे 62म संशोधनक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि । दोसर विधेयक जनप्रतिनिधित्व संशोधन विधेयक 1951क धारा-एकमे परिवर्तन करबाक सम्बन्धमे अछि । एहिमे चुनावमे इलेक्ट्रानिक मशीनक उपयोग करबाक प्रस्ताव अछि । एहि विधेयकमे उम्मीदवारक अयोग्यताकेँ आरो बेसी स्पष्ट कयल गेल अछि । आब सती-प्रथाक समर्थन कयनिहार, साम्प्रदायिक विद्वेष पसारनिहार, दहेज अपराधी, घूस आ जमाखोरीक अपराधीकेँ सेहो सम्मिलित कयल गेल अछि ।

14 दिसम्बर– सूचना ।

I) विधेयकपर लोकसभामे सात घंटाक बहस ।

II) सभ पक्ष द्वारा मताधिकारक आयु 18 वर्ष करबाक स्वागत । बहसमे 2 मंत्री सहित सत्तापक्ष आ विपक्षक दू दर्जनसँ बेसी सदस्य भाग लेलनि ।

III) जनप्रतिनिधित्व कानूनक 16 धारा 95 संशोधन दुनू पक्षक सदस्य द्वारा राखल गेल ।

IV) बहस अपूर्ण रहल ।

समाचारः शीर्षक : ....

....

आमुख : ....

....

....

मुख्य कलेवरः ....

....

....

....

....

....

....

....

....

15.4 समाचारक भाषा

एखन धरि एहि इकाइमे समाचार लेखन ओ संपादनक विषयमे जानकारी प्राप्त कयलहुँ अछि । मुदा, एहि महत्त्वपूर्ण बातक सार्थकता तखने सिद्ध होयत जखन समाचारमे प्रयुक्त भाषा तदनुकूल हो । पूर्वमे एहि बातक चर्चा कयल गेल अछि जे समाचारक भाषा सरल आ आसानीसँ बोधगम्य होयबाक चाही । आब एहि ठाम समाचारक भाषाक संदर्भमे विचार कयल जायत । ईहो जनबाक प्रयास कयल जायत जे विभिन्न विषयसँ संबंधित समाचारक भाषा कोन प्रकारक होयत ?

15.4.1 समाचारक भाषा केहन हो ?

समाचार लेखन प्रारंभ करबासँ पूर्व सदैव किछु बातक ध्यान रखबाक चाही। ई बात ध्यान रखबाक चाही जे सामान्य भाषाज्ञानक लोक समाचार पढ़ैत अछि । कठिन भाषाक प्रयोग भेलासँ ओहन व्यक्तिकेँ बात बुझबामे असुविधा होयतैक । ईहो आवश्यक नहि जे प्रत्येक व्यक्ति एकाग्रचित्त भऽ समाचार पढ़ैत अछि । बहुत रास पाठक एहनो अछि जे गाड़ीमे सफर करैत, रेडियो वा टेपरेकार्डर सुनैत अथवा सामान्य गपसप करैत समाचारपत्र पढ़ि रहल होअय । एहन सभ स्थितिमे समाचारक भाषा सरल ओ सहज रहने लोक समाचारमे व्यक्त बातकेँ बुझि पाओत । अतएव समाचारक भाषामे निम्नांकित गुण रहब आवश्यक अछि–

I) आवश्यकताक अनुसारहि बात लिखल जाय ।

II) पैघ ओ जटिल वाक्यसँ बचैत छोट आ सरल वाक्य बनाबी ।

III) आमजनमे प्रचलित शब्दक प्रयोग करबाक चाही । कठिन आ व्याख्यायोग्य शब्दसँ बचबाक चाही ।

IV) बोलचालक भाषाक प्रयोग करी ।

V) शब्दचयन आकर्षक ओ हृदयस्पर्शी रहबाक चाही ।

VI) घटनाक अनुरूप भाषा आ शब्दक प्रयोग करबाक चाही ।

VII) भाषामे अश्लीलताक भाव नहि अयबाक चाही ।

VIII) भाषामे मौलिकता रहय ।

जँ उक्त बातकेँ ध्यानमे राखल जाय तँ समाचारक भाषा सभ लेल ग्राह्य बनि सकैत अछि । आब दृष्टान्तक रूपमे समाचारक किछु नमूना प्रस्तुत अछि । एहिमे प्रयुक्त भाषाक आकलन करू ।

65 वर्षीय मैथिलीक मूर्धन्य विद्वान आ मैथिली विभाग सी.एम.कॉलेज, दरभंगाक पूर्व अध्यक्ष हंसराजक नामसँ प्रसिद्ध मंत्रनाथ झाक, जे अपन पाछाँ पत्नी तथा एक कन्या आ पुत्रकेँ छोड़ि गेल छथि, आइ राति 10 बजे दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे निधन भऽ गेलनि । हुनक शवकेँ काल्हि अपराह्न 4 बजे गाम लऽ जायबासँ पूर्व दरभंगा आवासमे आम लोकक दर्शनार्थ राखल गेल अछि ।

आब एहि समाचारक दोसर रूप द्रष्टव्य अछि–

मैथिलीक मूर्धन्य विद्वान आ सी.एम.कॉलेज, दरभंगाक पूर्व अध्यक्ष मंत्रनाथ झा 'हंसराज'क आइ राति दरभंगा मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे निधन भऽ गेलनि । ओ 65 वर्षक छलाह । हुनक शोकसंतप्त परिवारमे पत्नी, एक कन्या आ एक पुत्र छथिन । हुनक पार्थिव शरीरकेँ

आम जनताक दर्शन लेल चारि बजे दिन धरि दरभंगा आवासपर राखल रहत । अन्तिम संस्कार उजानमे होयतनि ।

दोसर नमूना पहिलसँ बेसी सरल अछि । एकरा बुझबामे आसानी होयत ।

15.4.2 समाचारक वैविध्यपूर्ण भाषा

समाचारपत्रक क्षेत्र अत्यंत व्यापक अछि । सामान्य समाचारक किछु क्षेत्र थिक– राजनीतिक घटनाक्रम, अपराध, खेल जगत, आर्थिक ओ वाणिज्यिक, स्वास्थ्य, शिक्षा, मौसम । एहि विशिष्ट क्षेत्रक समाचारक भाषा सेहो ओहिसँ सम्बन्धित होयबाक चाही । तेँ संवाददाताकेँ उक्त क्षेत्रविशेषक एवं ओहिसँ जुड़ल शब्दक पर्याप्त जानकारी रहब आवश्यक अछि । उदाहरण लेल क्रिकेट खेलसँ सम्बन्धित समाचार तैयार करऽवला व्यक्तिकेँ रन, विकेट, मेडेन, पारी, कैच, बोल्ड, एल.बी.डब्लू., वाइड, नो बॉल, फिल्डिंग, बैटिंग, विकेट कीपर, सिली प्वाइंट, बैकफुट, स्टंप, स्लिप, गली, बाइ आदि शब्दक अर्थ बुझल रहबाक चाही । कोनो क्षेत्रविशेषक तकनीकी पक्षकेँ बिना बुझने ओकर समाचार नहि लिखल जा सकैछ ।

बोध प्रश्न :

10) समाचारक भाषाक कोनो पाँचटा विशेषताकेँ रेखांकित करू ।

I) ....

II) ....

III) ....

IV) ....

V) ....

11) क्षेत्रविशेषक समाचार लेखन लेल कोन-कोन बातक ध्यान राखब आवश्यक अछि ?

....

....

....

अभ्यास 5

अपन क्षेत्रक कोनो महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक पर्वक समाचार आठ पंक्तिमे बनाउ। (विद्यापति स्मृतिपर्व अथवा सलहेस महोत्सव वा कोनो कविसम्मेलनक समाचार बनाओल जा सकैछ ।)

....

....

....

....

....

....

....

....

अभ्यास 6

मिथिलांचलक बाढ़िक समस्यापर 100 शब्दमे एकटा संपादकीय लिखू ।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

15.5 सारांश

- देश-विदेशसँ जुड़ल विभिन्न सूचनाक स्रोत थिक समाचारपत्र अथवा अखबार । समाचार द्वारा हमरासभकेँ भिन्न-भिन्न प्रकारक जानकारी भेटैत अछि, जकर व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्तरपर गंभीर प्रभाव पड़ैत अछि ।
- एहि इकाइक अध्ययन-मननक उपरांत अहाँ एहि बातक व्याख्या कऽ सकैत छी जे कोनो सूचना समाचार कोना बनैत अछि आ समाचारपत्र विविध समाचारसभकेँ कोना एकत्रित करैत अछि ?
- समाचार लेखन लेल उपलब्ध सूचनामेसँ आवश्यक सूचनाकेँ क्रमबद्धताक संग व्यवस्थित करऽ पड़ैत अछि । उपलब्ध तथ्यक आधारपर समाचारक विभिन्न चरणमे ओकर 'आमुख', 'मुख्य कलेवर' आ 'शीर्षक' तैयार करऽ पड़ैत अछि । महत्त्वपूर्ण मुद्दापर संपादकीय सेहो लिखल जाइछ ।
- समाचार लेखनमे शब्दचयनमे सावधानीक आवश्यकता होइत अछि । कठिन शब्दक प्रयोगसँ परहेज रखैत छोट-छोट वाक्य आ छोट-छोट पारामे समाचार लिखबाक चाही । समाचारक भाषा सरल एवं बोधगम्य होयबाक चाही ।
- एहि सभ बिन्दुक आधारपर उत्तम कोटिक समाचार लेखन संभव अछि ।

15.6 शब्दावली

अपराह्न : दू पहरक बादक समय वा बेरूपहर ।

अंतरराष्ट्रीय : देशसँ बाहर ।

पार्थिव : माटिसँ बनल (शरीरक निर्माणमे पंचतत्त्वमे एकटा पृथ्वी अर्थात् माटि सेहो अछि ।)

मूर्धन्य : मूर्धा (सिर)सँ उत्पन्न, अर्थात् श्रेष्ठ ।

राजनीतिक : राजनीतिसँ सम्बन्धित ।

वाणिज्यिक : वाणिज्य अर्थात् व्यापारसँ सम्बन्धित ।

सामाजिक : समाजसँ सम्बन्धित ।

आधारशिला : न्योंक पाथर ।

संगम : मिलन ।

उद्घाटन : आरंभ करबाक विधि ।

अग्रिम : अगिला, आगाँक ।

15.7 बोध प्रश्न / अभ्यासक उत्तर

1) I)

2) IV)

3) क) समाचार एजेंसी

ख) समाचारक स्रोत थिक

ग) आमुख ।

4) समाचार संकलनक स्रोत थिक–

समाचार एजेंसी, संवाददाता एवं सरकारी विज्ञप्ति ।

5) समाचार एजेंसी वैज्ञानिक ढंगसँ व्यवस्थित रहैछ । एजेंसीक संवाददाता समाचार एकत्रित कऽ विभिन्न माध्यमसँ अपन कार्यालयकेँ पठबैत अछि । एहि ठाम संपादनक बाद टेलीप्रिंटर द्वारा विभिन्न समाचारपत्रकेँ समाचार प्रेषित कऽ देल जाइछ ।

6) क) कोन घटना वा गतिविधि भेल ?

ख) की भेल ?

ग) कहिया भेल ?

घ) कतऽ भेल ?

ङ) किएक भेल ?

7) I) शीर्षक ।

II) आमुख ।

III) मुख्य कलेवर ।

8) समाचारक आरंभमे संपूर्ण केन्द्रीय भावकेँ अभिव्यक्त करैत जे बात लिखल जाइत अछि से आमुख कहबैत अछि । विस्तारपूर्वक अर्थात् समाचारक सभ पक्षकेँ उजागर करैत लिखल जायवाला समाचारक अंश मुख्य कलेवर कहबैत अछि ।

9) I) गलत

II) सही

III) गलत

IV) सही

V) गलत

10) I) कठिन शब्दसँ बचैत आमजनमे प्रचलित शब्दक प्रयोग करबाक चाही ।

II) छोट आ सरल वाक्य बनाबी ।

III) बोलचालक भाषाक प्रयोग रहय ।

IV) भाषामे अश्लीलताक भाव नहि रहबाक चाही ।

V) घटनाक अनुरूप भाषा आ शब्दक प्रयोग होयबाक चाही ।

11) क्षेत्रविशेषक समाचार लेखन लेल संवाददाताकेँ ओहि क्षेत्रक सम्पूर्ण जानकारी रहबाक चाही । समाचारक भाषा सेहो यथोचित ओही क्षेत्रसँ सम्बद्ध हो तँ से नीक । तेँ संवाददाताकेँ सम्बद्ध क्षेत्रविशेषमे प्रचलित शब्दक चयन तथा तकनीकी पक्षक ज्ञान होयब जरूरी अछि ।

अभ्यास :

1)		
कोन घटना भेल	:	गिरफ्तारी ।
की भेल	:	डेमोक्रेटिक सोसलिस्ट पार्टीक नेता राजनारायणकेँ गिरफ्तार कऽ लेल गेलनि ।
कहिया भेल	:	17 जूनकेँ ।
कतऽ भेल	:	चंडीगढ़मे ।
किएक भेल	:	हरियाणामे भजनलाल सरकारक बर्खास्तगीक मांग कऽ रहल छलाह ।

2) दरभंगा, 30 जुलाइ (निज संवाददाता/एजेंसी) । दरभंगाक ग्रामीण क्षेत्रमे अकस्मात बाढ़िक पानि पसरि जयबाक कारणेँ जान-मालक बहुत नोकसानक खबरि अछि । जिला प्रशासन प्रभावित व्यक्तिकेँ सुरक्षित स्थानपर पहुँचयबाक प्रयासमे लागल अछि ।

दरभंगा जिलाक कुशेश्वर प्रखंडक 10 गाम बाढ़िसँ घेरा गेल अछि । कालिह राति अनचोके कोसीक पानि ओहि क्षेत्रमे प्रवेश कऽ गेल । एहिसँ लगभग सात हजारक आबादी प्रभावित अछि । पानि ततेक तेजीसँ बढ़ल जे लोक अन्न-पानि छोड़ि जान बचा सुरक्षित स्थानपर पड़ायल । बाढ़िक कारणेँ सड़क सम्पर्क भंग भऽ गेल अछि, तथापि जिला प्रशासन नावक मदतिसँ लोकक सहायता लेल प्रयासरत अछि । जिला मुख्यालयसँ चूड़ा, गूड़, सलाइ, मोमबत्ती आ प्लास्टिक उपलब्ध कराओल गेल अछि ।

कोसीक जलस्तरमे अकस्मात भेल वृद्धि तथा नेपाल सरकार द्वारा कोसी बैरेजसँ तीन लाख क्यूसेक पानि छोड़बाक खबरिसँ एहि क्षेत्रक लोक भयभीत अछि । जिला प्रशासन राज्य सरकारकेँ त्राहिमाम संदेश पठौलक अछि ।

3) **शीर्षक : चुनाव सुधार विधेयकपर लोकसभामे बहस**

आमुख : नव दिल्ली, 14 दिसम्बर, चुनाव सुधार संबंधी विधेयकपर लोकसभामे भेल बहसक बीच सदस्य लोकनि मताधिकारक वयस 21 वर्षसँ घटाकऽ 18 वर्ष करबाक प्रस्तावक पूर्ण समर्थन कयलनि । चुनाव सुधारक सम्बन्धमे दूटा विधेयक कानून मंत्री बी० शंकरानन्द कालिह लोकसभामे प्रस्तुत कयने रहथि । आइ चलल सात घंटाक बहसक मध्य सदस्यलोकनि कतोक संशोधन सेहो प्रस्तुत कयलनि ।

मुख्य कलेवर– आइ लोकसभामे चुनाव सुधारक सम्बन्धमे प्रस्तुत कयल गेल विधेयकपर बहस प्रारंभ भेल । बहसमे भाग लेनिहार सांसदलोकनि मताधिकारक वयस घटाओल जयबाकें स्वागत कयलनि । सत्तापक्ष आ विपक्ष दुनू जनप्रतिनिधित्व कानूनक 16 धारामे 95म संशोधन पेश कयलनि । विपक्षी सदस्यलोकनि विधेयककेँ अपूर्ण कहलनि ।

कालि्ह लोकसभामे कानून मंत्री बी० शंकरानन्द चुनाव प्रणालीमे व्यापक सुधारक सम्बन्धमे दूटा विधेयक पेश कयने रहथि । पहिल विधेयक मताधिकारक वयस 21 वर्षसँ घटाकऽ 18 वर्ष करबाक सम्बन्धमे अछि । ई विधेयक संविधानमे 62म संशोधनक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

आइ भेल बहसमे दू मंत्री सहित सत्तापक्ष आ विपक्षक दू दर्जनसँ बेसी सदस्य भाग लेलनि । सात घंटा धरि बहस चलल, मुदा अपूर्ण रहल ।

3 एवं 4 क उत्तर स्वयं तैयार करी ।

इकाइ 16 विज्ञानक भाषा तथा पारिभाषिक शब्द

इकाइक रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

मैथिली भाषाक माध्यमे कोना विज्ञान विषयक पाठ पढ़ल जा सकैत अछि, ताहिसँ अहाँकेँ एतऽ परिचय कराओल जायत । मैथिली एक सशक्त विषय थिक, जकरामे विज्ञानक विषयकेँ स्पष्टता आ पूर्णताक संग प्रस्तुत करबाक क्षमता छैक ।

एहि इकाइकेँ पढ़िकऽ अहाँ :

- पेट्रोलियम शीर्षक विज्ञान विषयक पाठकेँ पढ़ि ओकर अभिप्राय बुझि सकब तथा पेट्रोलियमक निर्माण, शोधन एवं ऊर्जाक स्रोतक रूपमे ओकर उपयोगक विषयमे ज्ञान प्राप्त कऽ सकब,
- विज्ञान विषयक पाठक पारिभाषिक शब्दक स्वरूप आ ओकर प्रयोगक विषयमे बुझि सकब, जाहिसँ समान विषयमे शब्दक माध्यमे पाठक वाचन कऽ सकब,
- अतिरिक्त वाचनक संदर्भमे एहि पाठसँ संबंधित एकटा दोसर गद्यांश देल जा रहल अछि, जाहिसँ स्वयं अनुमान कऽ सकब जे अहाँ विषयक वाचन कोना कऽ सकब,
- गद्यांशक माध्यमे स्पष्ट कयल गेल विषयवस्तुकेँ अर्थ-ग्रहणक संदर्भमे सुनिश्चित करबा लेल सारणी आ रेखाचित्रक प्रयोगक विषयमे सिखि सकब, जाहिसँ पढ़ल विषय-वस्तुकेँ व्यवस्थित रूपसँ अपन मनमे जोगाकऽ राखि सकब ।

16.1 प्रस्तावना

आइ सभ्यता विकासक चरम सीमाकेँ छुबि रहल अछि आ प्रारम्भिक अवस्थाकेँ बहुत पाछाँ छोड़ि चुकल अछि । आइ औद्योगीकरणक युग चलि रहल अछि । आइ मनुष्य पजेबाक पक्का, हवादार आ सुन्दर घर बनाकऽ रहि रहल अछि। ओ आइ यान आ विमानक माध्यमे जल, थल एवं हवामे स्वच्छन्द विचरण करैत अछि आ सेहो ततेक तेजसँ जे किछुए क्षणमे सैकड़ो किलोमीटर पहुँचि जाइत अछि । हमरालोकनि घरमे बैसि दूरदर्शनक माध्यमे समस्त संसारक घटनाकेँ प्रत्यक्ष देखि लैत छी । ई सभकिछु विज्ञानक देन थिक, मुदा ई सभकिछु तखने सम्भव भेलैक जखन मनुष्य निरंतर अपन लक्ष्यक प्राप्तिमे कठिन श्रम करैत अनुसंधानरत

रहल आ ऊर्जाक नव-नव स्रोतकेँ तकबामे सफल भेल । एहि दिशामे पेट्रोलियमक खोज एकटा महत्त्वपूर्ण घटना छल । एहि अध्यायमे अहाँ पेट्रोलियमक खोज, ओकर खनन आ ओहिसँ बनल वस्तुक विषयमे पढ़ब ।

16.2 पेट्रोलियम

पृथ्वीक उत्पत्ति

अनुमान कयल जाइत अछि जे लगभग साढ़े चारि सय करोड़ वर्ष पूर्व एहि पृथ्वीक जन्म भेल छल । आरम्भमे पृथ्वी तप्त गोलाक सदृश छल । ओहि समयमे पृथ्वीपर कोनो प्रकारक जीव-जन्तुक कल्पनो करब असम्भव छल, कारण जे प्राणदायक आक्सीजन गैसक ओहि समयमे कतहु पता नहि छल– खाली कार्बन डाइऑक्साइड, वाष्पकण आ किछु अंशमे नाइट्रोजन गैस विद्यमान छल । एहिना करोड़ो वर्ष व्यतीत भऽ गेल । पृथ्वी क्रमश: ठंढा भेल गेल । यद्यपि पृथ्वीक आंतरिक हिस्सा तखनो अत्यंत गर्म आ पिघलल सन छल, किन्तु ऊपरक सतह ठंढा भऽ ऊभड़-खाभड़ पपरी सन भऽ गेल छल । एहि तरहेँ कतोक ऊँच-ऊँच पहाड़, खाधि आ गहींर समुद्र बनि गेल । आर समय बीतल । वायुमंडलमे परिवर्त्तन भेलाक कारणेँ वाष्पकण मेघक रूप धारण कयलक आ तापमान कम भेलापर मुसलाधार वर्षा होबऽ लागल । वर्षासँ झील आ समुद्रक सृष्टि भेल आ पहाड़सँ नीचाँ मुहेँ नदीसभ बहऽ लागल । एहिना, भयंकर वर्षाऋतु बहुतो समय धरि रहल ।

जीवक उत्पत्ति

आइसँ करोड़ो वर्ष पूर्व जीवक सृष्टि भेल । सर्वप्रथम उदभिद् नामक जीव उत्पन्न भेल, जे आजुक सेमारसँ मिलैत-जुलैत छल । एकरा लेल आवश्यक पोषक तत्त्व छल– जल आ कार्बन डाइआक्साइड, जे पृथ्वीपर प्रचुर मात्रामे उपलब्ध छल । तेँ,ओ उदभिद् सम्पूर्ण पृथ्वीपर पसरि गेल । पुन: ओहन अन्य जन्तुक उत्पत्ति भेल, जकर आहार ई उदभिद् छल । ओ प्राणीसभ जलमे रहनिहार छल, जकर आकृति आइ-काल्हिक घोंघा-सितुआसँ मिलैत छल । एहि प्राणीक उत्पत्तिसँ जे जीवन-चक्र चलल से आइयो विद्यमान अछि । उदभिद् कार्बन डाइआक्साइड ग्रहण करैत छल आ आक्सीजन छोड़ैत छल तथा अन्य प्राणी आक्सीजन ग्रहण करैत छल आ कार्बन डाइआक्साइड छोड़ैत छल । एहि तरहेँ ओसभ एक-दोसराक पूरक छल आ एक-दोसराक पोषण-संबर्द्धन करैत छल । सभ जीव मरणशील होइत अछि । सम्पूर्ण पृथ्वीपर पसरल उदभिद् आ सभ जीव-जन्तु मरैत छल आ समुद्र तलमे सड़ि-गलिकऽ जमा होइत छल । एहिपर नदी द्वारा आनल गेल करोड़ो टन माटि आ कंकड़ जमा होइत छल । ई प्रक्रिया करोड़ो वर्ष धरि चलैत रहल । आन्तरिक ताप आ भारी ऊपरी दाबक कारणेँ एहि जैविक कंकालसँ एकटा नव प्रकारक तरल पदार्थ बनल, जकर नाम पड़ल– खनिज तेल । वैज्ञानिक लोकनि ओही खनिज तेलक नामकरण कयलनि पेट्रोलियम आ एकरे अन्तर्गत कतोक तेल अबैत अछि, जकरा हमरालोकनि किरासन, डीजल, पेट्रोल आदि कहैत छिऐक ।

चट्टानक प्रकार

आब अहाँ कहि सकैत छी जे पेट्रोल, किरासन तेल आदि तँ पानिसँ हल्लुक होइत छैक, तखन ईसभ पानिक ऊपरी तलपर छिलकैत किएक ने भेटैत अछि ? एहि हेतु अहाँकेँ चट्टानक संरचनापर ध्यान देबऽ पड़त । पृथ्वीक प्रारंभिक कालमे जखन लगातार वर्षा होइत छल आ वर्षाक पानि जखन पहाड़सँ बहैत समुद्रमे पहुँचैत छल तँ अपन संग बहुत पैघ मात्रामे कंकड़ आ माटि लऽ जाइत छल, जाहिसँ समुद्र तलपर परत बनि जाइत छल । कतोक वर्ष धरि लाखो टन माटि एक-दोसराक ऊपर जमा होइत गेल, जे कालानतरेँ कठोर बनि चट्टानक रूप धारण कयलक । एकक ऊपर एक स्तरक रूपमे होयबाक कारणेँ एकरा स्तरित चट्टान कहल जाइत

अछि । एहिमेसँ तरल पदार्थ चुबि सकैत अछि आ ई अपेक्षाकृत मोलायम रहैत अछि । एही समयमे पृथ्वीमे एकटा दोसरो तरहक चट्टान बनि रहल छल । पूर्वहुमे कहि चुकल छी जे पृथ्वीक भीतरी तल अत्यंत गर्म छलैक आ तेँ ओतऽ पिघलल अवस्थामे धातुमिश्रित पदार्थ छलैक । ई पदार्थ जखन ऊपर दिस प्रवाहित होइत छल तँ कड़गर चट्टान बना दैत छल । आगिसँ तप्त रहबाक कारणेँ ई चट्टान कठोर आ अभेद्य रहैत छल, जाहिसँ तरल पदार्थ चुबि नहि सकैत छल । आगिसँ बनल रहबाक कारणेँ एहि चट्टानक नाम पड़ल– आग्नेय चट्टान ।

16.3 पेट्रोलियमक स्रोत

पेट्रोलियम एक एहन तरल पदार्थ थिक जे चुबि-चुबिकऽ ठाम-ठाम जमा भऽ जाइत अछि, किन्तु आग्नेय चट्टानकेँ ओ पार नहि कऽ सकैत अछि । जेना स्तरित चट्टान आ आग्नेय चट्टान पृथ्वीकेँ भीतरे-भीतर छापि लेने अछि आ पेट्रोलियम स्तरित चट्टानक बीच जमा भेल रहि जाइत अछि, तहिना पृथ्वीक अन्तःस्थलमे तेलक भण्डार सेहो बनि जाइत अछि । तेल-भण्डारक नीचाँ आ चारूकात आग्नेय चट्टानक रहने पेट्रोलियम ओतऽ सुरक्षित रहि जाइत अछि । एकर अतिरिक्त पृथ्वीमे ठाम-ठाम दरार पड़ि जाइत छैक, जाहिसँ तेल चुबिकऽ धरतीपर जमा भऽ जाइत छैक आ छोटछीन झीलक रूप लऽ लैत छैक । एहि प्रकारक तेलकेँ वैज्ञानिकलोकनि निस्यंदन तेल कहैत छथि । अतः पेट्रोलियम दू तरहेँ भेटैत अछि– तेलकुण्डसँ एवं निस्यंदिनी झरनासँ ।

निस्यंदन तेल

सर्वप्रथम लोकक ध्यान ओहि पेट्रोलियम दिस गेलैक जे झरनाक माध्यमे पृथ्वीक सतहपर पसरल छल, कारण जे एहि हेतु भू-खननक आवश्यकता नहि होइत छल । ई तेल जल सदृश पातर नहि, अपितु किछु गाढ़ होइत अछि । जमीनक ऊपरमे जमा भेने आ वायुमंडलक सम्पर्कमे रहने ई तेल किछु सुखा जाइत छैक आ कारी कठोर पदार्थक रूपमे सेहो देखि पड़ैत अछि । गर्मी पाबिकऽ ई मोलायम तथा लसलस पदार्थ बनि जाइत अछि, जकरा एस्फाल्ट अथवा बिटूमन कहल जाइत छैक । एस्फाल्टक बीचसँ जल नहि टपकैत छैक । एकर एही गुणक कारणेँ प्राचीन समयमे जहाजक तख्ताक जोड़मे एकरा भरि देल जाइत छलैक । जहाजक पेनी तथा भीतरक भागमे सेहो एकर लेप कयल जाइत छल । मकानक निर्माणमे पाथरकेँ सेहो एहि पदार्थसँ जोड़ल जाइत छल । दक्षिण अमेरिकाक अत्यंत प्राचीन इन्का सभ्यता आ प्राचीन बेबीलोनी सभ्यताक अवशेषसँ स्पष्ट होइत अछि जे ओलोकनि एस्फाल्टक उपयोग करैत छलाह । मध्ययुगमे तँ निस्यंदन तेल कुरियैनी तथा घावपर औषधक रूपमे लगाओल जाइत छल आ अन्यो दवाइ एहिसँ बनिकऽ तैयार होइत छल । किछु शताब्दी पूर्व इंगलैंडक एक वैज्ञानिक एकरा साफ करबाक तरीकाक आविष्कार कयलनि, जाहिसँ एकर तीनटा रूप समक्षमे आयल–

1) सभसँ पातर लाल तरल पदार्थ, जे दीपमे प्रकाशक स्रोतक कार्य कयलक,

2) किछु मोट तरल पदर्थ, जे मशीनमे लुब्रीकेटिंगक कार्य कयलक, तथा

3) सभसँ गाढ़ पदार्थ, जाहिसँ मोमबत्तीक निर्माण भेल ।

एहि तरहेँ लोक निस्यंदन तेलसँ किछु-किछु परिचित तँ बहुतो दिनसँ छल, मुदा भूखनन द्वारा तेलकुंडसँ पेट्रोलियम निकालबाक विधानसँ जे परिचित भेल, तकरा दू-तीन सय वर्षसँ अधिक नहि भेल होयत । एहि दिशामे चीन सभसँ आगाँ अछि, जतऽ लगभग दू हजार वर्ष पूर्वहि कूप-खनन द्वारा तेल निकालल गेल आ बाँसक नलीक पाइप बनाकऽ पाइप लाइन द्वारा ओकरा दूर लऽ जयबाक व्यवस्था कयल गेल । किन्तु, एकर विस्तृत विवरण उपलब्ध नहि अछि ।

विगत शताब्दीमे कूप-खनन द्वारा तेल निकालबाक खिस्सा अत्यन्त रोचक अछि । लोक यूरोपसँ जखन अमेरिकामे जाकऽ बसऽ लागल तखन पेय जलक समस्या ओकर समक्ष अयलैक । लोक इनार खुनबऽ लागल । ओही क्रममे कतोक स्थलमे पानिक बदला अजीब सन तेल बहरायल । पहिने तँ एहन-एहन स्थलकेँ लोक छोड़ैत गेल, मुदा बादमे क्यो बुद्धिमान व्यक्ति एकर जाँच कऽ सिद्ध कयलनि जे एहिसँ प्रकाशक व्यवस्था कयल जा सकैत अछि, जाहिसँ वनस्पति तेलक बचत होयत । ध्यातव्य थिक जे पूर्वमे प्रकाशक हेतु वनस्पतिये तेलक व्यवहार होइत छल । प्रारम्भमे तेलमे आगि लगबिते फक्सँ जरि जाइत छलैक आ प्रकाश कम धुआँ बेसी छलैक । बादमे ओही तेलकेँ शुद्ध करबाक प्रयास भेल आ ओ साफ प्रकाश देबऽ लागल । तखनहिसँ एहि तेलक माङ बढ़ऽ लागल । जेना-जेना एहि तेलक माङ बढ़ल, इनारकेँ सेहो गहीँर खुनबाक प्रयास कयल गेल । सन् 1959 मे अमेरिकाक पेंसिलवैनियाँ राज्यमे तेलक पहिल इनार खुनल गेल आ एहि खनन कार्यक संचालनक भार रेल कम्पनीक एक गार्ड एडविन ड्रैक लेने छलाह । 17 अगस्त 1959केँ इनारक पेनीसँ तेल फुहारा जकाँ फुटि पड़ल। ओ मानव-सभ्यताक विकासक इतिहास लिखबामे एक महत्त्वपूर्ण क्षण मानल जायत ।

तेलकुण्डक खोज

वस्तुतः तेलकुण्डक खोज एकटा कठिन कार्य थिक । पहिने तँ लोक निस्यंदन तेलक स्थानमे तेलक कूप खुनऽ लागल, किन्तु एहि स्थानपर तेल कम भेटैत छलैक, कारण जे भूकम्प अथवा अन्य कारणेँ मूल स्रोतसँ निस्यंदन स्थानक मार्ग कठोर चट्टान द्वारा बन्द भऽ जाइत छलैक । अथवा, इहो होइत छलैक जे मूल स्रोतसँ निस्यंदन स्थान पर्याप्त दूर रहैत छलैक । वास्तवमे पर्याप्त गहीँरमे अवस्थित तेलकुण्डहिमे पर्याप्त तेल-भण्डार रहैत अछि, जाहिपर बहुत समय धरि भरोस कयल जा सकैत अछि । एहि तेलकुण्डक आभास ऊपरसँ नहि होइत छैक आ पता लगायब सेहो दुष्कर छैक । जखन एक बेर तेलकुण्डक पता चलि जाइत छैक तँ आन काज आसान भऽ जाइत अछि । नव-नव वैज्ञानिक प्रयोगसँ आब ई काज किछु आसान तँ अवश्य भऽ गेल अछि, किन्तु एहिमे पर्याप्त समय आ धन खर्च होइत छैक ।

सर्वप्रथम हवाइ जहाजसँ सम्पूर्ण धरातलक फोटो लेल जाइत अछि । पुनः जाहि स्थानपर तेल भेटबाक संभावना रहैत छैक, ओतऽ किछु वैज्ञानिक अध्ययन एवं परीक्षण कयल जाइत अछि । ई अध्ययन-परीक्षण तीन तरहेँ कयल जाइत अछि– भूगर्भशास्त्रीय, भू-भौतिकीय एवं भू-रासायनिकीय । भूगर्भशास्त्र द्वारा ओहि ठामक चट्टानक संरचना आदिक पता लगाओल जाइत अछि । ई देखल जाइत अछि जे स्तरित चट्टान कतऽ अछि आ आग्नेय चट्टान कतऽ ? ओ एक-दोसरपर कोन क्रममे आ कोन ढंगे पड़ल अछि । संगहि ईहो देखब आवश्यक जे कतऽ आग्नेय चट्टान कुण्ड बना चुकल अछि । एहि हेतु धरतीक भीतर कोनो स्थानपर विस्फोट करऽ पड़ैत छैक, जाहिसँ तरंग उत्पन्न होइत अछि । ई तरंग विभिन्न चट्टानक सतहसँ जाकऽ टकराइत अछि आ आपस अबैत अछि । एहि प्रतिध्वनिकेँ भू-फोन ग्रहण करैत अछि । जेना प्रतिध्वनित तरंगसँ रेडार वस्तुक प्रकृति आ दूरीक पता लगा लैत अछि, तहिना भू-फोनसँ पता चलैत अछि जे स्तरित चट्टान आ आग्नेय चट्टान कोना आ कोन तरहेँ पसरल अछि । भू-भौतिकी द्वारा गुरुत्वाकर्षण आ चुम्बकीय शक्तिकेँ नापल जाइत अछि । एहिसँ सूक्ष्मसँ सूक्ष्म अंतरसँ तेलकुण्डक संभावित स्थितिक पता लगैत अछि । भू-रासायनिकी द्वारा ऊपरी पदार्थ आ भिन्न-भिन्न स्थलपर खुनल माटिक रासायनिक परीक्षण कऽ खनिज तेलक उपलब्धताक संबंधमे निष्कर्ष बहार कयल जाइत अछि । तेलकुण्ड संभवतः दुर्गम स्थान, घनघोर जंगल, रेगिस्तान आ समुद्र तलमे रहैत अछि, तेँ खर्च आरो अधिक बढ़ि जाइत अछि । यदाकदा पर्याप्त धनराशि खर्च कइयोकऽ सफलता नहि भेटैत छैक ।

16.4 तेलकूप खनन

जखन तेलकुण्डक पता लागि जाइत छैक, तखन तेलकूपक खनन-कार्य प्रारम्भ होइत अछि । एहि दिशामे इंजीनियरलोकनि अद्‍भुत कुशलता प्राप्त कऽ लेने छथि । लोहाक ऊँच-ऊँच तिनकोनियाँ मीनार बनाओल जाइत अछि, जकरा 'डेरिक' कहल जाइत छैक । खनन-यंत्रकेँ 'ड्रीलिंग रिंग' कहल जाइत छैक । एकर मुँहपर मजगूत दाँतवला तीनटा चक्की तीव्र गतिएँ घुमैत रहैत अछि, जे कठोरसँ कठोर पाथरकेँ काटि दैत छैक । ई भिन्न बात जे आग्नेय चट्टानमे कखनहुँ कऽ ई दाँत पाँचे-सात फीटपर टुटि जाइत छैक आ ओकरा पुन: पुन: बदलऽ पड़ैत छैक । एहि कठोर चट्टानकेँ कटैत काल मशीनक काटऽवला दाँत गर्म भऽ जाइत छैक आ ओकरा निरंतर ठंढा करऽ पड़ैत छैक । पहिने थालक संग माटि-बालु-पाथरक टुकड़ी आ किछु कठोर चट्टानक अंश निकलैत छैक । वैज्ञानिक लोकनि निरंतर एकर सभक परीक्षण करैत रहैत छथि तथा तेल कतेक दूरपर होयत, एकर अनुमान लगबैत छथि । ई अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य अछि, कारण जे तेलक सतहपर मशीनकेँ पहुँचतहिँ तेल अत्यन्त तेजीसँ ऊपर भगैत छैक आ मशीनक दाँत अत्यंत गर्म रहने ओहिमे आगि लगबाक भय बनल रहैत छैक । एहिमे असावधानी रखने जँ आगि पकड़तैक तँ सम्पूर्ण तेलकुण्ड जारिकऽ छाउर भऽ जयतैक । निष्कर्षत: कहल जा सकैत अछि जे तेलकूप-खनन एक दुष्कर आ खतरनाक कार्य थिक, जाहिमे अत्यंत सावधानी आवश्यक छैक ।

16.5 तेलक शोधन

आरंभमे तेल अत्यंत तीव्र गतिएँ निकलैत छैक आ ओकरा तुरंत पाइप द्वारा पैघ-पैघ टैंकमे पहुँचा देल जाइत छैक । जखन धीरे-धीरे वेग कम भऽ जाइत छैक तँ पंपक सहायतासँ तेलकेँ बाहर करऽ पड़ैत छैक । तेलसँ प्रथमत: प्राकृतिक गैसकेँ ओतहि तेलकूपपर फराक कऽ देल जाइत छैक । एही गैसक तरलीकृत रूपसँ हमरालोकनिक भनसाघरमे चूल्हि जरैत अछि । शेष अपरिष्कृत तेल, जकरा वैज्ञानिक पेट्रोलियम वा खनिज तेल नाम देने छथि, लम्बा-लम्बा पाइप लाइनक माध्यमे तेलशोधक कारखानामे पठा देल जाइत छैक । तेलशोधक कारखानामे एहि तेलकेँ गरम कयल जाइत छैक । विशाल भट्ठीमे पसरल पाइपक जालसँ एकरा प्रवाहित कयल जाइत छैक । मुख्य शोधन प्रक्रिया बेलनाकार मीनारमे होइत छैक, जकर उँचाइ लगभग 30 मीटर तथा व्यास लगभग 5 मीटर रहैत अछि । एहि मीनारक भिन्न-भिन्न उँचाइपर ट्रे लागल रहैत छैक । सभसँ नीचाँक मँजिलपर भट्ठीसँ गर्म भेल खनिज तेल गैसक रूपमे रहैत छैक । एहिसँ ऊपरक मँजिलपर पहुँचैत-पहुँचैत ई गैस ठंढा भऽ जाइत छैक आ तेलक भारी गैस एक भागक ट्रेमे गाढ़ बनिकऽ 'लुब्रीकेटिंग तेल' (मशीनमे देबऽवला) बनबैत छैक । एहिसँ ऊपरक मँजिलमे डीजल, ओहिसँ ऊपरी मँजिलमे किरासन तेल आ सभसँ ऊपरमे पेट्रोल जमा होइत छैक । सभसँ ऊपर पेट्रोलियम गैसक रूपमे बचि जाइत छैक आ सभसँ नीचाँमे किछु गाढ़ पदार्थ बचि जाइत छैक, जकरा पैराफिन कहल जाइत अछि । एहिसँ मोमबत्ती बनैत छैक । पैराफिनक अतिरिक्त एस्फाल्ट, बिटूमन तथा उज्जर तेल सेहो बचैत छैक, जाहिसँ रंग, इत्र, दवाइ इत्यादि बनैत अछि ।

16.6 भारतीय स्थिति

भारतमे तेलकूपक खनन, पाइप लाइन बिछौनाइ, ओकर ताकुत कयनाइ, शोधन-कार्य कयनाइ आ एहि संबंधी आनो दायित्व 'तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग'केँ देल गेल छैक । हमर देशमे 'डिगबोइ' एवं 'मुम्बइ हाइ' तेलक पैघ स्रोत अछि । एहू ठामक तथा आनोआन ठामक आयातित तेल मुम्बइ, कोचीन, बरौनी, गुआहाटी, बड़ौदा, हल्दिया, मथुरा आदि स्थानक

तेलशोधक कारखानामे परिष्कृत कयल जाइत अछि । मुदा, एखनहुँ धरि ई नहि कहल जा सकैत अछि जे हमरालोकनि पेट्रोलियमक मामिलामे पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर भऽ गेल छी ।

16.7 पारिभाषिक शब्द

अहाँ जे पाठ एखन पढ़ि रहल छी से विज्ञानसँ संबंधित अछि । विज्ञानक विषयमे विषयसँ सम्बद्ध विचार विशिष्ट शब्दक माध्यमे प्रकट होइत अछि । जेना हमरालोकनि सामान्य भाषामे चट्टान शब्दक प्रयोग करैत छी, मुदा भू-विज्ञानवेत्तालोकनि चट्टानक प्रकारकेँ पृथक-पृथक शब्देँ व्यक्त करैत छथि । उदाहरणार्थ एही पाठमे स्तरित आ आग्नेय चट्टानक नाम आयल अछि । एहने विशिष्ट विचारक विशिष्ट शब्दकेँ पारिभाषिक शब्द कहल जाइत अछि । यदि अहाँ पारिभाषिक शब्दक अर्थ ठीक ढंगेँ बुझि जायब तँ ओहिसँ निष्पन्न विचार बुझब आसान भऽ जायत आ विषयकेँ ठीकसँ बुझि सकब ।

पारिभाषिक शब्द परिभाषासँ बनल अछि । एहि शब्दक वैशिष्ट्य थिक जे छोट-सन शब्दमे पैघ अर्थ आ गम्भीर भाव समटल रहैत अछि । एतऽ एहि पाठमे प्रयुक्त किछु पारिभाषिक शब्दक विवेचन प्रस्तुत अछि:

- **भू-विज्ञान** : पृथ्वीक संरचना संबंधी ज्ञान प्रदान कयनिहार विज्ञानक प्रभेदकेँ भू-विज्ञान कहल जाइत अछि ।
- **वाष्पकण** : वायुमंडलमे व्याप्त जलक छोट-छोट कण, जे वाष्पक रूपमे रहैत अछि, वाष्पकण कहबैत अछि ।
- **वायुमंडल** : पृथ्वीक चारूभाग नाना प्रकारक गैस व्याप्त रहैत अछि, जे वायु थिक आ एहिसँ बनल सम्पूर्ण वातावरण वायुमंडल कहबैत अछि ।
- **झील** : वर्षाक जल पहाड़परसँ टघरिकऽ नीचाँ होइत छैक तँ ओ चारूभागक पहाड़सँ घेरल रहबाक कारणेँ पैघ जलाशयक निर्माण करैत अछि । एकरे नाम थिक झील । ई जल पहाड़क गुफासँ धीरे-धीरे प्रवाहित होइत छैक, जकरा लोक झरना कहैत छैक ।
- **उदभिद्** : ई केशक समूह जकाँ पानिमे पसरल रहऽवला एक प्रकार घास थिक । ई अत्यंत सूक्ष्म होइत अछि तथा एहिमे कोनो जड़ि नहि होइत छैक ।
- **सेमार** : ई जलमे होइत अछि, मुदा एकर जड़ि जमीनमे धसल रहैत छैक । ईहो उद्भिदे सदृश थिक । ई जन्म लैत अछि आ मरैत अछि । एकरामे अनुभवक शक्ति रहैत छैक ।
- **घोंघा** : ई जलमे रहैत अछि, जकर बाहरी सतह मजगूत होइत छैक । एकर मृत शरीरसँ खायवला चून सेहो बनाओल जाइत छल ।
- **सितुआ** : ईहो जलमे रहनिहार जीव थिक । एकर बाहरी सतह घोंघासँ बेसी कठोर होइत छैक । घोंघा गोलाकार आ ई चाकर होइत अछि । एकरो चून बनयबामे उपयोग होइत छल ।
- **भू-गर्भ** : पृथ्वीक आन्तरिक हिस्सा ।
- **भू-खनन** : पृथ्वीक भीतर कयल गेल खनन-कार्य ।

- **भूगर्भशास्त्र** : ओ शास्त्र, जाहिमे भूमिक भीतरी बनावटिक संबंधमे ज्ञान प्राप्त कयल जाइछ ।
- **भूगर्भशास्त्रीय** : भूमिसँ संबंधित शास्त्रक सम्बन्धमे ।
- **भू-भौतिकी** : भूमिक भीतरक भौतिकशास्त्रीय अध्ययन ।
- **भू-रासायनिकी** : भूमिक भीतरी भागक रसायनशास्त्रीय अध्ययन ।
- **ताप** : प्रत्येक वस्तु (सजीव एवं निर्जीव) कोनो-ने-कोनो तापपर रहैत अछि, जाहिमे बाह्य एवं आन्तरिक परिवर्तनसँ अन्तर होइत छैक । तापकेँ नपनिहार यन्त्र तापमापक यंत्र (थर्मामीटर) कहबैत अछि । एकरा द्वारा नापल गेल ताप तापमान वा तापक्रम कहबैत अछि ।
- **दाब** : प्रत्येक वस्तु (सजीव एवं निर्जीव) तापहि जकाँ दाबमे सेहो रहैत अछि, अर्थात् ओकर चारू कातक बातावरणक दबाव रहैत छैक । दाबक घटने-बढ़ने कोनो वस्तुक स्थिति आ रूपमे सेहो परिवर्तन होइत छैक । ताप आ दाबमे अन्योन्याश्रय संबंध छैक । दाब बढ़लासँ तापमान बढ़ैत छैक आ दाब घटलासँ तापमान घटैत छैक । जैव कंकालपर आंतरिक ताप आ ऊपरी दाबक कारणेँ तरल पदार्थ बनल, जकरा आइ खनिज तेल कहल जाइत अछि ।
- **भ्रंश(फॉल्ट)** : पृथ्वीक भीतर चट्टानक कतोक परत होइत छैक । ई चट्टान सभ बेहिसाब रहैत अछि । कतहु बेसी ढाल तँ कतहु कम । यैह कारण थिक जे पृथ्वीक भीतरी रचनामे कतोक स्थानपर चट्टान टुटि जाइत छैक, जकरा भ्रंश अथवा फॉल्ट कहल जाइत छैक ।
- **गुरुत्वाकर्षण** : पृथ्वी जाहि आकर्षणक बलसँ कोनो वस्तुकेँ अपना दिस खीचैत छैक, तकरा गुरुत्वाकर्षण कहल जाइत छैक ।
- **चुम्बकीय शक्ति** : चुम्बक लोहाकेँ अपना दिस खीचैत छैक । चुम्बकमे दूटा ध्रुव होइत छैक–उत्तरी आ दक्षिणी । पृथ्वीमे सेहो दूटा ध्रुव छैक । अतः पृथ्वी सेहो एकटा विशाल चुम्बक थिक, जे कोनो वस्तुकेँ अपना दिस खीचैत छैक ।
- **भू-फोन** : ई एकटा एहन यंत्र थिक, जाहिसँ पृथ्वीक भीतरमे घटित होबऽवला घटनाक सूचना प्राप्त होइत अछि । एहिसँ चट्टानक स्थितिक पता लगैत अछि ।
- **रेडार** : ई एकटा एहन यंत्र थिक, जे आकाशमे गतिशील वस्तुक दूरी आ प्रकृतिक संकेत वायु-तरंगक आधारपर दैत अछि ।
- **सोनार** : एहि यन्त्रसँ जल-तरंग द्वारा जलक भीतरक वस्तुक दूरीकेँ नापल जाइत अछि ।
- **तेलकुंड** : पृथ्वीक भीतर जतऽ तेलक भंडार रहैत अछि, तकरा तेलकुंड कहल जाइत अछि ।

- **तेलकूप** : भू-खनन द्वारा जाहि कुंडसँ तेल निकालल जाइत अछि, तकरा तेलकूप कहल जाइत अछि ।

- **डेरिक** : तेल-खननक हेतु तेलकूपमे लगाओल जायबला लोहाक ऊँच-ऊँच तिकोनियाँ मीनारवला यंत्र ।

- **ड्रिलिंग रिंग** : तेलकूपसँ तेल निकालबाक हेतु खनन-यंत्र ।



OIL DRILL DIGGING DEEP INTO THE EARTH
PETROLEUM - Primary Production

शोधन : खनिज तेल जखन बहार कयल जाइत अछि तँ ओ उपयोग करबाक योग्य नहि रहैत अछि । एकरा शोधनशालामे साफ कयल जाइत अछि । एहि प्रक्रियाकेँ शोधन-क्रिया कहल जाइत अछि । शोधनक फलस्वरूप डीजल, किरासन, पेट्रोल, पैराफिन (जाहिसँ मोम बनैत अछि), एस्फाल्ट (जाहिसँ लुब्रीकेटिंग तेल बनैत अछि) आदि बनैत अछि ।

- **प्राकृति गैस** : तेल-खननक समयमे पहिने अपरिष्कृत तेल भेटैत छैक, तथा ज्वलनशील गैस सेहो भेटैत छैक । एही गैससँ घरमे भोजन बनैत अछि । ई अधिक दबावपर तरल रूपमे रहैत छैक, किन्तु साधारण तापपर गैसक रूपमे परिणत भऽ जाइत छैक ।

किछु अन्य पारिभाषिक शब्द :

- **ऊर्जा** : ऊर्जाक अर्थ थिक शक्ति, मुदा एतऽ ऊर्जा ओ शक्ति थिक जाहिसँ कोनो कार्य कयल जाइत अछि ।

- **विद्युत् ऊर्जा** : आइ-काल्हि विद्युत् ऊर्जा एक प्रमुख ऊर्जाक स्रोत थिक । ई ऊर्जा जल आ तापसँ प्राप्त होइत अछि आ दूर-दूर धरि तारक माध्यमे पहुँचाओल जाइत अछि ।

- **नाभिकीय ऊर्जा** : ई ऊर्जा परमाणु शक्तिसँ प्राप्त कयल जाइत अछि । एहिमे यूरेनियमकेँ परमाणुमे विखंडित कऽकऽ ऊर्जा प्राप्त कयल जाइत अछि । एहि विधिसँ प्राप्त ऊर्जाक मात्रा आ शक्ति सभसँ अधिक होइत अछि ।

- **सौर ऊर्जा** : सूर्यक प्रकाशसँ उत्पन्न ऊर्जा सौर ऊर्जा कहबैत अछि । सूर्यक प्रकाशमे ऊष्मा रहैत छैक जकरा परावर्त द्वारा ऊर्जामे परिवर्तित कयल जाइत छैक ।

- **परमाणु शक्ति** : परमाणु कोनो तत्वक सभसँ छोट इकाइक नाम थिक । एहि परमाणुकेँ विस्फोट द्वारा खण्डित कयने जे ऊर्जा प्राप्त होइत छैक, सैह भेल परमाणु शक्ति ।

अतिरिक्त अध्ययन :

अहाँ एहि इकाइमे ऊर्जाक मुख्य स्रोत पेट्रोलियमक विषयमे पढ़लहुँ अछि । ऊर्जाक प्रयोजन आजुक युगमे डेग-डेगपर छैक । भनसाघरमे, इजोत करबामे, मशीन चलयबामे, वाहन चलयबामे इंधनक उपयोग सभ ठाम छैक । पूर्वमे मनुष्य लकड़ी, कोइला इत्यादिक प्रयोग ऊर्जाक हेतु करैत छल, किन्तु ई विज्ञानक चमत्कार थिक जे मनुष्य नव ऊर्जाक स्रोत ताकि लेलक । एकरे परिणाम थिक पेट्रोलियम पदार्थक प्राप्ति । विद्युत् ऊर्जा आ नाभिकीय ऊर्जा सेहो ऊर्जाक नव स्रोत थिक । विद्युत् ऊर्जाक हेतु जल आ ताप विधिक उपयोग होइत अछि । नाभिकीय ऊर्जामे परमाणु शक्तिक प्रयोग कयल जाइत अछि । कोइला आ पेट्रोलियम एखनहुँ ऊर्जाक प्रमुख स्रोत थिक । एकरा पृथ्वीक खनन द्वारा निकालल जाइत अछि आ एकर समाप्तिक खतरा सतत रहैत छैक । एहि दृष्टिएँ नाभिकीय ऊर्जाक महत्त्व अधिक अछि, मुदा नाभिकीय ऊर्जाक अपशिष्टसँ उत्पन्न खतराक कारणेँ एकर उपयोगकेँ सुरक्षित नहि मानल जा सकैत अछि । एखन ऊर्जाक नव स्रोतक खोज शुरू अछि, जकर समाप्तिक भय नहि रहय । एकर अतिरिक्त जल आ वायुक संचालनसँ सेहो ऊर्जा उत्पादन करबाक प्रयास कयल जा रहल अछि । एखन ऊर्जाक एहि प्राकृतिक स्रोतक विकास नहि भेलैक अछि । यद्यपि ई ऊर्जाक स्रोत निःशुल्क प्रकृतिप्रदत्त अछि, किन्तु कम खर्चमे सुगमतापूर्वक एकरा प्रयोगमे आनल जयबाक उपाय ताकल जा रहल अछि । ईहो आवश्यक जे एहि ऊर्जाक उपयोग सर्वत्र होअय, जाहिसँ खनिज तेलसँ प्राप्त ऊर्जा सुरक्षित रहि सकत ।

अभ्यास–1

अहाँ पाठ मन लगाकऽ पढ़ने होयब । एतऽ किछु लघूत्तरीय प्रश्न देल जा रहल अछि । एकर अहाँ उत्तर देबाक प्रयास करू आ अपन उत्तरकेँ इकाइक अंतमे देल गेल उत्तरसँ मिलान कऽकऽ देखू जे अहाँकेँ कतहु भ्रम तँ ने अछि ।

1) निम्नलिखित वाक्यक प्रसंग कहू जे ओ सत्य अछि वा असत्य–

   अ) प्रारंभमे पृथ्वी पूर्णतः ठंढा छल । (सत्य/असत्य)

   आ) खनिज तेल उद्भिद् आ लघु जीवजन्तुक मृत शरीरसँ बनैत अछि । (सत्य/असत्य)

   इ) तेलकुंडक चारू कातक देबाल चट्टानक बनल रहैत अछि । (सत्य/असत्य)

   ई) निस्यंदन तेल बहुत गहीँर तेलकुंडमे भेटैत छैक । (सत्य/असत्य)

   उ) तेलशोधक कारखानामे सभसँ निचला मंजिलमे डीजल रहैत अछि । (सत्य/असत्य)

2) रिक्त स्थानक पूर्ति करू–

   अ) पृथ्वीपर सभसँ पहिने जे जीव उत्पन्न भेल से थिक .... ।

आ) पानिक संग बहिकऽ आयल माटि कंकड़सँ .... चट्टान बनल ।

इ) कूप खननक बाद नीचाँसँ .... निकालल जाइत अछि ।

ई) तेलक खोज करबाक परीक्षण तीन तरहेँ होइत अछि--भूगर्भशास्त्रीय, ..., भूरासायनिकीय ।

उ) आग्नेय चट्टानमे ड्रिलिंग मशीनक दाँत कखनहुँ कऽ .... फुटैमे टुटि जाइत छैक ।

3) कोष्ठमे देल गेल शब्दकेँ देखू आ ओहिसँ शुद्ध शब्दकेँ चीन्हिकऽ रिक्त स्थानकेँ भरू-

अ) किरासन तेल पानिसँ .... होइत अछि । (हल्लुक/भारी)

आ) आग्नेय चट्टान स्तरित चट्टानसँ .... होइत अछि । (कठोर/कोमल)

इ) निस्यंदन तेल .... होइत अछि । (पातर/गाढ़)

ई) निस्यंदन तेल गर्मीक कारण नरम, लसलस सन बनि जाइत अछि, जकरा ....कहल जाइत अछि । (लुब्रीकेटिंग तेल, एस्फाल्ट)

4) क) एस्फाल्टकेँ गर्म कयने तीन प्रकारक पदार्थ प्राप्त होइत अछि, जे थिक-

अ) ....

आ) ....

इ) ....

ख) पृथ्वीमे तेलक पता लगयबाक हेतु निम्नलिखित तीन परीक्षण कयल जाइत अछि-

अ) ....

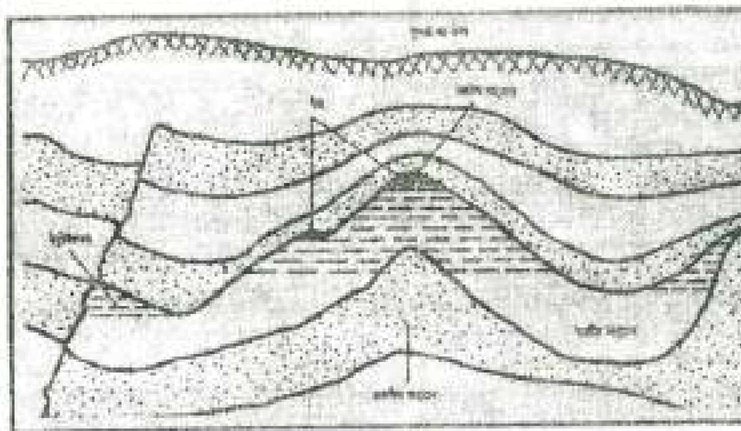
आ) ....

इ) ....

5) अहाँ एहि इकाइमे निम्नलिखित चट्टानक विषयमे पढ़लहुँ अछि-

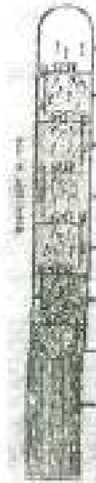
क) स्तरित चट्टान

ख) आग्नेय चट्टान । एतऽ दुनू प्रकारक चट्टानकेँ चित्र द्वारा देखाओल गेल अछि ।



चित्रसँ स्पष्ट अछि जे स्तरित चट्टान आ आग्नेय चट्टान केहन होइत अछि ।

अ) आब अहाँ बुझि गेल छी जे तेलकूपसँ बहार कयल गेल तेलकेँ शोधित कयलासँ नाना प्रकारक पेट्रोलियम पदार्थ बनैत छैक । एतऽ चित्र देल जा रहल अछि । अहाँ देखिकऽ कहू जे एकर कोन तलसँ पेट्रोलियमक कोन प्रकारक तेल निकलैत छैक ।



आ) अहाँ इहो पढ़लहुँ अछि जे तेलक खोज विभिन्न स्तरपर होइत छैक । एतऽ स्पष्ट करू जे विभिन्न स्तरपर तेलक खोज कोना होइत छैक ?

तेलक खोज– प्रथम स्तर ......संभावित जगहक वायुसेना द्वारा फोटो

प्रारंभ

– द्वितीय स्तर ....

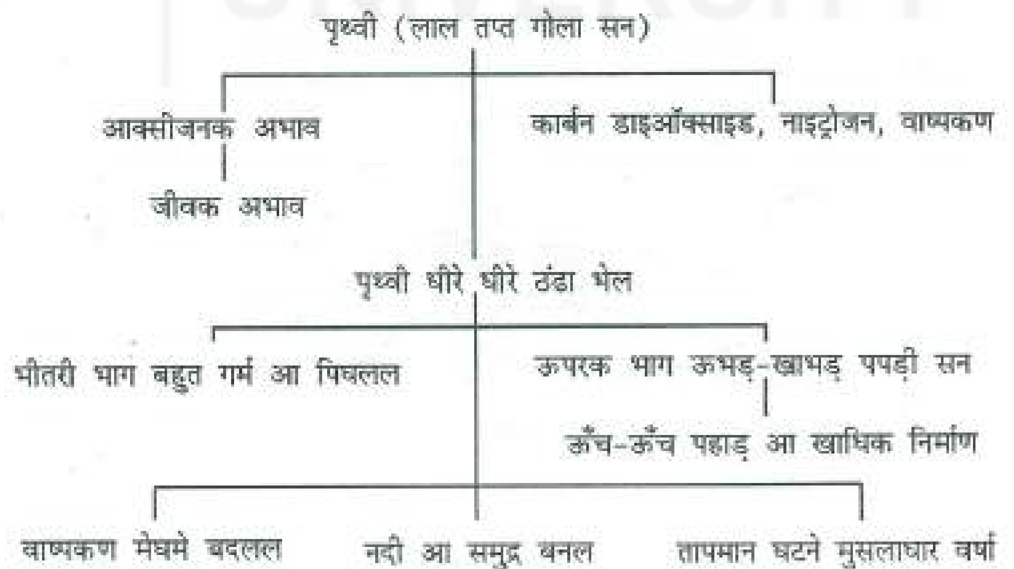
– तृतीय स्तर ....

तेल प्राप्तिक

संकेत – चतुर्थ स्तर ....

– तेल निकालबाक हेतु खनन कार्य प्रारम्भ

6) अहाँ एहि पाठकेँ मन लगाकऽ पढ़ने होयब । आरम्भमे अहाँ देखने होयब जे पृथ्वीक जन्मसँ समुद्र तथा झरना धरि बनबाक प्रक्रिया कहल गेल अछि । ई प्रक्रिया क्रमबद्ध रूपसँ कहल गेल अछि । एकरा क्रमबद्ध रूपसँ एतऽ प्रस्तुत कयल जा रहल अछि–



उपर्युक्त विधिसँ पेट्रोलियमक उत्पत्तिकेँ देखाउ ।

7) ऊर्जाक विभिन्न स्रोतकेँ ध्यानमे राखि एहि प्रश्नक उत्तर लिखू–

अ) ऊर्जाक पारंपरिक स्रोत की सभ अछि ?

....

....

....

आ) ऊर्जाक आधुनिक स्रोत की सभ अछि ?

....

....

....

इ) विद्युत् ऊर्जा उत्पन्न करबाक दूटा प्रमुख विधिक नाम लिखू ।

....

....

ई) प्रकृतिक ऊर्जाक स्रोत की सभ अछि ? ओकर आवश्यकता किएक भेल ? दूटा कारण लिखू ।

....

....

उ) प्राकृतिक ऊर्जाक प्रयोगक संबंधमे आबऽवला दूटा कठिनताक उल्लेख करू ।

....

....

नीचाँमे अभ्यास देल जा रहल अछि, जाहिसँ अहाँक पारिभाषिक शब्दक भंडार बढ़त । शुद्ध उत्तरक हेतु अहाँ पाठकेँ ध्यानसँ पढ़ू तथा अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोशक मदति लियऽ ।

अभ्यास-2 :

1) एतऽ किछु परिभाषा देल जा रहल अछि । अहाँ एकरा पढ़ू आ पारिभाषिक शब्द लिखू :

परिभाषा	पारिभाषिक शब्द
अ) समुद्रमे माटि आ कंकड़क तहसँ बनऽवला चट्टान	....
आ) जैव कंकालसँ बनल तरल पदार्थ	....
इ) चट्टानक दरारसँ चुबैत धरतीक तलपर पसरऽवला पेट्रोलियम...	....
ई) भिन्न-भिन्न जगहसँ निकालल गेल माटिक परीक्षण	....
उ) चट्टानसँ उत्पन्न तरंगक प्रतिध्वनिक अध्ययन करऽवला यंत्र..	....
ऊ) भूगर्भमे तेलक खनन करबाक हेतु प्रयुक्त होबऽवला यंत्र	....

2) एतऽ पाठमे प्रयुक्त किछु पारिभाषिक शब्दक उल्लेख कयल गेल अछि । एकर अंग्रेजी शब्द सेहो देल गेल अछि । अहाँ चीन्हिकऽ लिखू । उदाहरणार्थ, खनिज तेल– पेट्रोलियम ।

परिभाषिक शब्द	अंग्रेजी शब्द
अ) स्तरित चट्टान	1) Gravity
आ) भू-भौतिकी	2) Cruid oil
इ) गुरुत्वाकर्षण	3) Geophone
ई) अपरिष्कृत तेल	4) Layered rock
उ) भू-फोन	5) Geophysics

3) अहाँ पाठमे तेलक खोजक संबंधमे भूगर्भशास्त्रीय, भूभौतिकीय एवं भूरासायनिकीय परीक्षणक विधिक अध्ययन कयलहुँ । एहि विधिक संबंध भूविज्ञानसँ अछि । भूविज्ञानसँ संबंधित अध्ययनकेँ पूर्णता प्रदान करबाक हेतु विज्ञानक अन्यान्यो शाखाक प्रयोग कयल जाइत अछि । अध्ययनक एहन विशिष्ट क्षेत्रकेँ देखबाक हेतु भूभौतिकी (Geophysits) आ भूरासायनिकी (Geochemistry) शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि । विज्ञानक अन्य शाखासँ संबंधित विशिष्ट क्षेत्रक हेतु सेहो एहने शब्दक प्रयोग कयल जाइत अछि ।

खगोलविज्ञान आ जीवविज्ञानक भौतिकशास्त्र तथा रसायनशास्त्रसँ संबंधित विशिष्ट अध्ययनक नाम लिखू–

खगोलविज्ञान	खगोल	जीवविज्ञान
	(अ)	(क)
	(आ)	(ख)

16.8 सारांश

एहि अध्यायमे अहाँ पेट्रोलियमक संबंधमे पढ़लहुँ अछि । विज्ञानसँ सम्बद्ध विषयक अध्ययनक मुख्य उद्देश्य अहाँकेँ मैथिली भाषाक माध्यमे विज्ञान संबंधी लेखन-विधिसँ परिचय करायब अछि । एकरा संगहि अहाँ पेट्रोलियमसँ संबंधित निम्नलिखित पक्षक जानकारी सेहो प्राप्त कयलहुँ अछि–

- पेट्रोलियमक निर्माण कोना भेल ?
- पेट्रोलियमक खोज कोन प्रकारेँ कयल जाइत अछि ?
- पेट्रोलियम प्राप्तिक हेतु भू-खनन कोना कयल जाइत अछि ?
- पेट्रोलियम प्राप्तिक बाद ओकरा कोना शोधन कयल जाइत अछि तथा ओहिसँ आओर कोन वस्तु प्राप्त होइत अछि ?

एकर अतिरिक्त अहाँ ऊर्जाक विभिन्न स्रोतक ज्ञान सेहो प्राप्त कयलहुँ ।

एहि तरहेँ अहाँ उक्त विषयकेँ अपन शब्दमे लिखि सकैत छी ।

एहि इकाइमे अहाँ देखि लेलहुँ अछि जे पारिभाषिक शब्दक अर्थ की अछि तथा ओकर प्रयोगक की महत्त्व अछि ? हम आशा करैत छी जे एहिमे प्रयुक्त किछु पारिभाषिक शब्दक व्याख्या अहाँ स्वयं करबामे समर्थ होयब ।

16.9 अभ्यासक उत्तर

अभ्यास-1

1) (अ) असत्य (आ) सत्य (इ) सत्य (ई) असत्य (उ) असत्य

2) (अ) उद्भिद् (आ) स्तरित (इ) खनिज तेल (ई) भूभौतिकी (उ) 5.7

3) (अ) हल्लुक (आ) कठोर (इ) गाढ़ (ई) एस्फाल्ट

4) (क) (अ) सभसँ पातर तरल पदार्थ दीपमे प्रकाशक हेतु ।

(आ) सभसँ भारी मशीनमे लुब्रीकेटिंग तेलक रूपमे ।

(इ) सभसँ गाढ़ मोमबत्ती बनयबाक हेतु ।

(ख) (अ) भूगर्भशास्त्रीय ।

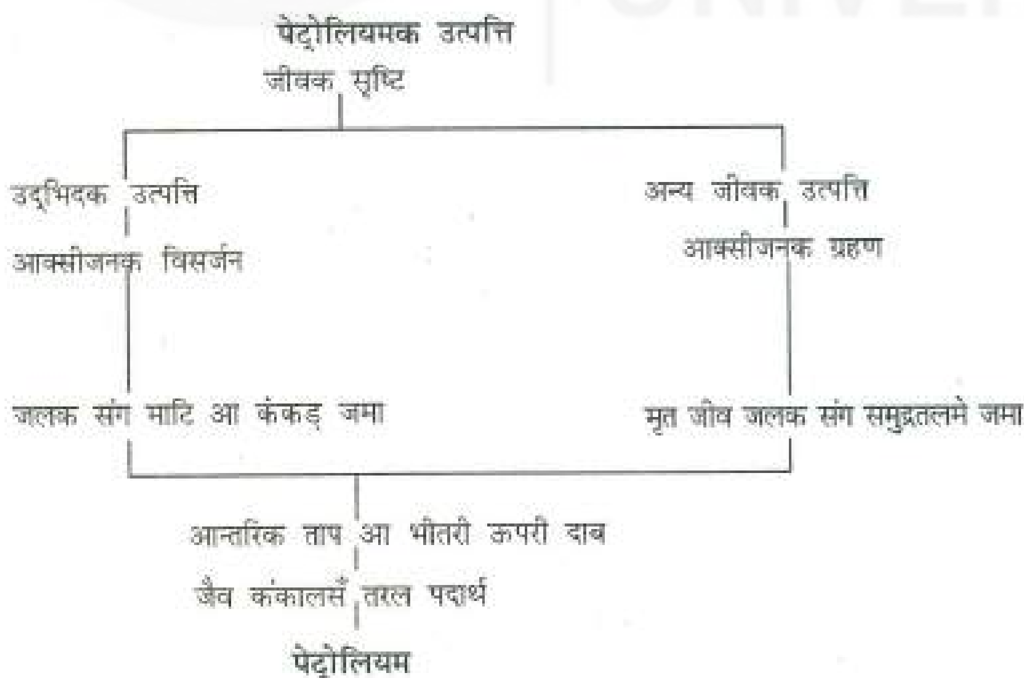
(आ) भूभौतिकी ।

(इ) भूरासायनिकी ।

5) (अ) सभसँ निचला तलमे खनिज तेल गैसक रूपमे/पैराफिन तलमे एस्फाल्ट आदि बचल रहैत छैक ।

प्रथम ट्रे - लुब्रीकेटिंग आयल
द्वितीय ट्रे - डीजल
तृतीय ट्रे - किरासन तेल
चतुर्थ ट्रे - पेट्रोल
सभसँ ऊपर - पेट्रोलियम गैसक रूपमे

(आ) द्वितीय स्तर - भूगर्भशास्त्रीय परीक्षण
तृतीय स्तर - भूभौतिकी परीक्षण
चतुर्थ स्तर - भूरासायनिकी परीक्षण



7) अ) लकड़ी, कोइला

आ) पेट्रोलियम, पदार्थ, विद्युत् ऊर्जा, नाभिकीय ऊर्जा ।

इ) कोइलासँ, जकरा ताप विद्युत् कहल जाइत छैक ।

जलक द्वारा, जाहिसँ पनबिजली बनैत अछि ।

ई) सौर ऊर्जा, जल आ वायुक संचालनसँ उत्पन्न ऊर्जा ।

पेट्रोलियम पदार्थ तथा कोइलाक भंडारकेँ खतम होयबाक आशंका ।

नाभिकीय ऊर्जामे अपशिष्ट (रेडियोधर्मिता)क प्रदूषणक खतराक कारण ।

उ) प्राकृतिक ऊर्जाक निर्माण खर्चीला होइत अछि ।

प्राकृतिक ऊर्जाकेँ सभ जगह आ सभ समय प्रयुक्त नहि कयल जा सकैत अछि ।

अभ्यास-2 :

1) (अ) स्तरित चट्टान (आ) पेट्रोलियम

(इ) निस्यंदन तेल (ई) भूरासायनिकी परीक्षण

(उ) भूफोन (ऊ) ड्रिलिंग रिंग

2) (अ) -4 (आ) -5 (इ) -1 (ई) -2

(उ) -3

3) (अ) खगोल भौतिकी (आ) खगोल रासायनिकी

(क) जैव भौतिकी (ख) जैव रासायनिकी

******